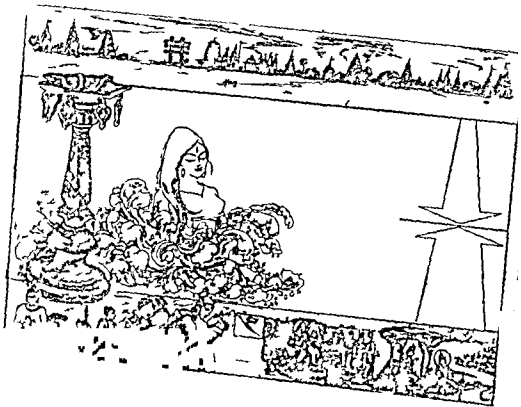


हिन्दी
महाकाव्य
सिद्धांत
अथ
मूल्यांकन

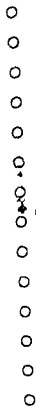




अपोलो पब्लिकेशन

जयपुर-३

हिन्दी
महाकाव्य
सिद्धांत
और
मूल्यांकन



3376
+ + + + +
+ + + + +



- देवीप्रसाद गुप्त
- एम ए एल एल बी
- प्राध्यापक हिन्दी विभाग
- राजकीय स्नातकोत्तर
- डूंगर महाविद्यालय
- बीकानेर (राजस्थान)
-



अपोलो पब्लिकेशन

जयपुर-३

हिन्दी

महाकाव्य

सिद्धांत

और

मूल्यांकन

देवीप्रसाद गुप्त
एम ए एम् एन बी
प्राध्यापक, दिल्ली विश्व-
विद्यालय, दिल्ली
द्वारा सम्पादित
बनारस (उत्तरप्रदेश)

□ हिन्दी महाकाव्य सिद्धांत और मूल्यांकन

□ © देवीप्रसाद गुप्त

□ प्रथम संस्करण

१९६८

□ मूल्य पच्चीस रुपये

□ प्रकाशक

जपाना पब्लिशिंग

सर्विस मानसिंह हार्ड वे

जयपुर-३

□ भूतक

ट्रुगा प्रिंटिंग वर्क्स

रस्ता नं १

आगरा-४

श्रद्धधेय डॉ० माताप्रसाद गुप्त
को
सादर समर्पित

प्रस्तावना

श्री निम्बकर ने अद्वैतारीश्वर में लिखा है कि— विश्व के महाकाव्य मनुष्यता की प्रगति के माग में माल के पत्थरों के समान हाते हैं। वयजित करते हैं कि मनुष्य किस युग में कहीं तक प्रगति कर सकता है। इस कथन के आशय में यदि महाकाव्य की महत्ता पर विचार किया जाय तो वह सर्वोपरि का यथ्य सिद्ध होता है। महाकाव्य की कायरूपामक सर्वोपरिता का मुख्य आधार उसका शिल्पगत वशिष्ट्य एव जीवननग्नन सम्बन्धी उपलब्धिया है। वस्तुतः महाकाव्य जातीय जीवन एवं सामाजिक चेतना के जागरण के साम्प्रतिक प्रयास होते हैं क्योंकि उनमें नवीन सामाजिक संरचना का उदात्त संकल्प राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधि स्वरूप नवजागरण का महान् उद्घोष साम्प्रतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा जात्यात्मिक निष्ठाया का परिष्कार एवं वत्तात्मक उत्कथ होता है। किंतु यह चिन्ता का विषय है कि काव्यशास्त्र में महाकाव्याचारण सम्बन्धी प्रतिमानों का अनिश्चित प्रायः होना एवं समालोचका की बद्धमूलधारणाओं के कारण हिन्दी के अनेक महत्त्वपूर्ण काव्यग्रंथों को न तो महानाव्य के रूप में स्वीकृति प्रदान की गया है और न उनका निश्चित मूल्यांकन किया गया है। हिन्दी के सुधी समीक्षकों में इस बात पर तीव्र मतभेद है कि कौन सी काव्य कृतियाँ महाकाव्य हैं? कौन-सी नहीं?

प्रस्तुत पुस्तक इसी निशा में एक दिनस्य प्रयास है। पुस्तक की विषय सूची के दो भाग हैं—सिद्धान्त गण्ड और मूल्यांकन गण्ड। सिद्धान्त गण्ड में महाकाव्य की परिभाषा रूपविधायक तत्त्वा स्वस्व विकास सामाज्य प्रवृत्तियाँ एवं मूलन-सम्भावनाया आदि का विवचन है। मूल्यांकन-गण्ड में महाकाव्य के तत्त्वगत विकास का रूपांकित करने वाली कतिपय महाकाव्य कृतियाँ का मूल्यांकन है। इनमें भी प्रियप्रकास सावंत कामायना और कुरुक्षेत्र नामक महाकाव्या का छात्रापयोगी महत्त्व दृष्टिगत करके सनायीण मूल्यांकन किया गया है। शेष महाकाव्या का मूल्यांकन तत्त्व विज्ञाप पर प्राकृत है।

पुस्तक का विषय विस्तार स्वतन्त्र रचना के रूप में होना के कारण सम्भव है कर्ण-नहा किसी तथ्य की पुनरावृत्ति हो गया हो। पर कतिपय पूर्व प्रकाशित ग्रंथ भी पुस्तक में सम्मिलित हैं। अन्तु पुस्तक की विषय-याचना में अध्ययन ग्रंथ की एकरूपता का मन्त्रों में द्रष्टव्य है—प्रथम मूल्यांकन के लिए शृंगार

मभी महाकाव्य पौराणिक विषया के तथा आधुनिक है दूगरे गभी के मूल्यांकन में मानवतावादी विचारदशन के विशास को उद्घाटित किया गया है। आधुनिक हिन्दी महाकाव्य के परिप्रक्षय में गिज्ञान निरूपण और मूल्यांकन के नम प्रयास में मैं वहीं तक सफल हुआ हूँ जगता विषय विज्ञान प्राप्त करेगे। मुझ इतना सन्तोष अवश्य है कि मूल्यांकन विषयक परम्परित सम्झों में रहते हुए भी इस पुस्तक में महाकाव्यालोचन की कुछ नयीन सम्भावनाएँ साकार हा सकी है।

अन में अपनी त्रुटियाँ के प्रति क्षमायाचना करते हुए मैं भारती के मन्दिर में अपनी श्रम-साधना का यह पुष्प समर्पित करता हूँ।

बीकानर
११६८

देवीप्रसाद गुप्त

महाकाव्य और महान् काव्य

महाकाव्य और महान् काव्य

काव्य शब्द के पहले महा विभषण का प्रयोग सम्स्कृत प्राकृत अपभ्रंश और हिन्दी भाषाओं में एक काव्य रूप के अर्थ को व्योक्त करना है जिस महाकाव्य कहते हैं। महा विभषण का अर्थ काव्य का महत्ता को व्यक्त करता है। काव्य के सद्बोध में महत्ता का प्रतिपादन दो प्रकार से हो सकता है—एक तो काव्यात्मक उपकरणों की महानता और दूसरे प्रतिपाद्य की अर्थात् की रचना काव्य-रचना की भूमि पर महत् होने में महाकाव्य होती है या महत् जीवन चेतना का आत्मसात करके अभिव्यक्त करने से। यद्यपि दोनों दृष्टियों में काव्य महत् बनता है किन्तु महाकाव्य को महाघटना ज्ञान करने के लिए कालात्मक सौन्दर्य के साथ साथ जीवन दर्शन की विराट यजना भी अपेक्षित है। डॉ० रामरत्न भटनागर के शब्दों में— इसमें सन्देह नहीं कि महाकाव्य में श्रेष्ठतम उपन्यासों समाहित होनी आवश्यक है। और ये उपलब्धियाँ प्रधानतः शृंगारित और अतर्जित प्रतीका सौन्दर्यबद्ध प्रतिमानों विस्तृत घटना एवं समृद्ध विवरणों के साथ-साथ महाकाव्य के कथानक की सुव्यवस्था वास्तुमयता (आर्ग्योन्कटोनिक) तथा प्रतीकात्मकता को समेट कर चली हैं जिससे महाकाव्य व्यष्टि मानस का उद्गार न होकर राष्ट्रीय मानस अथवा समष्टि मानस का उद्घोष बन जाता है। परन्तु यह स्पष्ट है कि काव्य की ये उन्नत भूमियाँ मात्र ही महानाट्य का महाघटना नहीं लेती। उसमें अभिव्यक्त जीवन का घनत्व प्रतीकत्व या विगटत्व ही महाकाव्य का मूल संवर्ण बन सकता है।¹

अस्तु! काव्य की महत्ता काव्यात्मक गुणों पर आधारित है। महाकाव्य की महत्ता के लिए काव्याचार्यों ने शास्त्रीय गुणों का विधान भी किया है। ये काव्य शास्त्रीय लक्षण (गुण) परवर्ती काल के समीक्षकों के लिए महाकाव्यालोचन के मानक बन गये। काव्यकर्त्ताओं ने अपनी रचनाओं में इन लक्षणों का निर्वाह कर महाकवि की उपाधि धारण की। किन्तु सग विधान छल-योजना

¹ सरस्वती सभा, महाकाव्य विभाषण वष ८, अंक १ अगस्त १९५६

धीरोदात्त नायक चतुर्वर्ग पत्रप्राप्ति रमनिष्ठा आदि जो महाकाव्य रचना के अनिवाय लक्षण माने जाते हैं किंगी भी काव्य के लक्षण हो सकते हैं। सत्य तो यह है कि ये लक्षण महाकाव्य के मूढ रूप के विचारानुसार म भव ही समझना है किन्तु अपने आप में काव्य की महानता के विधायक नहीं बन सकते। उदाहरणार्थ छन्दोबद्ध स रचित मुक्तक कविता भी मन्तव्य काव्य ही मानी है। वर्तमान युग के जनक प्रबन्ध काव्यात्मक प्राचीन काव्यात्मक रचनापर। और उपक्षिप्त पात्र (जिस कारण एतद्व्यक्त कण उन्मिता स्तयवश के राजाआ) पर भी उत्कृष्ट कविता की काव्य रचना हुई है। आज के जननायक एवं मानवतावादी विचारणा के युग में बुद्धिमान नायक की यथार्थता काव्यात्मक निराधार सिद्ध हो चुकी है। सग विधान में महाकाव्य के विशाल कथानक का सुन्दर सजावन हो सकता है किन्तु महानता की दृष्टि में स्वतः काव्य विशिष्ट महत्त्व नहीं। यही बात महाकाव्य की प्राचीन परिभाषाओं में उल्लिखित अथ तयावहित लक्षणा के बारे में भी चरितार्थ होती है। नई रमपरिपात्र निश्चय ही महाकाव्य की महानता के अनुरूप है। महाकाव्य के विशाल कथानक में रमपरिपात्र मौल्य बोध यापक चरित्र मृष्टि अभियोजना एवं रचना शिल्प आदि सभी दृष्टियाँ स अनिवाय है। महान् काव्य की रचना के लिए महाकाव्य की मायतांग आवश्यक नहीं है। अतः काव्य की महत्ता की दृष्टि में दाता में नास्तिक अन्तर है।

महाकाव्य की रचना एक प्रबन्ध काव्य के रूप में होती है। काव्य रूप की दृष्टि से यह आवश्यक नहीं कि महान् काव्य प्रबन्धात्मक हो वह मुक्तक भी हो सकता है।

महाकाव्य में जीवन का सवागीण चित्रण अंकित होता है। महाकाव्य की रचना युग जीवन के सघन को व्यापक रूप में चित्रित करने के निमित्त होती है जबकि महान् काव्य में हमारे जीवन का कोई भी पूरा या अपूर्ण रूप ग्रहण किया जा सकता है। महान् काव्य जीवन की लक्षण अभिव्यक्ति करके भी महत्त्वपूर्ण बन जाता है।

महाकाव्य का उद्देश्य जातीय जीवन और सामाजिक चेतना के आकलन का सांस्कृतिक निरूपण करना होता है। किन्तु महान् काव्य के लिए समाज या जातीय जीवन का चित्रण करना अनिवाय या अपक्षिप्त नहीं।

सामाजिक एवं जातीय जीवनांशों की प्रतिष्ठा का आग्रह होने के कारण महाकाव्य में प्रतिपादित जावन दशन आन्वयान् ही होता है। महान् काव्य आन्वय की अपेक्षा सघन जीवन की अभिव्यक्ति पर बल देता है।

महाकाव्यकार जीवन मूल्या की व्याख्या परम्परा-आधृत सिद्धान्त पर ही प्रायः करता है जबकि महान कवि युग-जीवन के सत्य की अभिव्यक्ति को ही अपना ध्येय मानता है।

शिल्प विधान का दृष्टि से विचार कर ता महान् काव्य का हम पूणत कलात्मक और रसात्मक ही पायग। महाकाव्य म रसात्मकता और कलात्मकता व साथ-साथ रचना विधि व अय सब तत्त्वा पर भी बन दिया जाना है। महाकाव्य अन्तत कलाकाव्य हाता है उसम क्यानक की योजना चरित्र-शृष्टि भाषा शली का समुन्नत रूप एव छल्ल जलकार विधान प्रवृत्ति चित्रण आदि सभी आवश्यक है। महान काव्य म इन सबनी अपेक्षा नहा की जाती ह। हाँ भाषा का परिनिष्ठित रूप जीर जनकरण महान् काव्य म भी आवश्यक होत है। इसक विपरीत लाक मरानाया म रचना सरल सुबोय भाषा शली म भी होता ह। इस दृष्टि स रवीन्द्रनाथ टगोर की गीताजलि (महान् काव्य) और लाक महाकाव्य आल्हयण दृष्टव्य है।

जहाँ तक महाकाव्य जीर महान काव्य की पाठका पर प्रभाव प्रतिरिया का सम्बन्ध ह निश्चय हा महान काव्य अधिन प्रभाजपूण एव आह्लाकारी है। क्याकि उमम भाव-गाम्भाय जीर कलात्मक आकषण हाता है। महानाय स पाठक तभा प्रभाजित हाता है जब वट उस गुर गम्भार काव्य रचना (महा काव्य) का धयपूवक आद्यान्त विधिवत अव्ययन अनुशीलन कर जीर उमम प्रतिपाजित जीवन दान की महत्ता स्वीकार कर।

इम प्रकार तत्वत महाकाव्य जीर महान काव्य म जन्त स्पष्टत किर-जा सक्ता है। वस्तुत महानाव्य एव निश्चिन नियमबद्ध काय रूप है। मृजन प्ररिया व लिए निमित्त नियम महाकाव्य का काव्यरूपा म निश्चय ही सर्वोपरि सिद्ध करत हैं। महाकाव्य लम्बन गुरतर काय है। महाकाव्य की रचना म शास्त्रीय नियमा का अनुपालन वारी ह्निवाजिता ही नहीं कहा जा सक्ता है। नियमा के सपन निर्वाह स ही ता महाकाव्य का रूप रक्षित है जीर उमना मुनीष परम्परा का सट्ट सचान किया जा सक्ता है। मरानाय का महत्ता व कारण कलात्मक उपकरण ही नहा अपितु व्यायक जन जीवन समाज एव जाताय मम्भृति का चित्रण तथा बनवना मृजन प्ररणा भा ह। एमक अनिरिकन ससृटन काव्यशास्त्र व आचार्यों द्वारा प्रस्ताकित भायताआ पर भा आज व महाकाव्य कार का जाग्रह नहा है। वतमान युग व अधिकां महाकाव्य युग जावन की बनना के प्रनीक है। आधुनिक युग व महाकाव्या का महाननम उपरान्धि उनका मानवतावाज दृष्टिकाण है। हिन्दा व महाकाव्या का बाह्याकार

६ हिन्दी महाकाव्य सिद्धान्त और मूल्यांकन

भी काव्यशास्त्रीय नियमों का हाँ गवधा अनुरूप नहीं है। उदाहरणार्थ तुलसी-वृत्त रामचरितमानस और प्रताप-वृत्त कामायनी दृष्टव्य हैं। इन महाकाव्यों में शास्त्रीय नियमों का ही नहीं महाकाव्य के गुणों को भी आत्मसात् कर लिया है। हिन्दी के ये गौरव ग्रन्थ एक साथ ही महाकाव्य और महान् काव्य हैं। महाकाव्य अपनी महाघटा का कारण ही जोर जोर शास्त्र दानों द्वारा समान है।

महाकाव्य की परिभाषा

महाकाव्य की परिभाषा

महाकाव्य का कोई सावकालीन या मवमाय परिभाषा रना कठिन है क्योंकि विभिन्न युगा म उसका स्वरूप परिवर्तित होता रहा है । महाकाव्ययुगान जीवन चतना का आत्मसात करन क कारण पापक जय म प्रगतिशात रचना है । महाकाव्य-मृजन एर सांस्कृतिक प्रयास है । जिस प्रकार सभृति का मून रूप अखणित रतन हुए भा उसम युगानुरूप परिवर्तन होत रतन हैं उसा प्रकार महाकाव्य का काव्यरूपात्मक प्रभुता क अखण्ड होत हुए भी उसका प्रवर्तिया और परम्पराशा म विकास क्रम निरन्तर गतिमात रता है । महाकाव्य व्यष्टि जीवन की अभिव्यक्ति न नारर ज्ञानीय जीवन का चित्र होता ह जिसम सामाजिक-जीवन की सामयिक परिस्थितिया और द्विषव-जीवन की प्रचरित प्रवर्तिया का प्रतिरिम्बन स्वत भी हो जाता है । श्री तिनरर न एक स्थान पर लिखा है कि— विश्व क महाकाव्य मनुष्यता की प्रगति क माय म मोल क पथरा क समान होत है । व यजिन करत है कि मनुष्य किस युग म कहां तर प्रगति कर सका ह । ^१ अस्तु महाकाव्य का प्रगतिशील रचनाशा की भांति रिता म् परिभाषा म बोधा नहा जा सकता । किन्तु महाकाव्य क तात्त्विक विवचन एक विकास क्रम का समघन क लिए वनानिक विश्लेषण का आवश्यकता होता है । इम विश्लेषण के लिए प्रथम आवश्यकता है—परिभाषा । जिसका जभाव म रचना का स्वरूप सम्बन्धा बाध नितान्त अनिश्चित प्राय रहता है ।

पाश्चात्य एक पौधान रता क साहित्य शास्त्रिया न जडावधि महाकाव्य का जो परिभाषाए निश्चित की हैं उनका आश उनका समय स पूव रचित मन्वाकाव्य रह है । जम अरस्तु क लिए इनियर और आरसी तथा भागताय काव्याचार्या क लिए महाभारत और रामायण । किन्तु प्राचान आचार्यों नारा निवारित परिभाषाए आधुनिक युग क महाकाव्य पर लागू नहा होता है क्योंकि जता रूप प्रवर्ति और परम्परा मन्ना दष्टिया म महाकाव्य रचना

^१ रामगारीमिह तिनरर, अपनारीशवर, पृ० ४६

परिवर्तना-मुग्धी रही है जिग त्रिकात ती सना न्ना अधिअ गुक्तिमगत होगा । एम सम्बन्ध म डा० शम्भूनाथमिह का मत है कि— कौन-ना ग्रन्थ महाकाव्य है और कौन नहा जब तत्र क माय महाकाव्य क रचना के आधार पर इसका निणय करना कठिन है । इसका गवम गुगम उपाय ता यहा है कि प्रत्येक दश या समाज म जिम काव्य का परम्परा स महाकाव्य माना जाता है या वर्तमान काल क जा काय सामाज्य महाकाव्य मान निय जात है उह सामन रयकर महाकाव्य की परिभाषा नियारित की जाय ।^२ किन्तु डा० मिह न स्वय अपन शाघप्रबन्ध म इस दष्टिकाण का पूजन अनुपादन नही किया है । उहान वर्तमान युग क माय महाकाव्या (जम माकत कृष्णादन पावता प्रियप्रवाम आदि) का महाकाव्य नहा माना है ।^३ जबकि परम्परा स जिम सामाज्य काव्य का मजा प्राप्त है उस आल्पमण्ड का उहान महाकाव्य माना है ।^४ वास्तव म डा० सिंह का उपयुक्त मायता को महाकाव्य की कमीठी नहा माना जा सकता । हाँ एक मुझाव क रूप म ठाक है । इसक अतिरिक्त परम्परा भी किमा काव्य ग्रन्थ को महाकाव्य की मान्यता उमके स्वरूप जाकार प्रकार प्रवृत्ति उद्देश्य नाक प्रतिदि आदि क आधार पर देता है । जन इस दष्टि म भी किमी रचना का महाकाव्य का सना दन क त्रिए सामाज्य काय्यास्त्रीय रक्षण का निवाह या निधाग्ण करना अनिवाय हा जाता है । महाकाव्य की परिभाषा के निश्चय स पूव भारताय एव पाश्चात्य विद्वाना क एतद्विषयक मता की विवचना आवश्यक है ।

भारतीय मत

ससृष्ट कान्यशास्त्र म जाचाय भामह क कायानकार नामक ग्रन्थ म महाकाव्य का परिभाषा दा गया है । उहान काय क पाच भन्—सगबन्ध अभिनयाथ जाख्यायिका क्या और अनिवन्ध—वनात हुए सगबन्ध रचना का हा महाकाव्य क्ता है । जाचाय भामह न अपना परिभाषा म महाकाव्य क कायपक रूप का समाहार करने का प्रयत्न किया है । उनके अनुसार महाकाव्य सगबद्ध रचना है जिसका आकार बडा हाना चाहिए । उमकी क्या का आधार मयान् चरित्र हान ह । अनकारयुक्त अग्रामीण (शिष्ट) भाषा का प्रयोग हाना है । उसम राजन्रवार दून आक्रमण सार् न युद्ध आदि का विस्तृत वणन हाना चाहिए । उसम नाटक की पाचा सन्धिया क साथ-साथ अति व्याख्या

^२ डा० शम्भूनाथमिह हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ० ४३

^३ क्या पृ ६६८

^४ वहा पृ० ३६७ ६८

नही हानी चाहिए। धर्म अथ, काम मोक्ष आदि अनुबग फल प्राप्ति का विधान हाना चाहिए। उसमें नायक का अभ्युत्थ्य हाना है किन्तु अथ पात्र का उत्त्पन्न दिखाने के लिए नायक का वध नष्ट किया जाता है।^५

आचार्य दण्डी ने महाकाव्य का विवचन करते समय भामह द्वारा कहा गयी सभी बातों का अपना परिभाषा में समटा है किन्तु कुछ परिवर्तन भी किये हैं। उन्होंने महाकाव्य के बहिरंग सम्बन्धी नियमों पर भी बल दिया है जन्म वधन विविध्य अलकति चमत्कार आदि।^६ दण्डी की परिभाषा का परवर्ती काव्याचार्यों ने भी अनुकरण किया। उदाहरणार्थ रद्र^७ और हम्चन्द्र

५ सगद्वधा महाकाव्य महता च महच्च तत ।
अग्राम्य शत्रुमध्य च मालकार सनाथयम् ॥
मन्त्र-दूत प्रयाणाजि नायकाभ्युत्थञ्च यत ।
पक्षिभिः सन्धिभिः युक्तं नाति व्याह्ययमृद्धिमत् ॥
चतुर्वर्गाभिधानपि भूय सार्थोपदेशकृत ।
युक्तं लोकस्वभावन रसश्च सकल पृथक् ॥
नायक प्रागुपयस्य वश-वीर्य-श्रुतादिभिः ।
न तस्यैव वध ब्रूयादयात्कपाभिधित्तया ॥

—भामह काव्यालकार, परि० १ १६-२२

६ सगद्वधा महाकाव्य मुच्यते तस्य लक्षणम् ।
आज्ञानमस्त्रिया-वस्तु निदेशा वापि तन्मुखम् ॥
इतिहास-कथादभूतमितरद्वा मनाथयम् ।
चतुर्वग फलायत्त चतुराणां नायकम् ॥
नगराणश्च शलस्तु चन्द्रार्कान्य वधनम् ।
उद्यान सजितं व्रीडामधुपान रतात्सवम् ॥
विप्रनम्भविवाहैश्च कुमारान्य-वधनम् ।
मन्त्रदूत प्रयाणानि नायकाभ्युदयरपि ॥
अलङ्कृतमसक्षिप्त रसभाव निरन्तरम् ।
सार्गेरनिविस्त्रीर्णं श्राव्यवत् सुसन्धिभिः ॥
नवत्र भिन वस्तान्स्पेत लोक-रजनम् ।
काव्य कल्पान्तरस्यापि जायते मदनवृत्तिः ॥
पूतमप्यत्र यं कश्चित् काव्यं न दुष्यति ।
यद्युपानपु सम्पत्तिराराधयति तद् विद ॥

—रद्र काव्यादेश परि० १ १६-२०

७ नत्रात्याये पूव मन्त्रगरा वधन महाकाव्यम् ।
कुर्वीत तन्नु तस्या नायक वश प्रथमा च ॥
तत्र विवगमकन समिद्रशक्ति भयं च सवगुणम् ।
रक्त-ममस्त प्रवृत्तिं विजिगीषु नायकं यस्यन् ॥

की परिभाषा का मन्त्राचार्य क 'रक्षण' का सिद्धांत विवक्षित है। हात ही था का पुनरावृत्ति है। रण्ट न महाकाव्य क विषय म महद्दृश्य महच्चरित महती घटना और समय जीवन का रसात्मक चित्रण आदि चार प्रमुख लक्षण का निर्देश करके अपन दृष्टिकोण की 'यापकता' और 'मौन्यता' का परिचय दिया है। हेमचन्द्र न महाकाव्य का विवक्षित करत समय प्राकृत तथा अपभ्रंश क महाकाव्य का अपन समक्ष रखा था।^८ कविराज विश्वनाथ न महाकाव्य का बड़ी 'यापक' और स्पष्ट परिभाषा था है। उनका समय ईसा का १४वां शताब्दी पूर्वार्द्ध था जत अपने साहित्य-दपण नामक ग्रंथ म उन्होंने पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा निर्देशित समस्त लक्षण का समाहार कर दिया है। उनका महाकाव्य विषयक परिभाषा म निम्नांकित लक्ष्य दृष्टव्य है

- १ कथानक की एतिसामिकता ।
- २ कथावस्तु का सर्गों म विभाजन ।

विधिबन्धपरिपात्रयत् सक्त्वाय च राजवत्त च ।
 तस्य कर्त्तव्यत्पत शरत्तानि वणयत्सममयम् ॥
 स्वाय मित्राय वा घमार्त्ति नायविष्यत्स्तस्य ।
 कुम्भान्निष्वयत्तम प्रतिपक्ष वणशब्द गुणितम् ॥
 स्वचरात्त दूताणां कुम्भापि वा वण्वन्तारि कायाणि ।
 युर्वान सदासि राजा क्षाभ व्राधद्धचित्तगिराम् ॥
 समन्त्रस्यमम सच्चिवनिश्चित्य च दण्ण सायता शत्रा ।
 न दापयप्रयाण दूत वा प्रपयमुत्तरम् ॥
 जय नायक प्रयाण नागरिकाक्षा भजनपदात्ति-नत्वा ।
 अटवा कानन सरसामम् जत्रधि दाप भुवनानि ॥
 स्त-घावार निवश ग्रीडा युना यरायथ तपु ।
 त्यस्तमय मध्या सतमसमवात्स्य शशिन ॥
 रजना च तत्र यूना समाज-भगात्तपान शृगारान् ।
 इति वण यत्पमगात्कथा च भूया निवध्नायात् ॥
 प्रतिनायकमपि तत्तत्तन्निभुत्तम भृष्यमाणमायात्तम ।
 अभिन्त्यात् कायवशाद्गरीरायस्थित वापि ॥
 यादय प्रतिरिति प्रव ध मधुपीति निशि कत्रभ्य ।
 स्ववध विश्वमाना मदेशा दापयत्सुभटान् ॥
 सन्नह्य वृत्त-भूत् सविस्मय युध्यमानवारभया ।
 वृच्छण साधु कुम्भान्भुत्स्य नायकस्यात्ते ॥
 मगाभिधानि चाप्यिन्नवात् प्रकरणानि कुर्वान् ।
 मयानपि मशिनपस्तपाम-योयसवधान् ॥

—रण्ट काव्यालंकार अध्याय १६ ७ १६

^८ हेमचन्द्र काव्यानुशासन अध्याय ८ ६

- ३ नाटकीय सधिया का निवाह ।
- ४ नायक का धार्मिक गुणा स सुवन एवं उच्चकुतान हाना । एत
रक्ष क एकाग्रि गता भी नायक हा मरत है ।
- ५ शृंगार वीर और ज्ञान रमा म म एवं की प्रभुगता एवं ज य रमा
का मनायक हाना ।
- ६ चतुस्र फल प्राप्ति (उम जय काम मान) ।
- ७ सग मर्या जाट म अरि तरा मगत म ह्य एरिपतन क निधम
ता अनुपादन ।
- ८ वाय्याग्म म नमस्कार मगतावर्ण जोशोवचन जाति ।
- ९ मञ्जन स्मृति टुजन निना ।
- १० मया, मूय रजनी प्रणय प्रात मध्याह्न मृगया पवत क्रतु
माग मयाग विप्रतम्भ मुनि स्वग पुर यन यात्रा विवाह
मन्त्रणा पुत्रापत्ति जाति का मागापाग वणन हाना ।
- ११ महाकाव्य का नामकरण कवि कथा कथका नाम पर आधारित
हाना । सर्गों का नाम कथा के आधार पर राना जाति ।

१ महाकाव्य महाकाव्य तत्रका नायक मर ।
मद्वय क्षत्रिया वापि शरान्त गुणान्वित ।
एकवाभवा भूषा कुनजा वरुवापि वा ॥
शृंगार वीर ज्ञानानामवाङ्गी रमा इष्यते ।
अर्गानि सर्वेपि रमा सर्वे नाटक मधय ॥
एतन्माद्भुव वत्तमयदा मञ्जनाथयम ।
चरारस्तम्य वगा स्मृतप्वक च फल भवत ॥
जातौ नमस्विषाशावा वस्तु निशेष एव वा ।
वचित्रिन्ना मन्त्राना मना च गुणवानतम ॥
एत वत्तमय पश्यवमानय वत्तक ।
नानिन्वया नानिन्वा मगा अन्वधिना ॥
नाना वत्त मय ववापि मग वञ्चन दृश्यत ।
सर्गान्त भाविमगम्य इत्याया मूख्य भवत ॥
मध्या मूर्धे रजनी प्रणेपध्वान्त वासरा ।
प्रातमध्याह्न मृगया पवनवन-मागरा ॥
मभाग विप्रतम्भो च मुनिस्वगतपुरावर ।
रण प्रयाणापयममत्र पुत्रायाग्य ॥
वणनाया यथा याग मागापागा जमी ॥
करव तस्य वा नाना नायकम्यनग्य वा ॥
नामास्य सर्गोपायकथया मग नाम तु ।
अस्मिन्नाप्य पुन मगा भवत्यान्प्रात-मन्त्रवा ॥

कविराज विश्वनाथ की उपयुक्त परिभाषा व्यापक अवश्य है किन्तु परिभाषा में मौलिकता की अपेक्षा गहनता की प्रवृत्ति प्रधान है। उन्होंने दण्ड की महाकाव्य विषयक मायताजा को ही गमगामयित महाकाव्य की प्रतिनिधि रूढ़िया के आधार पर मृत्तियोजित वर्णन का प्रयोग किया है। आचार्य विश्वनाथ की परिभाषा का परवर्ती महाकाव्यकारों द्वारा बढूमान हुआ। कविया न मन्त्रवि वनत तथा जपन वायु का महाकाव्य का मना ग सम्बाधित करन के त्रिण विश्वनाथ द्वारा निर्दिष्ट लक्षणा का निर्वाह प्रारम्भ कर लिया। आज (वामना गतात्मी) तक क महाकाव्या म साहित्य-रूपणकार द्वारा लिये गये लक्षणा का निवाह हाता है। हिन्दी मन्त्रवायु त्रिपयक अधिकांश समालोचनाओं में इन लक्षणा का आधारमान के रूप में स्वीकार भी किया गया है। किन्तु यह मन्त्रवा उपयुक्त नन्ही है क्योंकि अधिकांश महाकाव्य हिन्दी साहित्य के विकास का मूलस्त्रात प्राकृत अपभ्रंश साहित्य था। साहित्य शास्त्र के क्षेत्र में हिन्दी के जात्राचका न मन्त्रुत साहित्यशास्त्र का अनुकरण किया है। हम सम्बन्ध में डा शम्भूनाथमिन् का यह कथन उत्तमवनीय है कि— यह हिन्दी-साहित्य का दुभाग्य रहा कि यद्यपि उसका अधिकांश मूल्यवान साहित्य का मूल स्त्रात प्राय प्राकृत अपभ्रंश का साहित्य था पर उसका साहित्य शास्त्र प्रारम्भ स हा मन्त्रुत साहित्यशास्त्र का अधानुकरण करता रहा है। इसका यह जय नन्ही कि हिन्दी-साहित्य पर मन्त्रुत साहित्य का प्रभाव पडा ही नन्ही है। वन्त अधिक् पन्ना ह पर उसका महज विकास मन्त्रुत की ओर स नन्ही प्राकृत-अपभ्रंश की आर म हुआ है। अत हिन्दी के काव्यरूपा का विवचन प्राकृत अपभ्रंश के आधार पर विषय रूप से होना चाहिए बवल मन्त्रुत के अन्वकारशास्त्रा के आधार पर नन्ही। मन्त्रवायु की जो परिभाषा मन्त्रुत के आचार्यों ने ली है वह मूलत मन्त्रुत के महाकाव्या को देखकर बनायी गयी है। यह बात दूसरी है कि किसा किमी न प्राकृत अपभ्रंश के मन्त्रवायु की कुछ उपरी वाता का चर्चा कर दी है।^१ निष्कपत यह कहा जा सकता है कि मन्त्रुत आचार्यों द्वारा लिये गये महाकाव्य विषयक लक्षणों का प्रमुख आधार उनका युग में प्रतिनिधि महाकाव्य थे। मन्त्रुत आचार्यों की महाकाव्य सम्बन्धी परिभाषाओं में महाकाव्य के बाह्य रूप पर विशेष बल दिया गया है। यद्यपि उनके द्वारा परिभाषित लक्षणा का निर्वाह आज के महाकाव्यकार भी जपती वृत्तिया में कर रहे हैं किन्तु अधिकांश उपक्षित प्राय हा गये हैं। उन्हाहरणाय

^१ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ० ५६

महाकाव्य उच्चकुलीन नायक का पत्रिकल्पना संग सख्या मगान छत्र परिवर्तन आदि नियमा का अनुपालन आधुनिक युग के हिन्द महाकाव्य में नहीं हुआ है।

पारचात्य मन

पारचात्य साहित्य शास्त्र में महाकाव्य का एपिक (Epic) कहा गया है। एपिक शब्द एपाम (Epos) से बना है जिसका अर्थ है—कवि। वास्तव में एपाम का प्रयोग गीत के लिए होने लगा और अन्त में वह काव्य के लिए प्रयुक्त हुआ।

संसार के प्रायः सभी भागों में साहित्य का प्राग्भिक युग ही युग रहा है। इस युग के साहित्य में वीर-गाथाओं का मूलन हुआ है। इन वीरगाथाओं में वीरों के अत्यन्त पराक्रम जिनके एक शौर्य का प्रशंसा की गया है। वीर युग मध्य और युद्ध का काल था जिसमें युद्धों का आवाजन उत्सवों की भाँति होता था। अंग्रेजी काल में महाकाव्य का रीज प्रथम प्रारम्भ होता है। अंग्रेजी वीर गाथाओं का विकास वीर-कृतियाँ (कवि-कृतियाँ) में हुआ। इन्हीं में कवि के अन्तर्गत कलात्मक और विकास-काल (Epic of Art and Epic of Growth) महाकाव्य का विकास हुआ। महाकाव्य के स्वल्प विरासत के अध्ययन से हमें पता चलता है कि वीर-काव्य का विकास काल के अन्तर्गत महाकाव्य में हुआ। विशेष में सभी आरम्भिक महाकाव्यों में वीर भावना का ही चित्रण मिलता है। डा० जम्भूनाथ मिहले ने यूरोपीय महाकाव्यों के विकास की चार अवस्थाओं का वर्णन किया है। उनके अनुसार—

पहली अवस्था वीर भावना का दूसरा शास्त्रात्मक धार्मिक और नैतिक भावना की तृतीय रामात्मक भावना का और चौथी स्वच्छन्दता वाली भावना की। पहली अवस्था का महाकवि हामर, दूसरी के कवि जॉन मिल्टन आदि तृतीय के स्पेंसर एरिज़ाम्पा टमा आदि, और चौथी के गेट, टनीसन, ब्राडिंग विल्टर ह्यूगा हार्डी आदि हैं।

युक्त अथवा एपिक की भूमिका में तो महाकाव्य का परिभाषा ही इस लक्ष्य का उद्देश्य बनकर ही पद्य है— एपिक प्रधान रूप से उन वीरों में प्रधान कथात्मक काव्य का नाम है जिसमें अष्ट काव्य के सभी गुण ही जन्म मुक्त रूप और सहाय वियोग का चित्रण तथा रीति तत्त्वा और कथा-तत्त्वा का मिश्रण आदि है। जिसमें स्वाभाविक ज्ञान के मनोद्वारी चित्र और घात

प्रतिघात वर्णित है और जिगम गार तत्त्वा वा प्रवृत्त ममत्व इग कुशलता ग किया गया हो कि वह रचना मन्त्राव्य क विषय अमर हो जाय ।^{१२} अन्तु स्पष्ट है कि पाश्चात्य साहित्यशास्त्रियों ने मन्त्राव्य का स्वल्प निर्माण करने समय वाक्य का उक्षीभूत किया था ।

पाश्चात्य विद्वानों ने मन्त्राव्य का विवचन किया है । उनका विवचन का आधार 'नियम' और 'जात्मा' नामक मन्त्राव्य है । पार्वटिक नामक ग्रन्थ में मन्त्राव्य का जो विवचन किया गया है यद्यपि उस विवचन के आधार-ग्रन्थ 'नियम' और 'जात्मा' जगद्विकसनशास्त्र मन्त्राव्य ही प्रस्तावित है किन्तु वे उभय किमा मीमांसक अनवृत्त महाकाव्य पर भी लागू मानते हैं । अरस्तु द्वारा निर्दिष्ट मन्त्राव्य के उभयों की व्यापकता का सर्वप्रथम प्रमाण यही है कि पाश्चात्य मन्त्राव्यायानाचारा का उनमें से अतिरिक्त उभयों आज भी मान्य है । अरस्तु के मन्त्राव्य विषयक विवचन का सांगणिक इम प्रकार है

- १ मन्त्राव्य भी काव्य की भाँति किसी पूर्ण गम्भीर और उन्नत वाय यापार का अनुकूलि हाती है ।
- २ महाकाव्य कथामक काव्य है जिसका कथानक एतित्थमिव हो सरता है । मन्त्राव्य के कथानक में गुरु गम्भीर सयाजना होती है । कथानक में अतिप्राकृत तथा अनौचित्य रत्त्वा^{१३} का मिश्रण तथा अमम्भव वाता का वर्णन रत्ता है ।^{१४} महाकाव्य का कथानक नाटक की भाँति अवितिपूर्ण होना चाहिए यद्यपि नाटक में मन्त्राव्य के कथानक का आकार बन्ना हाता है और बन्ना

^{१२} विदेशी के महाकाव्य, अनुवाक गापीवृत्त गापेश भूमिका पृ० १३

^{१३} The surprising is necessary in tragedy but the epic poem

I A Moxon

^{१४} The poet should prefer impossibilities which appear pro

kind or if he does it it should be exterior to the action it self

—Ibid p 50

होना स्वाभाविक है; ^{१५} कथानक म आदि, मध्य और अन्त होना चाहिए ।

- ३ महाकाव्य म आरम्भ स अन्त तक एव हा छन्द का प्रयोग होता है । यह छन्द षट्पदी (hexametre) है । वीरकाव्या म इम छन्द का व्यवहार उपयुक्त भी है ।
- ४ त्रासनी (tragedy) और महाकाव्य की तुलना करते हुए पात्रा क बारे म अरस्तु न लिखा है कि जहा तक शब्दा क माध्यम से महान् चरित्रा और उनके कार्यों क अनुकरण का सम्बन्ध है महाकाव्य और त्रासनी म समानता पाया जाती है । अर्थात् पात्र महान हान चाहिए । ^{१६}
- ५ महाकाव्य म जीवन की सम्पूर्णता का चित्रण होता है । अत महाकाव्य के कवि को अपनी सशक्त कल्पना द्वारा जीवन क विविध व्यापारा का वर्णन करना चाहिए ।
- ६ महाकाव्य की भाषा का चयन मुल्त होना चाहिए । महानाव्य चाहे सरल हा या जटिल किन्तु भावनाओं को साकार करन का शक्ति भाषा म अवश्य होनी चाहिए ।
- ७ अरस्तु की मायता थी कि काव्य का उद्देश्य मुख्यत अनुकृति द्वारा जानन की उपनधि कराना है । अत महाकाव्य का भा यही उद्देश्य होना चाहिए ।

अरस्तु के अनिश्चित महाकाव्य क सम्बन्ध म अय पाश्चात्य विद्वाना न भी विचार किया है । पच विद्वान ला बस्सु (Le Bissu) के अनुसार—
महाकाव्य प्राचीन घटनाओं का छन्दोमय रूप है । ^{१७}

लाइ बस्सु क अनुसार—'महाकाव्य वाग्तापूण कार्यों का उन्नत शरी म किया गया वर्णन है । ^{१८}

^{१५} But the epic imitation being narrative admits of many such simultaneous incidents properly related to the subject which swell the poem to a considerable size —Ibid p 48

^{१६} Epic poetry agrees so far with tragic as it is imitation of great characters and actions by means of words —Ibid p 13

^{१७} Le Bissu defined epic as 'a composition in verse intended to form the manners by instructions disguised under the allegories of an important action
—Quoted by M Dixon *English Epic and Heroic Poetry* p 2

^{१८} As to the general taste there is a little reason to doubt that a work where heroic actions are related in an elevated style will without further requisite be deemed an epic poem' —Ibid, p 18

हास्य ने क्यात्मक कविता का महाकाव्य कहा है।^{१६} इस सभी परिभाषाओं में महाकाव्य के बाह्य स्वरूप पर ही अधिक विचार किया गया है।

वर्तमान काल में भी अग्रजी के समानोचरता में महाकाव्य का स्वरूप विवेचन किया है। सुप्रसिद्ध समालोचक वावरा ने महाकाव्य की परिभाषा इस प्रकार की है— सबसम्मति से महाकाव्य वह क्यात्मक काव्य रूप है जिसका आकार बृहत् होता है। जिसमें महत्त्वपूर्ण और गरिमायुक्त घटनाओं का वर्णन होता है और जिसमें कुछ चरित्रों की क्रियाशील जीवन-कथा होती है। उमक पत्ने के बात हम विशेष प्रकार का जानल प्राप्त होता है क्योंकि उनकी घटनाएँ और पात्र हमारे भीतर मनुष्य की मानना गौरव और उपनयिया के प्रति दल आम्हा उत्पन्न करते हैं।^२ इनकी परिभाषा में महाकाव्य की जान्तरिक यास्या बनी स्पष्ट हुई है किन्तु बाह्याकार के सम्बन्ध में कोई स्पष्टीकरण नहीं है। एवरक्राम्बी का महाकाव्य विषयक परिभाषा इस प्रकार है— बृहत् आकार के कारण ही कोई काव्य महाकाव्य नहीं बन सकता है। महाकाव्य की शली हा उस महाकाव्य बना सकती है। और वह गली कवि की कल्पना विचारधारा तथा उसकी अभिव्यक्ति से जुड़ी रहती है। इस शरीर के काव्य में उस लोक में पहुँचा देते हैं जहाँ कुछ भी महत्त्वपूर्ण और अमारगभिन नहीं रह जाता है। महाकाव्य के भीतर एक पुष्ट स्पष्ट और प्रताकारमक उद्देश्य होता है जो उसकी गति का आद्यतन मचानन करना है।^{२१}

^{१६} The heroic poem narrative is called an epic said Hobbes the heroic poem dramatic is tragedy —Ibid p 22

^२ An epic poem is by common consent a narrative of some length and deals with events which have a certain grandeur and importance and come from a life of action especially of violent action such as war. It gives a special pleasure because its events and persons enhance our belief in the worth of human achievement and in the dignity and nobility of man —C M Bowra *From Virgil to Milton* p 1

^{२१} What epic quality detached from epic proper do these poems possess them apart from the mere fact that they take up great many pages? It is a simple question of their style—the style of their conception and the style of their writings the whole style of their imagination in fact. They take us

महाकाव्य के सम्बन्ध में प्रा टिलीयाड न भी विस्तार से विचार किया है। उनका मत है कि हमारे पास मूल्यांकन का कोई निश्चित मानदण्ड नहीं है कि जमुक रचना महाकाव्यात्मक प्रभाव से युक्त है या नहीं।^{२२} महाकाव्य को कुछ अनिवाय विक्षेपताएँ ही होती हैं जिनके आधार पर उनका निणय किया जा सकता है। उहान महाकाव्य के लिए जिन आवश्यकताओं का उल्लेख किया है वे संक्षेप में इस प्रकार हैं

- १ महाकाव्य उत्तम गुणा से युक्त गम्भीर रचना है।^{२३}
- २ महाकाव्य व्यापक विविधो मुख्या और मर्यादीण जीवन का चित्रण होना चाहिए।^{२४}
- ३ महाकाव्य की तीसरी आवश्यकता व्यापक मानवीय विश्वासा और भावनाओं का सम्यता और मस्तिष्क के अनुसूच्य चित्रण होना चाहिए।^{२५}
- ४ महाकाव्य की चौथी आवश्यकता यह है कि उसमें समकालिक जीवन तथा जनसमूह की भावनाओं तथा उद्गारा का अभिव्यक्ति के अमोघ शक्ति होनी चाहिए।^{२६}

^{२२} We donot find any principle to guide us in deciding whether this or that work does or does not give the epic impression —E M W Tillyard *The English Epic and its Background* p 3 (London 1954)

^{२३} The first Epic requirement is the simple one of high quality and of high seriousness —*Ibid* p 5

^{२४} The second Epic requirement can be roughed out by vague words like amplitude breadth inclusiveness and so on as (Aristotle directs us to greater amplitude in the epic that ability to deal with more sides of life which differentiate it from tragic drama) —*Ibid* p 6

^{२५} The third Epic requirement has been hinted already though what I said about fortuitous concatenations —*Ibid* p 6

प्रा० टिलीयाड ने इस मन्त्रव्य को इस प्रकार स्पष्ट किया है
This exercise of will and belief in it (*Paradise Lost*) which are a corollary of our third Epic requirement help to associate epic poetry with the largest human movements and solidest human institutions In creating what we call civilization the sheer human will has had a major part

^{२६} The fourth Epic requirement can be called choric The Epic must express the feeling of a large group of people living in or near his own time The notion that Epic is primarily patriotic is an unduly narrowed version of this requirement

- ५ सच्चे अर्थों में महाकाव्य कही जा सकती रचना में वीर भावना की प्रभावमिव्यक्ति होनी चाहिए ।^{२७}
- ६ जहाँ तक महाकाव्य के विषय विधा का सम्बन्ध है महाकाव्यकार का जीवन की सर्वांगीणता का व्यापक अनुभव और विस्तृत पाठ होना चाहिए ।^{२८}

एक प्रकार प्रा० टिलीयाड ने अपने महाकाव्य विषयक विवेचन में महाकाव्य के वास्तव में आध्यात्मिक दाना पक्ष पर ध्यान दिया है । उनकी परिभाषा आज के महाकाव्यों पर भी पूर्णतः लागू होती है । आज का महाकाव्यकार प्राचीन ऋद्ध और काव्यशास्त्रीय लक्षणा का निर्वाह जाग्रदभूत नहीं करता है । प्रा० टिलीयाड के विवेचन में काव्य के उत्कृष्ट गुणों और सर्वांगीण जीवन के चित्रण पर विशेष ध्यान दिया गया है जो युगानुरूप है । समस्त रूप से विभिन्न पाश्चात्य आचार्यों ने महाकाव्य विषयक जो मत प्रकट किये हैं उनका सारांश इस प्रकार है

- १ महाकाव्य वीरकाव्य (Heroic Poetry) है ।
- २ महाकाव्य का कथानक तार्किक और महत्त्वपूर्ण होना चाहिए । उसमें जानिय जीवन का व्यापक चित्रण होना चाहिए ।
- ४ महाकाव्य का नायक जमाघाटन प्रतिभा और यत्नित्व सम्पन्न व्यक्ति होना है । उसमें शौर्य वीर्य और पराक्रम आदि गुणों का

We can simplify even further and say no more that the Epic must communicate the feeling what it was like to be alive at time. But that feeling must include the condition that behind the Epic author is a big multitude of men whose most serious convictions and dear habits he is mouthpiece.

—*Ibid* p 12

- २७ I want to insist that true Epic creates a Heroic impression.

—*Ibid* p 10

- २८ As to contents the writer must seem to know everything before his mission to speak for a multitude can be ratified. He must also span a corresponding width of emotions if possible one embracing the simplest sensualities at one end and a sense of the numinous at the other. But while in the large area of the life the Epic writer must be counted in normal he must measure the crooked by the straight he must exemplify the sanctity that has been claimed for true genius. Only of this condition will the community trust him and allow him to speak for them. —F M W Tillyard *The Epic Strain in English Novel* p 16

हाना अनिर्वाह है। अन्ततोगत्वा वह काव्य य विजयी चित्रित किया जाता है। उसका व्यक्तित्व म गण्य जावन का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व होता है।

- ५ महाकाव्य म घटना बाह्य और वणन बहिर्मुख होता है। अतः वस्तु सकलन म शिथिलता जा जाती है। कथानक म समृद्धि ता होता है किन्तु नाटका जमी अति का अभाव होता है।
- ६ महाकाव्य की भाषा जोड़पूण होती है। उमम जानीय जीवन क आदर्शों का व्यञ्जना का पूण शक्ति और सामर्थ्य हानी चाहिए। जना गरिमापूण तथा एत हा छन्द का प्रयोग होना चाहिए।
- ७ महाकाव्य का रचयिता महान् प्रतिभा-सम्पन्न मधावा कलाकार होता है। उमम विराट कल्पना शक्ति और विनक्षण काव्य-कौशल होना चाहिए।
- ८ महाकाव्य का उद्देश्य महान् होता है। अर्थात् शाश्वत जीवन मूल्या का प्रतिष्ठा। उपाहरण क लिए असन पर सत् का विजय। महाकाव्य मम सामयिक जावन का प्रेरणा का स्रोत होना चाहिए।

पाश्चात्य और पौरात्य काव्यादर्शों की तुलना

यह पहल कहा जा चुका है कि प्रथम दश क साहित्याचार्या न महाकाव्य क उद्देश्य निर्धारित करन समय पूर्व प्रचलित महाकाव्या का हा लक्ष्य ग्रन्था क रूप म स्वीकार किया था। "मक अतिरिक्त आरम्भन गान क सभा दाना क महाकाव्या म भा सामान्य प्रवृत्तियाँ पाया जाता है कर्नाति विश्व भर क महाकाव्या क मूल स्रोत की खोज मानव जाति क आदिम साहित्य क भीतर म की जाती है।^{२६} यकी कारण है कि महाकाव्य विषयन पाश्चात्य और पौरात्य आचार्यों की आधारभूत मायताया के सम्प्र ध म विशेष अन्तर प्रकृत नहीं होता है। दाना हा दशा क विचारक महाकाव्य को काव्य का मन्त्रत्वपूण रूप मानत हैं। दाना ही मानत है कि महाकाव्य म महान् काव्य और व्यापक विषय वस्तु होती है। महाकाव्य का कथा पौराणिक गतिज्ञासिक जयवा लान विभूत हानी चाहिए। महाकाव्य की घटनाया और कर्णों क सम्बन्ध म भारतीय दृष्टि म कोई प्रतिबंध नहीं, इमीनिष्ठ भारतीय महाकाव्या का घटनाएँ जनक वर्षों की होनी ह जबकि पाश्चात्य दशा क महाकाव्या म काव्य का अवधि कुछ दिन की भी होना है। जम इतिहास और जातीय काव्या कुछ दिन का ही है।

महाकाव्य के नायक व सम्बंध में पात्रों के दृष्टिकोण समान हैं। महाकाव्य का नायक उदात्त गुणा से सम्पन्न आत्मश और चरित्रवान् होना चाहिए। नायक के व्यक्तित्व में जातीय जीवन और सांस्कृतिक आत्मश के प्रतिनिधित्व की क्षमता होनी चाहिए। भारतीय महाकाव्यों में जाणश चरित्र की धारणा के मूत्र में नक्ष्य की महानता अंतर्भूत है। नायक के व्यक्तित्व में वह शक्ति शील और शीघ्र हाना चाहिए जो असत और अमानवीय प्रवृत्तिया का शमन करे। नायक का कृतित्व जीवन के स्यापी मूल्या (सत्त्व शीत नय शान्ति व्यवस्था जाति) का संस्थापक हाना चाहिए। धार संघर्ष के बाव भी महाकाव्य में अन्तत नायक की विजय हानी चाहिए। पाश्चात्य देश के महाकाव्यों में हम नायक का चारित्रिक पनन और हनन भा पाते हैं अत स्पष्ट है कि नायक की चारित्रिक उच्चता पर वहाँ इतना बल नही दिया जाता है।

महाकाव्य की भाषा संशुद्ध और शली गरिमापूर्ण हाना चाहिए। भाषा शाना में काव्य के प्रतिपाद्य का यजिन करन की शक्ति और क्षमता हाना चाहिए। वणना का विविधता का दाना न ही माना है। छंद विधान के सम्बंध में पाश्चात्य समीक्षका न महाकाव्य में जाद्यात एक ही छन्द के प्रयोग पर बल दिया है जबकि भारतीय महाकाव्यों में एक संग में एक ही छन्द का प्रयोग उचित माना गया है। संस्कृत के कुछ आचार्यों ने संगत में छंद परिवर्तन का उदत्तल किया है।

जति प्राकृत तत्त्वा और अनीकिक शक्तिया का समावेश भी उचित माना गया है। दवी शक्तिया और नियति के बारे में भी सहमति है। किन्तु पाश्चात्य दशा के महाकाव्यों में जहा भूत प्रत दत्य दानव देवता जादि प्रत्यक्ष पात्रा के रूप में कथा में जाय है वहाँ भारतीय महाकाव्यों में देवता अवतार ग्रहण करके अप्रत्यक्ष रूप से जाय है।

पाश्चात्य महाकाव्यों में धार भावना पर बल दिया गया है। युद्ध की घटनाओं और संघर्षों में ही वहाँ के महाकाव्यों में प्रमुख स्थान पाया है। यही कारण है कि पाश्चात्य दशा में महाकाव्य (Epic Poetry) वार काव्य (Heroic Poetry) का पयाय रहा है। बस प्रारम्भिक महाकाव्यों में युद्ध ही सर्वप्रधान तत्त्व रहा है। किन्तु भारतीय महाकाव्यों में शृंगार वार और शांत मन ताना में से एक रस का प्रधानता और अन्य सब रसा का वणन भी जगा रूप में स्वीकार किया गया है। पाश्चात्य महाकाव्यों में भौतिकतावादी संस्कृति की अनिवाय विणपताएँ ही संघर्ष के और युद्ध की अवधारणा का मूत्र कारण हैं। भारतीय संस्कृति की त्याग और धराम्य

भावना ने महाकाव्या में नीति सत्त्व और नीति तत्त्वा का प्रमुखता दी है। इसलिए हमारा यहाँ ब महाकाव्या का उद्देश्य धर्म अथवा काम और मोक्ष अर्थात् चतुर्वर्ग फल प्राप्ति माना गया है। रामायण और महाभारत जस महाकाव्या में युद्ध की रक्त रजित गरिमा से विराटत्व का स्थापना हुई है, किन्तु युद्ध नाति यहाँ धर्म नीति में ही अन्तत बदला है। हमारा यहाँ युद्ध धर्म (कुरुक्षेत्र) भा धर्म क्षेत्र ही रहा है। महाभारत का कर्त्र विदु भारत युद्ध में होकर गाता ब सत्य जयत नानत उपदेश में सन्निहित है। रामायण में भा राम रावण का सघप मानव की दानवीय जीर दकीय प्रवृत्तिया का सघप है जीर फिर सघप प्रमुख नहा सघप का परिणाम जयात् असत पर सत की अनाति पर नीति का अधम पर धर्म का विजय प्रमुख और महत्त्वपूर्ण है। हमारे महाकाव्या में प्रतिपादित शाश्वत जीवन मूल्य भोग योग और वय है। वय, कर्त्तव्य भावना से युक्त, याग त्याग निष्ठा से युक्त और भाग, धर्माचरण में है। यही कारण है कि भारतीय महाकाव्या में जीवन दर्शन का एक व्यवस्थित रूप मिलता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकाव्य का जाचारभूत मायताओं में यथा— कथा-मयोजन चरित्र सृष्टि वर्णन वविध्य, छत्र विधान भाषा शता का गरिमा जानीय जीवनान्शों की प्रतिष्ठा समग्र जीवन चित्रण एक उद्देश्य का महानता आदि की दृष्टि में पश्चात्य और पौर्याय दृष्टिमा में समानता है। महाकाव्य के एक साहित्यालाचक दिव्यन ने महाकाव्या का मौलिक समानताओं का दलकर हा कहा था कि— महाकाव्य (वीरकाव्य) सधत्र एक हा प्रकार का हाता है। वह चाहे पूव का हा अथवा पश्चिम का, उत्तर का हा अथवा दक्षिण का उमका रक्त और प्रकृति समान हात है। सच्चा महाकाव्य कहा भी लिखा जाय वह एक कथात्मक काव्य होता है, उममें महान् चरित्र जीर मगान् काय होत हैं उमका शली विषय की व्यापकता ब अनुकूल हाती है। जिसका प्रयास चरित्रा और कायों का आत्म रूप में चित्रित करके घटनाओं और वर्णना ब द्वारा कथात्मक चरित्र की अभिवृद्धि करना हाता है।³⁰

³⁰ Yet Heroic Poetry is one, whether of East or West the North or South its blood and temper are the same and the true Epic wherever created.

पाश्चात्य और भारतीय काव्याचार्यों द्वारा निम्नलिखित महाकाव्य लक्षणा व तुलनात्मक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचा हैं कि भारतीय आचार्यों ने महाकाव्य के बहिरंग पक्ष पर अपन विवचन में अधिक ध्यान दिया है। उनकी दृष्टि में महाकाव्य में कलात्मक औन्नत्य अधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। अन्तरंग का दृष्टि से उन्होंने रस निरूपण का पर्याप्त माना है। इस प्रसंग में डॉ० माना प्रसाद जी गुप्त का यह कथन उचित है कि— महाकाव्य की परम्परा को देखने से पता चला कि हमारे यहाँ के साहित्य शास्त्रियों का ध्यान निरूपण उसके आकार प्रकार व विषय में रहा है उसकी अन्तरात्मा के विषय में नहीं।³¹ तुलनात्मक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर भी पहुँचते हैं कि महाकाव्य पर विचार करते समय आचार्यों ने पूर्ववर्ती एवं समकालीन महाकाव्यों का अध्ययन किया था। यहाँ कारण है कि प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा निम्नलिखित लक्षणा के निरूपण पर आज के महाकाव्य पर नहीं उतरते और सम्भव है कि आधुनिक मान्य लक्षणा के आधार पर भविष्य में महाकाव्य का स्वरूप निर्णय नहीं हो सके। महाकाव्य का स्वरूप कभी भी एकसा नहीं रहा है। युग जावन और समाज की परिस्थितियाँ एवं परम्पराओं के अनुसार महाकाव्य की परिभाषा बनती और बदलती रही है। हिन्दी महाकाव्य के अध्ययन-अनुशीलन से पूर्व हिन्दी के विद्वानों के महाकाव्य विषयक विचार और परिभाषाओं का समय-समय पर समीक्षण होगा।

आधुनिक हिन्दी समीक्षकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने महाकाव्य के स्वरूप पर विभिन्न महाकाव्यों (यथा रामचरितमानस पञ्चावत आदि) का समाक्षा करते हुए सविस्तार विचार किया है। उन्होंने महाकाव्य के कवन चार तत्त्वों का महत्त्व दिया है—इतिवत्त वस्तु-व्यापार-वर्णन भाव-व्यङ्गना तथा सवात्। उनके अनुसार महाकाव्य का इतिवत्त व्यापन और सुसंगठित होना चाहिए। उसमें एसा वस्तुओं और व्यापारों का चित्रण होना चाहिए जो हमें आनन्दित कर दें। भाव-व्यङ्गना इनकी विशेषता है और सुष्ठु ही जा रसानुभूति में सहायक एवं पूर्ण समर्थ है। सवात् रोचक नाटकीय और आश्चर्यपूर्ण होने चाहिए। कवन का न पराश्रय रूप में सत्ता का महानता एवं शक्ति का प्रोढ़ता का भाव महाकाव्य का प्रमुख लक्षण माना है। किन्तु शुक्ल जी द्वारा निरूपित महाकाव्य के लक्षण अनेक नवान महाकाव्यों पर लागू नहीं होते हैं।³² शुक्ल जी ने महाकाव्य के व्याख्याकार पर अनेक अधिक ध्यान दिया

³¹ तुलसीदास पृ ६६ नृताय संस्करण १९५३

³² राजनाथ शर्मा साहित्यिक निबंध (संस्करण १९६१) पृ० ६००

है निःव्यक्ति गाम्भाय एव भाव मुपमा स परिपूर्ण कुरक्षत्र और कामायना' जम नवीन महाराज्या पर नों य लक्षण लागू नहा हात ।

डा० श्याममुत्तरदास न महाराज्य का विवेचन करत समय उसम महत् उद्देश्य, उद्गत जाशय सम्कृति क चित्रण जाति का उल्लेख किया ह । उन्हा क शब्दा म— महाकाव्य म एक महत् उद्देश्य का हाना आवश्यक ह । सस्कृत क साहित्यशास्त्रिया म महाकाव्य क जाकार प्रकार और वषण विषय क सम्बन्ध म बन्ध जतिव और दुम्ह व्याख्याण की गयी हैं जिनका आधार नकर निरुक्त म बहुत म महाकाव्या क शरार अथ मघटित हो गय ह पर उतम स बहुत जाये म एम है जा आत्मा क किमा उद्गत जागय सम्पता क किमा युग प्रवृत्तक सघष अथवा समाज का किमा उद्भवजनक स्थिति का सरर किसी प्रकारण विचारक या कवि शरार निरुक्त गय है जिह जाताय इतिहास म अनिवाय स्थान सुनन हा सक । रामायण महाभारत रामचरितमानस जाति का काटि क सच्च महाकाव्य शताश्रिया म न एम निरुक्त जात ह ।³³

डा० श्याममुत्तरदास जा क परिभाषा का मवम महत्त्वपूर्ण अंश बहु है जिमम उद्गत महाकाव्य का विषय-आमा का उद्गत जाशय सम्पता या सस्कृति के सघष तथा समाज का उद्भवजनक स्थिति का अवतारणा माना है । आज क मन्त्राज्या का कसौटा का एक आवश्यक अंग उपयुक्त विवेचन हा हाना चाहिए क्याकि युग जावन क सघष की व्यजना नो काम्बन्ध म महाकाव्य का उद्गतम जाशय है ।

डा० गुलाबराज जा क मतानुसार— मन्त्राज्य बहु विषय प्रधान काव्य ह जिमम कि अपक्षरित बन् जाकार म जाति म प्रतिष्ठित आर लाकप्रिय नायक क उद्गत कार्यो द्वारा जानीय भावनाजा आश्रयो और आकाक्षाया का उद्घाटन निमा जाता है ।³⁴ वाकू जो का इस परिभाषा म जाताय जावन क चित्रण तथा नायक क कार्यो का महानता पर बन् लिया गया है ।

आचार्य नर दुर्गा प्रजियया जो न साकत क महाकाव्यत्र पर विचार करत हुए महाराज्य क वर्णना का उद्गत म प्रकार किया है— महाकाव्य क नान प्रमुख वर्णन मान जा सरर ³⁵ । प्रथम रत्नत कर प्रवृत्तमर का मगवद्ध शाना । शिवाय उमका शरार का गाम्भाय और तृतीय उमम वर्णित विषय का व्यापनता आर महत्त्व । इनर अनिर्विकन भी अय उपनियम हा

³³ साहित्यलोचन (१ वां मस्करण स० ०१४) पृ० ६८८५

³⁴ काव्य क रूप (चतुर्थ मस्करण) पृ० ८६

सकते हैं किन्तु मैं उनका समावेश इन्हा तान लक्षणा में करना चाहूँगा।^{३५} इस विवेचन में वाजपयी जी ने सामान्यतः महाकाव्य के मूलप्रमुख अंगों का लक्षणा का ही उल्लेख किया है।

डा० नगेश्वर कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार करते हुए महाकाव्य रचना के आधारभूत तत्त्वों का विवेचन एक प्रकार किया है— मैं महाकाव्य के उन्हा मूल तत्त्वों को चार चरणाओं में बाँटकर सापेक्ष नहीं है जिनमें अभाव में किसी भाँद में अथवा युग की काँ रचना महाकाव्य नहीं बन सकता और जिनके अभाव में परम्परागत शास्त्रों में लक्षणा की बाधा हान पर भी किसी वृत्ति का महाकाव्य के गौरव में बर्चित नहीं किया जा सकता। ये मूल तत्त्व हैं—(१) उन्हा कथानक (२) उन्हा काय अथवा उद्देश्य () उन्हा चरित्र (५) उन्हा भाव और उन्हा शरीर अर्थात् जीवित ही महाकाव्य का प्राण है।^{३६} डा० नगेश्वर द्वारा उल्लिखित तत्त्व महाकाव्य रचना के अनिवार्य और अपरिहार्य तत्त्व हैं। इनके अभाव में महाकाव्य की रचना पूरा और साधक नहीं हो सकती। हमें अतिरिक्त डा० नगेश्वर द्वारा निर्दिष्ट लक्षण महाकाव्य रचना के स्थायी मानकों भी स्वीकार किये जा सकते हैं। अस्तु इन तत्त्वों का महाकाव्य के मूल में और समावेश दोना ही दृष्टियाँ में महत्त्व है।

हिन्दी महाकाव्य के स्वरूप विराम एक प्रवृत्तियाँ जाँ पर शाघ करन वान कतिपय विज्ञानों में भाँ महाकाव्य का परिभाषाएँ हैं। डा० प्रतिपार्थसिंह के शब्दों में— महाकाव्य वान विषय प्रधान रचिरे रचना है जिसमें जाताय मस्कृति के किसी महाप्राह संम्यता के उन्हा मगम युग प्रवतक मघप महच्चरित्र के विराट उन्हा समाज का उन्हाजनक स्थिति आत्मा के किमी उन्हा जाशय अथवा रहस्य का उन्हाटन किया जाव।^{३७} डा० प्रतिपार्थसिंह की परिभाषा में डा० श्याम सुन्दरनाम की परिभाषा की ही सामान्यतः पुनरावृत्ति हुई है।

डा० शम्भूनाथसिंह के अनुसार— महाकाव्य वह उन्हावद्ध कथात्मक काव्य रूप है जिसमें क्षिप्र कथा प्रवाह या अनकृत वणन अथवा मनावज्ञानिक चित्रण में यवन एमा सुनियोजित सागापाय और जावन लम्बा कथानक होना

३५ आधुनिक साहित्य (द्वितीय संस्करण) पृ० १६१-१०७

३६ डा० नगेश्वर के सवदृष्ट निबंध सम्पादक—भारतभूषण अग्रवाल पृ० १२५

३७ बीसवीं शताब्दी पूर्वार्ध के महाकाव्य पृ० १६

है जो रसात्मकता या प्रभावाम्बुधि उत्पन्न करने में पूर्ण समर्थ जाता है जिसमें यथाय कल्पना या सम्भावना पर आधारित एक चरित्रों व महत्त्वपूर्ण जीवन वृत्त का पूर्ण या आंशिक चित्रण होता है जो किसी युग के सामाजिक जीवन का किसी-ने किसी रूप में प्रतिनिधित्व करता है और जिसमें किसी महत्प्रेरणा से परिचालित होकर किसी महद्दुःख की निम्न व निम्न जिसे महत्त्वपूर्ण गम्भीर अथवा आश्चर्योत्पादक और स्वयंसेवक घटना या घटनाओं का आशय लेकर मण्डित और समन्वित रूप से जाति विशेष और युग विशेष के समस्त जीवन के विविध रूपांशों का मानसिक अवस्थाओं अथवा नाना रूपात्मक कार्यों का वर्णन और उद्घाटन किया गया रहता है और जिसका शरीर धनी उत्पन्न गरिमामय होती है कि युग युगान्तर में उम महान्याय का जीवित रहने की शक्ति प्रदान करता है।^{३५} डा० चम्भूनाथसिंह का परिभाषा यद्यपि बहुत विस्तारपूर्ण है किन्तु उम महान्याय के सभी तत्त्वों के समाहार ही चर्चा का गया है। डा० यादवराज शर्मा के अनुसार— महाकाव्य एक ऐसा छन्दोबद्ध प्रकथनात्मक रचना होती है जिसमें विषय का व्यापकता और नायक का महानता के साथ-साथ कथावस्तु का एकसूत्रता छत्रकता द्वारा रस प्रवाह वर्णन की विशदता उत्पन्न भाषा शक्ति जीवन का यथामाध्य सर्वोपाय चित्रण और जातीय भावनाओं तथा संस्कृति का सुन्दर अभिव्यक्ति है।^{३६} प्रस्तुत परिभाषा में भी महाकाव्य के तत्त्वों पर ही विशेष बल दिया गया है। हिन्दी महाकाव्य के एक अन्य महत्त्वपूर्ण डा० प्रयामनन्द विश्वाकर्षण ने लिखा है कि— महाकाव्य ममस्पर्शी घटनाओं पर आधारित एक कवि की ऐसा छन्दोबद्ध कृति है जिसमें मानव जीवन का किसी स्वयंसेवक समस्या का व्यापक प्रतिपादन किया महान् उद्देश्य का पूर्ण या जातीय संस्कृति के महाप्रवाह उत्पन्न वर्णन शली व्यक्त भाषा पूर्ण रसात्मकता और उच्च कवि के शिल्प विधान द्वारा किया जाता है और जिसका नायक किसी भी निम्न जाति या वर्ण का होकर भी अपने गुणों से कवि के आशयों का प्रतिपादन करने वाला होता है।^{३७}

हिन्दी महाकाव्य के शाश्वतता के अतिरिक्त हिन्दी के काव्यकलाओं (कवियों) में भी महाकाव्य का परिभाषा निबद्ध करने का प्रयत्न किया है। कवि मंगल हरिऔध जी ने पुष्पानि प्रताप नारायण के निम्नरुप महाकाव्य

^{३५} हिन्दी महाकाव्य का स्वल्प विकास, पृ० १०८

^{३६} हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य, पृ० ६३

^{३७} आधुनिक हिन्दी महाकाव्य का शिल्प विधान, पृ० ६०

की भूमिका में निरता है हि— महाकाव्य का उचित परिभाषा यह है कि जिसमें वास्तव में महाकवि का पाया जाय और जिसका एक ऐसा महत्त्वपूर्ण हा जायेगा जानि और समाज के भावा का स्पर्ण का जिसमें एक विचारा जोर महान कल्पनाओं का चित्रण हा जो किसी छात्र-समूह के लिए कल्पना का काम दे सक। हाँ उसमें सग जयवा अध्याया की मर्या आठ या दस में अधिक अवश्य हा जिसमें वर्णित विषया का उचित परिष्कार ग्रन्थ में हो सक। किन्तु स्मरण रखना चाहिए कि काँची पश्चिम तीस सग का प्रथम का क्या न लिख यदि उसमें महाकाव्यत्व नया कि कम नहा ता रचना का प्रथम पर भी वह महाकाव्य कहना न पाय न जागा। और वाड का सगों का प्रथम क्या न का यदि उसमें यजना का प्रधानता हा भावकता उसमें छत्रता मितता हा महाकवि का काम दखा जाता है ता का अवश्य हा महाकाव्य का साकेगा क्याकि ग्रन्थ का महत्त्व ही उसकी मन्ता का कारण हा सकता हा।^{४१} का हरिऔध न महाकाव्य में सग मर्या स अधिक महत्त्वपूर्ण भाव-औचित और कवि काम माना है।

तारकबध महाकाव्य का भूमिका में कविवर मुमित्रानन्दन पन्त न लिखा है कि— सक्षप में महाकाव्य मानव सम्यता के सघर्ष तथा साम्बुतिक विकास का जावन पवताकार स्पर्ण हाता है जिसमें अपन मुय का दखकर मानवता अपन का पञ्चानन में समथ हाता है।^{४२} पन्त जा की परिभाषा में महाकाव्य के सांस्कृतिक महत्त्व की हा चचा विशप है। श्री रामनारीसिंह त्तिनकर न महाकाव्य का रचना के महत्त्व पर प्रकाश डालत हुए लिखा है— महाकाव्य का रचना मनुष्य का विकल करन वात्री अनक भावधाराओं के बीच सामजस्य जान का प्रयास हा। महाकाव्य का रचना समय के परस्पर विरोधा प्रश्ना के समाधान की चष्टा है। जब परम्परा स जान वात महान प्रश्ना और भावा का अनुभूति में परिवर्तन हात रगता हा तथा इस परिवर्तित सम्कार का चिन्त करन के लिए हा महाकाव्य निख जात हा। विश्व के महाकाव्य मनुष्यता की प्रगति के माग में मान के पत्थरा के समान हाते है थ यजित करत है कि मनुष्य किस युग में कहा तक प्रगति कर सका है।^{४३} श्री तारान्त हारीत कृा दमयती महाकाव्य की प्रस्तावना लिखत हुए महाकाव्य की उल्भावना के सम्बन्ध में कवि का गापालदास नीरज न लिखा

^{४१} नवनरेस जल्लान पृ १

^{४२} तारकबध, प्राक्कथन पृ १

^{४३} त्तिनकर अधनारीश्वर पृ० ४६

है कि— जब कवि का मानस चपल भाव कर्म से इतना भर जाता है कि वह आसन्न उमस में छत्रक उलक पड़ता है तब गान का जन्म होता है। लेकिन जब कवि का शक्ति रूप में ऊपर उठकर लक्ष्यमानस का भूमि पर परम तात्पर्य करने का प्रयास करता है तब महाकाव्य का जन्म होता है। एक में अपना रचना का तथ्य यकिन स्वयं होता है और दूसरे में उसका लक्ष्य समाज और समाज होता है। इसलिए जहाँ गीत में तीव्र मस्तिष्कशीलता होती है वहाँ प्रवचकाव्य में एक विशिष्ट व्यापकता का स्वरूप समझा जा सकता है। महाकाव्य की मन्तव्य याचना के लिए एक स्पष्ट जीवन-मानस सूक्ष्म मानस शक्ति अनुभूतियाँ की परतानता भावना युक्ति और कल्पना का समाधान मनुष्य के आवश्यक होता है।^{४६} था नाराज जा न उपयुक्त विवेचन में गानितान्य और महाकाव्य के तात्त्विक अन्तर का स्पष्ट करत हुए महाकाव्य रचना के अनिवार्य उपकरणों पर विचार किया है। यहाँ स्पष्टापी है कि गानितान्य जादुनिक महाकाव्य रचना का एक अनिवार्य अंग बन गया है। जादुनिक युग के सामाजिक मभी महाकाव्य में गीत का मुख्य याचना का गया है। शिवा के इन कविता के अतिरिक्त महाकाव्य की परिभाषा के मुख्य तत्त्व में मन्तव्य का समाधान का अंग न भी गीत है। वह निश्चल है— मन में जब एक मन्तव्य यकिन का उत्पन्न होता है सहसा जहाँ एक मन्तव्य कवि के कल्पना शक्ति पर अधिकार का जमाना है मनुष्य चरित्र का उत्तर महत्त्व मन्तव्यका के सामने अधिष्ठित होता है तब उसका उत्पन्न भाव में उनील हाकर उस परम पुण्य का प्रतिमा प्रतिष्ठित करने के लिए कवि भाषा का मन्त्रि निमाण करत है। उस मन्त्रि की शक्ति पृथ्वी के गम्भीर अन्तर्लोक में रचना है और उसका शिवा मन्तव्य का भू-कर जाकास में उत्पन्न है। उस मन्त्रि में जो प्रतिमा प्रतिष्ठित होती है उसका वैवभाव में मृग्य और पुण्य विरणा में अभिभूत शक्ति नाना शिवा में जो जाके लागे उस प्रणाम करने है। इसका कर्म है महाकाव्य।^{४७} इस विवेचना में विनिता होता है कि था अंग न महाकाव्य के लिए विशिष्ट चरित्र कल्पना का प्रभाव अंग माना है।

इन अनेक विचारों का सुप्रसिद्ध कविता का इन विभिन्न परिभाषाओं का अन्त में प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने अपने मतानुसार एक या एकत्रिक महाकाव्य रचना के तत्त्वों का प्रमुक्तता की है। इन सभी परिभाषाओं का दृष्टिगत करके महाकाव्य का एक व्यापक परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की जा

^{४६} दमयन्ती महाकाव्य प्रस्तावना पृ० ४५

^{४७} मधनादध-महाकाव्य भूमिका पृ० १५७ ५८

की जा सकती है 'महाकाव्य वह महत् काव्य रूप है, जिसमें व्यापक कथात्मक, विराट् चरित्र कल्पना गम्भीर अभिव्यञ्जना शैली विविध शिल्प विधि और मानवतावादी जीवन दृष्टि से उसका रचयिता युग-जीवन के उन्नत बोध को सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रतिफलित करता है। सक्षम मूल्य मूल महाकाव्य की रचना मानवता के मंगलमय आख्यान और लोक मानस की चेतना के आकलन का सांस्कृतिक प्रयास होती है।

सच तो यह है कि महाराज का कोई भावनात्मक एवं गव्यपूर्ण परिभाषा नहीं दी जा सकती है क्योंकि युग जीवन का परिस्थितियाँ और सामाजिक परम्पराओं के अनुसार ही महाकाव्य के स्वरूप रक्षण नस्व और मायनाओं में परिवर्तन होता रहा है। फिर भी उपरोक्त परिभाषा में महाकाव्य के स्वरूप का व्यापकतम परिचय में प्रतिष्ठित करने का एक विनम्र प्रयास अवश्य किया गया है। इस परिभाषा में प्रमुख रूप से दो दृष्टियाँ अपनायी गयी हैं—परम्परा और प्रगति। जब तक प्राचीन महाकाव्यात्मक शौ या अनुसरण करते हुए भी हम अपने युग के महाकाव्य का प्रवृत्तियों को दृष्टिगत करके रक्षण निर्धारित नहीं करेंगे तब तक सिद्धान्त विवचन की दृष्टि से पूर्ण तयाप नया हो सकेगा। दूसरे तथ्य को भी अस्वीकार नया किया जा सकता है कि वर्तमान महाकाव्य का विनाम प्राचीन महाकाव्य की परम्परा में ही हुआ है। इसीलिए हम परिभाषा में प्राचीन और नवान्त दोनों ही महाकाव्य के आत्मों के सम्बन्ध का प्रयत्न किया गया है।

महाकाव्य के रूपविधायक तत्त्व

३० हिन्दी महाकाव्य मिथ्या और मूल्यांकन

की जा सकती है। महाकाव्य यह मर्तु काव्य रूप है जिसमें व्यापक कथानक, विराट् चरित्र कल्पना गर्भभीरु अभिव्यंजना शक्तौ विशिष्ट शिल्प विधि और मानवतावादी जीवन दृष्टि से उसका रचयिता युग-जीवन के उन्नत बोध को सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रतिफलित करता है। सक्षय भ श्रेष्ठ महाकाव्य की रचना मानवता के मंगलमय आख्यान और लोक मानस की चेतना के आख्यान का सांस्कृतिक प्रयास होता है।

सच तो यह है कि महाकाव्य की कार्य मायराशीन एक मवपूण परिभाषा नया दी जा सकती है क्योंकि युग जीवन का परिस्थितिया और सामाजिक परम्पराओं के अनुसार ही महाकाव्य के स्वरूप तथा तत्त्व और मायताओं में परिवर्तन हुआ है। फिर भी उपयुक्त परिभाषा में महाकाव्य के स्वरूप का व्यापकतम परिचय में प्रतिष्ठित वर्ग का एक विनम्र प्रयास अवश्य किया गया है। इस परिभाषा में प्रमुख रूप में दो दृष्टियाँ अपनायीं गयी हैं—परम्परा और प्रगति। जब तक प्राचीन महाकाव्यशास्त्रों का अनुसरण करते हुए भी हम अपने युग के महाकाव्य की प्रवृत्तियों का दृष्टिगत करके चरण निर्धारित नहीं कर सकते तब तक मिथ्या विवचन की दृष्टि से पूरा नया नया हो सकेगा। दूसरे पक्ष तथ्य का भी अस्वाकार नया किया जा सकता है कि वर्तमान महाकाव्य का विकास प्राचीन महाकाव्य का परम्परा से ही हुआ है। इसीलिए इस परिभाषा में प्राचीन और नवान का नया नया महाकाव्य के शास्त्रों के समन्वय का प्रयत्न किया गया है।

महाकाव्य के रूपविधायक तत्त्व

महाकाव्य के रूपविधायक तत्त्व

महाकाव्य के रूपविधायक तत्त्वों में अभिप्राय उसका रचनात्मक उपकरणों में है। महाकाव्य की परिभाषा में पाश्चात्य और पौराणिक तथा प्राचीन और नवीन आचार्यों ने रचना के विभिन्न उपकरणों का उल्लेख किया है। इनमें भी कौन से तत्त्व अनिवार्य हैं कौन से अप्रमुख इस सम्बन्ध में भी पूर्ण मतभेद नहीं। कुछ आचार्यों ने कथा-तन्त्र और चरित्र याजना का महत्त्व लिया ता कनिष्क ने रचना शिल्प और उद्देश्य की महत्ता स्वीकार की है। कहने का अभिप्राय यह है कि महाकाव्य की रूप रचना का प्रश्न हिन्दी साहित्य जगत में उन्ना विवादास्पद बना हुआ है। रूपविधायक तत्त्वों का अनिश्चितता का कारण यह कहना बड़ा ठीक नहीं है कि कौन सी काव्यकृति महाकाव्य है कौन सा नहीं। उदाहरणार्थ डा० शम्भूनाथसिंह ने अपने शोध प्रबंध 'हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास में पृथ्वीराज रासा 'पद्मावत जालहलण्ड रामचरितमानस' और 'कामायनी पांच ही ग्रंथों को महाकाव्य माना है। डा० गाविष्ठास शर्मा ने 'हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य नामक शोध प्रबंध में इन पांचों के अतिरिक्त प्रियप्रयास 'साकेत' कृष्णायन वदेही-वनवास और साकेत सैन का भी महाकाव्य का मना प्रदान की है। हिन्दी महाकाव्य पर शोध करने वाले अन्य विद्वानों में डा० प्रतिपत्तिसिंह^१ डा० श्यामसुन्दर निशोर^२ डा० श्यामसुन्दर व्यास^३ आदि ने 'कुरुक्षेत्र रावण' 'दत्तवश एतद्वय तारक यम नूरजहाँ चित्रमालिन्य सिद्धार्थ 'वद्धमान, जगगज, पावती शीपक काव्य ग्रंथों को भी महाकाव्य स्वीकार किया है। इस प्रकार इन मान्यताओं में मतभेद का अभाव का कारण महाकाव्यालोचन के प्रतिमानों का अनिश्चित होना ही है। अस्तु महाकाव्य की आराधना और रचना दोनों ही दृष्टियों से महाकाव्य के रूपविधायक तत्त्वों का निश्चिन किया जाना अपेक्षित है।

^१ बीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के महाकाव्य

^२ आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों का शिल्प विधान

^३ हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण

आचार्यों द्वारा निरूपित समस्त उद्योगों का समाहार निम्नांकित चार शीपका के अन्तर्गत किया जा सकता है जिन्हें महाकाव्य रचना के रूपविधायक तत्त्व अभिधान भी लिया जा सकता है

- १ नाक प्रख्यात कथानक
- २ उत्तम चरित्र मृष्टि
- ३ विशिष्ट रचना शिल्प तथा
- ४ महत् उद्देश्य और जीवन-ज्ञान ।

१ लोक प्रख्यात कथानक

महाकाव्य रचना का सर्वप्रमुख और अनिवाय तत्त्व कथानक है। कथा तत्त्व के जभाव में महाकाव्य सृजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। महाकाव्य के कथानक में दो विशेषताएँ अनिवायत आनी चाहिए। एक तो उसकी रूपाति और दूसरी सुसंगठन। एक अनिर्विकल एक सामान्य विशेषता विषयवस्तु का व्यापक होना भी है। कथावस्तु का प्रमुख स्रोत हात है— इतिहास पुराण समसामयिक घटना चक्र और कवि कल्पना। महाकाव्या के लिए प्रथम दो स्रोत ही उपयुक्त हैं। समसामयिक घटना चक्र पर जाधृत कथावस्तु आवश्यक नहीं विद्यता भी हो और कवि कल्पना का समावेश तो प्रत्येक प्रकार की कथावस्तु में होता ही है।

अधिकांश महाकाव्यों की कथावस्तु का स्रोत इतिहास पुराण से ही किया गया है क्योंकि इतिहास पुराण के कथानक उत्तम लोक प्रख्यात हैं कि पाठक सहज ही हृदयगम कर जाता है। कथानक के स्रोत की दृष्टि से पुराणा का अत्यन्त स्थान है। पुराणा में भारतीय जीवन चेतना और प्रकृति का अपूर्व तत्त्व विद्यमान है। पुराणा की कथाओं में जीवन को प्रेरणा प्रदान करने वाली असंख्य घटनाएँ भरी हुई हैं। यही कारण है कि हिन्दी के महाकाव्यकारों ने पुराण ग्रन्थों को महाकाव्य-वस्तु का अक्षय भण्डार माना है। हमारे युग के अधिकांश महाकाव्यों की विषय वस्तु का सर्वोत्तम पुराणों से ही किया गया है।^४ अस्तु पुराणा की इस दृष्टि में महत्ता स्पष्ट ही है। हिन्दी में ही नहीं विश्व के सुप्रसिद्ध प्राचीन महाकाव्यों में भी पौराणिक और निजघरी आख्याना

^४ प्रियप्रवाम साकेत कामायनी वनेही वनवास कृष्णायन साकेतसन्त दत्तवश नननग्न अगराज जय भारत पावती रश्मिरी एव नय तारकवध सनापति वण कुक्षत्र दमयती उवशी मारधी अनन रामराय प्रिय मित्रन कक्या शाराम चन्द्राय रामचरित चिन्तामणि कृष्णचरितमानम आदि ।

(Myths and Legends) को ही कथानक के रूप में ग्रहण किया गया है। वास्तव में महाकाव्यकार की कल्पना शक्ति इतनी प्रबल और विराट् हानी चाहिए कि वह पुराणा की जीण-शीण कथाओं का प्राणवान बना सके तथा उन्हें युग-जीवन के मान में ढालकर प्रस्तुत कर सके। पौराणिक कथाओं के पुनराख्यान का वाइ साधवय या महत्त्व नहीं यदि वे समसामयिक जीवन-चेतना को प्रभावित करने का क्षमता से शून्य हों।

महाकाव्य-वस्तु का सुमंगलित होना भी अनिवार्य है। इसका अभाव में महाकाव्य के प्रवर्धन में बाधा पड़ती है। महाकाव्य-वस्तु के समकालीन स्वरूप के लिए आचार्यों ने लोगों का ध्यान किया है। साथ ही नाटकीय सृष्टियों के निर्वाह का भी उल्लेख किया है। सृष्टियों की यात्रा से विषय-वस्तु का विकास व्यवस्थित रूप से होता है। सृष्टियों के अनिश्चित महाकाव्य-वस्तु में घटनाओं का अचिन्ति और काय-व्यापारों की सुसम्बद्धता भी होना चाहिए।

महाकाव्य के कथानक का व्यापक होना भी आवश्यक है। महाकाव्य में सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति होती है। यह तभी सम्भव है जब कथानक व्यापक एवं पूर्ण हो। उसमें सम्पूर्ण जीवन को व्यक्त करने की भी क्षमता होना चाहिए। महाकाव्य का कथानक जातीय जीवन और समूह-चेतना को साकार करने की शक्ति और क्षमता का मधारण कर सके इसी में महाकाव्यकार के कथा-मयोजन दौगत को लेया जा सकता है। सद्यः में तब प्रमिद्ध सुसंगठन और व्यापकता महाकाव्य की कथावस्तु की प्रमुख विशेषताएँ कही जा सकती हैं।

२ उदात्त चरित्र सृष्टि

महाकाव्य रचना का दूसरा प्रमुख तत्त्व चरित्र सृष्टि है। किसी भी कथा में अद्भुत-बुरे सभी प्रकार के पात्र होते हैं। महाकाव्यकार का दायित्व है कि वह असत् पात्रों पर सद्पात्रों की विजय का प्रश्न करे। किन्तु हम प्रश्नन के लिए उस असत् प्रवृत्तियों वाले पात्रों की मर्त्य हत्या या बध ही नहीं करवाना चाहिए बल्कि सद्पात्रों के उच्च व्यावहारिक आदर्शों की प्रेरणा असत् पात्रों के पात्रों का ग्रहण करानी चाहिए। इस प्रक्रिया में पात्रों का चरित्रात्मक मनावनात्मिक एवं स्वाभाविक ढंग में ही होना चाहिए। पात्रों के चरित्र विशेषण में महाकाव्यकार का दृष्टि निरपेक्ष जयान् पूषाएँ मुक्त हानी चाहिए। उन्हीं पात्रों के कार्यों एवं चरित्रिक विशेषताओं के आधार पर उनके चरित्र एवं व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना चाहिए। विशेषकर नायक के सम्बन्ध में महाकाव्य के रचयिता का दृष्टिकोण निम्नलिखित होना चाहिए।

महाकाव्य की मुख्य कथा (आधिकारिक यन्त्र) म मर्मरि पा पात्रा म प्रमुख पात्र नायक होता है। काव्य का काय-व्यापार पात्रा जग ही प्रचलित होता है। अत नायक के व्यक्तित्व और वृत्तित्व म जानाग। ज्ञान व ज्ञानशौ की प्रस्थापना के लिए सघष्यत रहन की क्षमता और गतिन हानी चाहिए। किन्तु इन काय के लिए आशयन नग नि वन उच्चतुनीन मन्वशीय धीरोन्तत और दवाय गुणा म ही सम्पन्न न। वतमान युग का काव्यकार का मून स्वर मानवतावादी जीवनान्शों का स्वीकृति और स्थापना है। जन मानवोचित चारित्रिक दुबलताए नायक म भी हो सकती है और इनके कारण ही किसी पात्र को नायकत्व क पद स वचित नहा किया जा सकता है। मयम वनी बात नायक का प्रयास महान् हाना चाहिए। कायों म ही महानता अजित की जानी है। आज के अत्रिवाश महाकाव्य नायिका प्रधान भी हैं जन पुस्य पात्र ही नायकत्व के एकाधिकारी नहा हैं। अस्त महाकाव्य के नायक क लिए निम्नावित्त बात आवश्यक है

(अ) मानवीय चरित्र।

(आ) स्त्रा और पुस्य ज्ञाना ही (पात्र) नायक पद पर समामान हो सकते हैं।

(इ) महान लक्ष्य की सिद्धि के लिए प्रयत्नज्ञान।

(उ) जातीय जीवनादर्शों का प्रतिष्ठाता।

ममष्टि रूप म चरित्र—विश्लेषण करते समय महाकाव्यकार की दृष्टि मानव जीवन के समग्र मूल्यांकन की ओर हानी चाहिए। मानवीय यक्तित्व क महान् म महान स्वरूप की परिवर्तना नायक क चरित्र म नाकार की जानी चाहिए।

३ विशिष्ट रचना शिल्प

या तो प्रत्यक साहित्यिक रचना का निश्चित शिल्प होता है जिसके आधार पर उम आकार प्रकार प्रदान किया जाता है। किन्तु महाकाव्य सन्श्य सर्वोपरि काव्यरूप क शिल्प म विशिष्टता ज्ञान के लिए उसक रचयिता को कुछ नियमा का अनुपालन करना ही चाहिए। नियमा के अनुपालन से अभिप्राय यह है कि महाकाव्यकार का महाकाव्य क स्वरूप विधायन उपकरण का संयोजन विनय विधि स करना चाहिए। रचना शिल्प क दा पक्ष हैं—अन्तरंग और बहिरंग।

महाकाव्य के अन्तरंग का निर्माण रमात्मकता द्वारा हाना है।

बहिरंग के निमाण म भाषा, शली छ'द, वणन एव चित्रण सांगानमय हात है ।

बहिरंग के उपकरण

(अ) वस्तु-वणन—महाकाव्य म वस्तु वणन बबिधूपण हाना चाहिए । महाकाव्य म युग जावन का समय चित्र जकित रहता है अत जीवन की अनक रूपता की यजना बबिध वणना द्वारा ही सम्पन्न हा सनती है । प्रकृति क बबिध रूपा का कलात्मक वणन और नाना भावा की मनोरम साकिया का अभियक्ति ही महाकाव्यकार क वणन कौशल को व्यक्त करत है । काव्याचार्यों न महाकाव्य म वस्तु-वणन-व्यापारा की गम्भी सूचिया का उल्लस इसी दष्टि स किया है । प्रकृति और मानव का अनादि सहवास रहा है । परिस्थितियों के अनुसूप दोना के सम्बन्धा म ना परिवलन का त्रम गतिमान रहा है । नसानिए महाकाव्य म मानव और प्रकृति क मिलन और मघप तथा परिणाम और उपलब्धिया का वणन रहता है । इसके अतिरिक्त विषय वस्तु क इतिवत्तात्मक स्थला की रक्षता का दूर करने क लिए ना भावपूर्ण मनोरम एक मामिर प्रकृति श्या की योजना अपभित हाती है ।

(आ) कल्पना शक्ति—महाकाव्य क कथा साता का उल्लस करते हुए कहा जा चुका है कि कथानक के प्रमुख सात इतिहास-पुराण ह । महाकाव्यकार का कतय और कौशल इस बात म निहित है कि वह इतिहास-पुराण क पुग जादयाना और जीण शण कथा-साता का कल्पना शक्ति क प्रयाग द्वारा दाप्तिमान करके युग, जावन और समाज क तात्कारिक परिस-दर्भों म प्रस्तुत करे । कथानक क अतिरिक्त चरित्र-याजना शिल्प विधान और उद्देश्य सिद्धि म भी कल्पना शक्ति का यागदान कम महत्वपूर्ण नहीं हाता । सत्य ता यह है कि प्री कधि-कल्पना ही महाकाव्य का जन्म द मकता है ।

(इ) मामिक प्रसंगों की सष्टि—महाकाव्य वस्तु के विगत कलवर म मामिक प्रसंगा की अवलारणा पाठक का सरसता प्रदान करती है । इनका सृष्टि द्वारा ही महाकाव्य एक प्रभावपूर्ण रचना बनती है । महाकाव्यकार का घटनाश्रु का घयन म ऐसे स्थला को महत्व दना चाहिए जा अपनी प्रभाव क्षमता क कारण रागात्मक वतिया का जागृत एक उदात्त कर सकें ।

(ई) परिमापूण भाषा शली—महाकाव्य का शना का स्वल्प अय काय कथा की अपक्षा विगित और परिमापूण हाता है । गुण राति अनकार श शक्तिमा, ध्वनि आर्ति शना विधान क उपकरण ह बिलु नका सम्बन्ध शना के बाह्य रूप स है । शना का व्यापकता और गम्भीरता (प्रौढता) उसनी

अन्तरात्मा है। काव्य जनता का प्रयत्न का प्रमाण करने भाषा और सामान्य अन्वृत्ति द्वारा गम्भीर व्यञ्जना द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। शब्दों के माध्यम में कवि के व्यक्तित्व की भी अभिव्यक्ति होगी है। इस गुण को साकार करने के लिए भाषा शब्दों में यत्नगाध्य अलंकरण जटिल शब्द समूह और टुन्नितता अपेक्षित नहीं करना। घुड़ में घुड़ बहने की तरह शब्दवृत्ति में गम्भीर व्यञ्जना की तथा क्षतना प्रभाव का व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। महाकवियों का शब्दों में यह सामर्थ्य हुआ करता है। महाकाव्य की शब्दों का सबसे बड़ा गुण सम्प्रपणीयता (Communicability) तथा प्रसंगगम्यता होना चाहिए। महाकाव्यकार की शब्दों का स्वल्प का निम्न श्रमसाध्य या प्रयत्नपूर्ण न होकर उमकी सुनीच काव्य-साधना का परिणाम होता है।

(ज) छन्द विधान—छन्दबद्धता महाकाव्य के लिए अनिवार्य है। काव्यात्मक जीवित के लिए भा छन्द विधान अपेक्षित है। संस्कृत के आचार्यों ने तो सर्गांत में छन्द परिवर्तन के नियम का विधान भी किया है। यद्यपि इस नियम का कोई विशेष महत्त्व नहीं और न ही आधुनिक महाकाव्यों में इस नियम का अनुपालन ही किया जाता है। ता भी छन्द विधान से पाठकों की मनावृत्ति का रमण तथा कवि-कौशल का परिचय अवश्य मिलता है।

(क) सग योजना—प्रबंधत्व के सफल निर्वाह के लिए सग योजना अनिवार्य क्यावस्तु के सम्यक् सजाजन और विभाजन के लिए भा सग योजना अपेक्षित है। क्यावस्तु का विभाजन हर स्थिति में आवश्यक है। यद्यपि यह आवश्यक नहीं कि सग ही नाम दिया जाय। क्यावस्तु का विभाजन समया काष्ण पूर्वों प्रकाशा या जय शीपका में भी हो सकता है। सर्गों का संख्या के सम्बन्ध में भी कोई निश्चित मत नहीं है। प्राचीन आचार्यों ने महाकाव्य में आठ की संख्या का मान्यता दी है किन्तु आज के महाकाव्यों में सर्गों की संख्या ६ ७ २५ इत्यादि भी मिलती है।

अन्तरंग पक्ष

रसात्मकता—भारतीय साहित्यशास्त्र में रस का काव्य का आत्मा माना गया है। रस की स्थिति प्रत्येक काव्य की सजा पान वाली रचना में अनिवार्य होनी है। महाकाव्य के विशाल कवच में रस का वेगवान अमृत प्रवाह होना चाहिए। रसात्मकता महाकाव्य के अन्तरंग का निर्माण करती है। प्राचीन आचार्यों ने महाकाव्य में वीर शृंगार और शान्त रसों में से किसी एक का प्रधानता एवं अन्य रसों की सम्यक् योजना का उल्लेख किया

है किन्तु आज यह आवश्यक नहीं माना जाता। कोई भी रस प्रधान हो सकता है। वर्तमान युग में कल्प रस प्रधान अनेक महाकाव्य मिलते हैं।

रमानुभूति महाकाव्य के पाठक के हृदय में भावोच्चता या महान् प्रभाव का जनक होता है। मानव माथ में मूत्र मनाभाव और सबटनाए एक सा है। उन भावों का उच्च और उत्तर धनान के लिए उठ जावन का विस्तृत भूमिका में अवतरित कराना महानाव्यकार का प्रतिभा का छानक होता है। इसके अतिरिक्त पात्रों के क्रिया व्यापारों और घटना प्रवाह से अनुभूति का तात्पर्य रस की भूमिका पर ही हो सकता है। इतिवृत्तात्मक निरसता भी रस प्रवाह में ही दूर जाती है। भाव चित्रण भा रसात्मकता द्वारा हो सम्भव है।

४ महान् उद्देश्य और जीवन दर्शन

महानाव्य महान् उद्देश्य और जीवन-दर्शन में अनुप्राणित रचना होता है। भारतीय काव्याचार्यों ने महानाव्य का उद्देश्य चतुर्वर्ग फलप्राप्ति अर्थात् धन अथ काम और माथ की सिद्धि तथा रसात्मकता माना है। किन्तु वर्तमान युग जीवन के सन्ध में मात्र इन्हें ही महानाव्य का उद्देश्य स्वीकार नहीं किया जा सकता है। महान् उद्देश्य से अभिप्राय महाकाव्य सृजन के लिए रचयिता की अतर्गतमा में किसी महान् प्रेरणा का आविर्भाव भा है। प्रेरणा का स्वात जावन की कोई भी घटना परिस्थिति अथवा वस्तु हो सकता है किन्तु कवि का वीरल उम प्रेरणा प्रभाव का विश्वव्यापी परिप्रेक्ष्य में रूपायित करन में है। आज का प्रत्येक काव्य रचना सादृश्य है। आज यह मायना बनकर है कि काव्य रचना नगर के लिए आरम्भायी या स्वात मुखाय न होकर जानि समाज और विश्व-जीवन का मन लुष्टि के लिए होना चाहिए। डा० माताप्रसाद गुप्त का यह कथन प्रस्तुत सन्ध में उचितनाय है कि— मानवता का अशक्ति में शक्ति अशान्ति में शान्ति और नीच से ऊच ल जाना हो वस्तुतः महाकाव्य के अथ रक्षण का अपेक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रक्षण माना जा सकता है। इसी में उसका वास्तविक महानता होना चाहिए। * अस्तु।

महानाव्य के उद्देश्य की महानता और उसकी सिद्धि के लिए आवश्यक है कि महाकाव्य कहा जाने वाला प्रत्येक रचना में—

- (अ) मानवतावादी जीवन मूल्या का प्रतिष्ठा हो,
- (ब) सुशील जीवनादर्शनों की स्थापना हो
- (ग) रचना का सामूहिक प्रयत्न में समाहित हो

* सुलमीदाम वृत्ताय सम्बरण पृ० ३७०

(द) उन्नत विचार-शक्ति (जीवन-शक्ति) का

(प) मजबूत शक्ति प्रदान करने का क्षमता है।

(अ) मानवतावादी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा—प्रत्यक्ष युग और मानव काव्य-सृजन का साथ-साथ मानवता के महान विधान में निहित है। मानव जीवन के चिरन्तन मूल्यों और शाश्वत सत्यों की यज्ञना महाकाव्य रचना की एक महत्त्वपूर्ण उपरति है। विश्व भर के महाकाव्यों में सत्त्व स ही विमान किंसा रूप में मानवतावादी जीवन-दृष्टि की प्रस्थापना का जाग्रह रहा है। मानव जीवन के स्थायी मूल्य प्रमद करणा क्षमा शीत श्रद्धा सत्त्व नय सत्य अहिंसा आदि रह है। यह आध्यात्मिकता को सकुचित सीमा में नही बांधा जा सकता है। मानव जीवन के विविध का चित्रित करते समय भी इन मूल्यों की प्रतिष्ठा महाकाव्यकार का उद्देश्य होना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति जीवन के विराट सघन में इन मूल्यों को भूत ही नही जाता वरन् परिस्थिति में इनकी उपेक्षा भी करता है। इस उपेक्षा का परिणाम मानव जाति और समाज की अवनति और अन्ततः विनाश होना है। महाकाव्यकार का दृष्टिकोण इन जीवन मूल्यों की सत्ता सिद्ध करना है। तभी महाकाव्य विश्वजनीन और मानवभौम हो सकता है। मानव मान की धराहर वनन के लिए महाकाव्य का जातीय समाज और राष्ट्र का सीमाभा का भा अतिग्रमण करना पडता है अर्थात् मानवतावादी की प्रतिष्ठा के लिए जातीय हिता की बलि भी देना पडती है।

(ब) युगीन जीवनादर्शों की स्थापना—महाकाव्य युग की देन होत है।

उनमें कवियों की साधना जातीय जीवन की विशेषताएँ और मानवता का प्रगति यज्ञित होत है। प्रत्येक युग में जीवन के आदर्श स्थापित होत हैं। कभी वारपूजा का युग आता है ता कभी भक्ति-साधना जीवन का सर्वस्व बनती है। कभी राष्ट्र सेवा परमाय समाज कल्याण प्रममय जीवन समानता और मन्त्र्यवन्तर जावन के आदर्श स्वीकृत किय जात है। महाकाव्यों में इन जावनादर्शों की प्रतिष्ठा होना चाहिए। इनके साथ ही कुछ शाश्वत सत्य एवं चिरन्तन मूल्य होत है जो प्रत्येक युग में मानव जावन का परिचालित करते हैं। अतः महाकाव्यकार को चिरन्तन जावन मूल्यों के परिपाश में ही युगीन जावनादर्शों का प्रतिष्ठा करना चाहिए। हमारे युग की प्रगति अतीत के प्रयत्न का परिणाम तथा अनागत के प्रति आस्था का प्रतीक होना चाहिए। महाकाव्य का विश्व वाच्य का अमूल्य निधि है तभी कह सकता है जो उनमें जातीय हो नही वरन् विश्व जावन के आदर्शों का साकार करने की

क्षमता हो। आधुनिक हिन्दी महाकाव्या में इस प्रवृत्ति का समुचित विकास हुआ है।

(स) सांस्कृतिक उन्नयन में योगदान—विज्ञान युग में काव्य लखने एक सांस्कृतिक प्रयास है। इस कथन की सत्यता महाकाव्यवत काव्य रूप का रचना द्वारा ही सिद्ध होता है। महाकाव्या में जाति समाज राष्ट्र और विश्व के सांस्कृतिक उत्कृष्ट-अपकृष्ट का एक विराट भूमिका उपस्थित की जाती है। महाकाव्य एक सामाजिक दश का सांस्कृतिक इतिहास भी प्रस्तुत करता है। क्योंकि महाकाव्या में ममज्ञ जावन का चित्रण करते समय समाज व्यवस्था का निरूपण सम्यता के विकास का वर्णन राष्ट्रीय मर्यादाओं का स्वरूपांकन तथा पर्वों और परम्पराओं का आख्यान एक प्रकार में देश का सांस्कृतिक धरोहर ही है। महाकाव्य के पात्रों के सम्कार जातीय एवं राष्ट्रीय आचरण का प्रतिनिधित्व करते हैं। अस्तु स्पष्ट है कि महाकाव्य की रचना का जातीय एवं देशीय जीवन के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

(द) उन्नत विचार दर्शन—विचार-दर्शन से अभिप्राय जीवन-दर्शन है। जावन-दर्शन का सम्बन्ध कवि के उस दृष्टिकोण से है जिसके आधार पर वह जीवनगत प्रश्नों और समस्याओं पर विचार करता है। जावन-दर्शन का निर्माण करने का तत्त्व है—अनुभव, चिन्तन और साधना। महाकाव्य में जिस जावन-दर्शन का प्रस्थापना होती है वह मूलतः कवि की व्यक्तिगत अनुभूति चिन्तन और साधना की सामाजिक परिणति है। महाकाव्यकार का समय के परस्पर विरोधी प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करने के लिए जीवन-दृष्टि निर्धारित करना ही पड़ता है। हम जावन-दर्ष्टि का ही जीवन-दर्शन अभिधान किया गया है। इस दृष्टि के दो रूप हैं—एक परम्परागत और दूसरा प्रगतिशील। महाकाव्य में दोनों ही उपस्थित हैं।

परम्परागत जीवन-दर्ष्टि का आधार लेकर महाकाव्यकार कृति में शान्ति प्रपत्तियों और मायताओं के परम्परागत स्वरूप का प्रस्तुत करता है जिनमें इश्वर माया जीव मांस, निपति काल भक्ति वराग्य ज्ञान धर्म का स्वरूप आदि।

प्रगतिशील जीवन-दृष्टि का आधार ग्रहण करके परम्परागत शान्तिक मायताओं को युग मापक व्याख्या और युगधर्म का निरूपण सामयिक मन्त्रों में प्रस्तुत करना है। जिन ममानता स्वतन्त्रता संधुत्वभाव कृत-यपरायणता परमाय आत्मा विश्राम मन्वाग मानस के मगन और अभ्युत्थन के लिए साधना के महत्व का निरूपण आदि।

आज के युग (विज्ञान युग) की वाच्य रचना में बुद्धि तत्त्व की प्रधानता हाता है। आज का वाच्यकार मात्र भावप्रवण प्राणी न होकर बुद्धिजाया कलाकार होता है। उसका लक्ष्य रमानुभूति न तना बरन् वचारिक उपनधि भी है। अस्तु महाकाव्य में लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक उन्नत विचार दशन की आयाजना हाती है।

(५) सजीवनी शक्ति प्रदान करने की क्षमता—मन्त्राकाव्य की रचना का कोई महत्त्व तना यदि उसमें जीवन का अत्युत्तम जीव जाशाप्रम मन्त्र प्रसारण की सजावना शक्ति न हो। जीवन की परिस्थिति द्वारा सामाजिक परिवतना राष्ट्रीय जावन के सम विपम प्रभावा एव विश्व जीवन का विभिन्न प्रतित्रियाआ का व्यक्त करन का सामध्य मन्त्राकाव्य में ताना चाणि। महा का या में जिस शक्ति स्फूर्ति उत्माह और प्ररणा को हम पाते हैं व तत्त्वत व्यक्ति समाज और राष्ट्र की सामूहिक चतना का प्रतिनिधि रूप है। त्मीलिए महाकाव्य व्यक्ति का सम्पत्ति न तकर राष्ट्रीय घराहर और विश्व निधि हात है। तुनमा का रामचरितमानम स्वात मुवाय तान हुए भा जाताय गौरव और राष्ट्रीय गरिमा का वाच्य है। उसमें वह सजीवनी शक्ति है जिसके कारण जनाच्या में व मन्त्राकाव्य भारतीय जनता का कर्णर हो रना है। अनक स्वल्शा विल्शा भाषाआ में अनन्ति न जान पर उसका क्षय और मन्स्व व्यापक हाता जा रना है। मन्त्राकाव्या की यही सजीवनी शक्ति उह युगा तक जावित रखती है। व समय चर की घूणन गति से कान-कथनित ता क्या धून धूसरित भी नहीं हात। मन्त्राकाव्या का इमी अमोघ शक्ति का सजावना शक्ति कन्त है।

इस प्रकार वाक प्रख्यात कथानक उन्नात चरित्र सृष्टि विशिष्ट रचना शिल्प और महत् उद्देश्य एव जावन दशन महाकाव्य रचना के स्थायी एव अनिवाय तत्त्व है। त्ना तत्त्वा के आधार पर किसी भी मन्त्राकाव्य कहा जान वाली कृति का समानाचना भा की जा सकता है। अस्तु इह हम मन्त्राकाव्य सृजन के प्रतिमान जीव महाकाव्यावाचन के मानण्ड दाना ही कह सकते हैं।

महाकाव्य-रचना और पौराणिक कथानक

आज का युग (विज्ञान युग) की वाच्य रचना में बुद्धि तत्त्व की प्रधानता हाता है। आज का वाच्यकार मात्र भावप्रवण प्राणी न मात्र बुद्धिजीवा कर्ताकार हाता है। उमका नक्षय रमानुभूति ही नया वस्तु वचनिक उपनक्षि भी है। अस्तु महाकाव्य म तस नक्षय की प्राति क निष्क एव उन्नत विचार दशन की आयोजना गती है।

(५) सजावनी शक्ति प्रदान करने का क्षमता—महाकाव्य का रचना का कोई महत्व नया यदि उसमें जीवन का अन्वय उमान और जाणाप्र मन्त्र प्रसारण की सजावनी शक्ति न हा। जीवन की परिस्थिति द्वारा सामाजिक परिवतना राष्ट्रीय जीवन क सम त्रिपम प्रभावा एव विश्व जावन का विभिन्न प्रतिक्रियाभा का यवन करने का मासध्य महाकाव्य म नाना चाहि। महा काव्या म जिम शक्ति स्फूर्ति उत्साह और प्ररणा का हम पाते है वह तत्त्वत यक्ति समाज और राष्ट्र का मामूक्तिक चतना का प्रतिनिधि रूप है। इसीनिष्क महाकाव्य व्यक्ति की सम्पत्ति न केकर राष्ट्राय धरान्तर और विश्व निधि हात है। तुनमा का रामचरितमानम स्वात मुमाय होत हुए भी जानीय गौरव और राष्ट्रीय गरिमा का काय है। उसमें वत् मजीवना शक्ति ह जिसक कारण शताब्दिया स वत् महाकाव्य भारतीय जनता का कर्तार ना रहा है। अनक स्वप्नेशा बिन्शी भाषाभा म अनन्ति ने जान पर उमका क्षत्र और मन्त्व ध्यापक हाता जा रण है। महाकाव्या का यहा मजीवनी शक्ति उह पुगा तव जीवित रखती है। व समय धन की धूणन गति म कान-कवचित ता क्या धन धूसरित भी नती नात। महाकाव्या का त्मा अमाध शक्ति का सजावना शक्ति कहत है।

इम प्रकार तक प्रख्यात कथानक उन्नत चरित्र सृष्टि विशिष्ट रचना शिल्प और महत उद्देश्य एव जीवन दशन महाकाव्य रचना क स्थाया एव अनिवाय तत्व है। यहा तत्त्वा के आधार पर किमा भा महाकाव्य कही जान वाली शक्ति की समानोचना भी की जा सकती है। अस्तु इहे हम महाकाव्य मृगान क प्रतिमान और महाकाव्यावाचन के मानन्त दाना ही कह सकत है।

महाकाव्य-रचना और पौराणिक कथानक

समुचित प्रयोग किया है। हिन्दी साहित्य की अद्यवधि सभी प्रमुख विधाओं (महाकहानी उपन्यास नाटक एकाकी काव्य आदि) में पुराणा व कथानक विचार परम्पराओं और रीतियों का प्रयोग हुआ है। वास्तव में विभिन्न रूपों में महाकाव्य का प्रमुख स्थान है। गुरुत्व और शास्त्रीय की दृष्टि से तो गीत। महाकाव्य में युग जीवन की चेतना का विगट चित्र और उच्च उद्घास होता है। महाकाव्यकार मन्त्री काव्य प्रतिभा में सम्पन्न बनाकार जाता है। उसके शास्त्रज्ञ में समाजा के सामूहिक मूल्य और समुद्रयन के गीत की स्वर रचनी होती है। वह काव्य का महान प्रणेतृ होता है। रमकी रचना महा की मना में सबोधित की जाती है। प्रस्तुत प्रमग में इस काव्य रूप (महा काव्य) के मूल्य में पौराणिक इतिवत्त व अनुष्ठान पर विचार अभीष्ट है।

हम इस तथ्य का तथ्याभूत वस्तु ध्यान रखें हैं कि महाकाव्य का विधात्मक अपने काव्य का सामग्री का सङ्कलन पौराणिक व अध्यात्मिक जीवन और चेतना स्थिति उभिया में करता है। महाकाव्य प्रबन्धकाव्य का वह भूत है जिसमें अनिवायन कथात्मक होता है। कथानक महाकाव्य का अपरिहार्य अंग या प्रमुख उपकरण है। महाकाव्य व कथानक की प्राप्ति के अक्षय भण्डार पुराण ग्रन्थ हैं। हिन्दी ही नहीं अपितु भारतीय और विश्व महा काव्य का इस दृष्टि में अध्ययन करने पर यह मानने का बाध्य होना पड़ता है कि उनका कृष्ण अंग पौराणिक कथानक और निजधरी आख्याना (Myths and Legends) पर अवलम्बित है। सभी साहित्या के आदि और प्राचीन महा काव्यों पर तो यह बात और भी अधिक लागू होती है। यदि हम अपने अध्ययन क्रम की परिधि सीमित करके भा विचार कर अर्थात् सस्कृत प्राकृत उपभ्रंश आदि भाषाओं के महाकाव्यों का ही कथानक की दृष्टि से पर्यालोचन करें तो भा हम पौराणिक प्रभाव स्वीकार करना पड़ेगा। हमका एक कारण यह भी है कि पुराणा की कथाएँ महाकाव्य वस्तु के लिए निराल्प सभी गुणों में सम्पन्न हैं। सस्कृत काव्याचार्यों द्वारा लिखे गये महाकाव्य वस्तु विषयक सभी निर्देशों का ध्यान पर मफन निर्वाह भी हो जाता है।

हिन्दी के महाकाव्यकारों ने पुराणा के अखण्ड कथा भण्डार से सामग्री का सङ्कलन किया है। पौराणिक कथा-वस्तु से संपृक्त महाकाव्यों में कतिपय के नाम हम प्रकार हैं—रामचरितमानस रामचरित्रका रामचरित विन्तामणि प्रियप्रवास भावन कामायनी वल्लोचनवाम कृष्णायन भावन मत दस्यवश रावण पावनी रश्मिगंधा एकतथ्य कुम्भधर अगाराज उमिता तारकवध सनापति वण नन नरेश उषशी आदि।

उन महाकाव्या में पौराणिक वस्तु का वही ता मूल रूप में बड़ा सात रूप में और कथा तन्तु रूप में ग्रन्थ किया है। पौराणिक कथाओं की कुछ काव्यात्मक विशेषताएँ भी हैं। उदाहरण के लिए अथ वसिष्ठ अथ वसिष्ठ आदि। पौराणिक कथाओं के साहित्यिक परीक्षण करने पर हम उन कथाओं के जाय्यात्मिक भौतिक और गतिगतिक अर्थों के अनिश्चित सांकेतिक प्रतीक परम्परित जीव लाव विद्यत अथ भी मिलते हैं। पौराणिक कथाओं का प्रायः कथान कल्पित असंगत और अनिश्चित कथक निरम्भित किया जाता है किन्तु ये अर्थवत्ता का प्रमाण है। पौराणिक कथाओं के गम्भीर अध्ययन में उनके तात्त्विक अर्थ प्राप्त हुए हैं जो नानाजन जीव साहित्य मृजल जना दृष्टियाँ में सम्बन्धपूर्ण हैं। प० रामप्रसाद त्रिपाठी ने वायु पुराण का भूमिका में बताया है कि—

वायु पुराण के जनगत रूप में यथादि तुल्य आदि राजाओं के वपन जना पक्ष में अपना सम्बन्धपूर्ण स्थान रखते हैं। जब हम इन कथाओं पर कथानिक दृष्टि में विचार करते हुए वैदिक कथना में तुलना करते हैं तो हम यह राजा के वजाय आकाश में पृथक् जा जान पड़ते हैं। वायु पुराण में नहुष के पृथक् का नाम यथादि था। उसकी रानी शक्र की कथा थी। दूसरी रानी का नाम वृषपर्वा था। वैदिक आख्यान में मरुति मिलते हुए जब हम पौराणिक आख्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं तो यथादि शक्र की कथा और वपवत्ता महा आकाशीय पृथक् जा सिद्ध होते हैं।³ इसके अनिश्चित पौराणिक कथाओं के सूत्र अध्ययन पर हम कथाओं में हम मय और कल्पना यथाय और जाश आदि साहित्यिक कथानत्व भा पाते हैं। कथाओं में प्राकृत, अनिश्चित और अशकृत घटना चक्र तथा काय व्यापार सभी सम्प्रयोजन हैं। उदाहरण के लिए श्री त्रिपाठी ने समुद्रमंथन की कथा का विश्लेषण करते हुए बताया है कि समुद्रमंथन के द्वारा यह सबत किया है कि अमृत और विष जना हम समार रूपी मन्मथान्तर में ही निकलते हैं। किन्तु उक्त वस्तु की प्राप्ति में या आदिश्वर में शक्ति (अमृत) और पान (मृग या मत्स्य) और राज या तम (अमृत) के परम्पर सम्पोग की आवश्यकता होती है। परन्तु उपवास के समय मत्स्य और पान का ही आवश्यकता है अथवा आमुग शक्ति प्रदान शक्ति विश्व मन्मथ कर जगा।⁴

किन्तु के महाकाव्य कथानक न पुराणा में वस्तु ग्रहण करके उनमें युगान

³ प० रामप्रसाद त्रिपाठी, वायु पुराण, भूमिका पृ० ८

⁴ वही पृ० १६

हिन्दी महाकाव्य स्वरूप-विकास

हिन्दी महाकाव्य का उदय और विकास की जासूसीयता का सम्बन्ध भारतीय महाकाव्य-परम्परा से है। भारतीय महाकाव्य का स्वरूप विकास विभिन्न युगों की भावना और मजबूत शक्ति का परिणाम है। यद्यपि भारतीय महाकाव्य का प्राचीनतम निमित्त रूप हनुमानचालीसा और महाभारत में मिलता है तथापि उस रूप का निमित्त ज्ञान में उससे पूर्व भी कुछ समय लगा होगा। वास्तव में महाकाव्य का उच्च मानव-सम्यक्ता की अल्प या अल्प विकसित अवस्था में हुआ है। इसलिए महाकाव्य के स्वरूप विकास का मुख्य अध्ययन करना कि वह मानव-सम्यक्ता का विकासशील युग का ऐतिहासिक सन्तुष्ट प्रहण करना नितांत अनिवार्य है। मनुष्य ने जो शक्ति का अवस्था का पार करके सगठित रूप में रहना सीखा (रक्षा का दृष्टि से अल्प कारणों से) तो मनुष्यत्व की नींव पड़ी। इन कवीना का आधार जातिवाद था। इन कवीना के सभी काव्य सामूहिक ढंग में हुआ करते थे। इन कवीना समाज का धार्मिक चेतना विभिन्न अवसरों पर गीत और गीतों के रूप में अभिव्यक्त हुआ करती थी। आज भी पिछले कुछ दिनों में नृत्यगीत और गाननृत्य की प्राचीन परम्पराएँ प्रचलित हैं। इन्हीं नृत्यगीतों में आन्तिम काव्य के रूप का मूल निपात मिला है। कवीना युग की अपनी विशेषता थी—जिस युग में वीरों की पूजा होती थी वही शौर्य मान्य और पराक्रम की तत्कालीन जावनात्मक था। यह कवीना समाज मानव-युद्ध था। शक्तिशाली व्यक्ति का नाम कवीना जनसमाज का नायक होता था। साहित्यतिहास में इस चारयुग (Heroic Age) अभिधान किया गया है। इस प्रकार का युग समाज का प्रायः सभी देशों में इतिहास में मिलता है। प्रत्येक युग के आन्तिम काव्य में वीरभावनाओं का ही उच्च निपात भी देता है। आरम्भिक महाकाव्यों का रचना का आधार भा वीरगाथाएँ ही हैं। यान्त्रिक मनुष्य गायिकाओं न गायिकाओं (Cycles of Ballads) का रूप प्रहण किया जिससे महाकाव्य का आरम्भिक रूप निमित्त हुआ।

वीरगाथाओं में वीरों की प्रशंसा का गान हुआ करता था। विद्वानों का मत है कि प्राचीनकाल में ही मानवत्व में वीरों की स्तुतियाँ प्रचलित थीं।

ऋग्वेदादि ग्रंथां म भी इत्येव । अथ शक्तिशास्त्री दत्ता (वीरा) के कार्या का प्रशंसा के गीत पाये जाते हैं जिनमें भारतीय महाकाव्य का मूल प्रतिपाद्य विषय की शक्ति दर्शाया जा सकता है।^१ और यह मत है कि यज्ञ प्राचीनता से ही इस देश में महाकाव्य की रचना हुआ करती थी। मकममूत्रर का मत है कि वीरा और देवताओं की प्रशंसा में गाय जाते जाते गीत भारत और अन्य आय राष्ट्रों में बहुत प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध थे। अर्थात् महाकाव्य का रूपानुसंधान के लिए वीरगाथा की राज रामायण और महाभारत में भी नहीं अपितु वेदों में करना चाहिए। उनके विद्वान् गीता का महाकाव्य कहा जा सकता है।^२ प्राचीनतम निमित्त वाचस्पय का रूप आज वैदिक गानागणिका का रूप में उपलब्ध है और वेदों में महाकाव्य का प्रारम्भिक मूल रूप का उपलब्ध उदाहरण प्राचीनता की ही द्योतक है। भारतीय महाकाव्य का प्राचीनता का द्योतक वेदों के अनिर्विकल अर्थ प्रथम ही बौद्ध-सा सत्वता है? मान्य जाति में अपनी जाति अवस्था में काव्य रचना किस प्रकार की समकालीन निमित्त प्रमाण आज उपलब्ध भी नहीं है। किन्तु जसा प्रारम्भ में कहा गया है कि आज भी वैदिक सित (जद्व-सम्य या असम्य) जातियों की रीतियों और परम्पराओं का अध्ययन द्वारा तत्कालीन समाज की मनावृत्तियाँ का वार में अनुमानाधारित तथ्या का जाना जा सकता है और इसी व्रत से वृत्तान्त अध्ययन भी। जातिवर्गीय जातियों की विभिन्न परम्पराओं को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि तत्कालीन समाज में अर्थविश्राम बहुत हागे। मनुष्य प्राकृतिक शक्तियों से भयभीत होकर उनकी उपासना करता होगा। अतः उपासना में वनिष्ठा की प्रथा मुख्य

१ Songs in celebrations of great heroes were current in India from very oldest time. The deeds of Indra and other Gods

२ This is not meant denial that the real epic poetry that is to say a mass of popular songs celebrating the power of exploits of Gods and heroes existed in very early periods in India as well as among the other Aryan nations but it shows that if it is existing it is not in the Mahabharata and Ramayana we have to look for these old songs but rather in Veda itself. In the collection of the Vedic hymns there are some which may be called epic and may be compared with the shortest hymns ascribed to Homer —Max Muller *A History of Ancient Sanskrit Literature* p 19

रही होगी। यन्त्रितन के अवसर पर कवीता के नाग एकत्रित होकर गान गायर और नय करके अपन मनोभावा को अभिव्यक्ति देते हांग। जादू मात्र तत्र आर टान म र्न नागा का अधिक विश्वास रहा हागा। इत प्रकार मानव जाति के जातिम समाज के रूप उल्लास जामान् प्रमोद का भावाभिव्यक्ति सामूहिक रूप म नृत्य और गीत के रूप म हाती थी। डा० शम्भूनाथ सिंह ने महाकाव्य के विवास की प्रारम्भिक सामूहिक गीता म लखर जलकृत महाकाव्य तक छ स्थितिया बतलाया है। व र्म प्रकार है^३

- १ सामूहिक गीत नृत्य (Coral Music and Dance)
- २ जाख्यान नृत्य गीत (Ballad Dance)
- ३ जाख्यान और गाथा (Lays and Ballads)
- ४ गाथा चक्र (Cycles of Ballads)
- ५ प्रारम्भिक महाकाव्य (Epic of Growth)
- ६ अतट्ट महाकाव्य (Epic of Art)

वर्तिक साहित्य म धार्मिक मात्रा के अतिरिक्त कुछ एस मात्र भी उपलब्ध है जिनम आरपान का स्वरूप निहित है। इह आख्यान-मूर्त्त भी कहा जाता है। इन सूक्ता का रूप सवादात्मक और नाटकीय है। त्रग्वन् म र्द्रमूर्त्त के अतगत जा वणन मिलता है उमम महाकाव्य के आरम्भिक लक्षण स्पष्ट रूप स मिन जाते है। ऐसे ही सवात् और जाख्यान जब किसी प्रतिभाशाली कवि द्वारा एव साथ संग्रहात कर लिय गय ता महाकाव्य का जन्म मिन गया। बाग चलकर महाभारत म सवात् के भीतर सवात् का जाशदा लिखाया दती है बह सम्भवत इही वर्तिक जाखाना का प्रेरणा म विवगिन हुई हागी।^४ इतके अनिरिक्त वना म कुछ एमी प्रणमाए भा मिलती है जिन् रानस्तुति गाथा नारणसी और कुन्लापमूर्त्त कहा जाता है र्न प्रणमात्रा म राजाजा की वीरता का वणन है। विटरनिन्म आनि विद्वाना का मत है कि इन प्रणमात्मक सूक्ता स हा महाकाव्य के रूप का भा प्राटुर्भाव हुआ।^५

वना के जनन्तर पौराणिक वान म जाकर जाखाना न कथात्रा का रूप

^३ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास पृ० ४

^४ डा० शम्भूनाथ र्न काव्य रूप के मूल स्रोत और उनका विकास पृ० ४१

^५ These songs in praise of man probably soon developed into epic poems of considerable length i.e. heroic songs and into entire cycles of epic songs entering around one hero

धारण किया। यद्यपि इन पौराणिक कथाओं की रचना में मूल रूप में विज्ञानपर आधारित एक परम्परागत अनुभूतियाँ आदि का भाग्यमान रहा है ताँ भा पौराणिक कथाओं में ऐतिहासिक तथ्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। पुराणा में भारतीय जीवन और समाज का बहुत व्यापक रूप से चित्रण किया गया है। वेदों के पश्चात् पुराण ही लोकप्रिय एवं उपान्य सामग्री में सम्पन्न ज्ञानराशि का ग्रन्थ है। पुराणा में भारतीय सभ्यता और साहित्य की चिन्तन निधि सुरक्षित है। भारतीय मनीषा का व्यापक चिन्तन और चेतना का सम्पूर्ण विकास का सम्पूर्ण रूप पुराणा में ही प्राप्य है। जन जीवन की सामूहिक चेतना के अस्तित्व और विकास का जितना भाव विराट और महान् चित्र अंकित करने में पुराणकार सफल हुए हैं उतना भारतीय वाङ्मय में किसी रूप का कोई भी ग्रन्थ नहीं। पुराणा की महत्ता का मूल कारण उनका लोकप्रिय होना है। पुराण में वे जहाँ में जनवादी साहित्य है क्योंकि उनकी भाषा भाव विचार परम्परा जीवन-ज्ञान आदि एवं प्रतिपाद्य सभी का आधार तत्वान्त जनवादी प्रवृत्तियाँ और लोकप्रचलित परम्पराएँ हैं। पुराणा में अज्ञेय ज्ञान है जो साहित्य मूल्यांकन का मूलनात्मक उपकरण प्रदान करते हैं। पुराणा में विषय की व्यापकता इतना अधिक है कि उमम अविनि का अभाव है। पुराणा की कथाएँ अत्यन्त स्थित रूप में विगरी हुई हैं और वाय तत्त्व का भी उनमें अभाव है। समय-समय पर बहुत से नये-नये ज्ञान भी उनमें जुड़ते रहते हैं जिनके कारण उनकी ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता भी मजबूत बना रही। अस्तु पुराणा में महाकाव्य का कोई निश्चित रूप उपलब्ध नहीं होता है। हाँ पुराण ग्रन्थों में महाकाव्यों का रचना के लिए विषय-सामग्री (कथानक) प्रदान करने में निश्चय ही महत्वपूर्ण योग दिया है।

महाकाव्यों का मुख्यमन्त्र परम्परा का विकास रामायण और महाभारत से होता है। भारतीय वाङ्मय में इन दोनों ग्रन्थों का पश्चात्त्य और पौराणिक विधानों में एक मन में महाकाव्य स्वीकार किया है। हिन्दी महाकाव्य की सम्पूर्ण परम्परा का विकास रामायण और महाभारत कथा प्रसंग आधारित एक उपाख्यान का चक्र हुआ है। अतएव इन दोनों काव्यों का आपस में अभिधान दिया जाता है। इन दोनों का जन्म समाज और सभ्यता से गहन सम्बन्ध है। सभ्यता साहित्य में रामायण और महाभारत से वेदों कोई महाकाव्य नहीं लिखा गया है। भाषा भाव का शिल्प शक्ति चरित्र चित्रण कथा-समाज आदि सभी दृष्टियों से ही महाकाव्य का परवर्ती कविता में प्राप्त रूप में स्वीकार किया है। रामायण और महाभारत ज्ञान ही सत्त्वनात्मक

महाकाव्य हैं। सस्कृत महाकाव्य का मुद्रा परम्परा का विकास इन्हा महाकाव्या का जन्म मान कर हुआ। प्राचीन कायाचार्यों ने महाकाव्य को जिन लक्षणों का निरूपण किया है उनमें भी इन महाकाव्यों का यागदान है। वास्तव में परवर्ती महाकाव्यकारों ने महाभारत से कथातत्त्व ग्रहण किया तथा और शिल्प विधान की प्रेरणा का स्रोत रामायण बना। इस प्रकार रामायण और महाभारत निरिषद्व (निखिन) महाकाव्य परम्परा के दो आदि ग्रन्थ बने जा सकते हैं।

सस्कृत में कालात्मक महाकाव्यों (Epic of Art) की एक सुव्यवस्थित परम्परा मिलती है। कालिकास में पूर्व महाकाव्य का इतिहास अज्ञानप्रायः का कालिकास से पूर्व उपलब्ध हात है। अश्वघोष के पश्चात् कालिकास के दो महाकाव्य कुमार सम्भव और रघुवश भारवि का किराताजनीय माघ का भिनुपालवध और श्री हर्ष का 'नपदीयचरित' सस्कृत के पांच उत्कृष्ट महाकाव्य हैं। इन सभी महाकाव्यों में उच्चकाव्य का वाच्यत्व एक कला-बौद्धिक प्रदर्शन हुआ है। लक्षणकारों ने महाकाव्य की जो परिभाषाएँ दी हैं उनका आधार यही महाकाव्य हैं। सस्कृत के अन्य महाकाव्यों में भट्टी कविवर्य रावणवध कुमारदास वृत्त जानकीकरण रत्नाकर वृत्त हरविजय कविराज वृत्त राघवपाटवाय आदि के नाम उल्लेखनाय हैं।

सस्कृत की भाँति ही पाता प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं में भी महाकाव्यों का रचना हुई है। पाता में दीपवश और महावश तथा एतिहासिक महाकाव्य लिखे गये हैं। प्राकृत के महाकाव्यों में प्रवरसन का अनुवच और कृष्णनागा का त्रिचकान्य (तिरिचिच काय) उपलब्ध हैं। प्राकृत में ही वाकपतिराज का गौर्वहा और रामपाणिवाण का उपानिरुद्ध नामक महाकाव्य मिलते हैं। अपभ्रंश में जन कवियों ने अनेक चरितकाव्यों की रचना की है, जिनमें स्वयम्भू का पउमचरित (रामायण) पुष्पन्त का महापुराण (निर्मट्टिमहापुराण गुणानकार) और धनपालवृत्त भविस्मयत्तवहा के नाम उल्लेखनाय हैं। अधिकतर जन चरितकाव्यों में काव्य का अपेक्षा धार्मिक दृष्टिकोण का प्राधान्य है। विकासक्रम का दृष्टि से हिन्दी महाकाव्य परम्परा सस्कृत का अपभ्रंश अपभ्रंश से ही अधिक प्रभावित है।

हिन्दी महाकाव्य परम्परा का प्रारम्भ चन्द्रवर्मा के पृथ्वीराजराया से होता है। उसकी एतिहासिकता और प्रामाणिकता के सम्बन्ध में विभिन्न प्रवाणों के प्रतिनिधियों द्वारा हुए भाषणों से स्पष्ट है। इनके अनन्तर भक्तिवादी महाकाव्यों में जायना के पद्मावत और तुलसीदास गमचरित

मानस उल्लेखनीय है। रीतिकाल में महाकाव्या का विकास असाध्यप्रमाण रहा। आचार्य केशव न रामचन्द्रिका की रचना अत्यन्त ही है किन्तु उस एक मूल महाकाव्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि उगम पारित्य प्रमाण का अप्रष्ट ही अधिन प्रियायी देता है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में महाकाव्या की एक व्यवस्थित परम्परा मिलती है जिसका मूलपात हरिऔध के प्रियप्रवास से होता है। प्रियप्रवास की रचना का आधार कृष्ण कथा है। प्रियप्रवास में राधा जी की कृष्ण के परम्परित रूप का युगीन सम्भावनाओं के परिप्रेक्ष्य में परिष्कार करके उच्चतम स्तर की रचना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक काल का दूसरा महत्त्वपूर्ण महाकाव्य श्री भक्तिशरणगुप्त का साहित्य है जिसकी रचना राम कथा की उपेक्षिता उमिता के चरित्र का चरित्र हुई है। चूंकि पश्चात् इस युग के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य कामायनी का रचना महाकवि श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा हुई। कामायनी में मानवता के विकास का सुन्दर रूपक पौरोहित्य जास्थान का आधार बना कर प्रस्तुत किया गया है।

कामायनी के जननर जिन महाकाव्या का रचना हिन्दी में हुई है उनमें सबसे महत्त्व नाम निम्न प्रकार है

बदही बनवास (हरिऔध) कृष्णासन (द्वारिका प्रसाद) साकतसन (बलदेव प्रसाद) सिद्धाथ (जनूब शमा) नूरुद्दीन (गुरुभक्तसिंह) दत्तवध (हरदयानुसिंह) अमराज (आनन्दकुमार) बद्धमान (जनपशर्मा) रावण (नरदयानुसिंह) जयभारत (मथिनाशरणगुप्त) पावती (डा० रामानन्द निवार) रश्मिरथा (दिनकर) मीरा (परमेश्वर त्रिफ) कल्याण (डा० रामकुमार वर्मा) उमिता (बालकृष्ण नवीन) तारकवध (गिरिजाशक्त शक्ती गिरीश) सनापति कण (श्रीमतीनारायण मिश्र) कुरुक्षेत्र (दिनकर) श्रीरामचन्द्रिका (रामनाथ यानिपी) कृष्णचरित मानस (पद्मनटुगा) जीहूर (श्यामनारायण पांडेय) आधावत्त (माहनारायण महता) हस्ताघाटी (श्याम नारायण पाण्डेय) विक्रमान्तिक्य (गुरुभक्तसिंह) महामानव (ठाकुरप्रसाद सिंह) जननायक (रघुवीरशरण मिश्र) जगन्नाथ (ठाकुर गायानशरण) देवाचन (डा० कर्गीत) लाला का राना (श्यामनारायण) युगद्रष्टा प्रमत्त (परमेश्वर त्रिफ) सारथा (डा० रामगायान त्रिभ) उवशी (त्रिभक्त) नासायन (मुमिन्नानन्द पन्त) रामराय (डा० बलदेवप्रसाद मिश्र) दमयन्ती (ताराशक्त शक्ती) नारा (अनुकृष्ण गायामी) शक्या (कल्याण मिश्र)

प्रभात) प्रिय मिलन (नन्दकिशोर या) बाणाम्बरी (गमावतार जन्म पादुर) मानवद्र (रघुवीरधारण मित्र) ।

एक अनिर्दिष्ट भा कुउ नाम है जम रामचरित चिन्तामणि का उक्तिभार विश्वज्यानि बापू गवाणा अनग आदि ।

महाकाव्य का उपयुक्त विस्तृत सूचा का स्वकार हिन्दी महाकाव्य मूलन का समृद्ध परम्परा का सञ्ज हा म अनुमान लगाया जा सकता है । महा म्म प्रश्न क मूत्र म नया जाना चाहता कि उपयुक्त सूचा म चिन्तन महाकाव्य है किन्तु मात्र प्रवचनार्थ या तयावधित महाकाव्य है ? अथवा एकाधकाव्य या महाकाव्याभास एन वाच प्रवचनार्थ है । यत् जनग स मन्त्राव्य रचना क मिद्वान्ता म सम्बन्धित विषय है । एम सम्बन्ध म हिन्दी क मुधा मभाषका म मतवर भा नया । डा० शम्भूनाथ मिह न पृथ्वीराजराजा पद्यावन आन्हा एण रामचरितमानस और कामायना कवन पाच न प्रना का मन्त्राव्य माना है । १० गाविन्त्याम प्रमा न इनक अनिर्दिष्ट प्रियप्रनाम मावन कृष्णावन बन्ही बनवाम मावन मन्त्र जाति का वायुनिर्गत राव क प्रतिनिधि महाकाव्य तथा अथ प्रना का जय महाकाव्य और तयावधित मन्त्राव्य शापन क अन्तगत समाविष्ट किया है । मन्त्राव्य पर पात्र वरन वाच विद्वाना म डा० प्रतिपात्रमिन् १० श्यामनन्दनकिशोर १० श्यामसुन्दर व्यास प्रभृति विद्वाना न उपयुक्त सूचा क सामान्यत जविकाश प्रथा का मन्त्राव्य नी स्वाकार किया है । वस्तुतः युग जावन का साम्प्रतिक चेतना का विविष्ट शिष्टविधि म कलात्मक अभिव्यक्ति एन वाचा प्रवचनरचना का महाकाव्य स्वाकार किया जाना न चाहिए ।

हिन्दी क महाकाव्या का रचनाविधि (शिल्प) साहित्यिक चित्रण जावन एन सम्प्रदाय उपनिषदा पर विचार किया जाय ता निश्चय न हिन्दी मन्त्राव्य प्रगतिपथगामा प्रदान जाता है । जविकाश महाकाव्या का विषय सामग्रा यद्यपि पौराणिक न तथापि उनम वतमान युगजावन का प्रगति वरन का अनन्त शक्ति और सामर्थ्य भी है । पारंगिक विषया क अनिर्दिष्ट स्मार युग क पराक्रम मघाण व्यक्तित्व एव महापुराण पर भा मन्त्राव्या का रचना है । महामानव जननायक जगन्नाथ विश्वज्यानि बापू नामक महाकाव्य गाथाका क मन्त्राव्य व्यक्तित्व का गाथा कहत है । मानवद्र प० जवाण नाव नहए पर लिखा गया महाकाव्य है । उल्लाघाटा म महाराणा प्रताप सामा का गना म मन्त्राव्य नाभीबाई स्वावन म तुलसीदास युगद्रष्टा म प्रमचन्द्र, मार्ग म भाग या बाणाम्बरी म बाणभट्ट मिद्वय म गौतमकुड

वर्तमान में भगवान् महावीर आर्यावत्त महाकाव्य पृथ्वीराज चरित्र युगप्रसक्त चरित्रों का वैभवशाली चित्रण है। हिन्दी के महाकाव्य मात्र राम कृत की कथाएँ ही नहीं हैं। उपनिषद् और निरमृत पात्रों पर ही नहीं बरन् रामायण के एक निम्नवर्णी चरित्रों पर भी हिन्दी महाकाव्यों का रचना हुई है। मूल पुत्र कणक चरित्र पर नन्दरत्न रश्मिधरी महापति कणक एक जगन्नाथ नामक चार महाकाव्य लिखे गये हैं। रावण और अश्वमेध के राजाभा पर महाकाव्य रचना हुई है। निषाद पुत्र एकत्रय पर डा० रामकुमार महाकाव्य लिखा है। रामायण युग की व्यापकतम अभिव्यक्ति पतञ्जलि त्रिकायनन और टी० रामदासानन्दिनशक्ति नामक महाकाव्यों में स्पष्ट है। उपनिषद् पात्रों में भरत ककया उर्मिता अमयन्ता आदि पात्रों पर स्वतन्त्र महाकाव्य रच गये हैं।

इस प्रकार हिन्दी महाकाव्यों में मृगजल का सामर्थ्य का उच्चतम जाण प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी के कनिष्ठ समीक्षक प्रायः यह कल्पते हैं कि वर्तमान युग का ही महाकाव्य का स्थान उपन्यास नहीं दिया है जाति। किन्तु यह सवथा सत्य नहीं है। वस्तुतः महाकाव्य की रचना युग जाति के व्यापक सघन सामाजिक उत्थान पतन तथा जाति मूल्यों के उत्कर्ष अपकर्ष का यज्ञित करने के लिए होता है। इस दृष्टि में विचार करें तो महाकाव्य प्रत्येक युग के लिए अपेक्षित है। टी० रामरत्न भटनागर के शब्दों में— प्रत्येक युग का जीवन महाकाव्य का माग करता है क्योंकि महाकाव्यवद्ध हारर ही वह परिपूर्णता और साधकता का प्राप्त होता है।^६ इसी सन्दर्भ में श्री रामधारी सिंह त्रिबेण का मत भी स्पष्ट है कि— जगत् परम्पर विराधी भावा का जात्रमण कवि का महाकाव्य लिखने की प्रवृत्ति है तो उमका समय आज है। अगर महाकाव्य की रचना का समय वह युग होता है जबकि प्रवृत्ति की विभिन्न धाराएँ अपना समाधान पान के लिए किंसा समुद्र की खोज में बग से दौड़ता है तो वह समय आज हुआ है। यह सभृति के वर्तमान का समय है यह परम्पराओं के परिवर्तन का वक्त है क्या इसमें भी और अधिक उपयुक्त समय चाहिए।^७ अस्तु स्पष्ट है कि महाकाव्य मृगजल का सभावनाएँ पूर्ववत् ही हैं।

हिन्दी महाकाव्यों का प्रवृत्तिमूर्त अध्ययन करने से उनकी रचना का महत्त्व और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। हिन्दी के महाकाव्यों का प्रमुख प्रवृत्तियों

^६ सरस्वती सवाद महाकाव्य विज्ञान पृ० २

^७ त्रिबेण अधनारीश्वर महाकाव्य का वक्त नामक निबंध पृ० ५

है—मानवतावादी जीवन दर्शन साम्प्रतिक निष्ठाओं और उच्च जावनाओं का प्रतिष्ठा नारा चेतना और जनजागृति का उदघाटन शिल्पविधि का नवानता और पाया का युगान्तर परिसन्धों में प्रस्तुताकरण । इन विधा पनाओं के वन पर ही महाकाव्य काय का महानता का प्राप्त करन है । हिन्दी के महाकाव्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपरति मानवतावादी जीवनदर्शित का विराम और भारतय साम्प्रतिक परम्पराओं के अभ्युत्थन में यागदान है । इस अनिर्दिक्त राष्ट्रय जीवन का प्रतिनिधित्व युगीन चेतना का जन्मियक्ति साम्प्रतिक उन्नयन, सामाजिक उत्थान कलात्मक औन्नत्य और कायात्मक वभव में सम्पन्न हान के कारण हिन्दी महाकाव्य रचना का भविष्य निश्चय ही आशापूर्ण एवं आशाकरमय है । वर्तमान युग के महाकाव्य हिन्दी भाषा और साहित्य का सर्वोत्तम प्रगति के परिचायक है ।

1

हिन्दी महाकाव्य • प्रसादोत्तर

हिन्दी महाकाव्य प्रसादोत्तर

श्री रामचारी सिंह त्रिवर न एक स्थान पर लिखा है कि— विश्व के महाराज्य मनुष्यता की प्रगति के माय में मीन के पथर के समान हान के व यज्ञित करते हैं कि मनुष्य किम युग में कहा तक प्रगति कर सका है।^१ इस कथन के जानाके में मणि टिप्पणी महाकाव्य परम्परा पर लक्ष्मिपात किया जाय तो वह नितान्त प्रगतिशान एवं मायक प्रतीत होती है। पृथ्वीराज रामा में लकर (जिन हिन्दी का प्रथम महाकाव्य हान का गौरव प्राप्त है) मानवद (जा नरुजी के जीवन पर आधारित है और १९६५ में प्रकाशित हुआ है) तक गत सन्ध वर्षों में हिन्दी महाकाव्य सृजन की मुलाघ परम्परा का विकास बने यवन्वित ढंग में हुआ है। हिन्दी महाकाव्य का अतीत की सृजन परम्परा (जिस सम्भृत, प्राञ्जल और विशेष रूप में अपभ्रंश भाषा के महाकाव्यों) से रचनाविधि एवं गिरपतन की दृष्टि से गहरा सम्बन्ध था रहा है। इस परम्परा में तुलसी और प्रसाद जैसे महान् महाकाव्यकार हुए हैं जिनका कृतित विश्व-वाङ्मय की अमूल्य निधि है। 'आधुनिक युग' में महाराज्य वेदत का समारम्भ श्री हरिऔर के प्रियप्रवास से जाता है। तदनन्तर श्री महाराज्य किम गय उनमें श्री भयिनागण गुप्त कत साकेत और प्रसादजी द्वारा रचित कामायनी नामक महाकाव्य के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके पश्चात् "प्रसादोत्तर काल" में विरचित महाकाव्यों के नाम तथा प्रकाशन तिथि महित सूची निम्नांकित है

| महाकाव्य | रचयिता | प्रकाशन तिथि |
|------------------|----------------|--------------|
| १ मिद्धाय | अनूप शर्मा | १९३७ |
| २ श्रीरामचरितम् | गमनाथ ज्यातिषी | १९३७ |
| ३ नरु वनवास | हरिऔर | १९५९ |
| ४ हलीधारी | श्यामनागण पाडय | १९३९ |
| ५ कृष्णचरित मानस | पद्मनूरा | १९४१ |

^१ त्रिवर अद्वैतारोवर महाकाव्य की वेदा नामक निरुध पृ० ४६

हिन्दी महाकाव्य प्रसादोत्तर

श्री रामधारी मिश्र लिखकर नए एक म्यान पर लिखा है कि— विश्व के महाकाव्य मनुष्यता का प्रगति के माग में मोन के पथग के समाप्त हान है व यज्ञित करत है कि मनुष्य किस युग में क्या नव प्रगति कर सका है।¹ यह कथन के जातक में यदि हिन्दी महाकाव्य-परम्परा पर प्रतिपादन किया जाय तो वह नितान्त प्रगतिमान एक साधक प्रदान होता है। पृथ्वाराज रामास लेकर (जिस हिन्दी का प्रथम महाकाव्य हान का गौरव प्राप्त है) मानकर (जो नरसी की जावन पर आग्राहित है और १६६२ में प्रकाशित हुआ है) तक गन मन्म वर्षों में हिन्दी महाकाव्य मृजन की मुद्रा पर परम्परा का विकास का परम्परा टग में हुआ है। हिन्दी महाकाव्य का अन्त की मृजन परम्परा (जिस सम्भृत प्राकृत और विषय रूप में अपभ्रंश भाषा के महाकाव्य) में रचनाविधि एवं शिल्पन की दृष्टि में गहरा सम्बन्ध ना रहा है। इस परम्परा में तुलना और प्रसाद जैसे महान महाकाव्यकार हुए हैं जिनका कृतित्व विश्व-साहित्य का अमूल्य निधि है। आधुनिक युग में महाकाव्य रचना का समागमन या संश्लेष के प्रियप्रिय न जाता है। तदनन्तर जो महाकाव्य निम्न गण उनमें श्री भविष्यवाणी गुप्त कृत साकेत और प्रसादादादा गण रचित कामायनी नामक महाकाव्य के नाम उल्लेखनीय हैं। अब पश्चात् प्रसादोत्तर काल में विरचित महाकाव्य के लक्ष्य के नाम तथा प्रकाशन तिथि महित सूचा निम्नान्वित है

| महाकाव्य | रचयिता | प्रकाशन तिथि |
|------------------|---------------------|--------------|
| १ मिथ्या | अनूप शर्मा | १९३७ |
| २ श्रीगणेशकाव्य | गणनाथ ज्यानिषा | १९३७ |
| ३ बन्ना बनवाम | हरिऔध | १९३६ |
| ४ साधारण | श्यामनाथरायण पाण्डे | १९३६ |
| ५ कृष्णचरित मानस | पद्मनूत | १९४१ |

¹ लिखकर अक्षरारोसवर महाकाव्य की कथा नामक निबन्ध पृ० ४६

| महाकाव्य | रचयिता | प्रकाशन तिथि |
|---------------------|-------------------------------|--------------|
| ६ कृष्णायन | शक्तिप्रसाद मिश्र | १९४३ |
| ७ कुम्भार | शक्तिप्रसाद | १९४३ |
| ८ आयावन | श्यामनारायण मन्ता | १९४३ |
| ९ जोर | श्यामनारायण पाण्य | १९४५ |
| १० मन्तमानस | ठाकुरप्रसाद मिश्र | १९४६ |
| ११ मन्तन सत | वन्धव प्रसाद | १९४६ |
| १२ विद्वन्मन्त्रिय | गुरुभक्त मिश्र | १९४७ |
| १३ दयवश | श्यामनारायण मिश्र | १९४७ |
| १४ जननायक | रघुवीरशरण मिश्र | १९४९ |
| १५ जगराज | जानककुमार | १९५० |
| १६ बद्धमान | जनूष शर्मा | १९५१ |
| १७ रावण | श्यामनारायण मिश्र | १९५२ |
| १८ जयभारत | मन्त्रिनाशरण गुप्त | १९५२ |
| १९ जगन्नाथक | ठाकुर गापावशरण मिश्र | १९५२ |
| २० श्वाचन | श्यामनारायण | १९५२ |
| २१ पावनी | श्यामनारायण निवारी | १९५५ |
| २२ श्यामा की गना | श्यामनारायण प्रसाद | १९५५ |
| २३ रश्मिरेखी | श्यामनारायण मिश्र शक्तिप्रसाद | १९५७ |
| २४ नारी | अनन्तकृष्ण गास्वामी | १९५७ |
| २५ मारा | परमशिवर त्रिरेफ | १९५७ |
| २६ श्मयना | ताराशक्त हारात | १९५७ |
| २७ उमिता | बालकृष्ण नवीन | १९५८ |
| २८ श्कन्ध | श्यामनारायण रामकुमार वमा | १९५८ |
| २९ तारकवध | गिरिजाशक्त शक्ती गिराश | १९५८ |
| ३० मनापति वण | श्यामनारायण मिश्र | १९५८ |
| ३१ युगद्रष्टा प्रमच | परमशिवर त्रिरेफ | १९५९ |
| ३२ रामराय | वन्देव प्रसाद | १९६० |
| ३३ उवशी | शक्तिप्रसाद | १९६१ |
| ३४ मारथा | श्यामनारायण शक्तिप्रसाद | १९६१ |
| ३५ वाणाश्वरा | श्यामनारायण पाद्दार | १९६१ |
| ३६ अनग | डा० पुत्तनारायण शुक | १९६१ |

| महाकाव्य | रचयिता | प्रकाशन तिथि |
|---------------|-----------------|-----------------|
| ३७ प्रियमिदन | नन्दिनी | (क्रि० म०) २०२१ |
| ३८ रामायण | मुनिराज | १९६४ |
| ३९ मानवेन्द्र | गधुवागशरण मिश्र | १९६५ |

(इनके अतिरिक्त कवियों द्वारा भी और विश्वज्यानि वासु^१ नामक महाकाव्यों की सूचना और कुछ प्रारंभ ही पर कुछ पर नही पाया है ।)

हिन्दी के उपर्युक्त प्रकाशित महाकाव्यों की सूचा देगन में स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिन्दी में महाकाव्यों की रचना विपुल परिमाण में हो रही है । क्या ये सभी ग्रंथ मानव या कामायनी का टक्कर हैं ? इनमें से कितने मानव प्रारंभिक हैं ? कितना का 'प्रतिनिधि' या तथाकथित महाकाव्य कहा जाय ? कौन से ग्रंथ इनमें अत्यंत बड़े काव्य या वृहत् परम्परा की मना पायेंगे ? यह अलग से विचारणीय विषय है जिसका सम्बन्ध महाकाव्य के स्वरूप, परिभाषा एवं लक्षणों में^२ और महाकाव्यालाचका में इस प्रश्न को लेकर पद्याप्त मतभेद भी है । डा० हरणारायण शर्मा^३ शम्भूनाथ मिश्र^४ न पृथ्वीराज रासा, पद्मावत आन्ध्रवर्ण रामचरितमानस और कामायनी पाँच ही ग्रंथों का महाकाव्य माना है । डा० गणेशशरण शर्मा^५ ने इनके अतिरिक्त प्रियप्रवाम मानव कामायनी रामायण बरहा बनवाम और साकेत मन्त्र का प्रतिनिधि महाकाव्य तथा अन्य ग्रंथों का अन्य महाकाव्य और तथाकथित महाकाव्य शीघ्रता से अन्तर्गत समाविष्ट किया है । किन्तु महाकाव्य पर शोध करने वाले विद्वानों में डा० प्रतिपान मिश्र^६ डा० श्यामनन्द विशारद^७ तथा डा० श्यामसुन्दर व्यास^८ ने उपर्युक्त उल्लिखित सूचा के कामायनी अधिकांश ग्रंथों का महाकाव्य ही स्वीकार किया है । अस्तु प्रस्तुत प्रसंग में इन ग्रंथों का गिल्फत में नही करने विचारणीय यह है कि प्रामाण्य के लिये महाकाव्य का विधान किन युगीन परिणामों के फलस्वरूप हुआ है ? इस महाकाव्यों की शिपणन एवं जीवन-मान सम्बन्धी उपलब्धियाँ क्या हैं ? क्या परिमलभ में इन महाकाव्यों की समान प्रवृत्तियाँ तथा लक्ष्य महाकाव्यों की रचना के भविष्य का प्रश्न भी

^१ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विचार

^२ हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य

^३ श्रीमती शताब्दी पूर्वार्द्ध के महाकाव्य

^४ आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों का शिल्प विधान

^५ हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण

विचारणीय है। वस्तुतः इन्हीं प्रश्न चिह्नों का परिग्रहण में प्रमाणोत्तर हिन्दी महाकाव्य का मूल्यांकन हम यहाँ प्रस्तुत करेंगे।

प्रवृत्तिमूलक दृष्टि से प्रमाणोत्तर हिन्दी महाकाव्य का रचना विधान पर विचार किया जाय तो सबसे प्रथम उक्त परम्परित काव्यशास्त्रीय रचना का परित्याग लिखायी देना है। हिन्दी के आधुनिक महाकाव्यकारों ने मन्वृत काव्याचार्या (भामहृदय की रचना हेमचन्द्र विश्वनाथ आदि) द्वारा प्रस्तावित उक्त रचना तथा—मगनाचरण सगसख्या सर्गात् छन्द परिवर्तन मगन स्तुति दुजन निन्दा चतुर्वग फल प्राप्ति उक्त एव कुन्तीन नायक आदि के निर्वाह का साग्र प्रयत्न नहीं किया है। आधुनिक महाकाव्यकारों की रचना प्रक्रिया में ब्राह्मण तत्त्वा की अपेक्षा जातीय और युग जीवन का व्यापक चित्रण युगीन जीवनादर्शों की स्थापना एवं मानवीय जीवन मूल्या की प्रतिष्ठा पर अधिक ध्यान दिया गया है।

प्रमाणोत्तर महाकाव्या में कथानक के प्रमुख स्रोत पुराण और इतिहास रहते हैं। किन्तु समसामयिक जीवन की घटनाएँ परिस्थितियाँ एवं व्यक्तित्व भी महाकाव्य रचना के आधारमान रहे हैं। उदाहरण के लिए—वदेही वनवास कृष्णायन साकेत सन्त दस्यवश रावण जयभारत पावती रश्मिरथी एकनव्य उर्मिता उवशी तारकवध कुरुभ्रम सारथी दमयती रामराज्य आदि महाकाव्यों की कथावस्तु पुराण-आधुनिक हैं तो नूरजहाँ सिद्धाथ बद्धमान मीरा हल्दीघाटी आयावत्त पामो की रानी बाणाम्बरी विक्रमादित्य आदि महाकाव्यों की इतिहासोन्मुख हैं। किन्तु महाकाव्य जननायक जगदानोक युगप्रताप प्रमचन्द्र लाकायतन मानवेन्द्र आदि महाकाव्यों की रचना समसामयिक युग जीवन युगपुराण और युगीन घटनाओं पर आधारित है। इन महाकाव्यों की कथावस्तु इतिहास-पुराण आधारित होते हुए भी कथाचयन की नवीनता मौखिक प्रसंगोन्भावनाओं एवं मार्मिक प्रसंगों की सृष्टि के कारण महाकाव्यकारों की असाधारण रचना सामर्थ्य की परिचायक हैं।

नायक की परिवर्तन तथा चरित्र विशेषण की पद्धतियाँ में भी आधुनिक महाकाव्यकारों ने प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिष्कार दिया है। उन्होंने एक आर दवी पात्रा (जैसे—राम कृष्ण सीता राधा आदि) के देवत्व का प्रकाशन तथा दानवीय पात्रा (जैसे रावण हिरण्यकश्यप दुर्योधन दुःशामन आदि) के दानवत्व का परिभाजन कर उन्हें मानवता के धरातल पर खड़ा किया है तो दूसरी ओर उपरिष्ठ तिरस्कृत एवं कनकित कहे जाने वाले पात्रों

(जैसे—एकलव्य कण जाति) का महाकाव्य का नायक बनाकर व्यापक मानवतावादी जीवन-दृष्टि का परिचय दिया है। आधुनिक युग के महाकाव्यों की यह एक ऐसी विशेषता है जो समय हिन्दी काव्य रचना के स्तर और घरातन का ऊँचा उठाती है। इसने अतिरिक्त वर्तमान युग के अनन्य महाकाव्य नायिका प्रदान हैं जैसे—बन्ही वनवास नूरजहाँ—मिला तमयल्ला मारा शामा की रानी शर्वाणी कवेया उवशी नारी जाति। इन काव्यों के माध्यम से महाकाव्यकारों ने नारी जीवन की समस्याओं और आदर्शों का ही प्रस्तुत नहीं किया बरन नारी जागरण की महान् जागृत्तनकारी चेतना का भी अभिव्यक्ति की है।

महाकाव्यों की रचना का उदय—युग सम्भूत समस्याओं का निदान प्रस्तुत करना होता है—इस तथ्य का अवपण इस युग के महाकाव्यों में सम्यक् रूप से किया जा सकता है। इन महाकाव्यों में दश प्रेम स्वजातीय गौरव राष्ट्रीय सम्मान मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा ममतामयिक जीवनादर्शों के अनुरूप युगीन प्रश्नों के समाधान का विराट चेट्टा की गयी है। समष्टि रूप में मानवतावादी जीवन दर्शन सांस्कृतिक निष्ठाएँ उत्थानमूलक जीवनादर्श नारी चेतना के मुखरित स्वर जन-जागृति का उदघोष रचना शिल्प की नवीनता तथा चरित्रों की युगीन सभ्यताओं में अकताङ्गा प्रमाणेतर काव्य के महाकाव्यों की विशेषताएँ रही हैं जिनके आधार पर इन काव्य ग्रंथों को ही भारतीय के भण्डार की महत्त्वपूर्ण उपनिधि निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है।

अब एक प्रश्न शेष है—हिन्दी महाकाव्य रचना का भविष्य? यद्यपि यह कहा जाता है कि आज गद्य का युग है और गद्य युग का महाकाव्य उपयाम है और हिन्दी में उपयाम महाकाव्य का स्थान ग्रहण कर रहा है जाति। किन्तु यह कथन सवथा सत्य नहीं है। क्याकि महानायक जन्म सम्भार काव्य रूप के विशिष्ट रचना शिल्प की गरिमा और उद्देश्य की मन्थना का औपचारिक वृत्त में कभी भी समाहार नहीं हो सकता। वस्तुतः महानायक की रचना युग जीवन के व्यापक सघन सामाजिक उत्थान-पनन तथा जीवन मूल्यों के श्रमागत उत्कर्षपरिपक्व को व्यक्त करने के लिए होती है। इस दृष्टि में विचार करें तो महाकाव्य की रचना प्रत्येक युग के जीवन के लिए अनिवार्य है। डॉ० रामरत्न भटनागर के शब्दों में— प्रत्येक युग का जीवन महाकाव्य का माँग करता है। क्याकि महाकाव्यबद्ध हाकर हा वह परिपूर्णता और सायकता को प्राप्त करता है। अस्तु स्पष्ट है कि गद्य-युग में भी महाकाव्य-मृजम की सम्भावनाएँ

पूर्ववत् ही है। यह रूप का विषय है कि जिन्ही क मन्तरात्पर अपन गुणर दायित्व के प्रति मजग और सचेष्ट है। प्रगाभोत्तर कान क मन्तरात्पर जिन्ही भाषा और साहित्य की श्रीवद्धि क साथ-साथ युग जनना को जिय कनात्मक औत्पत्य और कायात्मक बभव म मम्पन्न करव यजित कर रह है उमक कारण हिन्दी महाकाव्य रचना का भविष्य निश्चित रूप म आशामय एवं जानोकपूर्ण है।

आधुनिक हिन्दी महाकाव्य में प्रवृत्ति-साम्य

आधुनिक हिन्दी महाकाव्य में प्रवृत्ति-साम्य

विभिन्न काव्यरूपायन आकार प्रकार और महत्त्व ज्ञान ही नष्टिया स महाकाव्य का शीघ्र स्थान है। जीवन्त कथानक महान नायक, गरिमामयी उन्नत शक्ती महान उद्देश्य युग जावन क व्यापक चित्रण गम्भीर अभिव्यजना शक्ति रस-परिपाक विराट कल्पना और जावन दर्शन की बलवती प्रणवा क कारण महाकाव्य निरख्य ही एक महत्त्वपूर्ण काव्यरूप माना जाता है। महाकाव्य का स्रष्टा कवि असाधारण प्रतिभा न सम्पन्न कलाकार हाना है। महाकाव्य मृज्जन गुरतर काय है। महाकाव्य जाताय जीवन और सामाजिक चतना के आवतन का मासृतिक प्रयास है। जीवन के सम विषय प्रभावा का अभिव्यजना महाकाव्यकार की सखनी अनुभूत सत्याधारा और कनामक सस्पर्श क भाष्यम स परम मागतिक और जापयोगा रूप म करती है। इमानिए काव्याचार्यों न महाकाव्यकार का महान कवि की मन्ना स सम्बोधित किया है। एकराम्बा के अनुसार the epic poet is the rarest kind of Artist ¹ कविवर तिनकर न भा तिया है— महाकाव्य तभी लिया जाता है जबकि युग का अनक विचारधाराएँ बग म बहती हूँ किमा समुद्र म मिनना चाहती हैं। जब ऐसा अनक धाराएँ बगवन्त प्रवाह म होती है तभी महाकाव्य की रचना का समय होना है। और जो कवि उनक महामिजन के लिए मागर का निमाण कर सकता है, वहा महाकाव्य लिखन का अधिकारी हाना है। महाकाव्य की रचना मनुष्य का विकल करन वाला अनर भावधारजा क वाच सामजस्य ज्ञान का प्रयास है महाकाव्य की रचना समय क परस्पर विरोधी प्रश्ना क समाधान का चट्टा है। विश्व क महाकाव्य मनुष्यता की प्रगति क माग म मील क परस्पर क समान होत ह। व व्यजित करन है कि मनुष्य किम युग म वहाँ तक प्रगति कर सवा है। ²

भारताय महाकाव्य का समृद्ध स्वरूप हम मन्वृत वा मय म पात है।

¹ *The Epic*, p 41

² तिनकर अद्वनारोगवर पृ० ४६

गमायण और महाभारत विश्व महाकाव्य की श्रृंखला की रचनाएँ हैं। इसी प्रकार की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ कुमारसम्भव, रघुशय, विराटाजनीय, गिगुत्तल, बध और नपदीय चरित हैं। गरुड महाकाव्य-परम्परा का सम्पूर्ण विकास पानि प्राकृत, अपभ्रंस और भाषाभाषा साहित्य में भी हुआ है। हिन्दी महाकाव्य-परम्परा विकास की दृष्टि से पूर्ववर्ती काव्यधाराओं की अनुवर्तिनी अवश्य है किन्तु आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में व्यापक विकास में समृद्ध प्राकृत, अपभ्रंस और अतिरिक्त पाश्चात्य (विशेषतः ग्रीक और आंग्ल) तथा समकालीन बंगला में महाकाव्यों का भी पर्याप्त योगदान रहा है। आधुनिक युग का समारम्भ यद्यपि भारत में हरिश्चन्द्र से होता है किन्तु महाकाव्य-सृजन के क्षेत्र में कवि सप्ताह हरिऔध का प्रियप्रवास प्रथम रचना है।

उस समय तक हमारा देश का सम्पूर्ण साहित्यिक वातावरण पाश्चात्य देशों से सम्पर्क स्थापित कर चुका था। ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों में चिन्तन का हर दिशा में चेतना के प्रत्येक चरण पर आगत सम्यक्ता और समृद्धि का प्रभाव प्रभक्त स्थापित कर चुका था। वैज्ञानिक विकास प्रसंगों के प्रचलन मातायात के प्रसार तथा शिक्षणिक व्यवस्था आदि कारणों से इस देश की साहित्यिक गतिविधियाँ में भी जामून परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तन-क्रम की परिणति में हमने पाया कि हमारे अध्ययन मनन चिन्तन आदि की सभी दिशाएँ और दृष्टिकोण एक नवीन प्रवाह की ओर उन्मुख हो गये। साहित्य के स्थापित मानदण्डों कायों की परम्पराओं के साथ-साथ आधारमानों, सृजन के सिद्धान्तों, युग जीवन के मूल्यों, यहाँ तक कि कवि कल्पनाओं में घातिकाओं का चार्मिक प्रतिक्रिया हुई। साहित्य के क्षेत्र में इन परिवर्तनों के परिणामों पर दृष्टिपूर्वक करें तो कहना होगा कि स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी है कि आज के रचना विधानों का परम्परित मान्यताओं से सम्बन्ध स्थापन असम्भव नहीं तो दुःसाध्य अवश्य हो गया है। इसी परिपाश में यदि हिन्दी महाकाव्य के स्वरूप विकास का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट दिखायी देगा कि पृथ्वीराजराजसोम से लेकर आचार्य केशवकृत रामचन्द्रिका तक के महाकाव्यों में सृजनात्मक विकास प्रक्रिया का स्वरूप संस्कृत प्राकृत अपभ्रंस आदि भाषाओं के महाकाव्यों से सुसम्बन्धित है। महाकाव्यों के रक्षा तत्त्वों और मूल्यांकन के मानदण्डों—सभी दृष्टियों से पूर्ववर्ती परम्परा से ही महाकाव्यों का सगुण सम्बन्ध स्थापित करने में अध्ययन अनुशीलन किया जा सकता है प्रवृत्तिमूलक समता का अनुसंधान भी किया जा सकता है। किन्तु हिन्दी के आधुनिक महाकाव्यों का सृजन प्रेरणा विषय विधान शिल्प विधि मूल्यांकन

के मानदण्ड तथा प्रवृत्तियाँ सभी भिन्न और नवान्त हैं। हिन्दी के आधुनिक युग के तथा इत पूरे के महाकाव्यात्मक प्रवृत्तिमूलक दृष्टि से स्पष्ट विभाजन रखाएँ निश्चित की जा सकता है।

जमा कि ऊपर उल्लेख किया गया है आधुनिक महाकाव्य चलन का आरम्भ हरिऔधजी के प्रियप्रवास से माना जाता है। तब से आज तक अनेक महाकाव्य लिखे जा चुके हैं। कतिपय इस प्रकार हैं—प्रियप्रवास (हरिऔध) साकत (मथिलीशरण गुप्त) कामायना (जयशंकर प्रसाद) बद्धही वनवाम (हरिऔध), कृष्णायन (द्वारिका प्रसाद) साकेत मत्त (बलदेव उपाध्याय) नरजहा (गुरुभक्तसिंह) सिद्धाय (अनूप शर्मा) दत्त्यवश (हरदमानु सिंह) नल-नरेश (पु० प्रताप नारायण कविरत्न) जगराज (आनन्द कुमार), बद्धमान (अनूप शर्मा) जय भारत (मथिलीशरण गुप्त), पावता (डा० रामानन्द तिवारी) रावण (हरदमानु सिंह) रश्मिरेखी (निन्दर) मीरा (परमेश्वर द्विवेदी) एकलव्य (डा० रामकुमार वर्मा), उर्मिला (नवीन) वारकवध (गिरीश) सेनापति कण (लक्ष्मीनारायण मिश्र) कुरुक्षेत्र (दिनकर) रामचरित चिन्तामणि (रामचरित उपाध्याय) कृष्ण चरित मानस (प्रद्युम्न ठापा)।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य महाकाव्य भी लिखे गये हैं जो महाकाव्य ना कह जाते हैं किन्तु उनमें महाकाव्यात्मक औदाय का अभाव ही दिखायी देता है। जैसे आरामचन्द्रोदय (रामनाथ ज्योतिषी) इल्दीघाटी (श्यामनारायण पाण्डेय) आयावन (मोहनराज महता) विक्रमादित्य (गुरुभक्तसिंह) जननायक (रघुवीर शरण) महामानव (ठाकुरप्रसाद सिंह) जगन्नाथ (गोपाल शरण), ज्ञाना का गंगा (श्यामनारायण प्रसाद) जोहर (श्यामनारायण पाण्डेय) श्वाहन (कराल) युगल्लटा प्रमद (द्विवेदी) अमयन्ती महाकाव्य (नारायण हारात)।

इन काव्यों की महाकाव्य मानने न मानने का प्रश्न प्रस्तुत प्रश्न में विचारणीय नहीं है। यहाँ इन काव्यों के प्रवृत्तिमूलक साम्य पर विचार अभिप्रेत है। आधुनिक युग के हिन्दी महाकाव्यात्मक सम्बन्ध अध्ययन से सामान्यतः हम निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ दिखायी देती हैं।

हिन्दी के आधुनिक महाकाव्यात्मक प्राधान्य काव्यात्मकों के प्रति व्यक्त नहीं है अर्थात् अधिकांश आधुनिक महाकाव्यकारों ने प्रस्तुत काव्याचार्यों (भामह दण्डी के सम्बन्ध में विवेकादि) द्वारा प्रस्तावित महाकाव्यात्मक लक्षणा—यथा मग-मर्यादित अनुक्रम मगलाचरण कुलान् कुलाद्भव नायक

दुःखनिर्वाह सज्जन-भुक्ति सिद्धि-मयोजन चतुर्वग फल प्राप्ति आदि—क निर्वाह के लिए साग्रह प्रयत्न नहीं किया है।

रचना प्रक्रिया के इस परिवर्तन के फलस्वरूप महाकाव्यालोचन के सिद्धांतों में भी परिवर्तन हुए हैं। पहले महाकाव्यालोचन के आधारमान आचार्यों द्वारा निरूपित तर्क थे। आज का सज्जन ममानाचर महाकाव्य का उद्देश्य चतुर्वग फल प्राप्ति न मानकर महत् भावना से अनुप्राणित होना ही उसका उद्देश्य मानता है। महाकाव्य का नायक देव ही नहीं साधारण मानव और दानव भी हो सकता है। सग-मरुता छन्द परिवर्तन वगणन बहिर्मुख मगनाचरण आदि स्थूल लक्षणा का परिगणन आज के महाकाव्यालोचन के कर्तव्य का इतिहासी नग्न। वह तो महाकाव्य में जातीय और सामाजिक जीवन के व्यापक चित्रण युगीन जीवनादर्शों की स्थापना मानव मूल्या के विवेचन पर अधिक वन देता है। महान काव्य महान प्रेरणा का परिणाम होता है अतः आज के आलोचक का दायित्व महाकाव्यकार की अतः प्रेरणा का उद्घाटन कर रचना की जनशक्तता का अनुसंधान करना भी होता है। इसके साथ ही कलात्मक और सांस्कृतिक पक्ष पर भी विचार करना अनिवार्य होता है।

आधुनिक महाकाव्यालोचन कतिपय को छोड़कर सभी का क्यावस्तु पौराणिक कथाओं पर आधारित है। हमारे दो आदि महाकाव्यालोचन महाभारत इतिहास पुराण शास्त्र सभा कुछ अपन आप में है रामायण में भी पौराणिक थीम्स (Themes) ही लगी हैं। हिन्दी महाकाव्यालोचन पौराणिक कथातत्त्व का युग की आवश्यकताओं के अनुसार सगठन किया गया है। कवियों की मौनिकता और सृजनशक्ति का पता भी थीम्स के आधार पर लगाया जा सकता है। कामायनी साकेत प्रियप्रवास साकेत सत दत्यवश रावण कृष्णायन एकलय बदनी वनवास कुरक्षत्र रश्मिरेधी जयभारत अगरराज नननरेश दमयती उर्मिला तारकवध पावता आदि सभा काव्यालोचन पौराणिक कथाओं की ही ग्रहण किया गया है।

पौराणिक कथातत्त्व (Puranic Themes) का प्रयोग हीत हुए भी हिन्दी के आधुनिक महाकाव्यालोचन की पात्रमृष्टि सवधा नवीन और युगान है। दकी पात्रा के दवरथ (यथा राम कृष्ण सीता राधा) का प्रक्षालन कर तथा दानवाम पात्रा (रावण हिरण्यकश्यप दुर्योधन दुःशासन) के दानवरव का परिमाणन कर उद्द मानकता के धरातल पर खन किया गया है। उपेक्षित पात्रा (उर्मिला विष्णुप्रिया) तिरस्कृत पात्रा (एकलव्य वगण आदि) पर महाकाव्य लिखकर व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया गया है।

हमारे महाकाव्या की यह वृत्त मन्त्रपूर्ण विवशता है जो समग्र हिन्दी काव्य के साम्प्रतिक घरातल का ऊँचा करती है।

अधिकांश आधुनिक महाकाव्य नायिका प्रधान है—यथा मानव प्रियप्रवास कामायना, वन्ही-वनवान नूरजनी उमिना समयती मारा यानों की रानी जोहर आदि। इन काव्या में आधुनिक कवि के नागरे विषयक दृष्टिकोण तथा आत्मा को समझने का विस्तृत विचारभूमि उपस्थित नहीं है। इन काव्या में नारा-जागरण का महान् चेतना मूर्धरित हृद है।

महाकाव्यरार का चेतना युग-सम्भूत समस्यारा का समाधान प्रस्तुत करता है—इस तथ्य का सत्यावपण आधुनिक महाकाव्या में सम्भव ढंग में किया जा सकता है। हमका सबसे प्रमाण तो यह है कि स्वदेश प्रेम राष्ट्रीय भावना मानव मृत्वा का स्थापना समसामयिक जावनात्तों के अनुसार युगीन प्रश्ना का समाधान और लब्ध मन्त्र आधुनिक महाकाव्या की सामाय विवशताएँ हैं। इन विवशताओं में प्रतीत होता है कि जीवन का व्यापक परिवर्ष और विस्तृत दृष्टिकोण में समझने के लिए आज का महाकाव्य लम्बे पहने से अधिक्त सज्ज और सज्जन है। उदाहरण के लिए कामायनाकार का निम्न पंक्तियाँ में मानवता के नाम जमर मन्त्र प्रसांगित किया गया है—

गक्ति के विद्युत्कण जो यस्त

प्रिवत् विगरे हूँ या निम्पाय।

समन्वय उनका कर समस्त

विजयिना मानवता हा जाय ॥

(श्रद्धा सग)

आधुनिक महाकाव्या में युग का प्रमुख विचारधाराओं का भा (जस साम्प्रदाय समाजवा प्रजातन्त्र गांधीवा आदि) आत्ममात किया गया है। काव्य में राजनीतिक चाना का विकास मज्जानिक कट्टरता या जाण्टपूवक नहा हा सकता, वहाँ ता विचारा का सामयिक प्रमणा के मन्त्र में ही उमप सम्भव है। इना दृष्टि से मानव में राजतन्त्र और प्रजातन्त्र के समन्वय का आत्मा गांधीवा घरातर पर प्रस्तुत किया गया है। कामायना में ता विश्व ध्यानी मानववा के आन्ध-स्थापन का भय और विगट प्रयास है।

इस प्रकार आधुनिक युग के महाकाव्या में विचार आदेश दृष्टिकोण सभी दृष्टियाँ से महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। यद्यपि आज के युग में साम्यवादी ध्याम बालिगाम माप तुलसी जस काव्य प्रतिभा-सम्पन्न कवि नया विगरी ही इस युग के काव्यवताओं का मनापा और मया युग जावने की

एक नवानिशा का बार प्रयत्नाभ्युत्थ है। यस प्रसास्त्री जीर वामायनी महाकाव्या और महाकाव्यवर्ताआ की एतिहासिक शृंगला का कर्त्तव्य है। इसक अतिरिक्त आज क महाकाव्य का विनाम उपयामा म हा रहा है। उपयास ही गद्य युग क महाकाव्य हान हैं। समष्टिभ्य म आधुनिक महाकाव्या न निश्चय हा मानवतावादा दृष्टिकोण ग्रहण कर साहित्यिक प्रगति क माय साय सांस्कृतिक अभ्युत्थ म भी यागदान दिया है। आज क वाचनिक वीर्य और गद्य युग म भी महाकाव्य नयन का निशा म आशातीत प्रगति हई है।

हिन्दी महाकाव्य : सृजन की सम्भावनाएँ

हिन्दी महाकाव्य सृजन की सम्भावनाएँ

काव्य रूपा व विकासात्मक अध्ययन से यह बात होता है कि महाकाव्य और नाटक प्राचीनतम काव्यरूप है। भारतीय वाङ्मय का पुरातन स्वरूप वेदा में सुगम है। और महाकाव्य व मूल रूप का विकास कृत्तिक वाङ्मय से ही हुआ है।¹ सुप्रसिद्ध विद्वान् मक्समूलर का भी यही मत है कि महाकाव्य के स्वरूप को इस रामायण और महाभारत में ही नहीं अपितु वेदा में पाते हैं।² वेदा के वीर आख्याना के अनिश्चित गानस्तुतिया गायानाराणसी एवं सूक्ता में भी वह बीज मिलता है जो जाग चलकर महाकाव्य के रूप में अकुरित हुआ।³ श्रौयुत विष्टर्गन्तम व अभिमत का भी इस भावना से साम्य

1 In *ऋग्वेद* there are certain *ऋग्वेद* or dialogues or conversations hymns Hertel and Schroeder regard them as a kind of drama All the e poems are but ancient *ऋग्वेद* or ballads forming the source both of Epic and other dramas The ballads consist of a narrative and of a dramatic element The epic developed from narrative and drama are e from dramatic element —Kokilshwar Shastri *A History of Sanskrit Literature (Vedic and Classical)* p 19

2 ' this real epic poetry that is to say a mass of popular songs celebrating the power and exploits of gods and heroes existed in a very early period in India a well as among other Aryan Nations but it shows that if yet existing it is not in the Mahabharata and Ramayana we have to look for the old songs but rather in Veda itself In the collection of Vedic hymns there are some which may be called epic and may be compared with the short hymns ascribed to Homer

visee
—VI
and ~

3 डॉ० मकुलना एव काव्य रूपों व मूल स्रोत और उनका विकास, पृ० ४६

वह युग का जटिल सवत्ना एवं गद्यरमा रमता का व्यक्त करन क लिए कोई नवीन और सशक्त माध्यम न ढूँढ निकान तब तब प्रचलित छत्र विधान भी यथाथ को नय सत्भ म तीव्रता स पक्क पा म बाधन ही मिद होता रहगा ।

अन्तु दम मारा विचिकित्सा का निष्कप यती है कि आज की परिस्थितियाँ महाकाव्य प्रणयन क एक दम अनुकूल नरा न गया है ।^० गद्य-युग की कविता का भी गद्य बल्प हा गया है । गद्यनाय एक काय रूप भी है ।

वगत कविय जिस्तने लिए पाश्चात्य एवं पौवाय जाचार्यों न मन्काय की अनिवाय मापना के रूप म आग्रह किया है नी आज सम्भव नहीं है । क्याकि आज मानवीय ज्ञान क चतन स्तरा म इतना विमृति जा गयी है कि बाइ भी महाकवि ममस्त जावन बाध का स्पायित करन म मम नगी हा सकता । प्रा० टिलीयाड का मत है कि मानव क मन्कार म बहुत अधिक एवत्रिन हा गया है । आर्थिक स्वतंत्रता और वचारिक आतन प्रान स समाज के स्वरूप का भी प्रसार और विस्तार हुआ है । जाज हामर और दान जस मन्कायनारा न भी जसे समाज की सम्भावनाए की या वह ममाप्त हो गयी है । आज महान स महान् साहित्य को भी जा विवजनीन होने का दावा करता न परिस्थितिवश किसी न किमा सीमा तक विशिष्ट हा बनना पन्ता है सबघापी नहीं । और इसी कारण मध्यवर्गीय जीवन क चित्रक उपयाम का विकास हा रहा है । १९वीं शताब्दी तक मन्काय की धारा का नोप उपयास क प्रवाह म हो गया ।^८ इसा प्रकार आज यकिन पूजा का युग

^० प्रो० जानन्नारायण तमा का महाकाव्य स्वरूप और सम्भावनाए शोधक रग सरस्वती सवाद अगस्त सितम्बर १९५६ पृ ४५ ४६

^८ the possibility of epic writing in a different tradition was shut out. What happened in the 18th century (if not in the second half of 17th) was this his had become so complicated so much had been added to the stock of human learning there was so much ecumenical freedom to exchange ideas that the epic spanning a total society like Homer's or Dante's became impossible. Any great work of literature however ambitious of Universality was forced to be in some degree specialist. Now the speciality that turned out most propitious for the epic effect was middle class novel that began to flourish in the 18th century. By the 19th century, the real course of the epic had forsaken the tradition verse for the novel. —E. M. W. Tillyard *The English Epic and Its Background* pp 530 31

नहीं। अतः महाकाव्य का नामन विषयक परिवर्तनता भी युगीन जावनादर्शों के प्रतिकूल है। यहाँ स्थिति महाकाव्य के अर्थ नक्षणा के सम्बन्ध में भी है। अस्तु महाकाव्य के आदर्श ही आज के काव्य विचार की दृष्टि से अग्राह्य अमान्य और अनापक्षित हो गये हैं।

(४) मध्य-युग का महाकाव्य उपन्यास है। डॉ० स्वरुज उपाध्याय का तो मत है कि उपन्यास कोई नव-आविष्कृत साहित्यिक विधा न होकर प्रबन्ध काव्य और रोमांस का परिष्कृत स्वरूप है। वस्तुस्थिति तो यह है कि विज्ञान युग के प्रभाव से आवस्यमानव अन्तमन का सम्पूर्ण अभिव्यक्ति में अपने रूप का ही उपन्यास ने अभिप्रेत कर दिया है। आज का उपन्यासकार जन्म भी ही मानवमन के सघन और अतश्चतना विकास की वृत्ति के माध्यम में व्यञ्जित करना चाहता है। श्री रामधारीमिह दिनकर का तो मत यह है कि जो काम पहले महाकाव्य करत व वही काम बाद के नाटक और उपन्यासों द्वारा किया जान गया। अतएव हम देखते हैं कि बाद के साहित्य में बहुत से नाटककार और औपन्यासिक हुए जो अगर कवि होते तो उनका ध्यान रामायण और महाभारत द्रुतियुद्ध और आडेभी के रचयिताओं के समकक्ष होता। नाटककार इमन और वनाशा उपन्यास लेखक रामारोला और गोर्की—इनमें से प्रत्येक ने अपने समय का महान् समस्याओं के भीतर पटनर उनका निदान खोजने का कागिण की है। और प्रत्येक ने अपने क्षेत्र में वही काम किया है जो महाकाव्यों के कविों द्वारा किया जाता है। जन्म कवि गने और जन्म कागिन नौस की रचनाओं में भा हम महाकाव्य का ही लोकी पाते हैं। १०

(५) महाकाव्य का रचना का युग शान्तिमान ही होता है—चाहे उनका विकास वाग्म्युग के वातावरण में ही हुआ हो। जस महाभारत पृथ्वाराज रासो आदि विश्वमनशील (Epic of Growth) महाकाव्य हैं जिनका सामग्री का संकलन करने में अनेक हाथ लगते हैं। उनका स्वरूप आकार यथस्थित शान्तियुग में ही होता है। अतवृत्त या शास्त्रीय महाकाव्य (Epic of Art) तो शान्तिबाल में ही सम्भव होता है।

(६) महाकाव्य महाकाव्य होता है उसका रचयिता महाकवि होता है

* डॉ० स्वरुज उपाध्याय प्रबन्धनाम्य रामायण और उपन्यास नामक लघु आलोचना उपन्यास विनोदाव।

१ दिनकर, अद्वैतारोषधर, पृ० ४७

उसका नायक मरान् होता है उसकी मला गरिमापूर्ण कलाता विराट् अभि-
 यजना गम्भीर जीवन की बलवती प्रेरणा और उन्मत्त मन्त्र शापा है।
 किन्तु आज की जनतन्त्रीय समाज यमस्या क युग म व्यक्तिपूता या मन्त्रजना
 की महिमा युगविराधी भावना की परिभाषा है मन्त्रवाग्म्य है। आज
 राजकुलीन सामन्त या राजा रानी ही नायक क म्प्य म माय त्पी न्ग मान।
 आज के साहित्य म कृपक श्रमिन् और दन्तित-गन्तित वग न्ग नाग भा नायक
 हो सकते है। आज की रचना आवश्यक नहीं मन्त उन्मत्त स हा अनुप्राणित
 हो। समाज की किसी एक समस्या अन्तमन्त क म्प्य की यजना वन्ना क
 एक क्षण की विवर्ति सामान्य और असामान्य घटनाएँ—सभी काय रचना
 क उपकरण जोर उद्देश्य हा सकते हैं। महाकाव्यकार नगणा क वचन क
 वारण चित्रण के स्वान्त्य का अनुकरण नहीं करता है। म्मक विपरीत
 उपयासकार साहित्य शिल्प के किसी विशेष आग्रह का स्वीकार नहीं करता
 है। अत उपयास समाज की मन्त्र और सशक्त मभी सवन्नाज्जा को साकार
 करने म सक्षम और मामध्ययान है। उपयास की उत्तरोत्तर त्कप्रियता
 वन्ती मांग जत्यधिक नेयन और प्रवाशन इसक ज्वरत प्रमाण है।

यहा सब तक महाकाव्य मृजन की अनुपयुक्तता क विषय म दिय जात है।
 हम इन्ही तार्किक स्थापनाओं क परिपाशक म महाकाव्य मृजन की साधकता
 सम्भावना जोर उन्मत्त भविष्य पर विचार करेंगे।

युग मद्य का हा या पद्य का कना का हो या राजनानि का वनानिक क
 प्रभुत्व का हो या दाशनिका के वचारिक आधिपत्य का—किन्तु मानवीय
 सवेदनाएँ मनोवृत्तियाँ और अन्त प्रवृत्तियाँ सन्व ही सभी परिस्थितियाँ म
 अभिव्यक्ति के निष्पन्न आकुल रहती है। इसी जाकुलता का परिणाम काय
 है।^{११} काय आत्मा का संगीत है। प्राणा की पुकार है। वह परिस्थितिमा
 का परिणाम भी है और एकान्त की परिवर्तनता भी। इसलिए काय की
 स्यातस्विकी मानव जीवन की सरसता क निष्पन्न सदब स ही वाछनाय रनी है।
 म्मानिए काय रचना प्रत्येक युग म हाती रहा है। काय की उपयागिता
 जोर आवश्यकता पर प्रश्नवाचक चिह्न किसी भी कान युग या परिस्थिति
 म नहा तगा है। महाकाव्य काय का उदात्त रूप है। महाकाव्य मृजन की
 सम्भावनाज्जा का प्रश्न मानव चेतना की विनामशील परिस्थितियाँ स जुग

^{११} Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings

है। कला और काव्य के विकास के साथ साथ महाकाव्य का भी विकास स्वाभाविक है। जन महाकाव्य का निरन्तर सृजन जा रहा है।

महाकाव्य मृजन का सम्भावना पर कथात्मक दृष्टि से विचार करने वाले विद्वानों का यह तक नितान्त सम्मत नहीं प्रतीत होता कि विज्ञान युग का पाठक महाकाव्य के ताकविक्षुत ऐतिहासिक और पौराणिक कथा विधान से अपनी बौद्धिक चेतना को परितृप्ति और विश्वास को सत्रस नहीं दे सकता। वास्तव में महाकाव्य की कथा विषयक ही नहीं अपितु सभी भावनाओं में आमूल परिवर्तन हो गया है। आज आवश्यक नहीं कि महाकाव्य की कथा ऐतिहासिक पुराण उद्भूत ही हो। वर्तमान युग के जनक महाकाव्या^{१२} में जति अवाचान एवं समसामयिक कथा तन्त्र का भी उपयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त आधुनिक महाकाव्यों में इतिवृत्त का मूलरूप में ग्रहण किया जाता है—कवि की कल्पना शक्ति ही प्रमुख हाता है। उदाहरण के लिए कामायनी महाकाव्य में मनु श्रद्धा का उपाख्यान मूलरूप में ही ग्रहण किया गया है किन्तु उसमें व्यक्त भावनाएँ और संवदनाएँ हमारे युग जीवन का विराट चित्र अंकित करती हैं। कामायनी का मूल स्वर मानवता का विजय आनन्दवाद और समन्वयवाद है। कथात्मक रूप से यह समन्वय श्रद्धा और दया का मनु के जीवन में है किन्तु वास्तव में समन्वय की आवश्यकता की ओर सबके कामायनीकार ने हमारे युग की परिस्थितियाँ के अनुरूप किया है। जहाँ समन्वय की योजना शासक और शासित शापक और श्रापित धनिक और श्रमिक स्त्रा और पुष्प बुद्धि और हृदय की है। मैं समझता हूँ कि कामायनी में विज्ञान युग के पाठक का विचारणा का प्रयुक्त करने और चेतना का जागरण का आह्वान करने की पर्याप्त सामग्री वर्तमान है।

जहाँ तक विज्ञान युग के पाठक का रुचि का प्रश्न है यह पढ़ने निवृत्त किया जा चुका है कि काव्य के प्रति अरुचि कथा किसी को नहीं बयाकि काव्य का सम्बन्ध मानव के शापवत् मनोभावा से है। प्रेम कल्याण ममत्व प्रकृति के प्रति प्रेम ही भाव-संवदना के व उपकरण है जो मानव का आत्मपिपासा की परितृप्ति के कारण कायस्थितु बनते हैं। रम निर्वाह जिस महाकाव्य के अनिवाय लक्षणों में स्वात्रन किया गया है वास्तविक आनन्द का विधाता है। यही अन्तरंग की बात है।

^{१२} कालिका का रानी मीरा, हनुमापाटी और महामानव जगन्नाथ युग का प्रथम महाकाव्य।

अनेक नेतव्य और समालोचक न उपन्यास को मध्य युग में महाकाव्य का पर्याय माना है। गद्यरत्मक विधाओं में आन्तरिक प्रकार एवं नैतिक प्रियता की दृष्टि से उपन्यास भले ही उत्कृष्ट साहित्य रूप हो सकता है किन्तु यह कहना मैं निश्चय हूँ कि वह महाकाव्य की समता तो क्या समता की पट्टी की सीढ़ियाँ का भी स्पर्श नहीं कर पाया है। इसका मूल कारण वही है जिस कतिपय समालोचक महाकाव्य की दृष्टियाँ कहते हैं अर्थात् स्वल्प निर्माण या रचना शिल्प के मानदण्ड। उपन्यास की रचना शिल्प का निश्चय न होने के कारण इस कोटि के उपन्यास भी लिखे जा रहे हैं जिनका निर्धारित उच्च साहित्य शिल्प अथवा विनियोजित विचार तत्त्व तो दूर रहा आकार प्रकार विषय विधान प्रतिपाद्य और प्रयोजन सभी अनिश्चित हैं। जहाँ महाकाव्य समग्र जीवन का चित्र है वहाँ उपन्यास एक घण्टा एक दिन की घटना का भी चित्रण नहीं। उसके कालक्रम घटना विनियोजन कनवास सभी में अनिश्चय की स्थिति चर रही है।

उपन्यास यकीन बद्धित है। यकीन ही नहीं अब तो उसके विवेचन का विषय मन ही रह गया है। उपन्यास के विकास में पश्चात्कालीन विचार परम्परा का योग रहा है। अतः भौतिकतावादी सभ्यता के प्रभाव में उसने यकीन घटना को ही सर्वस्व मान लिया है। यथाय के नाम पर आज का उपन्यासकार हीन ग्रन्थियाँ व प्रकाशन अतृप्तियों की योजना और यथार्थ स्वाध्याय साधना की सर्वोपरिता के प्रतिपादन में कृतकाल समझन लगा है। अतीत का औपन्यासिक व लिए महत्त्व नहीं अनागत की चिन्ता नहीं और वर्तमान में उस प्रत्यक्ष ही कुरूपता लिंग्यायी देती है। आदर्शों की ज्वलन के कारण उपन्यास कोइ महती देन नहीं दे सका है। उपन्यास की रचना महाकाव्य व समान सांस्कृतिक जीवन का विधायक नहीं। हा युद्ध और शान्ति (War and Peace) जैसे कतिपय उपन्यास अवश्य ही महाकाव्यात्मक गरिमा से सम्पन्न हैं। किन्तु उतना यापक जीवन दृष्टि का अधिकांश आधुनिक उपन्यासकारों में अभाव ही दिखायी देता है। मेरी यकीनगत धारणा है कि आज का उपन्यास यथाय और वास्तविकता के नाम पर जीवन की मधुरताओं मन विश्लेषण की कुण्ठित परिधियाँ और आत्मचेतना के हतमृत धरातल की टन टन में इतना फस गया है कि जीवन के शाश्वत आदर्श भी उसके लिए उपलब्धीय हो गये हैं। आज उपन्यास में प्रयाग अधिक हो रहे हैं परम्पराओं का निमाण कम। उसमें मन विश्लेषण का प्रवृत्ति बन्ती जा रही है मनस्वाप व साधना का सजाजन कम हो रहा है। उसमें पश्चात्कालीन क

अध्यानुकरण का प्रवृत्ति अधिक है भारतीय जादुओं व प्रति आस्था कम । इतिहास आज उपयामकार परम स्वतंत्र न गिर पर कोई बन गया है । उम न समालाचक व मुझाव माय हैं, न लोक कवि के सम्मान की चिन्ता है और न साहित्यादर्शों के मवद्धन का यामोह है । जबकि महाकाय का लयक आज भी परम्पराका का अनुमोक्त जादुओं के प्रति निष्ठावान युग जीवन की आवश्यकताका व प्रति सचत, शिल्प विधि निर्वाह व हतु सक्षम और मानवतावादी मूल्या की स्थापना व साथ साथ काय रचना का सांस्कृतिक प्रयाम मान कर बन रहा है ।

वतमान युग म महाकाय मृजन का मदिग्ध चिन्ति व विषय म यह भी तव निया जाता है कि वह शांतिकान की रचना है । आज का सघप युग महाकाय मृजन और पाठन दोना ही दणिया स अनुकूत नही । आज के कवि की प्रतिभा अतमुखी और यकिननिष्ठ हा गयी है । इस विषय म कविवर त्तिनकर के य शब्द उल्लेखनीय है— अगर परस्पर विरोधी भावा का आव्रमण कवि का महाकाय लिखने की प्ररणा द सकता है तो उसका समय आज है । अगर महाकाय का रचना का समय वह युग होता है जबकि प्ररना की विभिन्न धागए अपना समाधान पान के लिए किसी समुद्र की खोज म बग स दोन्ती है तो वह समय आज हुआ है । यह ससृति के बदलन का समय है यह परम्पराका क परिवनन की वना है क्या महानाय के लिए इसस भी आर उपयुक्त समय चाणिए और क्या प्राचीन एव मध्यकालान नाटक म तथा महाकाय म हम मानव चरित्र व भातर जिस द्वन्द्व एव सघप का प्रतिबिम्ब दखते है, वह आज क यकिन एव समाज म कुछ कम है ? मनुष्य आज जिन शकाका और द्वन्दा स ग्रस्त है उह अगर वह काय क किसी एव ही दणण मण्ड म दख पाय तो वह स्वय चौत्वार कर उठगा । १३

दिनकरजी का यह वथन मवधा सत्य है । इसका मवम बना प्रमाण यह है कि जाधुनिक युग म, महाकाय रचना का दृष्टि स जिमका ममारम्भ हरिऔषजी क प्रियप्रवाग म माना जाता है अतक महाकाय निमे जा र है ।

पिछन पचाम वर्षों म टिन्ली म लगभग खालीस महाकाय कह जान बाल प्रय प्रकाशित हुए हैं । महाकाय की इस बनी सख्या क विषय म मैंन अतक प्रतिष्ठित आलाचका को नाक भी मिवास्त और टाका टिप्पणा करत भा मुता है कि अमुक काय म महाकाय नही एकाय-काय है अमुक म महा

१३ त्तिनकर अद्वैतारोश्वर महाकाय्य की बला नामक सत ५० ५० ५२

कायाभास है जमुव म सपन प्रबन्धनाध्यत्व तो है किन्तु महाकाव्यत्व नहीं है आदि । डा० शम्भूनाथ सिंह न अपन शोध प्रबन्ध हिन्दी महाकाव्य का स्वल्प विकास म केवल पृथ्वीराजरासा आहूण्ड पद्यावत रामचरित मानम और कामायनी — पांच ही काया को महाकाव्य माना ह । आहूण्ड जस लोकगीता क सक्नन को ता के महाकाव्य मानत है किन्तु साकेन पावती कृष्णासन प्रियप्रवास आदि उत्कृष्ट प्रबन्धकायाम उट महाकाव्यात्मक गरिमा और अनवरुद्ध जीवनीशक्ति का अभाव दिखायी दता है । ऐसी मायता क प्रत्युत्तर म यही कहा जा सकता है कि प्रथम तो व काय है प्रबन्धकाव्य ट और वह भी गद्य युग के है । दूसरे महाकाव्य के पुरातन और बहु चर्चित मानदण्ड पर ही इन महाकाया की परख की भी नहीं जा सकती है । सस्कृत मा ग्रीक विद्वाना न महाकाया के लक्षणा का निधारण करते समय पूव प्रचलित महाकाया का तक्ष्य ग्रन्था क रूप म स्वीकार किया था—उतम से अधिकाश तक्षण निरत्यक सिद्ध हा गय है । उन तक्षणा क आधार पर तो विश्व काया की काटि का रचना रामचरितमानम भी महाकाय नहीं ठहरती । हा महाकाय की रचना और परख क कुछ स्थायी तत्व और चिरन्तन लक्षण है जस क्यावत्त की यापकता समग्र जीवन का चित्रण उदात्त गरिमामया शली महत् उद्देश्य रस परिपाक और भाव चित्रण कौशल सजीवनी शक्ति और मानवतावादी मूल्या की स्थापना आदि । इन लक्षणा का यदि किसी प्रबन्ध काय म निर्वाह हुआ है ता हम निश्चय ही उस महाकाय मानने म आपत्ति नहा होनी चाहिए । प्रसन्नता का विषय है कि हिन्दी क विद्वान और समानीचक जब महाकाय की परख यापन दष्टि स कर रह है और महाकाय सम्बन्धी नवीन मायताया का स्वीकृति भी मिलने लगी है अस्तु ।

महाकाय मृजन की सुदीध परम्परा आज भी अधुण्ण है । उसक रचना प्रवाह का बग आज भा जपूव गति स गतिमान है । महाकाय क मृजन की सम्भावनाए प्रत्यक युग म बना रहगा । डा० रामरतन भटनागर क शब्दा म— प्रत्यक युग का जीवन महाकाय की मांग करता है क्योंकि महाकायवद्ध हाकर ही वह परिपूर्णता और मायकता का प्राप्त हाता है । वतमान युग क गद्यात्मक विकास क प्रभाव स भी अधिक काय मृजन के लिए यवधान और अवरोध का कारण विज्ञान की प्रगति है । विज्ञान युग क भौतिकतावादी जावन मूया न मानव चेतना को स्वाधपरायण यष्टिवादी सशक्ति निराश और कुण्टन कर दिया है । विज्ञान युग की सस्कृति का आधार जीवन की विवृतिया बनती जा रहा ह । अथलोलुपता और स्वाधसिद्धि की कुत्सित

भावनाओं में मनुष्य मनुष्य के शाश्वत सम्बन्धों (जिनका आधार प्रेम, सत्य अहिंसा कष्ट, सत्त्व शील नय आदि थे) का विकृत कर दिया है। समग्र भौतिक सुख-सुविधाओं का उपलब्ध करके भा मानव का जह सन्तुष्ट नहीं। समस्याएँ भी उत्तरात्तर बढ़ रही हैं। अधिक से अत्यधिक और अत्यधिक से सर्वाधिक की कामना में धार वैयक्तिकता और विवस्कारिणा शक्तियों का विकसित किया है। विज्ञान के उपयोगी उपकरणों का उपयोग ध्वंस के साधनों के साथ ही मानवता के हानि लगा है। मानवता अनागत के कारण परिणामों का कल्पना में भयाक्रान्त है। विचित्र विडम्बना है कि भविष्य के प्रति इतना नगण्यमूलक नष्टिवाण—वर्तमान में असन्तोष और अतीत के प्रति निश्चितता। अतीत के आदर्शों का भार उभरना हीना तो छुड़वादिता, पिछड़ापन और प्रगति पथ से पराङ्मुख होना कहा जाता है। ऐसी परिस्थिति में महाकाव्यों की रचना अतीत अनागत और वर्तमान के प्रति आस्था और विश्वास पदा करने वाली होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे जीवन मूल्यों और आस्थाओं में आमूल परिवर्तन—परिवर्तन नहीं एक वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी जाय। आज के मनुष्य की अतिवादी वैयक्तिक शक्तियों को मानविक स्तरों पर मद्प्रवृत्तियों के अनुमरण द्वारा सन्तुलित किया जाय। आज के जीवन की अनवरूपता में एकता जीवन के शाश्वत सिद्धांतों का ग्रहण करने से ही सम्भव हो सकती है। सत्त्व, शील नय प्रेम अहिंसा भ्रातृभाव आदि शाश्वत मूल्यों का पुनर्स्थापना पर बल दिया जाय। परमाय नहीं तो निस्वास्थ्य साधना वर्तमानपरामर्शता और आत्मिक सोहाद की भावनाओं के विकास से ही मानवता प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकती है।

ऐसे महान् लक्ष्य की साधना के लिए महाकाव्य सर्वथा उपयुक्त कायस्थ है। उसमें वह शक्ति होती है जो मानवीय मानवशक्तियों के समुन्नयन और युग युग जीवन के उत्तम बाधों के प्रतिनिधित्व करने की सामर्थ्य से समुक्त होती है। युग युग का चयन का नवजागरण राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधित्व सारकृतिक उत्पन्न सामाजिक उत्थान कलात्मक और आध्यात्मिक बभूव महाकाव्यों के समृद्धस्वरूप के लिए परिचायक है। उनका मृजन का सम्भावनाएँ ही नहीं अपितु महत्त्व मायकता और अनिवायना प्रत्येक युग में रहा है और रहेगा। हिन्दी महाकाव्य रचना का भविष्य बड़ा उज्वल है। आज के हिन्दी महाकाव्य हिन्दी की सर्वोत्तम प्रगति के ही परिचायक है।

हिन्दी महाकाव्यों में वीर रस

हिन्दी महाकाव्यों में वीर रस

हिन्दी महाकाव्यो मे वीर रस

साहित्य के विविध रूपों में महाकाव्य की सर्वोपरि स्थिति प्राप्त है। महाकाव्य की महाघटा का मूल कारण उससे रचना उपकरण है। सुमगलित लोक प्रख्यात कथानक महान चरित्र मृत्ति विशिष्ट काव्य शिल्प महत् उद्देश्य मानवतावादी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा युगीन आदर्शों की स्थापना विराट् कल्पना और रसात्मकता महाकाव्य के महा' विशिष्टता का माधुर्य का प्रवृत्त प्रमाण है। या तो प्रत्येक प्रकार के काव्य मृज्जम रस तत्त्व का निश्चिन्त महत्त्व है और रस को काव्य का जात्मा भाव बना गया है। किन्तु महाकाव्य मृज्जम रसात्मकता का विशिष्ट महत्त्व है। रस व्यञ्जना ही महाकाव्य की मन्त और परिपूर्ण बनती है। इसीलिए काव्याचार्यों ने महाकाव्य के लक्षणा का निरूपण करते समय रसतत्त्व का मूल्य विशेष विधा है। उन्होंने अपनी महाकाव्य सम्बन्धी याख्या में रसतत्त्व का प्रधानता दी है। रस में महाकाव्य में सभी रसा का ज्ञान अनिवार्य माना है। कविराज विश्वनाथ ने महाकाव्य में रसा के निवाह के साथ साथ रूपाय वीर और शान्त इन तीन रसा में से किसी एक के पूर्ण परिपाक का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कहा कि महाकाव्य में इन तीन (शान्त वीर और शान्त) में से किसी एक रस की प्रधानता अवश्य रही।

वाराणसी में ही महाकाव्य रचना का जायजमान रहा है। भारतीय महाकाव्य के स्वल्प विकास के अध्ययन से यह मत और भावना है कि महाकाव्य-मृज्जम के मूल में वीरत्व की भावना प्रवृत्त रूप में विद्यमान रही है। सभी रसा के महाकाव्य का विराट् वीर आदर्शाना से हुआ है। प्रत्येक रस के इतिहास में वाराणसी-युग वाराणसी का भावना का पुरुष और वीरत्व के गायक चारण कविता का उत्तम मितता है। जय महाकाव्य (गणेश और महाभारत) में लखनऊ के आदि महाराज (गुजरातराज्य) और तत्पश्चात् अद्यावधि सभी रसा महाकाव्य में वीरत्व का स्वर एक उद्घाटन के रूप में बनमान रहा है। रसा साहित्य के प्रारम्भिक काल में वाराणसी की प्रधानता के कारण ही उसका नाम वीरगाथा-काल हुआ। रस युग के

प्रमुख महाकाव्य (पृथ्वीराजरासो) व अतिरिक्त अन्य रासो-काव्यो (जैसे आल्हलण्ड और विजयपानरासो) में वीररस का पूरा परिपाक हुआ है। परवर्ती काल के महाकाव्य (रामचरितमानस रामचरितकाव्य पद्मावत आदि) में भा वीर रस व सुन्दर स्थल है।

प्रस्तुत नेत्र में हम आधुनिक महाकाव्य परम्परा (जिसका प्रारम्भ हरिऔध व प्रियप्रवास से होता है) में वीररस व निर्वाह का विवेचन करेंगे।

प्रियप्रवास (हरिऔध)—प्रियप्रवास कृष्ण रम प्रधान महाकाव्य है जिसमें शृंगार के विपरीत पक्ष का पूरा परिपाक है। किन्तु अभी रूप में वीर रस के प्रसंग भी यत्र-तत्र आये हैं। उदाहरण के लिए कृष्ण द्वारा विभिन्न दत्ता के वध वधन प्रसंगा में वीर रस की योजना हुई है। शयोत्थ सग में योभामुर के वध के अवसर पर—

क्षमा नहीं है सल के लिए भला ।
समाज उत्साहक दण्ड योग्य है ॥
कुवम कारी नर का उदारता ।
मु-कर्मिया का करता विपत्त है ॥
अत जरे पामर सावधान हो ।
समीप तरे जब कात जा गया ॥
न पा सकंगा लन प्राण आज तू ।
सम्हान तरे वध वाछनीय है ॥
सत्प बातें सुन श्याम भूति की ।
हुआ महा क्रोधित याम विव्रमा ॥
उठा स्वकीया गुरु दीघ यष्टि को ।
नुरत मारा उसने ब्रजदु को ॥
अपूर्व आस्फावन माय श्याम ने ।
अतीव तम्बी यष्टि वह छीन नी ॥
पुन उसी के प्रबन्ध प्रहार से ।
निपात उपात निवेन का किया ॥

(१३/८१ ८४)

इसी प्रकार गोवधन धारण पूतना वध दावानत कालियनाग आदि प्रसंगा में कृष्ण के वार रूप का प्रदर्शन हुआ है।

साकेत (मधिनरीशरण गुप्त)—द्वारात्थ सग में नरकमण के मेघनाद के प्रति वधन में युद्धवीर की दयपूण उक्ति है—

मेघनाद है विफन उगलता जो विष तू
मत कर अपनी आप बडार् मरे मिष तू ॥
जीवन क्या है एक जूझना मात्र जना का
और मरण ? वह नया जन्म है पुरासना का ॥

× × ×

यदि सीता न एक राम का ही बर माना,
यदि मने निज रधू उमिला की ही जाना ।
तो बस अब तू सभल, बाण यह मरा छूटा
रावण का वह पाप पूण हाटक घट फूटा ॥

(सग १० पृ० ४८७ ८८)

इसी सग म हनुमानजी से सीताहरण और रक्षमण शक्ति की सूचना
पाकर भरत म वीर भाव उद्वेलित हो उठता है—

अनुज मुने रिपु रक्त चाहिए डूब मरु मैं ।

× × ×

मज अभी माकत बजे हों जय का डका ।
रह न जाय अब कहीं किसी रावण की लका ॥

कामायनी (जयशंकर प्रसाद)—कामायनी का विद्वाना न शान्त रस
प्रधान माना है । सघप सग म मारम्बत प्रदेश की प्रजा जब मनु पर आक्रमण
करती है ता मनु वीरता स उसका प्रतिरोध करत है—

‘या कह मनु ने अपना भीषण अस्त्र सम्हाला
वेब आग ने उगरी था हा ज्वाना ।
छूट चले नाराच धनुष से तीक्ष्ण नुकीले ।
दूट रह नभ घूम केतु अति पीर पाल ॥
अघड था बढ रहा प्रजा दल सा झललाता
रण वर्षा म शस्त्रा मा रिजनी चमकाना ।
किन्तु-दूर मनु नारण करते उन बाणा का
बढ कुचलते हुए गग म जन प्राणा का ।
ताण्डव म थी तीव्र प्रगति परमाण विक्न थ,
नियति विरयणमयी, थास म गय व्याकुल थ ।

(सघप सग पृ० २००)

बबेहो बनवास (हरिऔध)—प्रियप्रवास की भांति यह भा करण रस
प्रधान महाकाव्य है । तृतीय सग म रजक क द्वारा भीता के सम्बन्ध म

लोकापवाङ् की बात को गुनकर सधमण व उष स्वभाज म वीर भाव की मुत्तर धलक है—

सभन कर मुह को गाल राय म है जिनका वसना ।
 चाहता है यह भरा जो रात की गीच न रमना ॥
 प्रमानी गग ही कितने मगत म उनका गकना ह ।
 × × ×
 मुझ यति आना हा ता म पचा न कुजना की वाई ।
 छग न छील छान करव कुरुचि उर की कुत्तित वाई ॥

(पृष्ठ ३७-२८)

कृष्णायन (श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र)—कृष्णायन वीर रम प्रधान मना काय है । इसमें स्थान स्थान पर वीर भावा की गुत्तर व्यजना हुई है । विगण रूप से जय वाण म

हनि प्रचण्ड शर शत्रु विदारक

वभउ प्रचारि वीर वन्दारक ।

पुनि कौशल अधिराज बहदमन

हतेउ मवक धधि वक्षम्यन ॥

×

×

×

भट जपाचाय रथ चाका पतित भारताज पताका ।

पाण्डु भूमिद्रवा—शरासन मूर्च्छित छिन्न देण दुशासन ।

विरथ श्रेणमुन विचरत पायन आहत सौवन कीट पनायन ।

ममाहत कुरपति अग अगा भागे न रथ भीम तुरगा ।

पहुँच कण तिग पुनि कवर प्ररे कणिक वाण ।

कम्पित गिरि भूकम्प जनु छिन्न देह तनु प्राण ॥

पतित सारथा सायक गिरी ध्वस्त रितितल ध्वजा ।

हन मव रथन पशव विकल विरथ राधा मुवन ॥

(जयकाण्ड)

साकेत सत (श्री वनेश्वरप्रसाद मिश्र)—रम महाकाव्य का प्रमुख रम ना शांत है किन्तु प्रमगानुरूप विविध रमा का निर्वाह हुआ है । भरत जब ससय चित्रकूट की ओर राम से मिलने आ रहा है तो माग में निपाद और उमक साथी गम के अमगल की सम्भावना करके भरत का प्रतिशोध करने को सन्नद्ध हो जाते हैं । उनके उमाह में वीर भावा की व्यजना दृश्य है—

दण्ड दुबल वन न उमका नाम तो

शम्भु कुण्डित जो न उमसे काम लो ।

हम यवस्थापक अनिच्छा स सहा
 एक आना पर कपा सक्त मही ।
 राम का यदि धान भी बाका हुआ
 जान ला कतय पथ बाका हुआ ।
 मार कर चाह न तें बन्ला कहा
 मर मिटेंग याम पर हम सब वही ॥

(सग ७ पृष्ठ ८७)

दत्तवश (हृदयानु सिंह)—इस महाकाय म जहाँ जहाँ कुमार और तारक के शीय का वणन है वहाँ वीर रस का परिपाक हुआ है । वामन की माता अदिति क प्रति निम्न उक्ति उद्धृत है

'आयुस हाय तो जाय अत्र
 अनुराधिप को रन माँहि प्रचारा ।
 त्यौही बड-बड़े दतन क
 गहि के अबही कही सीस उपारा ।
 क निज वीष कृमानु में आज
 जराय क छाग तिह कर नारा ॥

(१०/५३)

छठ सग म त्रैवामुर सप्राम क अवसर पर तारक का उत्साह दशनीय है

प्राध अमल तारक जिय जाग्यो ।
 कामुन कोपि खवन लगि ताना ॥
 लाग्यो वीर चलावन वाना ।
 या निधि सा नारक सर छटिया ।
 अबनि अवास निगिय त पाग्यो ॥

(६/८७)

अगराज (आनन्दकुमार)—यह वीर रम प्रधान महाकाय है । अगराज के रचयिता ने काव्य की भूमिका म कहा है कि— वीरगाथाओं को हम पृथ्वी पर पूवजा का वीरलाक मानते हैं ।

वीर वृत्ताता स लोक म वीर धम की प्रतिष्ठा होती है । बार धम का पावन रण मनिका क लिए आवश्यक है ।
 वामन म वीरता ही गनीवता है । वीर रस ही जीवन का मुख्य रस है ।
 वीर बाणी स कम स कम कापुण्यता की प्रवृत्ति का नाश और बर्मात्साह का उद्दीपन ता हाता है । (अगराज भूमिका भाग)

इकतीसवें सग म अगराज वण के सेनापतिरव म सेना क प्रयाण का वणन इस प्रकार है

अगवीर वण का निशेण सुनते ही वहाँ
गूँज उठी सय मिहनाद म रणम्यत्री ।
वीर रम मज्जित सुगज्जित चले गमम्न
युद्ध सिद्ध आयुधी महारथी महावनी ॥
गविन मतग चल घावित तुरग चन
वेगित शताग भी सजाकर ध्वजावनी ।
गयु को पुकारती प्रधान वजयन्निवा की
आरती उनारती मी भारता चमू चत्री ॥
(सग २१/२)

रावण (हरदयानु सिंह)—रावण क समान महापराक्रमी और योद्धा पर आधारित इस प्रबंध काय म रावण क शौर्य साहस और उत्साह के भाव दृश्य अंकित हुए हैं । त्रयाण सग म राम रावण क युद्ध के अवसर पर वीर रम से पूण वणन हुआ है

रामहि दख निकट नियराया ।
दममिर कोपि सरासर ताया ॥
वरमत वान शुवत अधियारी ।
भात्व जनद घटा जनु कारी ॥
× × ×
या विधि वान बुल् झरि गार् ।
रन म रधिर नग वह जाइ ॥
जन् सरघार बहत बिकराता ।
गज विमान माई जुगन तिनारा ॥

पावती (डा रामानन्द तिवारी भारती नन्दन)—वीर रम की इस महा काय म भी प्रधानता है । कुमार कानिक्वय के ननुत्व म देव सेना तारकामुर के दान का जब उचन हुई तो कवि ने वीर रम की सगिता ही प्रवाहित कर ली है

उमड पडा कोमन हृदया म
विस पौरुष का नव उत्साह ।
फट पडा निश्चन मानस म
विस प्रपात का तूण प्रवाह ॥

फडके कक्कश बाहु सिधु सा,
उमड पडा उनका उन्नत वक्ष ।
अन्तर का आवश वदन की
हुआ लालिमा म प्रत्यक्ष ॥

× × ×

जागी वीरा के नयना म
कौन अपूर्व तेज की ज्वान ।
पुलकित स्वधा के निपग म
बाण कर रह गुरु क्षकार ।
हुई दिगन्ता म प्रतिगुजित
धनुषा की भीषण टकार ॥
रन न सवा उत्सुक वीरा के,
अन्तर का आकुल आवेश ।
मिल विजय वर सा प्रयाण का
आज अभीप्सित प्रत्यादेश ॥

(सग १७ पृ० ३५४)

जयभारत (मधिलीशरण गुप्त)—युद्ध बाण्ड म भीष्म के अपूर्व रण
कौशल म वीर रमानुभूति होता है

तेसा रण रग गगानन्त ने था विया
पाडना का मारा बन जम्त-व्यस्त हो गया ।
द्वन्द्व जहाँ ही रहा था सकुन तुमुन था
भर गई सारी रणभूमि रण्ड मुष्ण स ।
रक्त व प्रवाह छूटे पानी की पुनार था ।
× × ×
सो गय थ शत्रु मित्र भूमि पर साथ हा
सब का विशोरा सा म्निनाया पितामह ने ।

(युद्धबाण्ड पृ० ३७४)

तारकवध (गिरिजात्त भुवन गिरीश)—प्रस्तुत महाकाव्य म वीर रम
के अनेक गुणर स्वल यत्र-तत्र उपनय हैं । त्रयोत्थन मग के गीता म वीर रम
की अभिपयना सुन्दर है

हम करना है अरि सत्कार
तग को देना है आहार ।

सिंधु व भीतर भी धस जाय
 शत्रु होगा तब भी अमनाय ॥
 हमारा वीरधन अति चण्ड
 उस वर डालेगा निष्पाय ।
 यही है कौशल का नतकार ॥

(सग १३ पृ० २४५)

अथवा

चनो रण प्राण म ह वीर
 शत्रु के उर म मारो तीर ।
 प्रवृत्ति का आया है अह्वान
 हम करना सहार विधान ॥
 विश्व का हो नव नव निर्माण
 विधात्री ने अपना बरदान ।
 बक्ष वरी का डाना चीर
 सिंह जैसे तडपो व वीर ॥

(पृ ४५)

एकलव्य (डा० रामकुमार वर्मा)—हम महाकाव्य म द्रोणाचार्य और
 एकलव्य के चरित्र म अपार शौर्य और वीर भावा का चित्रण हुआ है । मकल्य
 सग म एकलव्य के निम्न कथन म वीर दण का भाव दर्शाए

सावधान भूमिपति ! हम म भी है शक्ति
 भूमि पुत्र सबदा है बाहुवन जानते ।
 पशुवन कौशल तो सीमित तुम्हारा है
 आत्मवन की हमारे पास गीमा नही ॥

× × ×

किन्तु शौर्य धर्म मयी बाहुए हमारी है
 ब्रह्मचर्य अग पर सत्य का कवच है ।
 मन तूणीर म शिनीमुख हैं समय व
 और कानधनु पर प्राण की प्रत्यचा है ॥

(सग ६ पृ० १७८)

रश्मिरथी (रामधारीमिह दिनकर)—सप्तम सग म कण अजुन युद्ध के
 अवसर पर राधेय (कण) का अपने मारथी शत्रु के प्रति वीरता से ओतप्रोत
 कथन

सामन प्रकट हा प्रनय । पाड,
 तुषवा में राट बनाऊगा ।
 जाना है ता तर भातर
 महार मचाना जाऊगा ॥
 क्या धमकाता है काल अर
 जा जा मुटठी में वद करू ।
 छुटा पाऊ तुषवा समाप्त करूँ
 निज को स्वच्छन्द करूँ ॥
 वा शल्य । ह्या का तेज करा
 ल चना उडाकर शीत्र बहा ।
 गोविन्द पाय क साथ डर हा
 चुन कर मार बार जहाँ ॥
 (पृ० १८५)

उर्मिला (बालकृष्ण शमा नवान) — लक्ष्मण का निम्न वचन वीरत्व नाव
 में परिपूर्ण है

मैं दयोगा दूध तुम्हारा नहा लजायगा लक्ष्मण
 दवर अपन प्राण करगा, वह आदर्शों का रक्षण ।
 जिसके बंधु राम हा, जिसकी पूज्य सुमित्रा महतारी
 धिक् ह वह यदि प्राण माहम पत्र बन जाय जविचारा ।
 एक एक घूट में तुम्हारे पय के मीन अमृत पिया है,
 कस विचलित कर सकता, मुझ मृत्यु की अनन क्रिया है ।
 (मग - पृ० ३३६)

कुरुक्षेत्र (रामधारीसिंह त्रिनेकर) — भाष्मपिनामह के अधिकांश कथना
 में युद्धवीर का आजस्वा स्वर सुगन्धित है

युद्ध का ललकार मुन प्रतिशोध से
 गल्प हा अभिमान उठता बार ह
 चाहता नस तोड़ कर बहना लहू
 वा स्वयं तनवार जाना हाथ में ।
 (भा - पृ० २३)

यही नहा, वीरों का भाति भाष्म न स्पष्ट बहा
 कायरा का बात कर मुझका जनामत्र आज तक
 है रहा आत्मा मरा वारना, बलिदान हा,

जाति मन्दिर में जनावर शूरता की जा रही
जा रहा हूँ विश्व से चढ़ युद्ध के ही यान पर ।

(२/२७)

जौहर (श्यामनारायण पाण्डय) — यह वीर और वरुण रससिक्त महाकाव्य है । गोरा चादन के युद्ध पराक्रम में वीर रस का परिपाक हुआ है

दण्ड सवारों को चिनगारी
रोम राम में लगी निकलन ।
दाना आँखें जल हो गया
लगी शोध से काया जलने ॥
भीहूँ कुटिल बमान हो गयी
पत्रकें उठी उमान हो गयी ।
गारा की असि दीप्त भुजाए
फडकी कान समान हो गया ॥
प्रलय मघ सा गरज म्यान से
एक प्रखर तलवार निकानी ।
साथ साथ हृष्टि की उसन
गोहवन सी पुष्पकार निकाली ॥
और दूसरे ही क्षण अरि के
हृय पर कूल सवार हो गया ।
अश्वारोही गिरा घरा पर
जीवन के उस पार हो गया ॥

(दसवीं चिनगारी पृ० १०६)

झाँसी की रानी (श्यामनारायण) — युद्ध वनन में महारानी लक्ष्मीबाई के वीरत्व की झाँकी अवलाकनाय है

तनवार बिधर के उठती थी
के बिधर छपाछप करता थी ।
यह भी अरिदन को पात न था
के बिधर नपालन करती थी ॥
के वन स्तना ही के पात ध
रानी आई रानी आई ।
तब तक सिर घड से अलग ना
भू पर कहना रानी आई ॥

जब तब घोड़ की टापा की,
 "वनि हों अरिदल सुन पाता था ।
 तब तब रानी का खडग तुरत,
 धन मृत्यु शाश पर आता था ॥
 दायें बाय दा हाथा स
 रानी थी रिपु सिर काट रही
 स्वातन्त्र्य भवन की नयी नाव
 थी शत्रु मुण्ड स पाट रही ॥

(बाइमवा दृवाग् पृ० २६४ ६५)

सेनापति कण (लक्ष्मीनारायण मिश्र)—मुप्रसिद्ध नाटककार श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र का कण के जीवन पर यह अपूर्ण लिखित महाकाव्य है । मन्त्रणा नामक प्रथम सर्ग में कण का यह कथन वीर भाव से पूरित है

चुनीती यह दब की
 दे रहा हूँ आज हान जमा हीन नर म ।
 साक्षी मान सब शुचि वीर मणि मूय को
 मूय सेवी हूँ जो मूय तज धारी रण म ॥
 माहृगा धनजय का, बल वह दम्भा जा
 आया जडन को वही शत्रु पय म ।

× < ×

और क्या कहें मैं ? हिना काल पृष्ठ कर म,
 वाम कर काँपा चढी प्रत्यचा धनुष का ।
 रोपपूण ओखें हुई निनिमय पत्तक,
 सिच उठी भाह बक्र रध नाभिवा क व ॥

(पृ० ४६)

रामराय (डा० बन्धुप्रसाद मिश्र)—प्रस्तुत महाकाव्य का नवम सर्ग में राम रावण युद्ध के अवसर पर वीर रस के दृश्य हैं

हुआ दुःखना ना उभय त्रिभि तुमुन हा उठा जयजयवार
 हान लगी उभय त्रिभि स ही, विविध आयुधा का बीछार ।
 तर शास्त्राएँ लटठ बन गई पत्यर बन डान तलवार,
 विफल हुए जिन पर धमुरा क बरछ भान तीर बटार ॥

× < ×

महाकान का डमरू बोना डमड डमड डम घरघर मार
काली नाच उठी छप्पर भर आता स करवे शृगार ॥

(पृष्ठ १०१)

नूरजहाँ (गुरुभक्तसिंह)—यह शृगार रस प्रधान महाकाव्य है। किन्तु इसमें भी वीर रस का चित्रण हुआ है। शर जपगन का अपनी पत्नी के प्रति कथन देखिए

म हू वीर मुग मरन का नही जरा भी लगता भय ।
अब तक है तलवार हाथ म तू किस भय म भूली है ।
तही कुतुब की कुछ मजाल वह कौन सत की मूली है ॥
बात नहा घबराओ मत डरो न मुझको जाने दो ।
जौर नही कोई भी चिन्ता अपने तिल पर आने दो ॥

विक्रमादित्य (गुरुभक्तसिंह)—यह भी शृगार रस प्रधान महाकाव्य है। इसमें चन्द्रगुप्त के पराक्रम का वर्णन इस प्रकार हुआ है

जरि की रथ सेना कुचल गजा न
पग स रज म मिना दिया ।
दाँता स हय दन छट छट
उनम भी भगत्त मचा दिया ॥
जब मार पडा तलवारा की
भालो का भा भरमार हुई ।
छक्के छट गये कमर टूटी
जरि के प्रतिकूल यार हुई ॥

नारी (जतुनवृष्ण गास्वामी)—इसमें नारी के विविध रूपों का वर्णन है। कवि ने नारी के वारागना रूप का वर्णन निम्न प्रकार किया है

तजस्विनी आरमगौरवमयि उरसगोचन निभय नारी ॥
कौन कर सके इस तिरस्कृत किसका इसे विश्व म है डर ।
रस पर दष्टि उठा सक्न का साहस किस न नत किसका सिर ॥
तल्पशामिनी अश्वरोहिणी चची बाल कोमल कर म ।
जय तलवार उठा लती है फिर रव पाता कौन समर म ॥
जाज न यह अवला न दुबला इस धर शक्ति प्रयोग न सम्भव ।
अपराजित सम्मानित सक्षम यह जावत जागृत नारी नव ॥

(पृष्ठ १८०)

इम प्रकार वनमान युग के हिन्दा महाकाव्या म वार रस की छानस्विनी का अमिन प्रवाह अमुष्ण है । हिन्दी काय परम्परा म वीर रस की जा धारा महाकवि चन्द्रगर्गई के पृथ्वाराजराभो म प्रवाहित हूइ था, उमरा उरम आज भा मूवा नही है । वीर भावना मानव मात्र का जात्मि और जमजात प्रवृत्ति है । ससार म जय तक वीर का समान्तर रहगा और वारत्व भाव म निष्ठा रहगी तव तक काय रचनाआ म वीरता क गीत अवश्य गाये जायेंगे । महाकाव्य तो जानीय-जीवन चेतना क आकलन का सास्तनिक प्रयास हात है उनम युग जीवन का उन्नत धाय प्रतिफलित होता है । अत वीरत्व भाव का व्यजना का सर्वाधिक प्रतिफलन महाकाव्या म ही होता है । हिन्दा ही नही अपितु विश्व मनाकाव्या का परम्परा इसका ज्वलन्त प्रमाण है ।

हिन्दी महाकाव्यो मे हास्य रस

क्याकि पृथ्वाराज को आमन्त्रित नया किया गया था। चन्द्रवर्माई न परम्परा के अनुसार जयचन्द्र का प्रशस्तिगान किया जिससे जयचन्द्र बहुत प्रसन्न हुआ। जैसे ही जयचन्द्र कवि चन्द्र को पुरस्कृत करने का मान रहा था तभी कवि ने पृथ्वीराज की प्रशंसा प्रारम्भ कर दी। पृथ्वीराज की प्रशंसा में चिह्नित जयचन्द्र ने चन्द्रवर्माई का वरह (वन) कह संबोधित किया

मुनू दरिदर जह तु छ तन जगनराव मुन्द ।
वन उजार पमु तन चरन क्या टुरी वरह ॥

यहां जयचन्द्र ने कवि को वरह और पृथ्वीराज को जमलगव कहकर व्यंग्य किया। साथ ही चन्द्र (वन) के टुवन गान का कारण पूछा। प्रत्युत्तर में चन्द्र ने कहा कि पृथ्वीराज ने सभी राजाओं का जोत लिया है। पराजित राज पृथ्वीराज की अधीनता स्वीकार कर लाना में तिनके पक्ष घाम देवाकर भाग गए हैं। स्मृतिए वन का अपना भाव्य-प्राप्य न मिलन से वह दुबल हो गया है। जयचन्द्र का चन्द्र का व्यंग्याक्ति चुभ गयी और उगन दूसरा उपहासपूर्ण कथन बना

हम याय दुबरी मुक्ति उम्म न चनुत ।
मिन् याय टुरी करी चम्पे स कठ कह ॥
अग याय दुबरी ना वधिय सुवधन ।
छन छक्क दुबरी त्रिया दुबरी मात मन ॥
जामा गाठ बधन धुरा एकहि गति ह हरदिया ।
जगर जुरारि उज्जर परन यी दुबरी वरदिया ॥

अर्थात् इस मोती के अभाव में सिंह गज के कुभस्थल के रक्तपान के अभाव में मृग सगीत मोह में बधनग्रस्त होने से रसिक व्यक्ति मौज न कर सकने पर और स्त्री मनानुकूल मित्र के अभाव में दुबल हो जाते हैं और उनका टुवन होना युक्तिपूर्ण भी है। किन्तु आसामास में जब आकाश में घटाए छाया हैं और पृथ्वी घास से हरी भरी है वन को हन भी नहीं जोतना पन्ता तब भी वन दुबल क्या है ?

इसी प्रकार यह व्यंग्य विनोत्पन्न वार्तावाप चरता रहता है और अंत में चन्द्र के उम उत्तर से जिसमें वन की जनन महिमा का बखान है सुनकर जयचन्द्र प्रसन्न बल्लता है।

पद्यावत—आचार्य रामचन्द्र शर्मा सहित पद्यावत के सभी समीक्षकों ने

निए भागत ही नहा है वरन् यार् वार् ता अपन ववघाति काटकर म्नी का वश भी धारण कर लते हैं

मस्तन्ति जसत ह्य गय न्ति न्ति न गज्जन्ता
 ठौर ठौर मुग्धेण वगव दुर्भ निन्ति वज्जन्ता ।
 नाग्नि डारि ह्थ्याग् मूर्ज जीव न न भज्जन्ता
 वानि व तन धान एरन्ति नाग्नि भपन गज्जन्ता ॥

(मानवी प्रकाश छन्द २)

इसी प्रकार पर्यागम जा व निम्नारित कथन म भा गम्य है जस व कन्त है

नरमण व पुरपान किया पुरपाथ मा न कह्यो परइ ।
 वष प्रनाय किया बनिनान का दग्धत कणव ह्यो परइ ॥'

(वही छन्द ३६)

प्रियप्रवास—'रिज्जीधवृत्त प्रियप्रवाम जाधुनित युग म गयी बानी हिन्ता का प्रथम महाकाव्य है । इसका वष्यग्म (करण) गस्य की प्रवृत्ति के अनुष्प नन्ता है । किन्तु प्रकृति चित्रण व समथ कुछ हास्य उक्तिमां देकर हरिऔधजी न अपन विनापी स्वभाव का परिचय दिया है । जमे नवम सग म नीम तथा नारगी का वणन स्पष्ट है

स्वकीय पचाग प्रभाव म सत्ता
 बनम्थनी वीच नारागता बन्ता ।
 विनी गुणी बछ समान था रड्डा
 स्वनिम्बना गवित वक्ष निम्ब वा ।
 मुरण नान तमग कर् नगा
 र मजीन तिज वस्त्र का सजे ।
 वर अनूठपन साथ था गन्ता
 मन्तरगीला तर नारगी बन्ता ॥

साकेत—साकेत मन्तावाय म यद्यपि शृंगार एव करण रम की ही प्रजानता है तथापि गम्य की दष्टि स निम्नारित स्थन जबतोचनीय है

प्रथम सग म उमिता-नभमण मवान की यस्याकितियां जस उमिता का य कथन

कर बन्ता कर जो कमन मा था विना
 मुस्करा जीर बानी उमिता ।

मत्त गज बन कर विषक न छाडना,
कर कमल कह कर न भेरा तोडना ।'

हास्य की सफा सृष्टि 'अष्टम सर्ग' म जरठ जावालि मुनि और श्राराम के पारस्परिक वार्ताचार्य म है

जावालि जग्ठ को हुआ मौन दु सह सा
बोन व स्वजटिल शाप डला कर सहसा—
जोहा ! मुयको कुछ नही समय पडता है
दने का उलटा राज्य द्वाद लडता है ।
पितृ वध तक उसक लिए लाग करते ह ।
ह मुन राग पर वही मत्य मरत है ।
ह राम त्याग का वस्तु नहा वह एसा
पर मुन भोग की भी न समझिए बसी ।
हे तरण तुम्ह सबोच जोर भय किसका ?
जरठ नही इस समय आपका जिसका ।'
'पण पक्षी तव हे गी' स्वाथ रक्षी है ।
'हे धीर किन्तु मैं पणु न आप पक्षी हँ ।'

कामायनी— कामायनी महाकाव्य म हास्य रस का नितान्त अभाव है । विद्वाना ने इस तथ्य की मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है । डा० द्वारिकाप्रसाद क शर्मा म— माराग यह है कि कामायनी म हास्य रस की छोडकर सभी रसा का चित्रण सफलता के साथ मिलता है । हास्य रस के अभाव का कारण प्रसादजी का गम्भीर एवं चिन्तनशात स्वभाब है । दूसर आदि पुरुष का क्या इतने गम्भीर वातावरण म लेकर चलता ह कि उमम हास्य क लिए कही अवसर नहा मिलता ।^६ कामायनी के एक अय समीक्षक का मत है कि— पता नहा क्या प्रसादजी न इसे (हास्य) कामायनी म स्थान नगनिया जबकि उनक नाटका म हम हास्य की अत्यंत सुंदर व्यंजना देय पडता है । कुछ भी हो हास्य रस का अभाव कामायना म गटवता अवश्य है । शिष्ट हास्य के दो एक उदाहरण उपस्थित किए जा सकते थे ।^७ जो हो हास्य का अभाव कामायनी महाकाव्य की एक बसा है जिसे हम समेक स्वीकार

^६ डा० द्वारिकाप्रसाद कामायना म काव्य, ससृष्टि और दरान, पृ० १६२

^७ निवकुमार मिश्र कामायनी और प्रसाद की कविता गगा पृ० १३६

करना चाहिए । महाकाव्य में नवरत्न परिपाक विधान की दृष्टि में भी यह एक काव्यशास्त्रीय श्रुति है ।

दशवश—प्रस्तुत महाकाव्य में चतुर्थ राग में हास्य रंग में गुप्तर दृश्य है । तदमी स्वयम्बर में जबकि पर शारदा देवी और तस्या का परिचय देने समय ब्रह्माजी का परिचय जिस गल्प-योजना द्वारा प्रस्तुत करना है और तदमी को उद्घरण करने का परामर्श देती है वह हास्य में पूर्ण है

तानहू नाक के से करता
अरु चारहू वेद बनावन तारे ।
दादा भइ मन सा सिगरा
मिरप कहु कम न दीसत वारे ।
नारत सी बनक है सगूत
तिहु पुर पान सितावन हारे ।
प्रम की पास में बाधन की
तुम्है बूटे ववा इन है पगु धारे ॥

एकलव्य—डा रामकुमार वर्मा रचित एकत्रय महाकाव्य में प्ररणा और लाघव सर्गों में हास्य रंग में जीर विनोद के प्रसंग प्राप्त हैं ।

जब एकलव्य ने प्रण कर लिया कि वह गुरु द्रोणाचार्य का शिष्य बन बिना भोजन नहीं करगा तब उसके मित्र नामन्त ने विनोद से कहा

अच्छा एकलव्य ! करो भोजन मैं बन जा
उनकी पद धूलि रख भर न आऊंगा
उसकी मूर्ति बना बार बार पूजना
(प्ररणा सर्ग पृ ८४)

एकत्रय के पिता ने भी उसके रुठ जाने पर कहा

भोजन करेगा नहीं ? पिता हम जान वे—
रुठने से बाण विद्या भी कभी आती है ?
और रुठा शिष्य किस गुरु ने बनाया है ?
एकत्रय यदि बाण विद्या और चाहता
पहन बना न तदय अन्न हा की ।
पिता ने अट्टहाम किया एकत्रय भी हसा ।

(वही पृ० ८७)

हस्तिनापुर से नीटने पर एकत्रय को साथी उसका योग्य से स्वागत करते हुए कहते हैं

“आओ आओ, एकलक्ष्य ! शिष्य आय द्राण क !

साधक महान ! समकक्ष धत्रिया के हैं।

इसी प्रकार के हास्य की याजना लाघव मग म भीम और अजन के सवाला म है।

कृष्णायन—श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र के 'कृष्णायन महाकाव्य म हास्य क प्रसन मन-तत्र विस्तर हुए ह। अवनरण काण्ड म जन ब्रजवन म दावाग्नि लग गया और कृष्ण न अग्नि पान कर लिया तब एक ब्रजनारी न कहा कि हम भी यह मात्र सिखाओ कि जाग्नपान कैसे किया जाता है। तत्र कृष्ण ने हास्यपूर्ण उत्तर म कहा

‘विहस हरि बोली ब्रज नारी सिखबहु हमहि मात्र बनवारी।

बोले बाहू—मात्र तेहि आव चोरी करि जो भासन खाव।

उरहा जागु गह नित जाव, जननी मुनि मुनि जागु रिसाव।

उखल त जा रह बधाव हान भार दस साटी गाव।

(कृष्णायन, पृ० ६५ ६६)

उम्मिता—था बालकृष्ण 'नवीन कृत उम्मिता महाकाव्य के अन्तिम संग म पुष्पक विमान स लवा स अयोध्या लौटत समय त्वर भाभी (लक्ष्मण और माता) का परिमवात् तस्य रम की खोलखिनी प्रवान्तित करता है। सीता ने लक्ष्मण स ठिठोनी करते हुए कहा कि कैसे खोये-खोय से हो रह तो क्या कोई बनवाना तो मन म नहीं बन गया ? तभी लक्ष्मण न कहा

भाभी या था लक्ष्मण बोले विहम मधुर वचनावत्रियां।

भाभी यत्ति ऐसी ही भौनी होती य विदन् ललियां।

यत्ति या सट्ज छोड देना य रघुबुलजा का हिय आसन।

तो क्या आज तब म होना यधु विभीषण का धामन।

बांध दाशरथिया को खती हैं विदन् की नन्निनियां।

बडी चनुर हो तुम मचलियां हो तुम सब मायाविनियां।

(पंचम संग छन्द १५३)

इस पर सीता न व्यग्य म कहा कि रघुबुल की तो राति एकाधिक पत्नियां रगत की है। उनका सबन महाराज दशरथ की ओर था। प्रयत्तर म लक्ष्मण न कहा कि यत्ति सौत चाहिए तो मैं राम स कहू। तभी साता न कहा—अपनी चिन्ता करा। शूषणगां क मन क जावपण तो तुम ही हो। अन्न म स मण न कहा

बहन बहन सब मिन बठी हैं
 बन देरानी जठानी
 अब औरो की गुजर कर्ना ? क्या ?
 है न ठीन भाभी राना ।
 (वनी पृ० ५६४)

प्रत्युत्तर म सीता न कर्ना
 तो या कर्ना कि वन्न उम्मिला
 की स्मृति म ही हो डव ।
 जब समझी हो म्मीलण मो
 उत्सुक से ऊय ऊय ।
 (बहा पृ० ५६५)

नूरजहाँ—हास्य की दृष्टि से श्री गुरुभक्तार्थिजी के नूरजहाँ महाकाव्य की निम्नांकित पंक्तिया भी उल्लेखनीय हैं

बोना एक मनी है गुल पर थी हजर की बड़ी निगाह
 क्या बतनाऊ अभी हान म मरा हुआ है विवाह
 मरू छोड कर किस पर अब मैं नथी नवनी तनहिन को
 वह जी कभी नया सकती है मेर बिना एक क्षण को ।

रामराज्य—डा बल्लेवप्रसाद जी द्वारा रचित रामराज्य महाकाव्य म नका विजय व उपरात राम जब बानरा और असुरा सहित अयोया लौट आये तो अयाध्यावासिया ने उनका अपूव स्वागत किया । अच्छे से अच्छे भोजन वस्त्र दिय । आगमनायक वस्तुआ को पाकर बनचरो की दशा विचिन थी

बय जना को मिले स्पीत जावास सुहाय
 दपण देम और बहुत मन म भुसबाय ।
 कोई पावड वसन समण कटि तीर सजाता
 काई था मणिदीप पक्व फत्र मान चनाता ॥
 जो थ ककशभूमि के ही आयासी
 गह उनट तभी ले सके थपकी खासी ।
 भोजन कच्चा और निनवण जिसन खाया
 अदरख वासित साक सूष कर मुन विचकाया ॥
 भृत्यो को प्रभु मान गिरे चरणा पर कोई
 जन् छवि चतन जान गये भ्रम से भर काई ।
 × × ×

प्रामाण्य का घटाना प लख घबराय थे ।

उगत माना किसा कटपर म आय थ ॥'

(दशम संग पृ० १११)

श्रीरामचन्द्रोदय—द्वे पुरस्कार विजता श्रीरामनाथ ज्यातिपा का
'श्रीरामचन्द्रोदय महाकाव्य परम्परित राम कथा पर आधारित है । साना
स्वयम्बर म धनुभग के अवसर पर परशुराम लक्ष्मण सवा म हास्य व्यंग्य
की सुन्दर सीकी है । लक्ष्मण का निम्नांकित कथन दृष्ट्य है

'जब लखि में जायी तुम्ह नृगुबुल करव चर,

प संग रागत कान ती ही जमराज चुचर ॥

×

×

×

यठिय भाजन करिय कठ करि प्रभु मोहि सनाथ

लाइय परमु सुवारहु पाहन प मुनिनाथ ॥

साक्षेत्-सात्—डा० बल्लभप्रसाद कृत साक्षेत् मन्त्र महाकाव्य क प्रथम संग
म भरत मातृका क पारस्परिक वातावरण म हास्य व्यंग्य की छटा दशनीय
है । भरत मातृकी स कहत ह

'मनुज का मधुप वल्लि पर चार

लगाया लूव यग्य का आट ।

किन्तु क्या प्रिय नन्हा यह जान

तुम्हा अब न्न प्राणा का तान ॥

भरत का उक्त उक्ति का सुनकर मातृका न सविना कहा

तान में हू, मैं जीवित बान

अहा उपमाए मधुर नवान ।

न श्रुता म हा या अनुगग

गत निगताया करत त्याग ॥

(प्रथम संग पृ० २६)

अगराज—डा आनन्दकुमार रचित अगराज महाकाव्य क छठ संग म
धमराज युधिष्ठिर न राजसूय यज्ञ के अवसर पर कौरवा का भा आभिन्न
दिया । त्र्योपन भी जाया । इन्द्रप्रस्थ का मभाभवन स्फटिकमणिया म जन्म
था । वही जल म यज्ञ का जोर स्थल म जन्म का भ्रम हाता था । त्र्योपन
मम अपरिचित था । वरु उम जोर भ्रमवग बना जिघर जन्म था और तानाथ
म गिर गया । तभा शोपना न उपहास करत हुए व्यंग्याक्ति का

भीमसन स बोली प्रमत्त बरके बुटिन प्रहाग
हुआ चमदग मन्त्रि भूप की पान दृष्टि का ह्वाग
सत्ता सबदा रहा रहगा सुपथ भ्रष्ट यह दीन
अधपिता का आत्मजात भी होता चधु विहीन ॥

मीराबाई— गी परमेश्वर द्विरेफ प्रणीत मीराबाई महाकाव्य म चतुथ
सग म जब मीरा की भाभी और सहनियाँ उसस ठिठोनी करती हैं तो हास्य
का सरस चित्र अंकित हा जाता है । एक सहनी कहती है

तुम का पाकर वृत्त कृत्य हुए
तरे चरणा का चूमग ।
पीछ पीछ ही घूमग ।
तुम गृहलक्ष्मा हो राना हा
पर जीजाजा तो भृत्य हुए ।
पर सुनत है व काले है
चपला न सहसा व्यग्य किया
विधि न क्या ऐसा रग दिया
पर ठाक ठाक अय वाली
कलि का तन होता मतवाला
पर अति का तन होता काला
कान हाते देग भाल ।

(चतुथ सग पृ० ७)

सारक बध— रा गिरिजात्त शुक्ल गिरीश विरचित प्रस्तुत महाकाव्य म
पावनी परिणय के लिए शिव क बराती प्रता की साजसजा का बणन हास्य
भूरित ह । प्रत परस्पर कहत थ कि

मरा नाक जीभ स काटा छाटी उसे बनाओ ।
एक जात्र म रूंगा तुमका दग दश्य तो पाओ ।
नैन तुम्हान का आनुर थे लम्ब दाता वाले ।
मिला न कार् हाफ रह थ तम्बी जाभ निकान ।

प्रभवर सिर पर मीर घरग हम भी क्या न घरें फिर
हिम प्रदश का किमा प्रननी को हम क्या न बर फिर ?
बिना रूप क नही बरगो का प्रत कुमारी ।
तडप उठा प्रिय रूप प्राप्ति हित प्रत मडनी सारा

धके सरित मर निखर आनन का प्रतिबिम्ब दिखाते ।
पानी थका वन्दन को धाकर उसम पानी लाते ॥

(पद्म मग पृ० ४१८)

रावण—श्री हस्त्यालुसिंह निरसित रावण महाकाव्य क छठ सग म बालक भेषना रावण के साथ बलाश पवत पर गया । बहा पावती बाहन सिंह न दहाड मारी उस भेषनाद न डांट लगायी । उस डांट को सुनकर सिंह तो चुप हा ही गया । साथ ही मूसक गजानन बल जाति श्री डर के मारे भाग गये । इसी अवसर पर कवि न हास्य रस पूण मरस बल्पना की है कि सपों क बान नही होते इसीलिए वे भेषना का डांट न सुनकर ही शिव के शरीर पर स्थित रह । यदि सप भी डांट क डर से भाग जाते तो शिव का कौपना और कौपीन लन जाने और एसी म्यति म शिव लज्जा म गड जात

होत बिना उपधीन महस
जटान क जूट सब ढनि जात ।
राजन ही गरत सब कौपनी
और कापीन दुओ रलि जात ॥
पावते डोरी कहा ते पिनाक की
पानी म कगन कसे सजात ।
पाल क बान जा हात कहुँ
घननाद का हाँन जुप मुनि पात ॥

(सग ६ पृ० ६८)

इस प्रकार हिन्दी क महाकाव्या म हास्य रस का उपनिबन्ध पर विचार किया जाय तो यह उपलब्धि विषय उत्सवनाय और महत्वपूर्ण प्रतात नहा होती है । हिन्दी क महाकाव्या म सामान्यत हास्य का अभाव है । जा प्रथम उपलब्ध भी है वे भा व्यय बिना मिश्रित है । महाकाव्या म हास्य का अभाव स्वाभाविक ना है । महाकाव्य वह गुरु गम्भार काव्य रूप है जिगम बला शिल्प भावव्यजना सभी का अभिनयविन गाम्भीर्यपूर्ण हाता है । जानाय जीवन की सास्टुतिक चतना क विराट रूप का आकलन जिस काव्य रूप (महाकाव्य) क माध्यम स किया जाय उसम हास्य का सम्भव विनिषाजन सम्भव भी नही है । दूसर महाकाव्य ही क्या सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य का विराम उन परिस्थितिया म हुआ है जब हमारा जातीय जावन पराधान और पन्नित था । भारतन्ट युग म निम्नवय हा हास्य क स्वर हमार साहित्य म मुम्बरित लन प्रारम्भ हुए है । साहित्य म हास्य का अभाव गाम्भाय का हा परिचायक है ।

भीमसन से बोली प्रमत्त करन मुटिन प्रयास
हुआ चमदूग मन्त्रित भूप की पाग दृष्टि का ह्वाग
सग सबदा रहा रहगा गुपय भ्रष्ट यह दीन
अधपिता का आत्मजात भी हाना च । विहीन ॥

मीराबाई— २। परमेश्वर द्विरफ प्रणीत मीराबाई महाराव्य म चतुथ
सग म जब मीरा की भाभी और सहनियाँ उसस ठिठोनी करती हैं तो हास्य
का सरस चित्र अंकित हो जाता है । एक सहनी कहती है

तुम को पाकर वृत्त कृत्य हुए
तरे चरणा का चूमग ।
पीछ पीछ ही घूमग ।
तुम गृहलक्ष्मा हो रानी हो
पर जीजाजी ता भृत्य हुए ।
पर मुनत है ब काल है
चपला न सहसा पग्य किया
विधि न क्या ऐसा रग दिया
पर ठोक ठोक अय वाली
कलि का तन होता मतवाला
पर जलि का तन होता बाला
कान हाते दस भान ।

(चतुथ सग पृ ७)

तारक वध— २। गिरिजात्त शवन गिरीश विरचित प्रस्तुत महाकाव्य म
पावती परिणय के लिए शिव क बराती प्रता की साजसजा का वणन हास्य
पूरित है । प्रत परस्पर कहते व कि

मेरी नाक जीभ से काटा छाटा उसे बनाआ ।
एक आम म रूंगा तुमको दाव दृश्य ता पाओ ।
दाँत तुडान का जातुर ये नम्य दाता वाले ।
मिना न कोई हाँफ रहे व नम्बी जीभ निकान ।

प्रभुवर सिर पर मोर घरग हम भी क्या न धरें फिर
हिम प्रश्न का किसी प्रतनी को हम क्या न बर फिर ?
धिना रूप क नही बरगी काइ प्रत कुमारी ।
तडप उठा प्रिय रूप प्राप्ति हिन प्रत मडली सारी

थके सरित सग निखर आनन का प्रतिविम्ब निखात ।

पाना थका वनन को धोकर उसमें पाना लात ॥'

(पंचम मग पृ० ४१८)

रावण—धा हृदयानुसिंह विमित रावण महाकाव्यक छठसग मवानन
मघनात् रावण के साथ कलाश पवत पर गया । बहा पावती वाहन सिंह न
दहाड मारी, उस मघनात् न डाट लगायी । उस टाँट का मुनवर सिंह ता
चूप हा ही गया । साथ हा मूसन गनानन बल आत्ति भा डर के मारे भाग गय ।
इसी अवसर पर कवि ने हास्य रस पूण सरस कल्पना की है कि सर्पों के कान
नहा होत इसानिए ध मघनात् का डाट न मुनवर ही शिव के शरणा पर
स्थित रह । मत्ति मप भी डाँट के डर से भाग जात ता शिव का कौपना और
कापीन खल जात और एसा स्थिति में शिव उज्जा से गड जात

हात बिना उपवीन महस
जटान के जूट मव टुनि जात ।
नाजन ही गरत सब कौपना
और कापीन टुनी मुनि जात ॥
पावते डारी कहा त पिनाउ का
पाना में बगन कम मजात ।
'याल के कान जा होत कहूँ,
घननात् की हाँके जुप मुनि पात ॥

(मग ६ पृ० ८८)

इस प्रकार हिन्दी के महाकाव्या में हास्य रस का उपलब्धि पर विचार
किया जाय तो यह उपलब्धि विनाय उत्तरवनाय और महत्त्वपूर्ण प्रदान नया
होती है । हिन्दी के महाकाव्या में सामान्यतः हास्य का अभाव है । जो प्रमग
उपलब्ध भी हैं वे भी व्यंग्य विनाय मिश्रित हैं । महाकाव्या में हास्य का
अभाव स्वाभाविक भी है । महाकाव्य वह गुण सम्भार काव्य रूप है जिसमें
कला शिल्प भावमयजना सभा का अस्मित्यक्ति साम्प्रदायिकता हाता है । जाना
जावन का सांस्कृतिक चेतना के विराट रूप का आकानन जिस काव्य रूप
(महाकाव्य) के माध्यम से किया जाय उसमें हास्य का सम्भव त्रिनिवाजन
सम्भव भी नहा है । दूसरे महाकाव्य हा क्या सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य का विगम
उन परिस्थितिया में हुआ है जब हमारा जातीय जावन पगमान और पञ्चि
था । भारत-युग में निरवय हा हास्य के स्वर हमारे साहित्य में मुक्ति गन
प्रारम्भ हुए हैं । साहित्य में हास्य का अभाव साम्प्रदायिकता का ही परिणाम है ।

वस हास्य जीवन का सारसता के लिए अनिवार्य है जीर इसीलिए नवरत्ना में हास्य रस को भी स्थान दिया गया है। नवरत्ना विधान की दृष्टि से ही हिन्दी महाकाव्यकारों ने अपनी रचनाओं में हास्य की गृह्णित की भी है। इसका अतिरिक्त प्रस्तुत लेख में हास्य के शास्त्रीय स्वरूप से सम्पन्न प्रमत्त का उल्लेख किया गया है। वैसे हास्य के स्मिति व्यंग्य वक्राकित वाक्चल्लय आदि अनेक भेदोपभेद हैं जिनके उदाहरण महाकाव्यों में प्रचुरता से प्राप्त हैं। समष्टि रूप में कहा जा सकता है कि महाकाव्यों में रसयोजना के अध्ययन अनुशीलनकर्त्ता को हास्य के लिए निराश न होना पड़ेगा। केवल कामायनी महाकाव्य ही इस दृष्टि से एक अपवाद है।

मूल्याकन खण्ड

प्रियप्रवास

प्रियप्रवास

हिन्दी साहित्य के जाधुनिक काल का प्रियप्रवास सबसे प्रथम महाकाव्य है। इस काव्य के रचयिता श्री जगन्नाथसिंह उपाध्याय हरिऔध हैं।

कथासार

प्रियप्रवास की समस्त कथावस्तु सत्रह सर्गों में विभाजित है। वसु कथावस्तु बहुत छोटी और संक्षिप्त रूप में ही ग्रहण की गयी है। क्योंकि कृष्ण के मथुरागमन से कथा का आरम्भ हुआ है किन्तु कथा कथन का एक नवानुशासनी का अपनाकर हरिऔधजी ने काव्य के उत्तरार्द्ध में कृष्ण कथा के सम्पूर्ण स्वरूप का उल्लिखित किया है। प्रथम सर्ग का आरम्भ प्रकृति वर्णन से होता है

शिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित ही चला।
तर गिला पर था राजता
कमलना कुल कलभ का प्रभा।

इसी समय आकृष्ण गांधारण के उपरान्त सखात्रा सन्धि ब्रह्म में जान है। उक्त देवदेव समस्त ब्रह्मजना का अपार आनन्द होता है। सहसा रात्रि हो जाना है। द्वितीय सर्ग में गांधारण ग्राम में एक शिवांग पितृता है कि प्रायः काल राजा कर्म के यही अनुपस्थित उमरवा हा रहा है और मुकुन्द का मथुरा के लिए आगमन किया गया है जिस लक्ष्मी मुकुन्दकसुलभमूरजी आय है। इस घाघणा से समस्त ब्रह्मजासा व्याकुल होकर अनक प्रकार की चिन्ताओं में निमग्न हो शाकानुर होत हैं। तृतीय सर्ग में कृष्ण की मथुरा के लिए विन्दाइ का वर्णन है। कृष्ण का विदाई का दुःख बड़ा कारणिक एवं हृदय विन्दाइ है। विशेष कर माना यथादा के ममत्व का चिन्तन इस सर्ग में बड़ा भव्य वन पडा है। वह जगन्महा में कृष्ण का रक्षा की प्रायना करना है। कृष्ण-धराराम जिस रूप में जान का है उमक भाग प्रेम विद्वान नरनागी लट जान है। जिह्व के किसी प्रकार सपना-सुप्ताकर प्रस्थान करत है। चतुर्थ सर्ग में कृष्ण के

मथुरागमनोपरान्त गाकुन ग्रामवामिमा की विरह यन्त्रा का वणन है । पशु पशु भी कृष्ण की वियोग यथा स आनुन है । राधा की यन्त्रा अनुन हा जाती है । राधा का परिचय कवि न रसा मग म किया है । राधा और कृष्ण का वान नीताभा का भी वणन है । पाँचवें सग म नर कृष्ण अनराम रा मुघ नन मधुरा जात है । उसी समय समस्त ब्रजवासा वणनयन्त्र करत है । यशोला की दशा अवणनीय है वह शोकमिधु म निमग्न है । छठ म म ब्रजवासा कृष्णागमन का प्रतीक्षा म पशु पर चरन उनकी राह लगत है । स्त्रियाँ गवाधा म स श्रावती है । राधा पवन का दूता बनाकर कृष्ण क पास मन्त्र भजना है । सप्तम सग म नर श्राकृष्ण का मथरा छानर गाकुन लौट जात है । उह अबला दखनर यशोला विरह म व्याकुन हा जाता है । अष्टम सग म कृष्ण क अनागमन की सूचना यशोला का पागन बना गेता है । तब नर वावा कृष्ण क अतुन परात्रम अथात् कुवाय हाथा मत्ना एव कस क वध की वार्ते वतात है जिमस यशोला को कुछ सास्वना मिनती है किन्तु कृष्ण क जागमन का प्रतीक्षा करत-करत सब निराश ना जात है । ब्रज क नाग स्थान स्थान पर बठकर कृष्ण का वाननीताभा का स्मरण कर अपन प्रम भाव की यकन कर रह ह । नवम सग म कृष्ण को मथरा गृहत बहूत त्रिा वाद ब्रजजना का स्मरण हा जाया । उन्नाप अपन अभिन्न सखा उड्डवजा का ब्रजजना का मुघ नान तथा ममगात बुझान क लिए भजा । उड्डवजी जब मथरा स ब्रज जा रह व माग म प्राकृतिक दशमा की मुन्त्र छटा भी मिनती । दशम सग म यशोला न उड्डव क मधुमुख कृष्ण का बालनीताभा तथा कथाभा का वणन किया है । इस सग म मातृव का यजना मुन्त्र ढग स हुई है । एकादश सग म उड्डव की जार सकेत करक एक गाप काली नाग क दान तथा दावानन स गा गापा का रक्षा का वस्त मुनाता है । द्वादश सग म पुरंदर क प्रकाप क कारण धार वपा तथा कृष्ण द्वारा गोवधन पवत धारण की कथा ह । त्रयोदश सग म कृष्ण के ममाजसवी रूप का वणन है । कृष्ण क द्वारा जघामुर केशी और यामामुर नामक दत्या क वध की कथाए है । चतुर्दश सग म गापिकाभा का उड्डव क प्रति विरह निवन्त्र है । पन्ना सग म भ्रमरगीत की परम्परा का विकसित स्वरूप है । उड्डव गापा सवाल म निगण सगुण ब्रह्म की बौद्धिक व्याख्या प्रस्तुत की गया है । पञ्चदश सग म एक ब्रजवाता मधुमास म उपवन म जाकर भिन्न प्रकार के पुष्पा (वना पलाश चम्पा जुही व धुक सूयमुखा कुल आदि) स अपना विरह यथा मुनाता है । पुष्पा को निरन्तर दग उन पर व्यग्य कसना है । तत्पश्चात् भ्रमर स वार्तानाप करती है । अन्त म ममुना

तट पर जाती है। कृष्णप्रेम में विह्वल गोपा के ममस्पर्शी भावोद्गारों का उद्भव छिप हुए मुनते है। षोडश सग में उद्भव जीर राधा का मवा है। इसी सग में राधा के श्रीमुख से विश्वप्रभ, सत्यनिष्ठा नवधाभक्ति सगुण निगुण आदि विषया का विवेचन हुआ है। उद्भव कृष्ण का सन्देश सुनाते है। राधा धयपूर्वक कृष्ण का सन्देश सुनकर अपने उत्साह भी कृष्ण के लिए उद्भव स कहता है। राधा के प्रेम के सम्मुख उद्भव नतमस्तक हा जाते है। उनका समस्त चानगव सब हा जाता है जीर राधा का चरणरज लेकर मयरा को चन जाते हैं। सप्तम सग में मगधपति जरामध के अत्याचारा से पीडित जनता को राण नेन के लिए कृष्ण द्वारिकापुरा चन जाते है। उधर राधा दीन होन निराश्रिता का सेवा-सुश्रुता करती हुई यशोदा का धय बघाती हुई जीवन यतीत करता है। काय का पयवमान कर्णोत्थि की नोन उहारिया में इस पत्र के साथ हाता है

सच्च स्तः अविज्जन क र्ण के श्याम जसे
 राधा नसी सत्य हृदया विश्व प्रेमानुभवता ।
 ह विश्रामा भरतमुख के अरु में जीर आवें
 एमी व्यापी विरह घटना किन्तु को न होवे ॥

(सग १७)

कथानक की समीक्षा

कथानक आधार

प्रियप्रवाम महाकाव्य का अतिवृत्तात्मक आधार कृष्णकथा है। कृष्णकथा महर्षि रिया से भारतीय जनजीवन का कण्ठहार बनी रही है। हिन्दी साहित्य की मुनीष परम्परा में कृष्ण के नाम पर अपरिमित साहित्य मृजना हुई है। कृष्ण काय की एक समृद्ध परम्परा का स्वस्व रूप आदि काल से आज तक प्राप्य है। इसका कारण श्रीकृष्ण के नाम गुण चरित्र और यकित्व की विगपनाए है। कृष्ण के यकित्व की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विगपना बविन्द या अतस्वपता है। दूसरे शब्दा में, कृष्ण का चरित्र लोक जीवन की प्रेरणा रहा है। श्रीमद्भागवत महापुराण महाभारत गाता आदि में, कृष्ण का स्वस्व अनेकमुनी प्रतिभाओं से सम्पन्न रहा है। वह गापाय-चात्र मिक गिरोमणि नवनवतमन नीतिन पराश्रमा और भोगी त्यागा करण मभा र्ण है। वह श्रीमद्भागवत महापुराण में परमपुरुष परमात्मा गीता में कम योगी महाभारत में नीतिन विद्यापति के काय में रमराज गिरामणि श्यामगुप्तर, मूर के सगा गोपाय भारा के माहन माधव रीतिवान के रतिगति

और हरिओध क प्रियप्रवास म ब्रह्मतेज गम्भूत मन्त्रमानव क रूप म जवनरित हुए ३ । कृष्ण का रूप वविधय ही नोकप्रियता का कारण रहा है । हरिओधजी न इन्ग श्रीकृष्ण की कथाआ को प्रियप्रवास का आधार बनाया है ।

कृष्णकथा के पौराणिक स्रोत

पौराणिक दान्ध मय म कृष्णकथा का उल्लेख मन्त्रभारत म मिलता ३ । मूत्र मन्त्रभारत म ध्याकृष्ण का वणन अवतार रूप म अधिक मन्त्र हुआ है । महाभारत म कृष्ण क गजनातिन स्वरूप का हा विषय विवेचन ३ । महाभारत म कृष्ण क दारिका गमनापरात की घटनाआ का ही उल्लेख है किन्तु मन्त्रभारत क परिशिष्ट त्रिविंश पुराण म कृष्णकथा का विस्तृत वणन है । जनक विद्वान हरिवंश पुराण को महाभारत का अंश मानत है । हरिवंश पुराण क विष्णु पत्र म त्राकृष्ण का जन्म म नेकर दारिका जान तक की कथाआ का विस्तृत वणन है ।^१

ब्रह्मपुराण म कृष्ण कथा का विस्तृत विवेचन है । ब्रह्मपुराण क अध्याय १८८ स २१२ तक कृष्ण क चरित से सम्बंधित मोकुन वल्लभन मथरा जाति की नीताआ का वणन है । पद्मपुराण क मृष्टि खण्ड म कृष्णावतार का उल्लेख मात्र है । त्सी पुराण क स्वर्गखण्ड म भी कृष्णकथा का वणन है ।^३ त्राकृष्ण क परब्रह्म स्वरूप की कथाआ क माय वल्लभन मोप मापिकाआ की मन्त्रिमा का भी वणन है ।^४ पातान खण्ड म भी श्रीकृष्ण चरित निया गया है । इसक अनिरिकत विष्णुपुराण के चतुथ अंश म श्रीकृष्ण क जन्म की कथा का उल्लेख है ।^५ विष्णुपुराण के पाँचवें अंश म श्रीकृष्ण की जन्म से नेकर सम्पूर्ण कथाआ का विस्तृत वणन है ।^६ महाराम का सजीव वणन विष्णुपुराण क अध्याय १३ म है । अग्निपुराण को विद्वाना ने विश्व काश की मन्त्रा से अभिहित किया है । इसम मभी पुराणा क सारभूत विषया का वणन है । अग्निपुराण क १२व अय्याय म कृष्णावतार की कथा ली गयी है । ब्रह्मवतपुराण क ब्रह्मखण्ड म श्रीकृष्ण के परब्रह्म स्वरूप का वणन है ।^७

१ हरिवंश पुराण विष्णु पत्र सग ४ स ५६ तक

२ कल्याण, पद्मपुराणाक वप १६ अक १ पृ० ७४

३ पद्मपुराण स्वर्गखण्ड अध्याय ६६ तथा ७

४ पद्मपुराण अय्याय ७ ७२

५ कल्याण, विष्णुपुराणाक वप २८ पृ० ७ १

६ विष्णुपुराण पंचम अंश अध्याय १ स ३८ तक

७ ब्रह्मवतपुराण ब्रह्मखण्ड अध्याय २ ३

डा० हरवशलाल शर्मा का अभिमत है कि— श्रीकृष्ण चरित्र का पूण विवचन करन वाला दूसरा पुराण ब्रह्मवतपुराण^८ ब्रह्मवत म बहुत मी स्तुतिया दी गयी है और अनक स्यला पर उच्च कोटि क शृंगारिक वणन है । एमा प्रतीत हुना है कि हिन्दा क कविया न बहुत कुछ मामग्री ब्रह्मवतपुराण म सी है । इस पुराण म कृष्ण का नानाआ का वणन हरिवशपुराण क वणना का अपना जतिक शृंगारिक और विस्तृत है ।^९ इमी पुराण म श्रांगना की महिमा का वणन तथा गा गाप और गापिकाआ का लालाआ का चित्रण ह । इमी पुराण क श्राकृष्ण जम नामक त्पण म श्रीकृष्ण क जम स युवावत तक की नीनाआ का विस्तृत उल्लख है । माय ही उदव राधा सवा^{१०} और भक्ति नस्त्र का विवचन है । बराहपुराण म श्राकृष्ण का उल्लख न होकर मथुरा महात्म्य एव बलावन आनि वना की रमणीयता का विस्तृत वणन है ।^{११} देवी भागवतपुराण क चतुथ स्कन्ध म कृष्ण जम तथा जय लीलाआ का वणन है ।^{१२} वायुपुराण क द्वितीय त्पण म श्रीकृष्ण जम एव स्वमन्तक मणि की कथा का उल्लख है । कृष्ण की १६ सहस्र पत्निया आदि का भा वणन इस पुराण म है कृष्ण का गा गाप लालाआ का वणन यहाँ नया ह ।^{१३} वामनपुराण म कशी और काशनेमि क वध का कथा ह । कूमपुराण म यदुवश वणन तथा श्राकृष्ण क पुत्रा की कथा है । गण्डपुराण म पूतना कथ ममनाजुन उदार काशियन्तन गावधनधारण आदि की कथाआ के माय कृष्ण की रविमणी मत्यमामा आदि ८ पत्निया का भी उल्लख है ।^{१४}

कृष्णकथा का सर्वाधिक समृद्ध स्वरूप श्रीमद्भागवत-पुराण म मिलना है । श्रा मद्भागवत-पुराण के ११म स्कन्ध म ६० अध्याया म श्रीकृष्ण चरित्र का विस्तार म निरूपण किया गया है ।^{१५} कृष्ण क जम मे योवन बान तक की समस्त घटनाएँ गापिकाआ क प्रेम महाराम विरह वेदना के चित्र गापी उदव गवा^{१६} (रमरगत प्रसंग) प्रकृति वणन जाति श्रीमद्भागवत पुराण म

^८ डॉ० हरवशलाल शर्मा सूर और उनका साहित्य पृ० १०८

^९ ब्रह्मवतपुराण, श्री कृष्णजम त्पण अध्याय ६२ ८६

^{१०} बराहपुराण अध्याय ११३

^{११} देवी भागवतपुराण चतुथ स्कन्ध अध्याय २० म २५ ता

^{१२} वायुपुराण, त्रितीय त्पण, अध्याय ४

^{१३} गण्डपुराण, अध्याय १४४

^{१४} श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध

गमन से होता है। वहाँ कस बंध करके वे मथुराधिप होकर लोकरक्षण म लग जाते हैं। प्रमुख कथा भी यही है। उग्रव का अभिधय भी कृष्ण क लोकरजक स्वरूप का चित्रण करना ही है। किन्तु उनके विद्याग म गोबुन वासिया का गुण स्मरण के रूप म कृष्ण की नीनाभा का उत्तरव हुआ है। प्रियप्रवास म वे कथाएँ विस्तृत रूप से आयी हैं जिनम श्रीकृष्ण क साक रक्षक रूप का चित्रण होता है—उत्ताहरण क लिए कानियन्मन^२ णवानल दाह^{२१} गोबद्धनधारण^{२२} अघामुर बध^{२३} केशी न्त्य न्नन^{२४} तथा योमागुर के विनाश की कथाएँ।^{२५} इन कथाओं का प्रस्तुत करने म हरिऔघजी ने यग की बौद्धिक प्रवृत्ति एवं कल्पनाशक्ति का भी परिचय दिया है। इन कथन की पुष्टि क लिए कतिपय कथाओं की पौराणिक कथाओं म तुलना आवश्यक है।

श्रीमद्भागवत म कानियनाग की एक महान् विपला सप बताया गया है जिसने यमुनाजल को अपने विष से दूषित कर दिया था और कृष्ण न एक दिन षल म कूटकर नाग को पकड उसे चरण प्रहार स विनीण कर दिया। नागपत्निया की प्रायना पर उस प्राणदान देकर वहाँ से निकान कर रमणीक द्वीप म भज दिया।^{२६} प्रियप्रवास म श्रीकृष्ण वेणनाट के द्वारा कौशलपूवक उसे बश म करक यकिनपूवक किसी समीपवर्ती पवन के गहन वन म निकाल त्त है। कृष्ण का नाट चातुर्य मानवीय काय है। यहाँ घटना की जनोक्तिता का प्रकाशन कर उस मानवीय घरातल पर विवचित किया है।

इसी प्रकार श्रीमद्भागवत म इन्द्र प्रकोप से मूसनाधार बर्षा के होने पर श्रीकृष्ण ने गावद्धन पवत का उखाडकर छाते की भाँति उगली पर रोककर ब्रजजना की रक्षा की।^{२७} किन्तु प्रियप्रवासकार ने इस घटना का उत्तरव इस

^२ प्रियप्रवास ११/११ ५४

^{२१} वही ११/५६ ६६

^{२२} वही १२/१८ ६८

^{२३} वही १३/३७ ५७

^{२४} वही १३/५८ ६७

^{२५} वही १३/६८ ८४

^{२६} श्रीमद्भागवत पुराण दशम स्कन्ध अध्याय १७

^० इत्युवयनेन हस्तेन कृत्वा गावधना चतम्
वधार नीनया कृष्णश्छत्राकमिव वातक ।

प्रकार किया है कि ब्रज म घोर बषा होन पर श्रीकृष्ण न ग्रामवासिया का लकर गावद्धन पवत की गुफाआ और कदराआ म जाकर निवास किया । वडे कौशल से श्रीकृष्ण ब्रज के आवात बद्धजना की सुरक्षित स्थाना पर ल गय ।^{२८} श्रीमद्भागवत म दावानल की बषा का बणन इम प्रकार है कि एक बार गायें वन म चर रही थी तं अवाग्नि लग गया । समस्त गायें गोप, ग्वाला को याकृत देखकर श्रीकृष्ण उस अग्नि को अपनी माया शक्ति स पी गये ।^{२९} किन्तु प्रियप्रवास म श्रीकृष्ण अपन सखाआ तथा गायी की रक्षा के लिए अग्नि में कृ पडे और जाकर उर आग म से निकानकर बचाया ।^३ इम प्रकार अथ उपरिउल्लिखित कथाआ म कृष्ण का मानवीय रूप म अकन किया गया है । हरिऔधजी न कथाआ को युगानुरूप आवरण दकर बुद्धिप्राह्य बनाया ।

प्रियप्रवाम के कथानक म मौलिक प्रसंग तथा तबीत उदभावनाएँ

वस्तु विधान म प्रियप्रवास का इतिवत्तात्मक आधार पौराणिक कथाएँ होत हुए भी उसके रचयिता ने वस्तु विधान म मौलिकता का परिचय दिया है । कृष्ण और राधा का समग्र जावन नाकसवा क रूप म प्रस्तुत कर हरिऔध न समस्त कृष्ण काथ परम्परा का एक नया माड लिया है । पुराण कान स लेकर रीतिकाल तक सबत्र ही कृष्ण राधा का स्वरूपानन रसिक विहारी या गोपाल क रूप म हुआ था । उसम लोक पथ का अभाव था । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- ^{२८} मरन गोबुल को पुर ग्राम का । जनक नाचन न कृष्ट काल म ।
कुशल स गिरि मय बसा लिया । लघ बना पवनादिप्रमाद को ॥
—प्रियप्रवास सग १२/६३
- सम अपार प्रमाण गिगाद्र म । ब्रजधराधिप के प्रिय पुत्र का ।
भजन लोग सग कान उन । रग लिया उगलिया पर श्याम न ॥
—प्रियप्रवास सग १२/६७
- ^{२९} पतित्वामुग्गन तान् कृष्णान् योगाधाशो व्योमचय् ।
—भागवत, दशम स्कन्ध अ० १६/०२
कृष्णाम्य योग वीथ सत्याग मामानुभावितम ।
दावाग्ने रात्मन क्षम वीक्ष्यत म तिर अभरम् ॥
—यही दशम स्कन्ध अ० १६/१४
- ^३ स साधिया की देग दुग्गा । प्रचड दावानल म प्रवार स ।
स्वय धँसे प्रवाम तुरन्त वेग से । चमकूना सी वनभूमि को बना ॥
प्रवस के बाण सवग ही बड । समस्त गोपात्र धेनु मग म ।
अनीकिन स्फुर्तिगिया त्रिलोक को । वमुपरा म कल कानि वलि को ॥
—प्रियप्रवास, सग ११/६४ ६५

न लिखा है कि— प्रियप्रवासकार न कृष्ण के पूव प्रचरिता चरित्र म आमून परिवतन कर उहे समाजमुधारक लोसेवी जातिउत्तरक विश्वप्रमी एव नि स्वाध नेता के रूप म चित्रित किया । प्रियप्रवाम की गममन कथाभा की साधकता कृष्ण के एसी रूप की यजना म है । ३१

कृष्ण की ही भांति राधिका का चरित्र विधान करन वाली मममन घटनाएँ भी हरिऔघजी की कुशाग्र बुद्धि की परिचायक है । श्रीमद्भागवत म राधा का उल्लेख नही है । ब्रह्मवत पुराण से लकर रीतिकाल तक सबत्र ही राधा को कृष्ण की अनन्य प्रमिका के रूप मे चित्रित किया गया है । राधा कृष्ण की प्रयसी एव अनन्य उपासिका भी दितायी गयी है । राधा की विरह यजना म बहुत साहित्य मृष्टि हुई है । राधा के नाम नायिका भेदा का परिगणन भी खूब हुआ है किन्तु हरिऔघजी न कथा म राधा को नाकसेविका और विश्व प्रमिका क रूप म प्रस्तुत किया है । प्रियप्रवास की कथावस्तु म राधिका कृष्ण क विश्वयापी स्वरूप की वचना करती है । वह कृष्ण विरह म कनान्निमना है किन्तु विदग्धा या विमूढा की स्थिति को नही पहुचती वरन समस्त ब्रजजना का शान्ति तथा सात्वना दती है । राधा को परम मानवीया क रूप म प्रिय प्रवाम के वक्त म वर्णित किया गया है । उनकी भक्ति का आदश भी यगानुस्य ही है । राधिका की तोकपोकारी रूप म प्रतिष्ठा प्रियप्रवासकार की मौनिकता का ही चोतन करती है ।

प्रियप्रवास म पवन दूती प्रसग भी नितात मौनिक है । यद्यपि दूत प्रणाती की एक सुयवस्थित परम्परा मिनती है जहाँ विरहिणी नायिकाएँ पक्षिया को प्राय अधिकतर दूत बनाकर प्रियतम को सन्देश भेजती रही है । प्रियप्रवास म राधा ने पवन को दूतत्व का काय सौपा है । कानिनाम के मेघदूत म मेघ को यक्ष ने दूत बनाकर भेजा था । पवन-दूती प्रमग की प्ररणा और प्रभाव हरिऔघजी ने यद्यपि कानिदास के मेघदूत स प्राप्त की है तो भी कृष्ण कथा म पवन दूती प्रसग की उदभावना मौनिक ही कही जायेगी ।

कृष्ण काय परम्परा का भ्रमरगीत प्रसग भी प्रियप्रवास म नवीन ढग स प्रस्तुत किया गया है । वहाँ गोपी उडव सवात् क रूप म इसकी सयोजना नही हुई है । प्रियप्रवास के पचत्स सग म एक गापिता भ्रमर को सवोधित कर अपनी विरह कथा निवेदन करती है । उडव दूरस्थ म मव मुन तते है किन्तु वार्तानाप नही करते हैं ।

प्रियप्रवास की कथावस्तु में मध्यावगणन गोचारण, महारास आदि का निरूपण भी मौलिक ढंग में हुआ है। यद्यपि इन प्रसंगा का कथात्मक स्रोत श्रीमद्भागवत पुराण ही है।

प्रियप्रवास का कथावस्तु में मौलिक प्रसंगाद्भावना के मूल में युग की प्रगणा है। प्रियप्रवास का रचयिता महान कवि है। युगान जीवन और जातीय संस्कृति के महाप्रवाह का उमन अपन महाकायादधि में सम्यक रूप में आयाजित किया है। वैज्ञानिक युग का प्रवृत्ति का अनुरूप ही प्रियप्रवास का कथावस्तु का चयन तथा घटनाओं का बौद्धिक मयाजन हुआ है। अवतारवाद की मान्यता को अस्वीकार करते हुए भी श्रावृष्ण के चरित्र में मन्मानवाय चरित्र की आस्था का निवाह किया गया है। नारी आन्ध के लिए राधा का समाजमविका और विश्वप्रमानुरक्तता के रूप में चित्रित किया गया है। अस्तु, प्रियप्रवास की कथावस्तु में मौलिक प्रसंगाद्भावनाओं का महत्त्व है। फिर महाकाय वस्तु में युग जीवन के प्रवाह का सघारण करने की अपूर्व शक्ति हानी भी चाहिए।

इसके अतिरिक्त कथावस्तु में शास्थाय विधान एवं परिपाटी का भी समुचित रूप में परिपासन हुआ है। डा० द्वारिकाप्रसाद के शब्दों में—
कथानक की याज्ञना कवि ने मवथा शास्त्रीय नियमानुसार की है। इसमें भी ध्या एव कार्यावस्थानों का ध्यान रखा है।^{३२}

प्रियप्रवास के कथानक पर समीक्षकों के मत तथा स्थापनाएँ

प्रियप्रवास के कथानक पर महाकाव्य का नटि स विचार अभ्यापित है। विद्वानों ने प्रियप्रवास का कथावस्तु का महाकाव्य के लिए अपर्याप्त माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रियप्रवास की कथावस्तु पर विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि— जसा कि इसका नाम से ही प्रकट है, इसकी कथा वस्तु एक महाकाव्य कथा अच्छे प्रबन्धकाव्य के लिए भी अपर्याप्त है।^{३३}
डॉ० शंभुनारायण सिंह ने भी अपने शोध प्रबंध में कहा है कि— घटना विरलता और वणन विस्तार के कारण इसमें (प्रियप्रवास में) कथानक बहुत मक्षिप्त है और उसमें वह प्रवाह तथा जीवन्तता नहीं जो महाकाव्य के कथानक में हानी चाहिए।^{३४} डॉ० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी ने लिखा है कि— हरिऔध ने वर्तमान

^{३२} डा० द्वारिकाप्रसाद प्रियप्रवास में काव्य संस्कृति और दर्शन, पृ० ६०

^{३३} आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ५८०

^{३४} डॉ० शंभुनारायण सिंह हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास पृ० ६६७

बुद्धिवाद और सुधारवाद की प्रगति व प्रभाव में आकर कृष्ण और राधा को एक आदर्श महात्मा और त्यागिनी के रूप में चित्रित करने की कोशिश तो की थी परन्तु अपनी इस कोशिश के लिए उन्होंने जा प्रतिपाद्य (विषय) चुना वह उसके बिलकुल ही अनुपयुक्त था।^{३४} डा० गाविन्धराम शर्मा का मत है कि— महाकाव्य की दृष्टि से प्रियप्रवास की कथा-वस्तु का समीक्षा करने पर उसमें तीन मुख्य त्रुटियाँ दिखायी देती हैं। पहली तो यह है कि वह बहुत व्यापक और विस्तृत न होने के कारण महाकाव्य के उपयुक्त नहीं है। दूसरे कथावस्तु के साथ विविध घटनाओं का पूरा सामंजस्य नहीं दिखायी देता है। तीसरी त्रुटि है पाठकों को खटकने वाली कथा-वस्तु की एक रसता। वास्तव में प्रियप्रवास की कथावस्तु में राक्षसता विविधता और धारावाहिकता का अभाव ही दिखायी देता है।^{३५}

इन समीक्षा मतों में जा वान अधिकतर कही गया है वह कथानक की लघुता की है। इस सम्बन्ध में मेरा मत यह है कि कथानक की लघुता किसी काव्य की महाघटा को खल नहीं करती। वर्तमान युग के काव्य और उपन्यासों की एक सामान्य प्रवृत्ति कथावस्तु का उत्तरात्तर ह्रास है। इसका कारण युग की बौद्धिक प्रवृत्ति है। इस युग का बुद्धिजीवी पाठक और लेखक काव्य ग्रन्थों के प्रतिपाद्य को अधिक महत्त्व न देकर इतिवृत्त के माध्यम से विचार उपलब्धि को महत्त्वपूर्ण मानता है। आज के महाकाव्यों में घटना-वाहुल्य ही नहीं है। इस युग के अधिकांश प्रबंधकाव्यों में कथानक की प्रधानता न होकर भाव और विचार तत्त्व की ही प्रधानता है। उदाहरण के लिए कामायनी और कुर्यात्र को ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त पौराणिक वृत्ता की अलौकिक घटनाओं की पुनरावृत्ति में काव्य और कल्पनाशक्ति का कोई प्रमाण भी नहीं है। डा० प्रतिपालसिंह के इस मत से मैं सहमत हूँ कि— सबसे बड़ा जाक्षय यह है कि कथानक वृत्तना सूक्ष्म है कि कृष्णचंद्र का पूरा जीवन इसमें व्यक्त नहीं हो सका। किन्तु जालोचकों को यह बात नहीं भुला देनी चाहिए कि यह बुद्धिवाद का युग है। इस काल में महाकाव्य उतने घटना प्रधान नहीं होत जितने विचार प्रधान। जत इस महाकाव्य में कृष्ण चरित को एक बौद्धिक और नैतिक रूप दिया गया है जो राष्ट्रीय भावना के अनुकूल है। जीवनवृत्त कथन न तो वान के अनुरूप होना है न उसमें एक रसता आती है जो कवि

^{३४} डा० घमोहन ब्रह्मचारी महाकवि हरिऔध का प्रियप्रवास पृ० ६३

^{३५} डा० गाविन्धराम शर्मा हिंदी के आधुनिक महाकाव्य पृ० १४०

का अपक्षित है।³⁰ प्रियप्रवास व कथानक की विशेषता महाभारत काल से रातिकाल तक का कृष्ण कथा में युगीन परिवर्तना द्वारा नवीन अन्वय का आरम्भ है। प्रियप्रवास में हर्षिओषजी ने कृष्ण कथा और काव्य की परम्परा का अपसर ही नहा किया विकसित भी किया है। यही उनकी मौलिकता है। किसी भी ग्रन्थ की मौलिकता नयी-नयी उद्भावनाओं में ही नहा वरन् विषय की पठ और गहराई में भी होती है। साहित्य में मौलिकता का जय नवानता नहीं, विकास है। प्रियप्रवास में राधा-कृष्ण व अध्ययन में एक नया अध्याय आया है जो पिछली पीढ़ियों के कवियों से निम्न-वर्ग के कदम आगे है।³¹ कथानक में वणनात्मकता वास्तव में कथा प्रवाह का अवरोध करता है। जस लग ११, १२ में उद्धव व सम्भुज एक बड़ का नापण समाप्त हुआ तो दूमर ने कहना प्रारम्भ कर लिया। किन्तु ऐसी स्थिति कम ही है। अन्ततोगत्वा हमारी यह धारणा है कि कृष्ण कथा महाकाव्योक्ति गरिमा से पूर्ण है। प्रियप्रवास में कृष्ण की कथा को जिस रूप में ग्रहण किया गया है उससे काव्य की कथात्मक महापना में कोई विशेष घुटि नहीं जान पत्ती वरन् प्रियप्रवास की कथामक प्रस्तुतीकरण शैली का तो वर्तमान युग व हिन्दी महाकाव्यनारा में अत्यधिक उपभोग किया है जस मधिलाशरण गुप्त रचित सावन मन्नाख्य में। इस दृष्टि से प्रियप्रवास का कथावस्तु आगत से सुसम्बद्ध और अनागत की परम्पराओं के लिए प्रेरणाप्र सिद्ध हुई है।

चरित्र विश्लेषण

प्रियप्रवास चरित्र प्रधान काव्य है।³² किन्तु इस काव्य में पात्रों का मर्यादा अधिक नहीं है। यद्यपि गांधी गांधिकाओं एवं अन्य बालकदा का सम्मिलित करने से पात्रों का संख्या अधिक लिखाया गयी है किन्तु इन पात्रों का काव्य में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। जिन पात्रों व चरित्र चित्रण की ओर कवि का विशेष ध्यान रहा है वे पाँच हैं—श्रीकृष्ण राधा नन्द यशान्त और उद्धव। इनमें श्रीकृष्ण राधा और यशान्त व चरित्रचित्रण में हर्षिओषजी ने अपनी प्रतिभा और काव्य-कला का सुन्दर परिचय दिया है। प्रियप्रवास के महाकाव्यत्व का वास्तविक आधार य पात्र ही हैं। व्यापक भूमि व अभाव के कारण प्रियप्रवास के कथा शिल्प और प्रबन्ध कल्पना में जो गिथिलना आ

30 डॉ० प्रतिपानसिंह बीसवीं शताब्दी (पूर्वाह्न) व महाकाव्य, पृ० १००

31 वागुदेव बिहार और निष्कण, पृ० २२०

32 डॉ० प्रतिपानसिंह बीसवीं शताब्दी (पूर्वाह्न) के महाकाव्य पृ० १०२

गयी थी उसका परिभाजन उत्कृष्ट कोटि की चरित्र गृष्टि द्वारा ही गया है। प्रियप्रवास के चरित्र विश्लेषण में हरिऔधजी ने निश्चय ही मौलिक गूढ ब्रह्म का परिचय दिया है।

प्रमुख पात्र

श्रीकृष्ण—श्रीकृष्ण इस काव्य के नायक हैं। उनका यकितत्व महाकाव्य के नायक की गरिमा और महिमा के पूणत अनुसूप है। भारतीय धर्म सस्कृति और साहित्य साधना के मूल में श्रीकृष्ण की स्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। हिंदी कृष्ण-काव्य की मुतीध परम्परा के वादक के रूप में उनका महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। कृष्ण शब्द की प्राचीनता को विगाना ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है। वैदिक काल से आज तक कृष्ण शब्द का निरन्तर प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद में कृष्ण का ऋषि रूप में उल्लेख है।^{४०} महाभारत में कृष्ण का जनक रूप में चित्रण हुआ है। वहाँ उद्वीर राजनीति विद्वान एक परोक्ष रूप में दवी अवतार भी स्वीकार किया गया है। डा द्विवेदी का कथन है कि— श्रीकृष्णावतार के दो मुख्य रूप हैं। एक में वे दण्डुल के श्रेष्ठ रत्न हैं वीर हैं राजा हैं कसारि हैं दूसरे में वे गोपाल हैं गोपीजनवल्लभ हैं राधाधर मुधापानशील वनमाली हैं। प्रथम रूप का पता बहुत पुरान ग्रंथा से चल जाता है पर दूसरा रूप अपेक्षाकृत नवीन है। धीरे धीरे यह दूसरा रूप ही प्रबल हो गया है और पहला रूप गौण।^{४१} सच तो यह है कि कृष्ण उतन ही प्राचीन है जितनी कि भारतीय साधना में अवतारवात् का विचारधारा। अवतारा में भी राम और कृष्ण दो प्रमुख अवतार रहें हैं। इनमें भा कृष्णावतार की कल्पना पुरानी भा है और 'यापक' भी।^{४२} वैदोत्तर वात् मय में कृष्ण का उल्लेख ई० पू० चौथी शताब्दी से तो स्पष्ट रूप से मिलने लग जाता है। पाणिना (चौथी सदी ई० पू०) मगस्थनीज (तासरी ई० पू०) एक पतजनि (१५० वर्ष ई० पू०) जाति ग्रंथा और लेखना में वामुदव और कृष्ण का स्पष्ट चर्चा मिलती है।^{४३} इस समय तक कृष्ण का जाय जानि के दखना या धार्मिक नता के रूप में ही माना जाता था। प्राचीन काल से

^{४०} ऋग्वेद अष्टम मण्डल मंत्र सं० ८५ ८६ ८७ तथा दशम मण्डल सूत्र सं० ४२ ४३ ४४

^{४१} डा हजारीप्रसाद द्विवेदी मध्यकालीन धर्म साधना पृ० १२६

^{४२} वही पृ० १२६

^{४३} डा रामधारीसिंह दिनकर सस्कृति के चार अध्याय, पृ० ६२

पुराण काल तक काण सम्प्रदायी जो उल्लेख एक विवरण मिलता है उसका सम्बन्ध म विद्वाना म मतव्य है कि वह एक ही कृष्ण है । १।० भण्णारकर प्रभृति विद्वान 'गावि' शब्द की 'युत्पत्ति 'गावि' म मानत हैं और कशिविम्बून का भा इद्र का ही विशयण माना है । उनका मत है कि पहले यह विशयण इद्र के लिए प्रयुक्त हात था और बाद म श्राकृष्ण के माय जा' लिया गया है ।^{५६} इस सम्बन्ध म डा० हरवशनाथ शर्मा का मत उपयुक्त जान पता है— इन मन्त्रा म (करव' के मन्त्रा म) जा नाम आय है उनका यद्यपि गोपाल कृष्ण से का' सम्बन्ध नया है परन्तु ऐसा प्रतीत हाता है कि जिस प्रकार कश्चि कृष्ण का सम्बन्ध महाभारत के कृष्ण से जा' लिया गया है उसी प्रकार इन सभा नामा का उपयोग पौराणिक युग म कृष्ण से सम्बद्ध कर लिया गया है ।^{५७} कृष्ण सम्प्रदायी मायनाआ के अध्ययन से ऐसा प्रतीत हाता है कि उनका रूप व— एक तो ऐतिहासिक और दूसरा पौराणिक । १।० निम्कर का कथन है कि— कृष्ण ऐतिहासिक पुरुष है इसमें सादेह की गुजाइश नहा दाखला जाव व अवतार के रूप म पूजित भा बहुत लिना से चन वा रह है । उनका सम्बन्ध पत्तन और गाम से था यह भा विन्ति बात है । प्राचान ग्रन्था म उनका साथ जा प्रम-कथाए नही मिलना उनसे यह भी प्रमाणित हाता है कि वे कार प्रमा और हल्क जीव नहा बल्कि दश और घम के व' नया थ ।^{५८} विष्णु के अवतार के रूप म कृष्ण का उल्लेख पौराणिक काल से हा मानना चाहिए । कृष्ण की जिन विभिन्न लानाआ श्रीलाआ और कायी का लखर आग साहित्य रचना हुई वे कृष्ण पुगण काल का हा दन हैं । पुराणा म श्रीमद्भागवत, महापुराण ब्रह्मववत्त पुराण आर त्रिवश पुराण म कृष्ण का लालाआ का सविस्तार बान हुआ है । इनके अनिश्चित अम पुराणा (जस—वासु पुराण पद्म पुराण, वामन पुराण कूम पुराण आदि) म भा कृष्ण चरित सम्बन्धा घटनाआ का उल्लेख है । इन सब पुराणा म श्रीमद्भागवत पुगण की कथा हा सबसे अधिक विम्बून एवं व्यवस्थित है ।

कृष्ण काव्य रचना के विकास-क्रम का दष्टि से जयन्त्र का 'गान गावि' (१०वा शताब्दी) मरगत का प्रथम रचना है ।^{५९} इसके अनन्तर

५५ डॉ० भण्णारकर धणवइरम, शबिउम एण्ड माइनर रिलीजम सिस्टम्स पृ० ५१

५५ डॉ० हरवशनाथ शर्मा मूर और उनका साहित्य पृ० १६१

५६ १।० रामयागमिह दिनकर सरकृति के चार अध्याय पृ० ६२

५७ हिंदी साहित्य बोस कृष्णकाव्य पृ० २५०

१४वीं १५वीं शती में विद्यापति का पदावली में कृष्ण चरित की गान्धिका अभिव्यक्ति मिलती है। हिन्दी कृष्ण काव्य परम्परा का विनमित करने का प्रथम भक्ति-काल क वल्लभ कविया का है। अष्टछाप क कविया न (जिनमें सूरदास प्रमुख थे) कृष्ण काव्य की धारा का प्रवर्द्धन किया। यथा धारा रीति-काल और आधुनिक काल क कविया की काव्य रचना का प्रेरणा स्रोत बनी। भक्ति-काल क कविया न कृष्ण का प्रथमया मूर्ति को लेकर प्रथम-तत्त्व का "यजना बन्नी तमयता से की। अष्टछाप क कविया न श्रीकृष्ण क माधुर्य रूप की सुन्दर झांकी अपने काव्य क माध्यम से प्रस्तुत की। रीति-काल के कविया न श्रीकृष्ण के "यकित्व क शृंगार पक्ष क उत्प्रेक्षात्मक अपनी काव्य मधा का प्रदर्शन किया। आधुनिक काल में हरिऔध से पूर्व तक कृष्ण चरित के भक्ति भावना हाम विनास शृंगार माधुर्य एवं भगवत एश्वय सम्बंधित पक्ष ही हमारे समक्ष आते हैं। श्रीकृष्ण के "यापक एवं मन्तन "यकित्व की रूप रखा ऐतिहासिक दृष्टि से हरिऔधजी क समक्ष था। एक महाकाव्यकार क रूप में हरिऔधजी का दायित्व श्रीकृष्ण चरित क मन्त रूप को युग-जावन का आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं क अनुसूच प्रस्तुत करना था। उन्होंने अपने गुह्यतर दायित्व को सक्षमता से वहन किया।

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रियप्रवास की रचना से पूर्व तक हिन्दी कृष्ण काव्य का परम्परा में श्रीकृष्ण के चरित के दो पक्ष उपस्थित विद्यमान थे। एक पक्ष तो वह था जिसमें भक्तिकालीन कविया न उन्हें परम ब्रह्म का अवतार मानकर देवी शक्तिया एवं गुणा का समूह सिद्ध किया था। साथ ही उनके ध्यान और विशारद रूप की तानाशा का चित्रण किया था। श्रीकृष्ण क चरित का दूसरा पक्ष वह था जिसमें रीति-काल क परवर्ती कविया न कृष्ण और राधा की सामान्य नायक नायिका क रूप में परिवर्तन करके कल्पित प्रेम का उत्प्रेक्षात्मक की तथा प्रेमा का मुक्त एवं विनासा कृष्ण का रूप अंकित किया। हरिऔधजी कृष्ण चित्रण क इन रूपों से पूर्णतः परिचित थे। प्रियप्रवास का रचना से पूर्व उत्पन्न श्रीकृष्ण शतक प्रमाम्बुवारिधि प्रमाम्बुवम्पवण और प्रमाम्बुप्रवास नामक काव्या तथा रत्नमणी परिणय और प्रलम्ब विजय नामक दो नाटका एवं रमकेश क बहुत से छन्दों का रचना की थी जिसमें श्रीकृष्ण का परम ब्रह्म अवतारी आदि रूपों में चित्रित किया था। इन रचनाओं में कवि की कृष्ण क प्रति प्रारम्भिक भावना का परिचय मिलता है। प्रियप्रवास की कृष्ण भावना में कवि का सवधा नवान दृष्टिवाण शिखारी स्तर है। प्रिय प्रवास का भूमिका में कवि ने लिखा है कि— मैंने श्रीकृष्णचरित का प्रथम

एक महापुरष का भाति अरिक्त किया है ब्रह्म कर्क नही । अवतारवात् का जन्म में श्रीमद्भागवत गीता का यह इतना मानता हूँ— यन्म विभूतिमत मत्वा श्रामजितमव वा । तत्तत्वा वगच्छन्ममतजाशसभवम । अतएव ता मन्मपुरष है उसका अवतार होना निश्चित है । १८ स्पष्ट है कि प्रियप्रवासकार ने श्रीकृष्ण का महापुरष क रूप म अरिक्त किया है न कि ब्रह्म क रूप म । प्रियप्रवासकार का यह विचारणा समय क अनुरूप भा था । वीमवी शनात् का प्रारम्भ म बुद्धिवाद क आश्रित्य बलानिर्ग शिक्षा क विकास एक ब्रह्म समाज, आय समाज आदि धार्मिक आन्दोलना क कारण नवीन चिन्तनधारा का सूत्रपात हा अवा था जिसक कारण कृष्ण का अवतारो रूप माय न रह गया था । यूरोपाय शिक्षा एक मन्त्रित क सम्पक न जन्मो म्त्रिवादा धार्मिक मायताका का उन्मूलन रिया वही चिन्तन क क्षत्र म नवान बौद्धिक एक नार्तिक दृष्टिकान रिया । प्राचीन आर्याका क स्थान पर नव विश्वासा और नवान मानवाय मूल्या का स्थापना हूइ । इमीनिण हरिओषजा न स्पष्ट निन्ता था कि— मैं कृष्ण चरित्र का इस प्रकार अरिक्त किया है जिमम जाधुनिक लाग भा सम्मन हा । १९ इस प्रकार कृष्ण चरित्र क निम्पण म कवि न आधुनिक युग का बलानिर्ग एक नार्तिक दृष्टि का उपयाग किया है । इमानिण प्रियप्रवाम क कृष्ण आन्त मानव किवा अनुकरणाय चरित्र क रूप म प्रस्तुत हुए है । प्रियप्रवास के प्रथम सग म श्रीकृष्ण का मनाहर एक चित्ताकपक रूप है । २० श्रीकृष्ण का रूप-सौन्दर्य ही ब्रजवासिया क आकर्षण का कारण था । कृष्ण का मुख्य मूर्ति शीत गुण स सम्पन्न भी था । २१ श्रीकृष्ण का यकित्तव जिनना आकर्षण का कर्त्तृ था उनना हा उनना व्यक्तान नी मुगन् मृत् एक सुवकारा था

नवल मुन्दर श्याम शरीर का
मजन नीरत् मी कल-कान्ति था ।
अति समुत्तम अग समूत्त था
सुकुर मञ्जुव जोर मन भावना ।
मनन था जिमम मुञ्जुमारता
सरयता प्रतिप्रिम्बित हा रत्ना ॥'

१८ प्रियप्रवास भूमिका पृ० २० (नवम सम्स्करण)

१९ वही पृ० २१

२० वही सग १/१५-१८

२१ वही सग ५/४५

श्रीकृष्ण सम्पूर्ण मानवीय गुणा व निधान थ

‘वान धन मरम थ वृत्त विहारी
छोटे वन सरन वा त्तित चात्त थ ।
अत्यन्त प्यार मग थ मिलत सबा स
व थ सहायक बड टु ग के दिना म ॥
जो दयत कलह शप्ट विवात्त होना
ता शात्त श्याम उसना करत मत्ता थ ।
कोई बली निबन का यत्ति था मताता
ता वे निरस्तृत करत उस थ ॥
× × × ×
थ राजपुत्र उनम मत्त था न ता भी
व तीन के सदन थ अधिकाश जात ।
× × × ×
रोगी टु वी विपद जापत्त म पड की
सवा अनक करत निज हस्त स थ ।

कृष्ण के चरित्र म सौन्दर्य शक्ति और शील का समन्वय था । अपनी शक्ति और सामर्थ्य से श्री कृष्ण न ब्रजजना का अनेक सक्टा एव आपत्ताओं से बचाया था । महावृष्टि के समय गावधन पवत के संरक्षण म कृष्ण न एक स्वयं सक्क के रूप म काय किया । यमुना से कानियनाग को निकाना दावानन की ज्वाला म भस्म होत खान गाना की सहायता की । शकटासुर अघामुर वकामुर यामामुर कशा कस जाति भयकर राक्षसा का वध किया । जाति समाज और दण की मर्यादा के लिए ध्याकृष्ण न सब प्रकार के काय किया । परोपकार का भावना कृष्ण के चरित्र की महत्वपूर्ण विशेषता थी । उनक सभा कायों के मूत्र म जाति समाज और दशोत्थान की भावना काय कर रही था । इहा गुणा के कारण वे अत्यन्त लोकप्रिय थ । उनक कायों का स्मरण करके ब्रज के आबाज वदजन शोक निमग्न हो जाते थ । कृष्ण के मधुरागमन का सूचना ब्रजजना पर वज्रप्रहार के समान था । उक्त अवसर पर एक आभार वड का यह कथन उनका भावना का प्रताक है

सञ्चा प्यारा सक्क व्रज का वश का है उजाला
दाना का है परम धन और वड का नत्र तारा
धानाका का प्रिय स्वजन और व धु है बालका का
ले जात है गुर-तर कर्ण आप एसा हमारा ॥ *२

जहा तक उनके प्रेमा रूप का प्रश्न है—प्रियप्रवाम क कृष्ण प्रेमा है किन्तु कनव्यपरायण पहले है। राधा और गोपिया के प्रेमाकषण म क जनहित का भावना और कनय का विस्मृत कर ब्रज म लौटकर न जा सक। उद्धव क द्वारा राधा का भेज गय सत्स म श्रावण न स्पष्ट कहा कि मैं कनि पय का पाय हा र्णा हू जियमे मिलन की आशा दूर हो रनी है। जस्तु मयुर मुग भोग का लालमाआ का छान्दर जगतहित और लाकसवा क कार्यों म लीन ना जाना चाहिए। इसा म लावातर शान्ति एव श्रय की प्राप्ति हाती है।^{४३} गोपिया का प्रवाघन करत हुए उद्धव न श्रावृष्ण का प्रवृति का परिचय दिया ह

व जी म है जगत जन क मवसा श्रयवामा
प्राणा म है जधिक उनका विश्व का प्रम प्यारा।
स्वार्यों का औ विपुत्र मुत्र का तुच्छ त्त बना है
जा आ जाना जगत त्ति है मामन लाचना क ॥

मो क माथ श्रावृष्ण क हृदय का विह्वलना एव मानवोचित स्वमार दौबल्य का चित्रण भा उद्धवजा क निम्न श्लोक म निरायी त्ता है

प्यारा बन्नाविपिन उनका आज भी पूव मा है
व भूले है न प्रिय जननी जी न प्यार पिता को।
वम भी है मुरति करन श्याम गापागता का
वम भी है प्रणय प्रतिमा वानिका यात्र जाता ॥
प्यारा वाने कयत करव वानिका बालका की
माता की जी प्रिय जनक की गाप गापागता की।
मैने त्ता जधिकतर है श्याम का मुग्ध हाल,
उछवागा म व्यथित उर क नेत्र म वारि लात ॥
माय प्राण प्रति पत्र घटा है — यात्र आनी
मान म नी अवनि श्रज का स्वप्न क त्तन है।
बजा म हा मन मयुप मा मवता पूमता है,
तथा जाना तत्र नी वनी मात्नी भूति का है ॥

श्रावृष्ण क हृदय और मस्तिष्क का मनाविकाग और बुद्धि का अनुराग और विवक का यह मपय वण हा मुषकर है और उमम भी अधिक आनन्दप्र

^{४३} प्रियप्रवाम, सग १६/१६-४६

यद्यपि उतना ही कठोर है श्रीकृष्ण का अपनी मानवाचित दुःखता पर विजय लाभ।^{५४}

प्रियप्रवास व श्रीकृष्ण व्रज के प्राण शील की मुरम्य मूर्ति मानवता के पुजारी कठिन पथ के पाथ और कतव्यपरायण नाकप्रिय नेता है।^{५५} प्रियप्रवास व श्रीकृष्ण ने उद्वेग के द्वारा जा सौंश व्रजजना को प्रसारित किया उसमें योग और पान का उपदेश नहीं बरन् कतव्य पानन की शिक्षा है। श्रीकृष्ण का चरित्र एक कन्यनिष्ठ नाकसनक एव आन्श महापुरुष का चरित्र है। इसीनिष्ठ विधाना न प्रियप्रवास के चरित्र विशदण का मुक्त कण्ठ स प्रशंसा की है। प्रियप्रवास म कृष्ण अपन शुद्ध मानव रूप म विश्व कल्याण-काय म निरत एक जन नेता के रूप म अंकित किय गय।^{५६} प्रियप्रवास व कृष्ण चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उनका मानवाचित वक्तिया स सम्पन्न हाना है। प्रिय प्रवासकार न बड कौशल स कृष्ण के इशावतारी रूप का छाडकर भी उनकी महिमा को अक्षुण्ण रखा है। प्रियप्रवास व नायक श्रीकृष्ण म न ता भक्ति कालीन आध्यात्मिकता ह न रीतिकारीन वासनात्मकता। उसमें एक ऐसी नवीनता है जो प्राचीन श्रद्धा भावना को विकसित और कामुकता को खण्डित करती है।^{५७} प्रियप्रवास व श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व साहित्यिक लोकप्रियता की दृष्टि स गांधीजी व समान प्रख्यात दिग्यायी दता है। प्रियप्रवास के कृष्ण का चित्रण बरबस महात्मा गांधी की याद दिला देता है। एसा दिखता है माना एम काय का निवृत्त समय कवि की मानस रगभूमि व नैपथ्य म महात्मा गांधी की मूर्ति झिनमिन झिनमिन झाँकती रही हा और वह महात्मा श्रीकृष्ण व वाग्मय व रूप म प्रतिमूर्ति हो उठी हा।^{५८} इसके अतिरिक्त कृष्ण चरित्र की लोकिकता सिद्ध करन के लिए कवि ने अलौकिक घटनाओ और अस्वाभाविक कार्यों का भा स्वाभाविक रंग स निरूपित करने का प्रयास किया। जैसे गोवद्धन धारण प्रसंग कानियमन तथा दावानन आदि प्रसंगा व अवसर पर। किन्तु हम दृष्टि से हरिऔधजी को आशिक सफलता ही प्राप्त हुई है। कुछ घटनाओ

^{५४} श्री गिरिजाशक्त शकन गिरीश महाकवि हरिऔध पृ० १८६

^{५५} डा नारिकाप्रसाद प्रियप्रवास मे काव्य ससृति और दसान पृ० १११ ११४

^{५६} श्री शिवदानसिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्तौ वष पृ ४६

^{५७} डा० श्यामनन्त विजोर आयुनिक हिन्दी महाकाव्यों का शिल्प विधान पृ० २१२

^{५८} डा० धर्मेंद्र शास्त्री महाकवि हरिऔध का प्रियप्रवास पृ ६४

म जैसे 'कुवलयसममत्त गजेन्द्र' को एक बालक द्वारा पछाड़त दिताते समय या एकाध अय स्थान पर भूत प्रेत म भय प्रश्नन जैसे अविश्वासो म प्राचीनता के प्रभाव को वे दूर नहीं कर पाय है। किन्तु यह नगण्य गृष्टियाँ हैं। वस प्रियप्रवास के कवि ने कृष्ण के प्रसिद्ध जनिमानुषिक कायों का एक दश और समाजमयक के स्वाभाविक और मानुषिक कायों के रूप म प्रस्तुत करन का प्रयत्न किया है।^{५६} यहाँ नहीं हरिऔधजी ने कृष्ण की सामाजिक मयादा और महापुरुषोचित गौरव गरिमा की रक्षा करन के लिए चारहरण एव गोपिका-जा के साथ का गया असंगत हास्य विनोत्पूण नीलाजा को ना प्रिय प्रवाम म स्थान नहीं दिया। प्रियप्रवास की रामनीलाजा म श्रीकृष्ण के साथ केवल गोपिया ही नहीं करन साथ भी दिखायी दन है।

इस प्रकार प्रियप्रवास के श्रीकृष्ण का चरित्र महाकाव्योचित गरिमा सवधा सम्पन्न दिखाया दता है। कृष्ण चरित्र की स्थापना म हरिऔधजी न प्रातिवारी एव मौलिक दष्टि का परिचय दिमा है। बल्कि काल से पुराण युग और भक्ति काल से आधुनिक युग तक कृष्ण चरित्र का जो निरूपण हुआ है उसम प्रियप्रवास के श्रीकृष्ण का अभिनव और गौरवाचित रूप देखन को मिलता है। इस काव्य के श्रीकृष्ण युग जीवन की आकाशाका प्रतिनिधित्व करन म मक्षम हैं। वे मानवतावादी पृष्ठभूमि पर स्थापित हान के कारण जन जन की प्रेरणा के स्रोत एव अभिन्ननीय भा है। प्रियप्रवास के श्रीकृष्ण प्राचीन और नवीन पौराणिकता और आधुनिकता महाघटा और नम्रता शाल और शक्ति प्रम और मोह त्याग और समय आज और औप्य के अद्भुत समन्वयात्मक प्रतीक है।

राधा— राधा शब्द का मवप्रथम आविभाव कस, कहा और किसके द्वारा हुआ इस सम्बन्ध म एतिहासिक प्रमाण आज भी अनुपलब्ध है। यद्यपि हाल की 'गाथा-मन्जरी तथा 'पंचतंत्र म राधा का उल्लेख अवश्य मिलता है किन्तु उमम कोई प्रयाजन मिद्ध नहीं होता क्योंकि यहाँ राधा कृष्ण की सहचरी नहीं है। कुछ विद्वाना न अनुमान लगाया है कि राधा मध्य एशिया से आन आनी आभीर जाति की उपास्य स्त्री हैं। किन्तु सवप्रथम पौराणिक काल म ब्रह्मवदन पुराण म राधा का विस्तृत उल्लेख मिलता है। इस प्रकार प्रस्तुत पुराण म राधा नाम की व्युत्पत्ति दो प्रकार से बतायी गयी है

^{५६} डॉ० श्रीकृष्णान आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास पृ० ४६

पदावली म भी राधा का विरहिणी क रूप म ही चित्रण मिलता है । किन्तु दोना म अन्तर यह है कि—' चण्डीदास की राधा म मानग सौत्र्य अपनी चरम सीमा तक पहुँचता है । विद्यापति की राधा म शरीर सौत्र्य उभी प्रकार अपनी परिणति पर पहुँचा है । १०

इन सभी कविया की कल्पना स पृथक् चित्र गूरुत्तम की राधा का मिलता है जिहान राधा के संयोग और विद्याग दोना का ही मर्याप्ति चित्रण किया है । मूर के अनन्तर तीन चार सौ वर्षों के ब्रज साहित्य म राधा का चित्रण सामान्यत सभी कविया न अपन ढंग से किया है । ब्रजभाषा का य म राधा कृष्ण कविमो की भाव साधना के प्रतीक बन गये थे । अन्तिग किमा किसी को छोड़कर सभी कविया न राधा-कृष्ण के चित्रण द्वारा अपनी नगनी को धर किया । ब्रजभाषा काय के प्रारम्भ कान म राधा जीर कृष्ण इतिहास या तत्त्व की चाज नही रह गये थ । के सम्पूर्णत भाव जग की चीज हो गये थ । ११ यही कारण है कि वल्लभ सम्प्रदाय क अष्टछाप के कविया ने श्री वल्लभाचाय द्वारा राधा का उल्लेख न होने पर भी उसका सभी कविया ने अपन काय म निरूपण किया है । राधा सम्बधी भक्ति भावना का मत अष्टछाप क कविया ने विद्वन्दासजी स ग्रहण किया था । डा० दीनान्याय गुप्त न लिखा है— श्री वल्लभाचायजी ने गोपिया क प्रकार बताते हुए राधा नाम की स्वामिनी स्वरूपा गोपी का उल्लेख नहा किया उहान अय किसी ग्रंथ म राधा का उल्लेख नहा किया । राधा नाम का समावेश श्री विद्वन्दासजी ने अपन सम्प्रदाय म किया था । अष्टछाप क कविया ने गास्वामी विद्वन्दासजी के मत को इस सम्बन्ध म ग्रहण किया । १२ मूरदास और नन्ददास जादि कविया ने भक्ति कान म राधा-कृष्ण की जिस मापुरी का चित्रण प्रारम्भ किया था उसम भक्ति और शृंगार का सुन्तर सामजस्य था । आग चनकर रीतिकालीन कविया न दरवारी वातावरण तथा कतिपय अय कारणों से राधा को नायिका के रूप म चित्रित करना प्रारम्भ किया । रीति कालीन राधा के रूप म ऐतिवक शृंगार भावना क कारण विवृति आ गयी क्याकि रीतिकाल के कविया न कनुप शृंगार म डवो कर राधा को काय रचना

१० डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी मध्यकालीन धम साधना पृ० १८३

११ डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी मूर साहित्य पृ० २१

१२ अष्टछाप जीर वल्लभ सम्प्रदाय पृ० ५०८

का विषय बनाया या। आधुनिक काल में पुनः भारत-दुःख राधा के रमणाय रूप का सयन चित्रण प्रारम्भ होता है।

हरिऔधजी ने राधा के चरित्र विश्लेषण में सबका नवान् लक्षिकोण का परिचय दिया है। प्रियप्रवास की राधा जहाँ परिणय की प्रतिमा है वहाँ लोक सविवा भी है। उनके चरित्र का विकास प्रेम और कतव्य की पवित्र भूमि पर हुआ है। उन्हें आत्म भारतीय नारी का रूप प्राप्त है।

राधा प्रियप्रवास महाकाव्य की नायिका है। कृष्ण यदि प्रियप्रवास की रीत की हठी हैं तो राधा अस्थिपजर का भी जीवित प्राणी के रूप में प्रस्तुत करने वाली प्राण वायु है जिसके अभाव में काय का सारा सौन्दर्य कपूर का भाँति उड़ जाता है।^७ प्रियप्रवास की रचना में राधा का विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रियप्रवास के चतुर्थ सग में सबप्रथम राधा के दशन एक अपूर्व छविमयी बालिका के रूप में होते हैं। उनकी रूपमाधुरी का चित्राकन करते हुए कवि ने लिखा है

रूपोद्यान प्रफुल्ल प्राय कलिका रावेन्दु विम्बानना
तवगी कलहासिनी मुरसिका श्रीग कला पुत्तरी।
शोभा वार्गिष का अमूल्य मणि मी लावण्य लोनामया
श्री राधा मृटु भाषिणी मृग इगी माधुय सम्भूति थी ॥ ७१

इस सग में राधा के नखशिख सौन्दर्य का चित्राकन बड़े कलात्मक रूप में हुआ है। कवि ने राधा को कलाममन सुकुमार कमनीय एवं सन्तुण अचकृता बाला के रूप में चित्रित किया है। इस चित्रण में कवि ने श्रीराधा के परम्परित लावण्यमय एवं आकषक चकित्व को भी सजाया है जिसके चित्रण में जयदेव विद्यापति चण्डीदास मूरदास एवं रातिकांतान कवि अपनी प्रतिभा का परिचय दे चुके थे। किन्तु फिर भी प्रियप्रवास की राधा का रूप सद्यथा नवीन है क्योंकि वह जयदेव की विलासिनी प्रेम विह्वला नारा विद्यापति की यौवनोन्मत्त मुग्धा नायिका चण्डीदास का परवीया नायिका मूरु की मर्यादा मत्तुवन नारी नन्द्याम का ताविक और रीतिकाल का अतृष्ट किंगोरी मी बनी जान पड़ती है।^{७२} जयदेव की राधा के समान उनमें मुग्ध

^७ गिरिजादत्त मुक्ल गिराज महाकवि हरिऔध, पृ० १८६

^{७१} प्रियप्रवास सग ४४

^{७२} दुर्गाकर मिश्र हिन्दी काव्य मन्थन, पृ० २७१

कौतूहल और अनभिण प्रम सातता नही है । षष्ठीदास की राधा के समान उनम अधीर कर दन वाली गनद्वाप्या भावुकता भी नही है पर कोई सहस्य एन सभी बाता को उनम एक विचित्र मिश्रण के रूप म अनुभव कर सक्ता है ।^{७३} प्रियप्रवास म राधा के प्रममय व्यक्तित्व का प्रमिव एव समुचित विकास चित्रित किया गया है । कृष्ण और राधा दोनों क पिता म स्नेह सम्बन्ध था ।^{७४} इसीलिए दोनों का प्रम बाल्यावस्था से ही विकसित हुआ था ।

यह अलौकिक यानव यालिका
जब हुए कन ग्रीष्म याम्य थ ।
परम तमय हो बहु प्रम स
तव परस्पर थ मिल क्षत ।^{७५}
× × × ×
मुगन का वम साथ स्नेह भी
निपट नीरवता सह था बला ।
फिर यही कर बाल स्नेह ही
प्रणय म परिवर्तित था हुआ ॥ ^७

राधा-कृष्ण के प्रम का प्रसार बड स्वाभाविक ढग स हुआ था । अत राधा क हृदय म कृष्ण के प्रति प्रम भाव दृत्तर होता गया । यौवनावस्था तक पहुचते पहुचते दोनों का स्नेह भाव प्रणय मे परिवर्तित हो गया । राधा के मनमानस म कृष्ण की माधुरी मूर्ति बस गयी ।^{७७} यहाँ हम राधा का प्रणयिनी रूप पाते है । प्रणय भाव की तीव्रता म वे कृष्ण को पतिरूप म वरण करना चाहती है

मम पति हरि होवें चाहती म यही हू ।

कृष्ण के मथुरागमन से राधा की आकाक्षाओ पर तुपारापात होता है । वे पवनदूत के द्वारा अपना विरह सन्देश कृष्ण तक भिजवाती हैं । यही से राधा का विरहिणी रूप लिखायी देता है । उनके मानस पर कृष्ण की रूप छवि अंकित हो गयी थी । किन्तु यह विरह वेदना ही राधा के यक्तित्व का उभेय करती है । कृष्ण के विरग हान पर राधा के उर म उदात्त भावो की उत्पत्ति होती

^{७३} हरिऔष अभिनदन प्राय पृ ४६१

^{७४} प्रियप्रवास, सग ४ छद ६

^{७५} वही छद १२

^{७६} वही छद १६

^{७७} वही सग ४ छद १७ १८

है। उह सम्पूर्ण जगत् कृष्णमय प्रतीत होता है। कालिन्दी के जन्म में उह कृष्ण के गान की आभा दिखाया जाता है। मरौवरा में खिन कमला में कृष्ण के वर तथा पद्म दिखाया दत्त है।^{५८} ताराआ स लक्ष्मि नम में और मघा में मुक्ति वक् पवित्र में उह श्याम का मुक्त्त लसित उर दिखाया दत्ता है।^{५९} ऊँचे शिखरा में कृष्ण के चित्त की उच्चता^{६०} फूला मय्या में परमप्रिय की कान्ति रजना में श्याम के तन का रंग^{६१} मृग यालिका में अन्क-मुपमा मृगा में आँखा का छवि^{६२} गगनतन में श्यामगात का नातिमा भ्रू में गोभा^{६३} और त्वग वजन में उह श्याम का भाहिना वशी का धुन मुताया दत्ती है।^{६४} अन्त व श्याम की विश्वमय दयन लगती है

हो जान में हृदय तन का भाव एसा निरागा
 मैंन यार परम गरिमावान दो लाभ पाय।
 मरे जी में हृदय विजया विषय का प्रभ जाया
 मैंन त्या परम प्रभ की स्वीय प्राणश ही में ॥ ६५

अप राधा विश्व प्रेमिका और लीन-भविष्ठा हो गया। उनका हृदय विशाल उत्तर और मानवीय प्रभ से पूरित हो गया। उहान पीरित पतिना और अमहाया की सवा का व्रत लिया। राधा न भगवान का भक्ति को भी नवीन रूप ग्रहण किया। नवधा भक्ति की नवीन यारत्या प्रस्तुत की। डा० रत्नाद्रमहाय वर्मा के शब्दा में— कृष्ण में विनग होन पर राधा के प्रभ का उत्पत्ताकरण मान्य जानि एव समस्त ताक के प्रति प्रभ का भावना के रूप में आ जाता है और व प्रत्येक प्राणा एव प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में कृष्ण के ही रूप का दान करती है।^{६६} कृष्ण के अभिन्न वधु उदव के आगमन पर प्रियप्रवाम का मघा उह व्यस्य या उपायम्भ नहा दत्ता न हा मान्य मन्ना हावत् विरह-वन्ता

५८ प्रियप्रवास सग १६, छन्द ७६

५९ वही, सग १६ छन्द ८०

६० वही, सग १६ छन्द ८२

६१ वही सग १६ छन्द ८४

६२ वही सग १६ छन्द ८५

६३ वही सग १६ छन्द ८७

६४ वही सग १६ छन्द ८८

६५ वही सग १६, छन्द १०४

६६ हिन्दी साहित्य पर आंग्ल प्रभाव, पृ० १६१

म प्रलाप करती है। वं शिष्टतापूर्ण ढंग से उद्भव का स्वागत करके धयपूवक श्रीकृष्ण का सादेश मुनती है तदनातर अपन उर के भावा सवेत्नाआ और जावनात्शौ को स्पष्ट रूप म उद्भव सं कह देती हैं। अपनी ममव्यथा को व्यक्त करन म वं अपनी दुबलता भी स्वीकार करती है

मे नारी हू तरल उर हूँ प्यार स वचिना हू
जो हानी हू विक्न विमना यस्त वचिन्म क्या है ? ५७

राधा न स्पष्ट कहा है कि यद्यपि मैं नित्य सयत और निरिप्त भाव से रहता हू फिर भी श्याम की याद जात ही यथित हो जाती हू। प्रियनाभ की तालसा भरे उर म जितनी प्रबल है उतनी जगत हित की इच्छा नहीं।^{५८} प्रियानुराग एव तानानुराग का यह द्वन्द्व राधा म बराबर बना रहता है।^{५९} यहा कवि न बड कौशल से मानव मनोविनान का चित्रण किया है। वस्तुत इस मानसिक सघप न ही राधा की चरित्र मृष्टि का महान और महत्वपूर्ण बनाया है। जतत वं तकि सेवा म हा समर्पित हो जाता ह। तभी तो यह कहन म समथ हाती है

प्यारे जाव जगहित कर गह चाह न जाव । ६

जस्तु राधा काय व अन्तिम सग मे सच्ची लाकसविका बन जाती हैं। ब्रजजना व कष्ट निवारण म सब प्रकार से जुट जाती है। वे माता यशोदा का सात्वना दती है गोपजना को कमठ और परिश्रमी बनन का उपदेश देती हैं खितमन गोपिकाजा को कृष्ण की मधुर कथाए सुनाकर एव सदुपदेश देकर प्रसन्न करन का प्रयत्न करती हैं। तभी ता कवि न कहा है कि

कगाटा की परम निधि था जीपधि पाडिता की
नीना की था बहिन जननी था जनानिता की
जारा या था ब्रज अवनि की प्रमिका विश्व की था ॥ ६१

परमाथ सेवाभावना व कारण राधा अपन दु ख की अपक्षा ब्रजवासिया व दु ख से दु खी वा और उहा व निमित्त कृष्ण का ब्रजागमन भी चाहती था

५७ प्रियप्रवास सग १६ छं ५

५८ वही सग १६/५६

५९ टा० श्यामसुदर यास हिन्दी महाकाव्यो मे नारी चित्रण, पृ० १०२

६ प्रियप्रवास १६/६८

६१ वही १७/५०

मैं तेरी हूँ न निज दुःख से कष्टिता शान मना
 न । जसा हूँ यथित ब्रज के वासिया के तुला से ।
 गोपा गापा विकल ब्रज का वातिका वातिका का
 जाके पुष्पानुपम मुक्ता प्राण प्यार दिगावें ।
 बाधा यदि कोई न प्रिय के चारु कतय म हा
 तो व आके जनक जननी का दशा न्य जावें ॥ ६२

अपने लिये तो उनकी यही कामना है कि

'आना भर्तुं न प्रियतम की विश्व के काम जाऊ ।
 मरा कौमार वत भव मे पूणता प्राप्त हाव ॥ ६३

इस प्रकार 'प्रियप्रवास' की राधा हिन्दी कृष्ण काव्य परम्परा की अद्भुत
 गृष्टि है जिसके निमाण में कवि न युग चेतना और नवान जावनाओं का पूण
 रणा की है । प्रियप्रवास का राधा मे हमार युग की नारी चेतना का सच्चा
 अभिव्यक्ति हुई है । उनके यत्नित्व मे प्रेम के तव्य त्याग निष्ठा तीन
 सौजय सेवा भाव आदि गुणा का मुत्तम ममाहार हुआ है । प्रियप्रवास की
 राधा भारतीय नारी की समस्त विभूतिया का आभसात् करता हुई हमार
 सामन आता है । वह समाज और देश की एक सच्चा राविका है जो यष्टि को
 समष्टि मे अतनिहित कर देती है । ६४ राधा का चरित्र-वर्णना के द्वारा
 निश्चय हा हरिओध न प्रगतिमान दृष्टिकान का परिचय दिया है । प्रणय
 विरह और त्याग की शिवणी से स्नान प्रियप्रवास की राधा का चरित्र
 भारतीय संस्कृति का साकार प्रतिमा है ।

शोभा—प्रियप्रवास मे राधा के अनन्तर यान्ता मवस मन्त्वपूण नारा
पात्र है । उनका चरित्र वर्णना, वात्सल्य और ममता की प्रमूनि है । उनका
 चरित्र योजना मे भारतीय जनता की आत्मा प्रतिमा साकार हा उठा है ।
 प्रियप्रवास मे यशान्त के दमन मवप्रथम तृतीय सग के २८वें छन्द मे हात है ।
 यहाँ यशान्त कृष्ण की शय्या के समीप बठा जायू बटा रही है क्योंकि उनके मन
 मे आनकाय व्याप्त है । कृष्ण प्रात केस के यहाँ चन जायेंगे । वर अत्याचारा
 केस न जान क्या बाधा उपस्थित कर दे । यान्ता अपने कर्ण कन्त का धीर

६२ प्रियप्रवास १६/१०२ ३०

६३ पृ० १६/१०५

६४ डॉ० गाविशराम हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य, पृ० १४४

धीरे यत्न कर रही है। उह यह भी भय है कि कहीं कृष्ण की नाग म बाधा न पड

हरि न जाग उठ इस शोच से
सिसक्ती तब भी वह था नहा ।
इसलिए उनका दुःख बग स
हृदय था शतधा अब हो रहा ॥ ६५

किन्तु तब उनका दुःख न घटा ता सिर झराकर चपचाप श्याम का कुशलता के लिए दवता की जाराधना करन लगा ।^{६५} यद्यपि कृष्ण लोक सवा एव जनहित क तिग जी रह थ किन्तु भोने स्वभाव एव मातृत्व प्रम के कारण य बात यशोदा की प्रभावित नही करती । अत म किन्नाई बना क समय उनके वात्सल्य का स्रोत प्ण पडता है । वे अनेक प्रकार से समझा बुझाकर नद क साथ बालका को भजनी है । माग म इन बातका को दुःख न हो इसक लिए सभी प्रकार की प्रायना नद स करता है । व कहती हैं कि इह मधुर फल खिलाना नाना दश्य दिखाना प्यास लगने पर मधुर जल पिनाना जादि ।^{६७} यशान्ता कृष्ण क क्षणिक वियोग का वदना सहने म भी अक्षम थी किन्तु यह वियोग जब सदव के लिए हो गया तो उसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है । नाग का मथुरा से अकेन ही नौटकर जान पर यशोदा क धय का बाध ही टूट जाता है । व छिनामूला लना की भाति महाखिन्नमना होकर नद क परा पर गिर पडती हैं ।^{६८} व विक्ल भाव स जामू बहाती हुई नद स पूछती है

प्रिय पति वह मरा प्राण प्यारा कहां है
दुःख जनधि निमग्ना का सहारा कहा है ।
जब तक जिसको देखकर मैं जी सकी हू
वह हृदय हमारा नत्र तारा कहां है ? ६६

विरहावेग म व प्रश्ना की यडा तगा दता है । व कहती है कि बद्धा क

६५ प्रियप्रवास संग / २३

६६ वही / ८८१

६७ वही ५/४६ ६२

६८ वही ७/१

६९ वही ७/११

नेपा का तारा, दुःख जलमि म डूबा हुआ का सहारा दुलिया माँ का जीवन कहा है ?^{१०} पुत्र के अभाव में यशोदा मरने की उद्यत हो जाती है

इस वृद्धि हमारे गाल को प्राणत्यागो ।
 वन विवश नहा तो नित्य रा रा मरु गी ॥
 हा ! बड़ा क अतुल धन हा ! बढता क सहार,
 हा ! प्राणा के पद्मप्रिय हा ! एक मरे दुलार
 हा ! शोभा क सदन सम हा ! रूप लावण्य बाल,
 हा ! बग हा ! हृदय धन हा ! नत्र तार हमार ॥
 × × ×
 हा ! जीऊगा न अब पर ह बन्ना एउ हाती
 तरा प्यारा बन्न मरती बार मन न दखा ।^{११}

इस प्रकार अश्रु धारा प्रवाहित करते करते ये सना शून्य होन लगा । उनकी करुणाद्र दशा का रूप सभा भीन था ।^{११} नन्द ने यशोदा का सात्त्विकता दी कि कृष्ण दो दिन में जा जायग । तत्पश्चात् यशोदा कृष्णागमन या प्रतीक्षा करने लगी । उनके विभाग में माता का शरीर जीण जीण हो गया था । य प्रतिदिन द्वार पर जाकर बैठना और प्रतीक्षा में ही दिन बिता देता । आन बाल पक्षिका से पूछनी बढता जा का मनाता और ज्यातिपिया में कृष्णागमन के विषय में पूछनी था । बहुत दिवस व्यतीत होन पर भी कृष्ण नहीं जाय । उहान उद्धव के साथ सदश भजा । इस समय यशोदा की दशा बनी दयनीय हो गया था

आवगा में विपुल विबला गोप काया कृशागा
 चिन्ता-गथा यमित हृदया शुष्क-आँखा अधारा
 आसाना था निकट पति के अम्बु नत्रा यशोदा
 विप्रा दीना बिनत-बन्ना मोह मग्ना मलाना ।^{१०३}

एसा दशा में यशोदा बने यमित भाव से कृष्ण के सालन-यासन करने में उद्यत बन्ना का क्या कहता है । साथ ही ब्रज का यथा का वणन भी करता

^१ प्रियप्रवास ७/१२ १५

^{१०१} वही, संग ७/५५ ५७

^{१०२} वही १०/५८

^{१०३} वही १०/६

हैं।^{१४} नन् गृह म बठ उद्वेग रात्रि भर यह गाग कथा सुनने रह। प्रात
होन पर उद्वेग नन् सहित मद्म स चन गय। उद्वेग व गृहत्याग स हा व
दुख की कथा परिममाप्त हुई किन्तु यन् कथा उद्वेग व हृदय पर सग व निए
अकित हा गयी।^{१५}

इही वियोगजय परिस्थितिया म जहा ह म यशोला व चरित्र म वन्ना
व दशन हात हैं वहा उनके चरित्र का उत्तम रूप भी हमार गामन आता है।
एक जोर व कहती हैं

ऊधो काइ न बल छल स नाल न न किमा का।^{१६}

यहा यजना स मक्त श्वकी की जोर है। उनके हृदय म जहा एक कसक सी
उठता है कि

हो जाती हूं मृतक सुनती हाय जा या कभा ह

हाता जाता मम-तनय भी अय का नाडिना है।^{१७}

वहा उनका मातृत्व यह कह उठता है

मैं रानी हू हृदय अपना कूटता हू मना हा

हा। एमा ही व्यथित जब क्या देवका को बरुगा

प्यारे जीवें पुनकित रह औ बन भी उही वे

घाइ नात बदन दिखना एकदा और दवें।^{१८}

एन पकितया म यशोला सची माता भी है जो स्वाथ भावना स उठकर
कवन अपन लान का पुनकित देखना चाहती है। वे देवकी को भी अपना
तरह व्यथित करना नहीं चाहता। उह धाय बहलान म ही सतोप है। यही
भाव उह विश्व म थ्रष्ट और उचनम पद प्रदान करन के निए पयाप्त है
और इमीनिण वद्य और शनाधनीया है।^{१९} इस प्रकार यशोला माता की
दष्टि स प्रियप्रवास ता क्या सम्पूण हिन्दी काव्य रचना म एक अनुपम चरित्र
मृष्टि है। प्रियप्रवास म करणा की जो सरिता घरी है उसम सबसे पृथक
धारा यशोला के शाक की है।^{२०} मूरसागर की यशोला से अनुप्राणित हाकर

^{१४} प्रियप्रवास १०/२० ८५

^{१५} वही १०/६६ ६७

^{१६} वही १/६६

^{१७-१८} वही १०/६५

^{१९} ए प्रतिपादनमिह बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य पृ० १ ८

^{२०} विश्वम्भर मानव खड़ी बोली के गौरव ग्रंथ

भी प्रियप्रवास की यशोला माता का दृष्टि में जिन्हा महाबाध्या में एक अद्वितीय स्थान रखता है ।^{१११}

डा० द्वारिकाप्रसाद न उह वीर प्रसूता माताजा की कोटि में मानते हुए लिखा है कि— जत करण की विशालता एवं उत्तारता के कारण यशोला माता वीर प्रसूता माताजा का काटि में भा जा पहुँचती है । यद्यपि कृष्ण उनका औरस पुत्र बना है तथापि वह उह औरस में भी अधिक मानती है और उत्तार हित एवं नाक-सेवा के कार्यों में तान दस्तकर जतावश्य प्रकट करती है । वास्तव में भारतीय जनना का यही आदर्श रत्न है । वह ममता एवं वात्सल्य से परिपूर्ण होकर भा अपन पुत्र का नाक हित एवं नाक सेवा के लिए सह्य अग्रसर करती रही है । इस दृष्टि से यशोलाजा कुन्ता विदुता सुभद्रा जादि वीर प्रसूती माताजा से किसी प्रकार कम नहा नित्तायी दता ।^{११२}

यस प्रकार यशोला का चरित्र पर्याप्त मौलिकता ग्रहण किये हुए है । हरिआश्रय न कृष्ण और गधा की भांति यशोला के चरित्र निमाण में मन्त्र का आत्मिक प्रतिभा का परिचय दिया है । यशोला का चरित्र अविस्मरणीय रूप से पाठक के मन में स्तिष्ठ पर अंकित हो जाता है । यह प्रियप्रवास का सबसे बड़ा सफलता है ।

अथ पात्र

नद—प्रियप्रवास में नद के चरित्र के दो रूप मिलते हैं—पिता और पति । तृतीय सर्ग में कम द्वारा कृष्ण का बुतान एवं अक्षर जागमन से उनका मन विचलित हो जाता है । यथा

सितन हुए अपन मुग लाम की, कर गन्तुय यजक भाव से ।

विषम सकट बाच पड़े हुए बिनसते चुरचाप ब्रजग ध ॥^{११३}

किन्तु ब्रजधराधीश होने के कारण उनमें सम्भारता दूरनीतिता एवं धय भा था । अपनी मम व्यथा को दबाय, भग्न हृत्स्य एवं आकित्त में वह कृष्ण का नवर अक्षर के साथ मयुरा जान है । वही कृष्ण का नाक हित में रत्न छाकर वह दूरे चला एवं उत्तार हृत्स्य पिता का भांति स्वामी हो नोट आत है । इन अवसर पर नद एक सफल पति का भांति कृष्ण के पुनरागमन का आश्वासन देकर

^{१११} डा० श्यामसुन्दर व्यास हिंदी महाबाध्यों में नारी चित्रण पृ० १३८

^{११२} डा० द्वारिकाप्रसाद प्रियप्रवास में काव्य सस्कृति और दशम पृ० १०१

^{११३} प्रियप्रवास सर्ग /२१

रचना शिल्प

भावपक्ष (वर्णन कौशल)

१ प्रकृति वर्णन—प्रियप्रवास में प्रकृति चित्रण न कि न मरौशन किया है। प्रकृति के अनक रूपों की गुत्तर झाड़ियाँ काव्य में आछान्त चित्रित हैं। काव्य का प्रारम्भ ही सध्या वर्णन में हुआ है

दिवस का अवसान समीप था।

गगन था कुछ नाहित हाचना।

तर शिया पर थी अब राजती।

वमरिनी कुल वनभ की प्रभा ॥ ११६

प्रियप्रवास के अधिनश सगों का आरम्भ प्रकृति वर्णन से ही हुआ है। नाच मग क्रमानुसार प्रत्येक मग की प्रथम पंक्ति उद्धृत की जा रही है

मग १ दिवस का अवसान समीप था।

मग २ 'गत हुई अब थी द्विघटी निशा।

मग ३ समय था मुनमान निशीथ का।

मग ५ तारे डब तम टन गया छा गयी व्योम नात्री।

मग ७ 'गसा आया यक दिवस जा था महामम भदी।

मग १० त्रिघटिका रजना गत था हूर्त्।

मग ११ यन्नि छविशाली अकजा बून वाली।

मग १२ सरस सुन्दर सावन मास था। (द्वितीय पद्य)

मग १४ कानिन्दी के पुनन पर थी एक कुजातिरम्या।

मग १५ छायी प्रात सरस छवि थी पुष्प औ पलनवा म।

मग १७ विमुग्ध कारी मधु मजु मास था।

प्रकृति और मानव का आदि सम्बन्ध है। मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति से अधिक आकषक माध्यम क्या हो सकता है। प्रियप्रवासकार ने प्रकृति चित्रण इस प्रकार किया है कि मानवीय भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति भी हुई है और प्रकृति गुन्दरी का रूपाकन भी। प्रकृति चित्रण की प्रायः ममस्त प्रणानियाँ प्रस्तुत काव्य में देखी जा सकती हैं।

(अ) आलम्बन रूप में—आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण दो प्रकार से किया जाता है—एक स्वतंत्र रूप में जिसके अन्तगत विम्ब ग्रहण प्रणाली का आश्रय लेकर प्रकृति के मणिलष्ट चित्र अविकृत किये जाते हैं। दूसरे अधग्रहण

प्रणाली जिनम प्राकृतिक वस्तुओं के नामों की केवल गणना मात्र ही करा दी जाती है। हरिऔधजी ने तोना ही प्रकार से प्रकृति चित्रण किया है। बिम्ब ग्रहण प्रणाली द्वारा उन्होंने प्रकृति के भय और भयकर तोना रूप चित्रित किया है जस

अचन के शिखरों पर जा चली
 दिग्ग पाल्प प्राशि विहाग्णी ।
 तरणि बिम्ब निरोहित हा चना,
 गगन मण्डल मय शन शन ॥^{१२}
 तिमिरनीन कोवर का तिय
 विकल्प-दानव पाल्प थ बने ।
 ध्रममयी जिनकी विकरालता
 चरित की करनी पवि चित्त का ॥^{१२१}

परिगणन नीचे का उदाहरण निम्न प्रकार है

जम्बू अम्ब कम्ब बिम्ब फलसा जम्बीर औ आबता
 नीची पांडिम नारिकेल इमिनी औ शिशपा इगुटा ।
 नारगी अमण्ड बिम्ब बदरा सागीन शाकालि भा
 थणी-बद्ध तमान ताल कानी औ शाल्मनी थ खर ॥^{१२२}

हरिऔधजी ने जातम्बन रूप में हा क्रतुआ का भा सजीव वणन किया है जिनमें प्राप्ति वर्षा शरद और वसन्त क्रतुआ के वणन प्रमुख हैं। प्राप्ति वणन पचास सग म ५६ से ६४ तक वर्षा वणन द्वाश सग म छन्द २ म ७१ तक शरद वणन चतुश सग म छन्द ७० म १६१ तक और वसन्त वणन पाश सग म छन्द १ म २८ तक।

(आ) उद्दीपन रूप में—प्रियप्रवास में वियाग का प्रधानता हान के कारण कवि ने प्रकृति को उद्दीपन रूप में भी चित्रित किया है। कृष्ण वियोग में राधा की वेदना का प्रकृति और भी अधिक उद्दीपित करती है। इसी प्रकार वसन्त आदि की शोभा भी व्रज के निग्न प्रतिकूल प्रभाव छानता है

वगल्ल शोभा प्रनिबून था वन् ।

वियाग मग्ना व्रज भूमि के निग्न ।

१२ प्रियप्रवास पृ० २

१२१ वही, तृतीय गग पृ० २०

१२२ वही, नवम गग पृ० १००

बना रही थी उमरा व्यपामयी

विकाग पाता वन-गात्पावती ॥ १२३

(इ) वातावरण निर्माण रूप में—कवि न आन वाता परिम्पनिया का पृष्ठभूमि क रूप म भा प्रकृति का चित्रण किया है । तृतीय मग क प्रारम्भ का प्राकृतिक वातावरण ब्रजमण्डन म व्याप्त न जान वाता निरागा एक वेत्ना का ही सूचक है

ममय था मुनगान निगाय का

जन्म भूतन म तम राग्य था ।

प्रतय-कात समान प्रमुल न

प्रकृति निश्चल नाग्व शान्ति था ॥ १२४

(ई) सवेदनात्मक रूप में—ब्रजजना क तुम म प्रकृति का भा तुम चित्रित किया गया है । जिस प्रकार गोपिया क पाम कृष्ण नगा आन मा प्रकार चम्पा क पाम भ्रमर नहा आता

चम्पा तू है विकसितमुग्धा रूप जी रग वाता

पाइ जाता मुग्धि तुम म एक सपुण्य भी है ।

ता भा तर निवृत्त न कभा भूत है भृगु जाता

क्या है एमा कभर तुम म यूनता कौन मा है ॥ १२५

(उ) मानवीकरण रूप में—प्रियप्रवाम म अनक म्यला पर प्रकृति का मानवोचित व्यापारा स युक्त करक चित्रित किया गया है । ब्रज क गावडन पवन का निम्न प्रकार म चित्रित किया गया है

उचा गाग मत्प जल करक था देखता व्याम का ।

या हाता अनि ती स-मव बह या सर्वोचना दय स ।

या वाता यह था प्रमिद्ध करता मामा सतार म ।

मैं हूँ मुन्तर मानण्ड ब्रज का शोभा-मया भूमि का ॥ १२६

(ऊ) आलंकारिक रूप में—कवि न प्रकृति क उपमाना का कृष्ण के रूप मौल्य क प्रतिमान बनाकर चित्रित किया है । उपाहरण क लिए उनक रूप मौल्य का वर्णन करत हुए—

१ ३ प्रियप्रवाम पाण्डु मग पृ० १६

१ ४ वही नृनाय मग पृ० २१

१ ५ वही पचण्ड मग पृ० १६

१ ६ वही नवम मग पृ ५८

जस सजीव कथा से यवन कलम कर जसी मुजाआ वाले कम्बुकण्ठ से मुशोभिन, नाराआ क बाब्र म चद्र का भौति मुमज्जित कहा है ।^{१२७}

उपयुक्त प्रमुख प्रकृति चित्रण की प्रणालियाँ क अतिरिक्त हरिऔषजी ने दूत दूती रूप म^{१२८} उपनिषदा रूप म^{१२९} रम्यात्मक एव प्रतीकात्मक रूप म^{१३०} तथा दार्शनिक रूप म^{१३१} भी प्रकृति चित्रण किया है । प्रियप्रवास के प्रकृति चित्रण की विशयना यह है कि उसके द्वारा क्यातक-क्षाणना दूर हुई है तथा कवि न प्रकृति वणन की विविध शक्तियाँ का अपनाकर चित्रण की जनकरूपता का भी परिचय दिया है । यद्यपि चित्रण की शक्तियाँ अत्रिकाशत प्राचीन और परम्परित है किन्तु जहाँ जहाँ कवि न मानवोचित व्यापारों और भावनाओं के माध्यम के रूप में प्रकृति का निरूपण किया है वहाँ नवीनता और उगानुपपत्ता भी दिखायी देती है । प्रियप्रवास के प्रकृति चित्रण का एक दोष यह है कि कवि ने प्रकृति चित्रण के लिए ही प्रकृति चित्रण न करके अनक सगों में खानापूर्ति और काव्य की कलवर बद्धि के लिए भी यह प्रयत्न किया है । दूसरे अधिकांश स्थलों पर कवि ने प्रकृति का बाह्य भौतिक एव स्थूल रूप ही अंकित किया है । उसमें कवि के सूक्ष्म निरात्मण एव अन्तरगदशन के परिचय का परिचय नहीं मिलता । वृंदावन का वणन करने समय कवि न कल्पना के आधार पर ही नाराकन सागौन शान आदि के वक्षा का वणन कर दिया है किन्तु करान के बुजा की चवा नही की है फिर भी प्रकृति के अनक रूपों का विभिन्न प्रणालियों द्वारा कवि न जो निरूपण किया है वह निश्चय ही मन्स्त्वपूर्ण है । प्रकृति चित्रण क कारण प्रियप्रवास क महाकाव्यत्व की मज्जिमा बृद्धि भी हुई है । डा० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी क शब्द म— नवयुग सही शानि शिनी काय के क्षेत्र म मानवेतर प्रकृति के चित्रण और निरूपण की दृष्टि स हरिऔष अग्रदूत समय जायेंगे और प्रियप्रवास की गणना नवयुग शिनी साहित्य के इतिहास म एक मन्स्त्वपूर्ण मील स्तम्भ क रूप म हागी ।^{१३२}

१२७ प्रियप्रवास पंचम सग छ ५६ ६०

१२८ वही, पच्छ सग पृ० ६४

१२९ वही, नवम सग, पृ० १०१

१३० वही, द्वितीय सग पृ० २०

१३१ वही पौडश सग पृ० २५५ ४६

१३२ डा धर्मेंद्र ब्रह्मचारी महाकवि हरिऔष, पृ० ६७ ६८

हरिऔषजी ने किया वह छायावाणी नयिया के लिए भी अधिकाधिक माग दशक मिद्ध हुआ ।^{१३३}

२ मनोवचनानिक निरूपण—हरिऔषजी १ प्रियप्रवास म यथाभ्याम मनोवचनानिक ढग स भी मानवीय मनोवचिमा का निरूपण किया है । प्रिय प्रवास के अन्तिम सगों म राधा की चेन्ना का परिष्कार होकर उमरी व्यक्ति चेना समष्टि का रूप ग्रहण कर लेती है । राधा का शात भाव तात मवा म परिणत हो जाता है और वह ध्यविनगन टु म को भूतकर समाज म टुवा जना के उद्धार म तग जाती है । राधा की वचियाँ नना उन्नात हो जाती है कि प्रवृत्ति के प्रत्यक् उपात्तन म एव मृष्टि के कण-कण म उस प्रियतम का स्वरूप दिमायी लेने तगता है । उसे कालिन्नी म प्रियतम के गान की श्यामता रजनी म श्याम तन का रग आदित्य म वरवत्न का ओष रजना और मृगा म जांवा की सुष्ठवि दाहिमा म दाता की शतक गुता म गुल्फा की सी तनित मुपमा दष्टिगोचर होती है । वह सम्पूर्ण विश्व की वस्तुआ म अपने प्यारे कृष्ण के ही अमित रूप रग को देगती है

भू म शोभा मुरस जन म वचिन म न्यि-आभा ।

भरे प्यारे कबर वर सी प्रायश है न्यिानी ॥^{१३४}

और इसी कारण उसके हृदय म विश्व का पम जाग्रत होता है ।^{१३५} इस प्रकार राधा की मानमिक वचियाँ और शोकाकुन भावताओ का परिष्कार करके जिस उन्नात रूप म उह जवित किया गया है वह मनावचनानिक परिवतन ही कहा जायेगा । इस परिवतन को भी कवि न आकस्मिक रूप से प्रस्तुत न कर परिस्थितिया एव वातावरण के सम्भ म स्वाभाविक ढग से उपस्थित किया है ।

३ रस परिपाक और भाव चित्रण—प्रियप्रवास विप्रनम्भ शृगार रस प्रधान महाकाव्य है । काव्य का मुख्य विषय राधा की विरह-व्यथा का ही निरूपण है । जय रसा म सयाग शृगार करण भयानक वार रीट अद्भुत रसा एव वात्सल्य भाव का भां मुत्तर यजना काव्य म प्रमगानुकून हुई है ।

^{१३३} डा नारिकारसाल समना प्रियप्रवास म काव्य संस्कृति और दर्शन, पृ० १५३

^{१३४} प्रियप्रवास पोश सग पृ० २५१

^{१३५} वही पोश सग पृ० २५४

राधा की विरह दशा का वणन करत हुए कवि न विप्रलम्भ शृंगार का सुन्दर चित्र अंकित किया है ।

रो रा चित्ता सन्ति त्तिन को राधिका थी जिताता ।
 आँगा का थी मजन रखनी उमना था त्रिवाता ।
 शोभा बाल जनद-वपु का हा रंग चानकी था ।
 उत्कृष्टा था परम प्रवना वेदना बद्धिता था ॥ १३६

राधा क अतिरिक्त अ य गोपिया की भावनाआ क निरूपण म भी विप्रलम्भ शृंगार का चित्रण हुआ है ।^{१३७}

काव्य के आरम्भ म ही मयोग शृंगार के सुन्दर दृश्य कवि न अंकित किए हैं । उदाहरण क निम्न —

बहु विनास्ति था अज वासिका ।
 नर्णियाँ सब थी नृप जाडता ।
 बनि गयी बहु वाग् वयोवती ।
 छवि विभूति विनोक जजन्तु की ।^{१३८}

इसी प्रकार गाकुन ग्राम की जन मण्डली मुग्ध मन होकर वृष्ण की मुस छवि का दस प्रकार निरूपणी थी जन नृपित चानक घन का घनाआ का रगता है ।^{१३९} वृष्ण का बाल-नीनाआ म वात्मल्य रम का सुन्दर वणन हुआ है

ठमुक्त गिरत पडन हुए
 जननि कं वर का उगला ग् ।
 गन्त म धनन जब श्याम थ ।
 उमन्ता तब हृप-पयाधि था ॥ १४०

वात्मल्य रम का मजाव एक मार्मिक चित्रण उम समय हुआ है जब तन् मधुरा म अकेल लौट आन ह तथा यगागा विनाप करती हुई कहती हैं

प्रिय पति कह मेरा प्राण-प्यारा कहां है
 तुम जलधि निमग्ना का गन्तव्य कहां है ।^{१४१}

१३६ प्रियप्रवास, पृष्ठ सप्त पृ० ६१

१३७ वही पञ्चम मग, पृ० २२५, ७६

१३८ वही प्रथम मग पृ० ६

१३९ वही, पृ० ५

१४० वही, पृ० ६१

१४१ वही, गजम सग, पृ० ७५

कृष्ण के चोकोपकारक उत्साहपूर्ण काव्यात्मक यौग्य रस का गुंथर परिपाक हुआ है। कवि ने उन्हें युद्धवीर दयावीर दानवीर और धर्मवीर के रूप में चित्रित किया है। उनके अतिरिक्त कानियनाग-दमन दानानल दमन गावद्वन धारण प्रसंग व्योमामर आदि राक्षसा के सत्कार की घटनाओं में वीर रस का ही निरूपण हुआ है। कानियनाग के दमन में रौं रस की भी अभिव्यक्ति हुई है। त्रयोदश सग में भयानक सग को देखकर गापमण्डना का भयभात हान में भयानक रस है।^{१४२} यशान्त के शाकानुत्त हृदय की व्यजना में करण रस का निष्पत्ति हुई है। कृष्ण के लौटने का आशा न देय यशान्त शक में डूब जानी =

एसी आशा ललित ततिका हा गइ गुल्फ प्राय ।

सारी शोभा सु छविजनिता नित्य है नष्ट होती ।

जा आवगा न अब ब्रज में श्याम-सरकातिशान्त ।

होगी हो के विरस वह तो सबधा छिप्र मूना ।^{१४३}

इस प्रकार प्रियप्रवास में वियोग शृंगार की प्रधानता होत हुए भी अन्य रसा का निर्वाह अपक्षित रूप में यथास्थान हुआ है।

कलापक्ष

नामकरण— प्रियप्रवास के नामकरण के सम्बन्ध में हरिऔधजी ने लिखा है कि— मैंने पहले इस ग्रन्थ का नाम ब्रजागना विलाप रखा था किन्तु कई कारणों से मुझे यह नाम बताना पड़ा जो इस ग्रन्थ के समग्र पद जान पर आप नागों की स्वयं अवगत होगे।^{१४४} बन्तुत ब्रजागना विलाप नाम महाकाव्योचित नहीं है। हम नाम से ध्वनित होता है कि मानो काव्य में ब्रज की किमी अगना के ही विलाप का वर्णन होगा। दूसरे इस शीपक से रीति कानीन काव्य विषया की व्यजना ही अधिक होती है। प्रियप्रवास नाम अपक्षाकृत व्यापक और जिनासावद्धक भी है। सम्भवत काव्य का प्रियप्रवास नामकरण होने के कारण ही कवि को कृष्णजन्म से लेकर प्रवास काल तक की समस्त घटनाओं का वर्णन करना पड़ा है जिसके कारण विषय-वस्तु व्यापक बन गयी है। अस्तु वष्य विषय से सम्बन्धित एवं आकषक हान के कारण प्रियप्रवास का नामकरण सबधा उपयुक्त है।

सग संयोजन— प्रियप्रवास में १७ सग हैं। यद्यपि सगों का संयोजन क्या

^{१४२} प्रियप्रवास त्रयोदश सग पृ० १७८

^{१४३} वही, दशम सग पृ० १३२

^{१४४} वही भूमिका पृ० २

विकास की दृष्टि से किया गया है किन्तु कामायनी' या कृष्णायन का भौतिक सर्गों का नामकरण नहीं हुआ है। प्रथम से पंचम मंग तक की कथा का सम्बन्ध गावुल में है जिसके अन्तर्गत अष्ट कृष्ण को लेकर मयरा चल जान हैं और ब्रजवासी वियाग में डूब जाते हैं। षष्ठ मंग से प्रयाग मंग तक ब्रज जना के वियाग की दशा का मार्मिक वर्णन है। चतुर्दश से अन्तिम अष्टम मन्वदश मंग तक उद्धव द्वारा कृष्ण के मन्वदश का प्रमाण है। कथानक के सूत्रा और कथा विकास का गति का समोजित करने की दृष्टि से प्रियप्रवास का मंग-योजना सफल रही है। प्रत्येक मंग में पूर्वापर अतिवृत्ति विद्यमान है।

भाषा शली— प्रियप्रवास कथा वाला का प्रथम महाकाव्य हान के नात भाषा की दृष्टि में उमका ऐतिहासिक महत्त्व है। प्रियप्रवास के अनुकरण पर ही सही बोली को अपनाया गया है। जिन वर्णिक वक्ता में काव्य किया गया है, उमके लिए मसृष्ट निष्ठ गडा वाली हा उपयुक्त ना थी। भाषा के रूप को अपनाते म हरिऔषजा का विशिष्ट दृष्टिकोण भी था जिस म्रय भूमिका में स्पष्ट करते हुए उद्घान किया है कि— कुछ मसृष्ट वक्ता के कारण और अधिकतर मरी शक्ति से हम ग्रंथ का भाषा मसृष्टतर्गभित है क्पाकि अय प्रान्त वाला म यदि ममात्र होगा तो एस हा ग्रंथ का हागा। भारतवर्ष भर में मसृष्ट भाषा आदृत है। १४४ स्पष्ट है कि 'प्रियप्रवास' की भाषा के स्वल्प निर्माण के पाछे एक महान उद्देश्य और निश्चित विचारधारा कायम रहती है।

शास्त्र में प्रियप्रवास का भाषा के रूप में एक तो शुद्ध मसृष्ट निष्ठ रूप और दूसरा साधारण बालबाल का भाषा का रूप। प्रथम उदाहरण निम्न पंक्तियां में स्पष्ट है

स्वाधान प्रकृत प्राय-कनिका राकटु बिम्बानना ।

तवगा वन-शामिना मुरसिका शाल-कना पुतला ।

शोभा-वरिधि की अमूय मणि सा तावण्य-जाना-मया ।

थीराधा मृत भाषिणी मृगया माधुय की मूर्ति था । १४५

इन पंक्तियों में दोष समाममयी और सौ घयुक्त पं-याजना के कारण भाषा का रूप महान एवं बाधाम्य नहीं। इस प्रकार का समाम बहना किन्तु पं-वती के प्रयोग के कारण भाषा के स्वाभाविक रूप का आधान भा पहुँचा

१४४ प्रियप्रवास भूमिका पृ० ६

१४५ वहा, चतुर्थ मंग पृ० ३६

है। किन्तु इस स्थान काव्य में बहुत कम है। अधिकतर स्थानों पर भाषा का रूप सहज एवं बोधगम्य है। यथा—

सब पथ कठिनाई नाथ हैं जानत ही ।
अब तक न कही भी लाडिन है प्यारे ।
मधुर फल खिलाना दृश्य नाना खिलाना ।
कुछ पथ-दुःख मरे बानका को न हावे । १४७

भाषा का यह रूप सरल सहज एवं शोलचान के अनुरूप है। भाषा को सरस एवं राचक बनाने के लिए हरिऔधजी ने सभी प्रयास किये हैं। मुहावरे एवं नाकाकित्या के प्रयोग सभी भाषा में पर्याप्त सरसता आया है। उदाहरण के लिए निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

- १ हा ! हा ! मरे हृदय पर या साप क्या नाटता है ।
- २ प्रियतम ! अब मरा कठम प्राण जाया ।
- ३ जी हाता है विक्कन मुह को आ रहा है बनजा ।
- ४ मैं जाऊंगा कुछ दिन गये बान हागा न यौना ।

इसके अतिरिक्त भाषा को शक्ति प्रदान करने के लिए सुभाषिता और सूक्तियाँ का भी प्रयोग किया गया है। प्रियप्रवास की भाषा में लोक प्रचलित उक्त फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जस—गरीबिन जुदा ताव आदि। ब्रजभाषा के शब्दों का भी प्रयोग कम नहीं है। कहा-कहा सस्वृत वक्ता के उपयुक्त सगठन के लिए कवि ने शुद्ध शब्दों को तोड़ा मरोड़ा भी है। जैसे मम का मरम समय का सम जोर यद्यपि का यद्यपि आदि। छन्द आयोजन के लिए दीघान्त शब्दों को ह्रस्व जोर ह्रस्व को दीघ तो अनेक स्थानों पर किया गया है।

प्रियप्रवास की शली प्रवाहपूर्ण है। सस्वृतमयी शली होने के कारण कही-कहा दुर्गहता और कृत्रिमता अवश्य जा गयी है। किन्तु प्रियप्रवास की शनी कहा भी ममासबहुता होने के कारण यजना शक्ति में अक्षम नहीं है। नप्रपणोद्यता ता इस काव्य की शनी का विशय गुण है। प्रियप्रवास में काव्य शक्तियाँ के तीन रूप मिलत हैं—सरस शनी अनकृत शनी और गुम्फिन शली। अतिम शनी में अवश्य कनी-कनी जटिलता दिखायी देती है किन्तु शब्द शक्तियाँ की समुचित यजना भाषा के सुन्दर प्रयोगों एवं मुहावरण पर पदावली आदि के कारण शनी जानपक एवं प्रवाहपूर्ण बनी रहती है।

१४७ प्रियप्रवास पंचम सर्ग पृ० ५३

शता की दृष्टि से सफ़्त एव सक्षम रचना है। प्रियप्रवास की भाषा का माधुर्य और नाव्य पाठक को बरबस आकर्षित कर लेता है। चित्रोपमता योजना प्रसंगानुवृत्ता सम्प्रपणीयता आदि प्रियप्रवास का भाषा शरी की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।

अलंकार विधान— प्रियप्रवास में शब्दान्तर एव अर्थान्तर दोनों का ही प्रयोग हुआ है। कवि ने अधिकतर प्राचीन अलंकार का ही प्रयोग किया है। अलंकार प्रयोग में कवि वही भी प्रयत्न-माध्यम लिखाया नहीं देता। इसका अतिरिक्त अलंकारों के प्रयोग से काव्य के भाव-सौन्दर्य में वही भी याथावत् उत्पन्न नया हुआ है। हरिऔधजी की अलंकार योजना काव्य की मरसता एव स्वाभाविकता के रक्षण में विशेष सहायक रही है। विशेष रूप से अनुप्रास यमक श्लेष उपमा उत्प्रेक्षा रूपक आदि अलंकारों का ही अधिक प्रयोग हुआ है। कुछ प्रमुख अलंकारों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

अनुप्रास—

विमुग्धकारी मधु मजु माम था ।
वसुधरा था कमनीयता मयी ।
विचित्रता-माथ विराजिता रही ।
वसान्त वासन्तिकता यनान्त म ॥ १४८

यमक—

विलसित उर में जो है सदा देवता सा ।
बहू निज उर में ठौर भी क्या न देना ।
नित वह कलपाता है मुझ कान्त हो क्या ।
जिम दिन कलपात हैं नहीं प्राण मर ।

यहाँ कलपाता और कलपाते शब्द समान हात हुए भा भिन्न अर्थों का छातन है।

उपमा—

'नाल फूल कमल देना गात की श्यामता है ।

रूपक—

रूपाखान प्रपुल्ल प्राय-कनिका रावे-तु विम्रावना ।
तवगी बन हासिना मुरसिरा वादा-वना पुत्तनी । १४९

१४८ प्रियप्रवास पाठ्य संग पृ० २३७

१४९ वही, पद्य संग पृ० २६

उत्प्रक्षा—

क्षितिज निकट कसी तानिमा दीगती है ?
वह रुधिर रहा है कौन-सी कामिनी का ?
विहग विबल हो हो बाजन क्या गये है ?
सखि ! सकल दिशा म आग सी क्या लगी है ? १५

अपहृति—

विपुन नीर बहाकर नत्र स ।
मिस कानिद कुमारी प्रवाह के ।
परम कातर हो रह मौन ही ।
रत्न धी करती ब्रज को घरा ।

इसा प्रकार स्मरण दृष्टान्त सदृश भ्रान्तिमान प्रतीप परिकर निदर्शनात्तरिक आदि अलंकारों के प्रयोग भी प्रियप्रवास में हुए हैं। जनवारा के प्रयोग से प्रियप्रवास में कलात्मक सौन्दर्य की अभिवृद्धि ही हुई है।

छन्द योजना— प्रियप्रवास वर्णिक छन्द में लिखा अनुवात एव अत्यानुप्रासग्रीन काव्य है। प्रियप्रवास में विशेष रूप से द्रुत विनम्बित मालिनी मदाभ्रान्ता बसन्ततिलका वशस्य और शिखरणी आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। छन्द विधान की दृष्टि से हरिऔधजी की सबसे बड़ी सफलता यह है कि उन्होंने वर्णिक वृत्तों की दुरुहता को उपयुक्त प्रसंगों के अनुरूप प्रयुक्त करके सुगम बनाया है। संस्कृत वृत्तों में एक सफ़्त महाकाव्य की रचना हरिऔधजी ने ही की है जहाँ कोई हिन्दी का कवि इस शिष्टा में बदन का साहस हा नहीं कर सका। छन्द का प्रथम और द्वितीय सर्गों के अतिरिक्त सगान्त में छन्द परिवर्तन भी हुआ है जो प्राचीन काव्यशास्त्रीय रक्षणों के अनुरूप है।

निरूपण रूप में प्रियप्रवास का काव्य शिल्प महाकाव्य के अनुरूप है। ध्वनि-वैशाल्य प्रकृति चित्रण रस परिपाक भाषा शला अलंकार विधान छन्द योजना आदि सभी दृष्टियों से प्रियप्रवास का शिल्प समुन्नत है।

जीवन दर्शन

१ महत् उद्देश्य और सजन प्रेरणा

महाकाव्य के स्थायी तत्त्वा में सर्वप्रमुख स्थान महान उद्देश्य और महती

प्रेरणा का है।^{१४१} जालकारिका न महाराय का उद्देश्य चतुर्वर्ग का प्राप्ति कहा है। किंतु घम अथ काम माभ आदि की प्राप्ति हा आज महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्रत्येक महाकाव्य की रचना क मूल में काई-न-काई महत् प्रेरणा वायव्य रहती है जो सम्पूर्ण महाकाव्य क कर्तव्य में प्राण शक्ति क समान थादि स अन्त तक परिख्याप्त रहती है। प्रियप्रवास की रचना विश्वबन्धु का भावना और नाक-सवा क आदर्श की स्थापना का लक्ष्यगत करक हुई है। वम काव्य की भूमिका में प्रियप्रवास का रचना क सम्बन्ध में विभिन्न उद्देश्य का उल्लेख किया गया है। सबप्रथम इस महाकाव्य की रचना खड़ी बाना में महाकाव्य लक्षण की अभावपूर्ति क रूप में हुई। जसा कि कवि न स्वयं कहा है— खनी वाली में छाट छाट कई ग्रंथ अब तक लिपिबद्ध हुए है परन्तु उनमें में अधिकांश सौ दा सौ पद्या में हा समाप्त है। इसलिए खनी बानचान में मुझको एक एक ग्रंथ की आवश्यकता दाव्य पदा जा मन्त्राव्य ही अतएव मैं इस युतना की पूर्ति के लिए कुछ माहस क साथ अग्रसर हुआ और जनवरत परिश्रम करके इस प्रियप्रवास नामक ग्रंथ का रचना का।^{१४२} इसका अनिर्दिष्ट मातृ भाषा हिन्दी की सेवा क लिए भा कवि न इन काव्य का प्रणयन किया।^{१४३} प्रियप्रवास की रचना का एक उद्देश्य यन् भा था कि हिन्दी क कवि जीर नाक मातृ भाषा हिन्दी का महाकाव्य का रचना में सम्पन्न करें। हरिऔधजी न स्वयं यह स्पष्ट किया है कि— महाकाव्य का आभासस्वरूप यह ग्रंथ १७ सर्गों में इन उद्देश्य स लिखा गया है कि इसका उत्कर्ष हिन्दी साहित्य क लक्षप्रतिष्ठ सुकविया और सुलखा का ध्यान इस श्रुति क निवारण करन का आर आकर्षित हा।^{१४४} प्रियप्रवास की रचना क द्वारा हरिऔधजी न स्वयं का भी स्पष्टाकरण किया है कि सस्कृतमयी खड़ी बोला ही राष्ट्र भाषा बनन क योग्य है। उद्देश्य काव्य का भूमिका में सनक प्रमाणित किया है कि सम्भृतगमित भाषा भारतवर्ष के जहिन्दा भाषा प्राप्ता क लिए महज सुगम है क्योंकि भारतवर्ष भर में सम्भृत भाषा आदुत है। बंगला मरहटा गुजराता वरन् तमिल और पञ्जाब तक में सम्भृत शब्दा

^{१४१} श्री० सम्भुनाथसिंह हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास पृ० २८४

^{१४२} प्रियप्रवास भूमिका काव्य भाषा पृ० २

^{१४३} वही, भूमिका विचार मूल पृ० १

^{१४४} वही, पृ० २

का बाहुल्य है।^{१५५} हरिऔषजी व इस कथा में स्पष्ट है कि व प्रियप्रवास जन्म ग्रन्थ की रचना द्वारा गंगा बानी का गप्पू भाषा व गौरव से सम्मानित करना चाहत थे। प्रियप्रवास व कवि का इच्छा यह भाषा कि गस्टृत वला म खला बोनी के माध्यम से काव्य की रचना की जाय।^{१५६} इन सब कारणों व अतिरिक्त प्रियप्रवास की रचना पौराणिक कथाओं का बौद्धिक व्याख्या व लिए भा हुई। पुराणा में बणित जिन कथाओं और अवतारों को नाम कपोत वरिपत कहकर त्याग मानत थे उह कवि न तबसम्मन एव बुद्धि ग्राह्य रूप में प्रस्तुत करव तथा श्राकृष्ण को महापुरुष व रूप में अंकित करव पौराणिकता की रक्षा का है।^{१५७} उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'प्रियप्रवास' की रचना खड़ी बोली के गौरव की प्रतिष्ठा, राष्ट्र भाषा प्रेम पौराणिकता के प्रति बसतिक दृष्टिकोण और कृष्ण के सहाय को महापुरुष व रूप में अंकित करने की दृष्टि से हुई है।

प्रियप्रवास का रचना व जिन कारणों का ऊपर उल्लेख किया गया व स्थूल एव बाह्य है। वस्तुतः महाकाव्य की रचना मनु सांस्कृतिक अनुष्ठान व रूप में होती है। प्रत्येक महाकाव्य किंसा महान उद्देश्य की प्राप्ति जयवा किंसी महत्त्वपूर्ण सन्देश व प्रसारण व लिए जाना है। प्रियप्रवासकार का मूल उद्देश्य वतमान मानव व रिक्त एव आस्थाहान हृदय का चरित्र एव विश्वास का बल प्रदान कर सामाजिक जावन के मूल्यगन सङ्गमण और पन्नो-मुखी प्रवसिया का नाक-कल्याण पर नित एव वनव्यनिष्ठा की भावना द्वारा विराध करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति व लिए कवि न एक आर कृष्ण चार राधा व पौराणिक स्वरूप का यथेष्ट रूप में परिभाजन करव उह लाकोपकारक एव लोक सविका व रूप में अंकित किया है तो दूसरी आर राष्ट्र प्रेम जातीय गौरव नाक मगन विश्व-कल्याण एव उत्सग से पूण यग की उत्तम विचार धाराओं एव जीवन पद्धतिया का निरूपण भी किया है। व्यक्ति के स्वार्थों को समाज व लिए बलिदान कर दन का भावना विश्व-धुत्व व महान आदश एव स्वजाताय गौरव का जिन भावनाओं से अनुप्ररित हाकर प्रियप्रवास का सृजन हुआ है व निश्चय ही काव्य व महत् उद्देश्य एव वनवना सृजन प्ररणा की धातक है।

^{१५५} प्रियप्रवास भूमिका भाषा शता पृ० ६

^{१५६} वही पृ० ५

^{१५७} वही भूमिका ग्रंथ का विषय पृष्ठ २६ ३०

२ सन्देश

प्रियप्रवास मानवतावादा जीवन मूल्या का प्रतिष्ठा और युगान् जीवनताओं का स्थापना व आप्रहा का पूण करन क प्रयास म लिग्या गया ह । प्रिय प्रवास क कवि न बौद्धिकता का अति स आत्रान्त स्वार्थी विषयग्रस्त जनास्या वान एव स्वच्छन् मानव समाज का पर हिन पगपकार आम्हा समम बन-य निष्ठा एव स्वदश प्रेम का सन्ध किया है । काव्य म स्वाथ का जपक्षा परमाथ का भागा की अपक्षा त्याग का व्यक्तिगत हिन का अपक्षा जानीय एव राष्ट्राय हिन का श्रयन्त्र बनाया गया है । कृष्ण और राधा का चरित्र-सृष्टि क माध्यम स जन्म प्रमी मच्च लाव सवा एव कत-यपरायण यकिनया की महानता का प्रतिपादन किया गया है । प्रियप्रवास के सन्ध का प्रमाण काव्य की नायिका राधा क मुख स कवि न पाठन मग की निम्न पकिनया म कराया ह

“हा जान म हृत्पवन का भाव एसा निगता
 मैन न्यार परम गरिमावान ग ताभ पाय ।
 मर जा म हृत्य विजया विश्व का प्रम जागा
 मैन दला परम प्रम का स्वाय प्राणश हा म ॥ १५८

राधा क हृत्य का मह उत्त भाव विश्व प्रम का जनक है । इस भावणा का कारण राधा क समान मानव की आन्तरिक बतियाँ इतना दिव्य और मन्तु बन जाती ह कि प्राणा मात्र म उस ब्रह्म का साक्षात्कार हान लगता है । इस उत्त भावना क धनस्वरूप स्थापना एव भक्ति विषयन नाओं म परिवर्तन हा जाना ह । मसार क प्राणिमात्र का विश्व-आत्मा का रूप ममनकर उनका मनपूर्वक सम्मान एव सेवा हा भक्ति हा जाती है । इस प्रकार प्रियप्रवास क कवि न समाज-व-याण जानाय हिन, राष्ट्राय-गौरव एव विश्व मगत का भावना का शाश्वत मन्त्र प्रस्तुत काव्य क माध्य स प्रसारित किया है ।

३ सांस्कृतिक निरूपण

महत् उद्देश्य शाश्वत मन्त्र एव बनवती प्रेरणा म अनुप्राणित हान क कारण प्रियप्रवास का रचना का सांस्कृतिक महत्तर भा कम महा है । जिन व्यापक मायनाभा, युगान् जीवनताओं चिन्तन मानव मूल्या पौराणिक आस्थात्रा और जाध्यात्मिक निष्ठाका का तकर प्रियप्रवास का रचना हुई है

नन्-नृप के घर आ रही था ।^{१६५} इन वषणता म भारतीय सभृति का उत्तमव
पूण एव उल्लासमय रूप बडो मजीवता म वणिन किया गया है ।

पारत्रौकिज दृष्टि म मय और अहिमा की स्त्रीरृति की गया है । प्रिय
प्रवाम क कृष्ण त्रिगा का निघातम रत्न है । व मनुष्यता क्या एक पिपात्रिका
क वष का भी उक्ति नहा मानन ।^{१६६} किन्तु उनका यत् भी धारणा है कि

ममाज उन्नीचक धम्म विप्लवा । स्व जाति का शत्रु टुरत पानवा ।

मनुष्य प्राण भव प्राणि पुञ्ज का । न है क्षमा याग्य वरुच वध्य है ॥

क्षमा नहा है मय क निग भवा । ममाज उमात्र दण योग्य है ।

कु वम-कारा नर का उवारता । मुक्मिया की करता विपन्न है ॥^{१६७}

प्रियप्रवाम क कृष्ण मत्य और नीति क मवत्र ममथक रत्न है । व अनातिपूण
काय म विन्न त्रिते ५ और छाट का मन्व सायाचरण की हा शिशा त्रिते
थ ।^{१६८} अपरिग्रह जोर त्याग का मन्त्रिा का ता हरिऔधत्री न काव्य म
मवन ती आस्थान किया है । राधा का जीवन तो अपरिग्रह का आश ही है ।
मन्व अनिरिक्त प्राचान साम्बृतिव विववामा यथा भाव्यवा^{१६९} जोर
गुन^{१७०} जाति का भी यथास्थान उतग्व हुआ है ।

भारताय मस्कृति म परिवार जोर ममाज का विशय मन्त्व त्रिया गया
है कयाकि साम्बृतिज परम्पराया का मरक्षण यती मन्धाए जनाति कात म
कर रत्न है । प्रियप्रवाम म ब्रजधराधिप नन् का परिवार छोटा होत हुए भा
जाश है । नन्-परिवार क सत्स्य है—माता यशोरा और पुत्र कृष्ण । कवि न
माता पिता जोर पुत्र क मन्व-मौजन्मपूण मन्वधा की मुत्तर ध्याव्या की है ।
माता पिता का पुत्र क प्रति स्नह और कृष्ण की माता पिता क प्रति पूय
भावना का मुत्तर रूप चित्रित है । ब्रजमण्णन क समाज का स्वरूप भी मधुर
मन्वधा जोर पारम्परिक मम्मान एकता एव समानता की भावना पर
जावारित त्रियाया गया है । ब्रज समाज क वणधार कृष्ण है । मायें चराकर
नौत कृष्ण का दगकर

१६५ प्रियप्रवास, अष्टम सर्ग पृ० ६ १६

१६६ वही निघातम सर्ग पृ० ७८ ७६

१६७ वही १३/८० ८१

१६८ वही १२/८४ ८५

१६९ वही १/२१

१७० वही सर्ग ६ छन्द ८

उल्लङ्घने शिष्ट धर्म अति ह्ये न युवक वरम की निधि नूतन ।
 जरठ का फन लोचन का मित्रा निरख क मुपमा मुव भूज की ॥
 गुरु विनास्ति यी ब्रज वासिना तर्णिमा सब थी नृण तोन्ता ।
 बलि गया गुरु वार वयावती छत्रि विनोव प्रजन्त का ॥ १७१

इस प्रकार हरिऔधजी न भारतीय मस्वृति क आन्ध्र रूप का अतिन वर्णन क
 निग प्रियप्रवाम म सभी प्रमगा एव प्रसाधना का सफनता न नुटाया है ।
 नवीन मस्वृति (मानवतावादी साम्प्रतिक आदर्शों की स्थापना)

प्रियप्रवाम का रचना उस समय हुई जब भारतवर्ष म ब्रिटिश शासन
 की प्रभुमता था । अग्रजा शिष्टा और पारश्चात्य मन्थना के सम्पर्क एव प्रभाव
 म भारतीय सामाजिक एव राष्ट्रीय जीवन म पुनर्जातवादी विचारधारा का
 मूलपात ही बना था । प्राचीन विज्ञानत आम्प्राज्ञा एव परम्पराओं का यही
 दृष्टि म न्यून का प्रथम प्रारम्भ ही गया था । उस समय भारतवर्ष म आय
 समाज ब्रह्म समाज प्राथना समाज धियामपावन सामाजिकी रामदृष्टि दिशन
 जसो अनेक साम्प्रतिक मस्याएँ अनेक मुधारवादी आन्ध्रता एव विचार
 परम्पराओं का जन्म दे चकी थी । हरिऔधजी का इन मस्याओं म एक मजग
 साम्प्रिकार एव बुद्धिवादी हानि क कारण प्रथम पराग मन्त्र अन्वेष था ।
 निम्नलिखित तत्वादीन धार्मिक और सामाजिक ब्रान्धिया न भा अपरन्त रूप
 से उन पर प्रभाव डाला । हरिऔधजी पर उस समय का सामाजिक धार्मिक
 और राजनीतिक परिस्थितिया का भी प्रभाव पला । १७२ अस्तु 'प्रियप्रवास'
 म उस तरान मस्वृति की यजना भा हई है जिसका निमाण पारश्चाय
 विचारधारा म प्रभावित होकर हुआ है । इस मानवतावादी मस्वृति कहना
 अधिक उपयुक्त होगा क्योंकि नवान मस्वृति क मित्राता उद्देश्या एव प्रमुग
 विचारधाराओं का मन्त्र किमा कल्पित अपान मता या गति से न होकर
 मानव म है ।

जिन नवीन साम्प्रतिक आन्ध्रों की स्थापना प्रियप्रवाम म हुई व है—
 कर्मवाद रोह-मवा रोहन्ति ब्रह्म म अधिक मानव मन्त्र का स्वाहृति
 नारा का मन्त्रा नरन्ति की भावना और राष्ट्रायता आदि । यही य
 उन्नतताप है कि नवान मानवतावादी मस्वृति क जिन आयागभूत मिठाला
 एव आन्ध्रों का उल्लङ्घन ऊपर किया गया है उनका भाग्याय मस्वृति म क

१७१ प्रियप्रवास, प्रथम मग २८-२९

१७२ डॉ० मुन्शीरामा हरिऔध और उनका माहित्य पृ० २२१

वही तात्त्विक भेद अवश्य है किन्तु विरोध कभी भी नहीं है। उदाहरण के लिए— भारतीय सभृति में राम की धारणा कलाभा का और कृष्ण का मोहन कलाभा का पूण अवतार बना जाता है। १७३ कृष्ण को विष्णु का अवतार प्राचीन भारतीय एवं हिन्दू सभृति के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है। किन्तु नवीन सांस्कृतिक आदर्शों के अनुसार कृष्ण पुरुषदायक उक्त महापुरुष अवश्य बना जा सकता है। इस प्रकार के नवीन सांस्कृतिक आदर्शों का प्रभाव त्रिभुज पर पना भी है। उदाहान स्वीकार किया है कि— काव्य पाठक मरी दृष्टि-यापक हुई म मोचने विचारन और शास्त्र के गिद्धाना का मनन करने लगा। उसा के फलस्वरूप मर पश्चानन्ती और जाधुनिक काव्य है। भगवान कृष्णचन्द्र म मुक्ती श्रम है किन्तु वह श्रम जय सकाणता एतन्निता और अकर्मण्यता-याप दूषिता नना है। मानवता का चरम विकास हा इश्वरत्व की प्राप्ति है—यही अवतारवाद है। अवतारा की सम्बल मानवता का आन्तर्गत था जतएव उसको उमी रूप म देखने की आवश्यकता है जो उसका मुख्य रूप है और यही कारण है कि आजकन का मरा परिवर्तित मत यही है। १७४ उपयवन कथन स स्पष्ट है कि अवतारवाद के सम्बन्ध म कवि ने नवीन सांस्कृतिक किवा मानवतावादी दृष्टिकोण को ही अपनाया है। प्रियप्रवास में नवीन सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना कवि के-यापक एव प्रगतिशील सांस्कृतिक दृष्टिकोण की परिचायक है।

प्रियप्रवास म भाग्यवाद के स्वर के साथ साथ कमवाप्ती अर्थात् कतव्य परायणता का कना भी विस्मृत नहीं किया गया है। अपने मित्र उद्व को ब्रज भजते हुए कृष्ण यन्ती कहते हैं कि मैं काय यस्त हूँ

मेरे जीवन का प्रवाण पन्ते अत्यन्त उमुक्त था।

पाता हूँ अब मैं नितान्त उसको आबद्ध कतव्य में ॥' १७५

राधा न भी उद्व से कृष्ण के प्रति सन्देश भजत हुए यन्ती कहा है कि

प्यारे जीव जगहित कर गेह चाह न आवें। १७६

१७ डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना प्रियप्रवास में काव्य सभृति और दशन पृ० २६२

१७५ गिरिजास्त शकन गिरीश महाकवि हरिऔष पृ० १७३ ७४

१७५ प्रियप्रवास नवम सग पृ ३

१७६ वही पाठन सग पृ० ६८

इस प्रकार लोक हिन एवं लोक-भवा का भावनाशा को वाच्य म सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया गया है । कृष्ण न भी यथा कहा है कि

जी स प्यारा जगत तिन औ लोक सवा जिम है ।

प्यारी मच्चा अवनि-नन म आत्म-यागी बन्धी है । १००

प्रियप्रवास म नारी की मत्ता को भी स्वीकार किया गया है । यशोदा और राधा क चरित माच्यम स ब्रमण मातृत्व और पत्नीत्व रूप की व्यजना हुई है । वाच्य क अन्तिम मग म नाग क समाज-सविका विषय प्रसिवा न्या मूर्ति मगनकारिणी आदि जनक रूपा का चित्रण किया गया ह । राधा जसा मामाच्य नारी को हरिऔघजा न नवी गुणा स मणित करके उमवा चरित्रात्मक किया है । प्रियप्रवास की राधा परम्परा स भिन्न एक प्रगतिशील विचारा का नारी क रूप म चित्रित हुई है ।

नवधा भक्ति क स्वरूप निरूपण म जान उत्पीलित की सहायता पतिता के उमम गिरनी जातिया के उत्थान कगाला विवग विघवाआ और जनायाश्रिता का प्राण नने का जो वान कही गयी है वह भी नवीन नट्टिकेण का परिचायक है । आत्म निवन्त भक्ति प्रकार का विवचन करने हुए राधा ने कहा है कि

विपत् सिद्धु पड नर बन्द क ।

दुग निवारण औ हिन क लिए ।

अरपना अपन तन प्राण का ।

प्रथित आत्म निवन्त भक्ति है ॥ १०८

इस प्रकार नवीन मास्त्रुतिक जीवन मूल्या की प्रतिष्ठा का वाच्य म पूण आपट्ट निवायो देता है । प्रियप्रवाम की मास्त्रुतिक पृष्ठभूमि प्राचान और अर्वाचीन विचारधाराआ एवं मायनाआ म पुट्ट है । उमम भागनीय मस्त्रुति के पुरातन और नवीन दोनों रूपा का मुल्कर विवण हुआ ह ।

शासनिक पृष्ठभूमि

प्रियप्रवाम का शासनिक पृष्ठभूमि का निर्माण मानवतावादी जीवन दान की मायनाआ स प्ररित होकर हुआ है । हरिऔघजा न किमा विनिष्ट शासनिक मतवाण या दान प्रणात्री का वाच्य म माग्र प्रतिपासित नहा किया है । यद्यपि प्रियप्रवाम म उद्वेगय मापिकाआ क मवाण म मूरुणाम, नन्नाम

१०० प्रियप्रवास, पौडग मग पृ० ४२

१०८ वही, पौडग मग, पृ० २५७

आदि के भ्रमरगीत प्रसंग की भाँति विविष्ट शक्ति मायताया की स्थापना का पर्याप्त अवकाश था किन्तु हरिऔधजी न बसा नती मिया है। उहाने भारतीय दशन की उही विचारधाराओं को काव्य के प्रतिपाद्य रूप में स्वीकार किया है जो मानव जीवन के मगन विपाद की शक्ति से महत्त्वपूर्ण है।

ब्रह्म की परिकल्पना और कृष्ण

वेदान्त दशन में ब्रह्म एक है। वह निविशय तत्त्व के रूप में मवयायी और सचतन है। ब्रह्म की सिद्धि के लिए किमी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। क्योंकि वह स्वयसिद्ध एव स्वप्रकाशमय है। चतय का ही आत्मा या ब्रह्म कहते हैं। समस्त अपनाता से अविच्छिन्न चतय ईश्वर है। १०६ हरिऔधजी भी भारतीय दशन की अतवादी परम्परा से प्रभावित थे। इसलिये उहाने ब्रह्म को अत्यन्त सापक रूप में ग्रहण किया। उहाने एक स्थान पर लिखा है कि— ईश्वर एकदेशीय नहीं है वह सब सापक और अपरिच्छिन्न है हमकी सत्ता सबत्र वत्तमान है प्राणी मात्र में उसका विकास है— मव खल्वि ब्रह्म नेह ना नास्ति किंचन। १०७ प्रियप्रवास में उनकी इसी धारण का निरूपण हुआ है। पौष्ण सग में राधा उद्वेग से कहती है कि शास्त्रा में प्रभ के असम्य शाशा और लोचना की बात कही गयी है। यह भी कहा गया है कि ब्रह्म मुक्त नत्र नासिका आदि इन्द्रिया से रहित होकर भी छूता खाता श्रवण करता देखता और सूषता है। तात्त्विक दष्टि से हमका रहस्य यह है कि ससार के सारे प्राणी इसी ब्रह्म की मूर्तियाँ हैं। इसलिये अखिन जगन के अमम्य प्राणिया के नेत्र जाति उसी विश्व आत्मा की इन्द्रियाँ हैं। सम्पूर्ण ससार के इन्द्रियत्रय काय ब्रह्म द्वारा ही परिचालित होते हैं। तारागण मूय अग्नि विद्यत नानारत्ना और विविध मणिया में उसी ब्रह्म की विभा प्रकाशमान है। पृथ्वी पवन जल आकाश पात्पा और खगा में उसी ब्रह्म की प्रभुता सापक है। १०९ निष्कप रूप में राधा ने यही कहा है कि ब्रह्म विश्वरूप है

वे वातें हैं प्रकट करती ब्रह्म है विश्वरूपी।

व्यापी है विश्व प्रियतम में विश्व में प्राण प्यारा। १०२

इस प्रकार हरिऔधजी ने ब्रह्म की सापक से व्यापक परिकल्पना की है।

१०६ डा उमेश मिश्र भारतीय दशन पृ० २५६

१०७ गिरिजान्त शकन गिरीश महाकवि हरिऔध पृ १७३

१०९ प्रियप्रवास पौष्ण सग छन्द १०७ ११

१०२ वही पृ २५५

प्रियप्रवास' म कृष्ण को ब्रह्म नहीं माना गया है। कवि न उह मानव के रूप म ही चित्रित किया है। पुराणा म कृष्ण को विष्णु का अवतार माना गया है। किन्तु प्रियप्रवाम म उह मत्पुरुष अथवा आदम मानव के रूप म ही अंकित किया गया है। श्री गिरिजास्त शवन गिरिश के शब्द म—
 प्रियप्रवास म हरिऔधजी ने श्रीकृष्ण की इश्वरता को तो अस्वीकार किया है—कम-म कम परब्रह्म रूप म तो उ ह ग्रहण नहीं किया।^{१-३} इस प्रकार कवि न ब्रह्म के सम्बन्ध म एक यापक और मानव के व्याणकाग आश स्थापित किया है।

जीव

शरीर के बचन स युक्त आत्मा का भारतीय दर्शन म जीव की मत्ता गयी है। यह जीवात्मा अपन कर्मों के अनुसार भिन्न भिन्न शरीर धारण करता है। मृत्यु के पश्चात म्भून शरीर के समाप्त हो जान पर भी सूक्ष्म शरीर से अपन कर्मों का फल भोगता है। जीवात्मा की बचन मुक्ति के लिए मोक्ष नाम की स्थिति का उन्नेय किया गया है। जीव को मोक्ष की स्थिति तत्त्वज्ञान का बाध हो जान पर प्राप्त होती है। बन्त दर्शन के अनुसार जाव आर ब्रह्म म काई भन् महा है। ब्रह्म के प्राप्ति हो जान पर जीव और ब्रह्म म कोई भन् नहीं रहता। जीवात्मा और परमात्मा म भेद का कारण सामासिकता का बचन है। अपने पाप कर्मों के कारण हा जीव बचन म जन्म रत्ता है। प्रियप्रवास म हरिऔधजी न पापात्मा और परमात्मा दाता जीवा का निरूपण किया है। कम यामामुर अधामुर कशि पूतता प्राप्ति एस ही जीव हैं जो अपन पाप कर्मों द्वारा समाज को पात्रित करने रत्ते हैं और अतत उगति को प्राप्त होत हैं। इसके विपरीत कृष्ण और राधा पुण्य आत्मा है जो अपन मत् कर्मों द्वारा समाज जाति और विश्व का कल्याण करत हुए अनन्त सुख और शान्ति को प्राप्त करत हैं।

जगत

शबरदास्य न ब्रह्म और जीव की एकता की स्थापना करत हुए भा जगत को मायामय बना है। वे ब्रह्म मत्य जगत मिथ्या सिद्धान्त के समर्थक थ। किन्तु ध्यावहारिक दृष्टि से जगत की मत्ता को वे भी अम्बावार महा कर गके थ। इसका सबसे बन् प्रमाण यह है कि शबर न जगत का सत्ता का ध्यावहारिक दृष्टि से मय मानकर उम म बचन के लिए अनक विधान

प्रचलित किया।^{१८४} हरिऔधजी ने विश्व को विश्वात्मा का ही रूप माना है। उन्होंने समार को परिवर्तनशीलता कहा है जिसे उमक अस्तित्व को अस्वीकार नहीं किया है। वास्तव में प्रियप्रवासकार ने जगत विषयक विचारों का सार यह है कि वे समार का वृत्तितया की भाँति नवर मिथ्या क्षणभंगुर या अमत्य नष्ट मानते वरन अच्छे कार्या द्वारा समार के जावन को गुणमय बनाने की बात कहते हैं।

मोक्ष

भारतीय दशन में मोक्ष का अर्थ जीवात्मा का शारीरिक बंधन में मुक्त होकर ब्रह्म में विलीन हो जाना अर्थात् आत्म-मायाकार वरना हा मा है। मोक्ष के माग की सबसे बड़ी बाधा सासारिक मोक्ष है। यह मा इतना प्रबल है कि मनुष्य वासनाभा में डूबा हुआ अपने वास्तविक स्वरूप को कभी भी जान नहीं पाता है।^{१८५} मोक्ष से निवृत्ति पाने के लिए हरिऔधजी ने आत्म त्याग की बात कही है। आत्म-त्याग की भावना का विकास तभी सम्भव है जब यकिन सम्पूर्ण विश्व में विश्वात्मा का दशन करता हुआ सबभूतहित के लिये में निरत रहे। वास्तव में हरिऔधजी ने जीवन का चरम उद्देश्य मा है नहा वरन तान हित माना है। अन्त में मोक्ष प्राप्ति का अर्थ ब्रह्म का साक्षात्कार ही ता है। प्रियप्रवासकार ने उस ब्रह्म दशन के लिए चोक हित को ही सर्वोत्तम माग माना है। प्रियप्रवास में चोक हित की भावना को जावन की सत्रम महत्त्वपूर्ण सिद्धि के रूप में स्वीकृत किया गया है।

भक्ति साधना

प्रियप्रवास में निष्काम भक्ति को सर्वप्रथम कहा गया है

शास्त्रा में है लिखित प्रभु की भक्ति निष्काम जो है

मो निव्या है मनुज तन की सब समुसिद्धिया स।^{१८६}

निष्काम भक्ति द्वारा ही मनुष्य जगत के जीवन और प्राणिया के वास्तविक स्वरूप को पञ्चान सकता है। भक्ति ही माता पिता गुरु एव प्रियजना के कथान-साधन की प्रेरणा जाग्रत करती है।^{१८७}

^{१८४} डा विशम्भरनाथ उपाध्याय हिन्दी साहित्य की दारानिक दृष्टभूमि पृ० ११३

^{१८५} प्रियप्रवास पौडश मग छन्द ६३

^{१८६} वही छन्द ११३

^{१८७} वही छन्द ११४

प्रियप्रवासकार न भक्ति का परम्परित स्वरूप प्रतिपादित न करके उसकी युगानुग व्याख्या प्रस्तुत की है। शास्त्रों में श्रवण कौतुक बदन दामता स्मरण आत्मनिवेदन अचना सत्य भाव एवं पदसवन भक्ति के नव प्रकार बड़े गये हैं। किन्तु प्रियप्रवासकार न किसी कल्पित शिवर की मूर्ति बनाकर उसकी वन्दना अचना आदि को भक्ति नहीं माना है। उसका अनुसार सम्पूर्ण जगत का प्राणिमात्र ही विश्वात्मा व्याप्त है। ऐसा स्थिति में उसी की यत्न सम्मानपूर्वक सवास्था करना सर्वोत्तम भक्ति है।^{१८८} उदाहरण के लिए, भक्ति के अचना रूप का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि

सत्सत्ता का शरण मधुरा शान्ति सतापिता का
निर्वोधा को मुमति विविधा औपधी पीडिता को
पानी दना तृपित जन का जग भूषे नरा का
सर्वोत्तम भक्ति अति रुचिरा अचना सत्ता है।^{१८९}

तबधा भक्ति की तबीन कल्पना प्रियप्रवास की एक महत्त्वपूर्ण उपार्ति है। षोडश गण में कवि न भक्ति-ज्ञान का उत्तार यावहागिक एवं युगानुग निरूपण किया है जो मानव-जीवन के मंगल विधान की दृष्टि से उत्तम महत्त्वपूर्ण है।

विश्वबन्धुत्व की भावना

विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास मानवनावादा जावन-ज्ञान की विशेषता है। विश्व का महान् स मगान् दागनिका एवं दगनशास्त्रा का अन्तिम उद्देश्य मानव का कल्याण और जगत हित ही रहा है। प्रियप्रवास का दार्शनिक विचारधारणा का अन्तिम परिणति विश्वबन्धुत्व की भावना का स्थापित करने में ही हुई है। प्रियप्रवासकार न कृष्ण और राधा के चरित्रों को इसी भावना के अनुरूप विकसित किया है। यत्ना पात्र कुटुम्ब जाति समाज और वर्ग की मरुचिन सीमाओं से निकलकर सबभूत हित एवं लाभ कल्याण में अपने जावन का समर्पित कर देते हैं। राधा की भावनाओं का इनका उत्साहकरण हुआ है कि वह अपने स्वार्थों और शिवा का भूलकर यत्ना कायना करती है कि— प्यार जाव जग हित कर रहूँ चाहे न आवें।

विश्वबन्धुत्व नाम की प्राप्ति के लिए कवि न निरवाम कम सात्त्विक जीवन परमाद्य एवं आत्म-त्याग का श्रेयस साधना के रूप में निरूपित किया

^{१८८} प्रियप्रवास, षोडश गण छन्द ११७

^{१८९} वही, छन्द १४

है। यमुधव कुटुम्बकम् का आन्ध्र भारतीय जीवन ऽशन का प्राचीनतम उपपत्ति रही है। प्रियप्रवासवार ने इस आन्ध्र का ध्यावत्कारिक रूप स चरिताथ किया है।

इस प्रकार प्रियप्रवास की दार्शनिक पृष्ठभूमि का निर्माण नवीन एवं प्राचीन भारतीय एवं विश्वजनीन दार्शनिक मायताआ द्वारा हुआ है। प्रिय प्रवास स भारतीय संस्कृति एवं मानवतावादी जीवन ऽशन की बह महत् भूमिका प्रतिष्ठित की गया है जिम पर आसीन हाकर मानव जाति कल्याण एवं अम्मुत्थ व पय परअसर हा सकती है। निष्कष रूप स प्रियप्रवास का महत् उद्देश्य महत्त्वपूर्ण जीवन सद्दश सांस्कृतिक उत्तयन एवं नाक हित की भावना स सम्पृक्त जीवन ऽशन निश्चय ही उस महाकाव्य व साथ साथ महान् काव्य भी बनात है।

साकेत

साकेत

कथासार

साकेत महाकाव्य का रचना १२ सर्गों में हुई है। साकेत का प्रथम सर्ग का समारम्भ सरस्वती बहना से होता है। साकेत नगरी (अयोध्या) का वर्णन करता हुआ कवि लक्ष्मण उर्मिला का प्रमानाप और वागवनाद की सुन्दर झाना देता है। यहाँ दाना के वासानाप से राम का राज्याभिषेक का सूचना मिलता है जिसकी पुरवासी बनीं राम एवं उत्साह से तयारा कर रहूँ है। अन्तिय सर्ग में मन्थरा नाम का दासा ककयी के पास जाकर महाराजा दशरथ के विपरीत कुमत्रणा देता है कि भरत की अनुपस्थिति में राम का अभिषेक हो रहा है। रानी के मन में यह बात पण्य हो जानी है कि— भरत से मुन पर भी सन्तु बुलाया तक न उस जा गूँ। ककयी कुपित हो राजा दशरथ से पूर्वमचिन दो बरदान माँग लेती है जिसमें भरत का राज्य तथा राम का चौदह वर्षों का वनवास। मन्थरा प्रतिन दशरथ पुत्र विग्रह का वरपना में मूर्च्छित हो जात है। तृतीय सर्ग में राम पितृ-वन्दना के लिए प्रातः जब आत है तो दशरथजा का रक्षा का दण्डकर माता ककयी से सत्र वस्तान्त मुनकर वन गमन का उद्यत हो जात है। लक्ष्मण आवश्यक में आवर ककयी के प्रति अपशन्त तक कह जात है। राम सन्त वज्रित करत है। चतुर्थ सर्ग में राम माता कौशल्या से वन गमन की आज्ञा सत है। मुमित्रा लक्ष्मण का भा राम के साथ वन जान में गौश्वान्वित मानता है। साता भी बहूँ सममान-बुझान के उपरान्त राम के साथ हो वन जान में अपना वनध्य-वम और पतिव्रत धर्म मानती है किन्तु उर्मिला लक्ष्मण के माग का बाधा न वन विग्रह वन्दना और शाव भाग का पा जाना है। उमका स्थिति बनी करण और दारण है। पंचम सर्ग में मुन वसिष्ठ तब प्रजापतिना से विना ग राम लक्ष्मण और जनकनन्दिनी सीता वन-गमन के लिए प्रस्थान करत है। पहला रात्रि के तमसा नन्दी के तट पर विनात है। फिर वृषवरपूर में गृहराज से भितकर गगा तट पहुँचत हैं। यना के मुखत्र का गदेन से विना करत है। गगा पार कर भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचत हैं। फिर प्रयाग में भारद्वाज से विना हो चित्रकूट आत है जहाँ लक्ष्मण निवास

के लिए पणकुटी बनाते हैं। पण सग म राम माता के विरह म राजा शशरथ कौशल्या ममित्रा उर्मिना जाति शोभ गिभु म डर हुए हैं। उमा समय मुमत्र खानी रथ न आते हैं। राम ता न योग दग महाराज शशरथ प्राण त्याग दते हैं। भाषण हाताहार मच जाता है। मन्मथुनि यज्ञिष्ठ सभा को सात्वना देकर भरत को ननिहाय स युवान के लिए दूता का भजते हैं। सप्तम सग म भरत शत्रघ्न ननिगान स अयाध्या आते हैं। पितृ निघन स व "याकुन हो जाते हैं फिर राम सीता लक्ष्मण का वन गमन मुन हतचनन हा जाते हैं। ककया स स्वन्तु गार्ग्यासहासन का बाग मुनगर उसे ही वासन है। गुरु की आज्ञा स पिता का दाह मस्कार कर राम को वन स नोटान के लिए सावेत के जन समूह सहित चित्रकूट प्रस्थान करत है। गुरु आदि के अत्यधिक कहन पर भी वे अयाध्या का राय म्बीकार नहा करत। अष्टम सग म सीता राम के सानत सामा चित्रकूट निवास का वणन है। साता के लिए पणकुटा राजभवन है। भरत साकनवामिया सहित चित्रकूट पहुचते हैं। लक्ष्मण दूरस्थ माताति का दखकर उनका कुटिन मति पर ब्राधित होते हैं। राम के समजान पर चुप रहते हैं। जन्म म भरत के भ्रातृ प्रेम को दख स्तभित और सन्वुचित हा जाते हैं। यर्ग मवका मिलन होता है। ककया अपन पूव कृत्य पर पश्चात्ताप कर क्षमायाचना करता है। भरत सहित सभा राम स अयोध्या नोटने का अनुनय विनय जोर आग्रह करत है किन्तु राम सभी का मसनह समथा दुशाकर दढ प्रतिग रहते हैं। भरत राम की चरण पादुकाए लेकर सबक रूप म राय का देखरख के लिए राम का आज्ञा शिरोधाय करत हैं। यही साता के बानुय से पणकुटी म लक्ष्मण-उर्मिना की क्षणिक एकांत भेंट हा जाता है। नवम सग म उर्मिना की विरह वेदना की भावपूण और तलस्पर्शी यजना है। विरह की सभी दशाआ का मार्मिक वणन है। दशम सग म उर्मिना मरघु को अपना सखी मानकर स्मृति रूप म बीती हुई घटनाआ— स्वजन्म रघुकुन वभव सीता स्वयवर आदि—का वणन करती है। एकादश सग म प्रथम ती भरत और माणवा के तपस्वा जीवन का चित्र है तत्पश्चान लक्ष्मण के मूर्च्छित हान पर हनुमानजी जो सजीवनी वृटी लेन जा रहे थे भरत के बाण स गिर पतते हैं। सचत हानर के भरतजी को दण्डकारण्यूम मारीच आदि के वध साताहरण राम सुग्राव मत्री तवाहन विभीषण भेंट कुम्भवरण वर लक्ष्मण मघनाथ युद्ध और लक्ष्मण को शक्ति तगने तक की ममस्त घटनाआ का विवरण दते हैं। सजीवना भरतजी स हा लेकर तत्पारान्त चर जाते हैं। द्वात्रिंश सग म साताहरण एव लक्ष्मण शक्ति का

समाचार सुन साकेतवासी रावण के विरुद्ध युद्ध के लिए सम्रद्ध हो जाते हैं। उर्मिला का नारीत्व भाव जागता है। वह स्वयं युद्धाद्यतन में जाता है। तभी वशिष्ठ मुनि अपने योगबल से तथा दिव्य दृष्टि प्रदान कर तका के राम रावण युद्ध का दृश्य दिखाते हैं जिसमें राम विजयी होते हैं। तब गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से सब साकंतवासियों सरयू स्नान कर लाते जाते हैं। फिर वह दिन जाता है जब श्री राम सीता लक्ष्मण मुग्रीव विभीषण सहित अयोध्या लौटते हैं। भरत राम का स्नह मिलने तथा लक्ष्मण उर्मिला के भाव मिलने के साथ साकेत राज्य का क्यावस्तु समाप्त होता है।

कथानक समीक्षा

कथानक आधार

साकंत महाकाव्य का वस्तु विद्याम सुप्रसिद्ध रामकथा के आधार पर हुआ है। कृष्ण की भाँति राम भी भारतीय जन-जीवन के आराध्य और उपाम्यन्त्र रहते हैं। राम का चरित्र साहित्यकाव्य की मृजत प्रेरणा के लिए अत्रिस्त स्रोत रहा है। रामकथा पर संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और हिन्दी भाषा में विपुल साहित्य मृजत हुआ। विभिन्न धर्म सम्प्रदायों और दशा के साहित्य में रामकथा का स्वरूप प्राप्य है। हिन्दी में रामकाव्य की मुनीष और समृद्ध परम्परा वर्तमान है। साकंत के पूर्व हिन्दी में रामकथा का लकर तुलसीदास रामचरित मानस जिस अमर ग्रन्थ का मृजत हो चुका है। साकंतकार ने भी उसी राम कथा रूपी प्रख्यात वस्तु को अपने महाकाव्य का माध्यम बनाया है। किन्तु कथा चयन में परम्परा विनियोजित होते हुए भी श्री श्री विनाशरण गुप्त ने मौनिक प्रसंगाद्भावनाएँ की हैं जो कवि का कल्पनाशक्ति एवं काव्यकौशल का परिचायक है।

रामकथा के पौराणिक स्रोतों का विकास

रामकथा की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में पश्चात्य और पौराणिक विद्वानों के विभिन्न विभिन्न मत हैं। डा० बबर ने रामकथा का आदि स्रोत बौद्ध दशरथजानक को माना है जब कि श्री एच० यादवी एवं ए० ए० मकडानत ने रामकथा का स्रोत में उद्भूत कहा है। ई० हापकिंस और डॉ० वानरग ने आदि विद्वानों रामकथा का आधार ब्रह्म आश्विनाना का हो मानते हैं। स्वर्णा विद्वानों में श्री भन्नाभानन्त कौण्ट्यायन का मत है कि रामायण सत्यन का आधार जानक कथा है। श्री आर० जी० भण्णारकर का मत है कि रामायण का स्रोत पतञ्जलि के स्रोत हुए हागा क्योंकि उनका महाकाव्य में राम का नाम नहीं आया है।

की कथा आयी भी है किन्तु साकेतवार की राम क प्रति अट्ट निष्ठा और आराध्य भाव के कारण रामभीता की कथा भी माय माय पनी है । साकेत का कवि राम का अनन्य उपासक है । मगलिन उमन रामकथा का आराध्यत्व की गाथा के रूप म प्रथमतः स्वाकार किया है^६ और उमिता क चित्रण क तिम द्वितीयत । इगवे अनिरिवन रामभवन होन क कारण रामकथा म भी कवि की पून्य भावना कायरन रनी है जिमक कारण कवि न रामकथा म मौनिकता जान या उमिता क चरित्र को उभाग्न क तिम कहा भी कथानक का खव नग किया है । उनकी स्वय की धारणा यह है कि— किमी कथानक म आवश्यकतानुमार फेरफार करन का अधिकार कविया का है पर जाण का विवृत करन का अधिकार तिमि को नग ।^७ कथा के विषय म इग जाणशो मुख ःष्टिकाण क कारण गुप्तजी उमिता की कथा को किमा अयधिव नवान रूप म प्रस्तुत न कर सक । दूगर शण म उमिता क कथावत्त का परिवल्पना रामकथा के परम्परित स्वरूप म बहत मुक्त न हा सकी । उमिता का वन विधान कवि का अपना हाने हूग भी रूप है उमम कवि-कपता का उमुक्त विनाम ननी है । आचाय नःट्टुतारे वाजपयी के शण म— य शास्त्रीय जीर एतिहासिक परम्परा पावन साकेत के लिए हानिकारक ही हो गय । मधिनीशरणजा का इतिहास पुराण आदि की अपेक्षा ःस अवसर पर अपनी कल्पनाशक्ति की याति जगानी थी । पर यहीं भी उहान ःति शृमन्ताग नहा ताडा । फनत उह साकेत म चित्र के दो पहनू (रामवत्त और नधमण उमिता प्रमाख्यान) लिखाकर महावाय का अग निर्माण करना पन ।^८ साकेत का कथा के दो पहनुआ न साकेत समानोचका का भी भ्रम म डान दिया है । प्रो त्रिलोन पाण्डय तो कहते है कि— असल म साकेत रामकथा है ही नहा । आरम्भ वणन उद्श्य किमी भी दष्टि स नहा है । मूल क प्रधान कथा है नधमण उमिता क जीवन की ।^९ इम मव विवेचन स हम इम निष्प पर पहुचत है कि

^६ राम तुम्हारा वत्त स्वय ही काय है ।
कार कवि बन जाय सहज सभाव्य है ।

—साकेत—(मुख पृष्ठ)

^७ माकन मधुसूदनःट्ट कृत मेघनाथ वध (कायानुवाः) गुप्तजी द्वारा त्रिनाय सम्करण पृ० ७२

^८ आचाय नःट्टुतारे वाजपयी हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी पृ० ५३

^९ प्रा० त्रिनाचन पाण्डय साकेत दशन पृ० ७

- १ साकेत-मृजन की मूल प्रेरणा उर्मिला का चरित्र निर्देशन हात हुए भा
कवि का लक्ष्य आराध्यत्व की गुणगाथा भी रहा है ।
- २ साकेत की रामकथा और उर्मिला-लक्ष्मण कथा साथ-साथ चलती है ।
राय का नृत्ति स उर्मिला लक्ष्मण की कथा ही प्रमुख है किन्तु वणन
और विधान की नृत्ति स अधिकारिक और प्रायगिज कहना
सुचित है ।
- ३ राम क प्रति जनय निष्ठा वाच्यकता और कल्पता की नृत्ति स
उर्मिला की चरित्र यजना स साधक भिन्न नहीं है ।
- ४ यह उर्मिला की कथा हान पर भी रामकाय है ।^१

साकन्त की कथा रामायणी और पौराणिक हात हुए नी गुप्तजी द्वारा मवधा
नवान एव मौलिक नृत्त स प्रस्तुत हुई है । कथाकि साकन्त क प्रत्यक्ष शिल्प स
प्राचीन महाकाव्या का इतिवत्तात्मक गती का अनुसरण नहीं किया गया
है ।^{११} गुप्तजी न साकन्त का समाग्रम्भ वाच्यीक और तुलसी क काव्या का
भानि वणनामक ढग स नही किया है । उक्तान लक्ष्मण उर्मिला प्रमाताप स
कथात्मक प्रारम्भ किया है जा नाटकाय एव नवीन है । कथात्मक मयोजन
स भी गुप्तजी न मौखिक प्रसगाद्भावनाए का है । व इम प्रकार है

- १ लक्ष्मण उर्मिला क प्रेम जावन की समस्त कथा ।
- २ कथा का चरित्राकन मनावनातिक ढग स ।
- ३ नवम सग स उर्मिला का विरह निवृत्तन ।
- ४ साकेतपुरा की ही समस्त रामकथा का मगम-स्थान म्वा ह । इसा
मदभ स हनुमानजा का मजावना पृष्ठा भी भरतजा के पाम स नी
प्राप्त हा जाती है ।
- ५ लक्ष्मण शक्ति और राम रावण युद्ध समाचार मुनरर समस्त साकन्त
समाज का सगाद्यत हाना तथा उर्मिला का चारत्व ।
- ६ वशिष्ठाजी का याग शक्ति के द्वारा अयाच्यावामिया का राम रावण
युद्ध का नृत्त सिगाना ।

शास्त्रीय विवेचन

साकन्त की कथा महाकाव्याचिन गरिमा स पूण है । कथाकि व इतिहास
पुराण प्रमूत अयान् प्रख्यात है । कथानक स कायाचिनि और प्रभावाचिनि
गाना है । यद्यपि कथा क ली पञ्चुआ क वाग्ण साकन्त स काय का दैव

^१ हा० नग साकेत एक अध्यायन

^{११} वही पृ० ६

सर्वांगन सात की कथा यात्रा सफल ही कही जायगी । कवि न राम कथा का गुमीन आवश्यताभा के अनुगार गांस्टुतिर पत्रियन प्रमन किया है । राम-कथा की उपक्षिता उमिता पर काव्य रचना कर हिन्दा प्रपचकाव्य परम्परा को भी विरसिता किया कयानि जाग चलकर राम-कथा क जनर उपक्षित पात्रा पर प्रवच्य रचना दुर् जम वानवृष्ण शमा गवीन कृत उमिता वनदव प्रसाद कृत सावंत सात (भरत) आन् । २० पाठा न शब्दा म—
 भारत का वस्तु चिल्प नया और साहित्यिक प्राप्ति का परिचायक है । २१

चरित्र विश्लेषण

प्रियप्रवास की भांति साकेत भी चरित्र प्रधान काव्य है । २२ यद्यपि गुप्तजा न सावंत म कथाचयन-बीशन का परिचय कथानक की मौनिक प्रमगाद् भावनाभा प्रस्तुतिकरण एव घटनाविति के द्वारा किया है किन्तु सावंत क सक्षिप्त कथानक का विस्तार घटनाभा क घटित रूप म न हारर पात्रा क चरित्र विश्लेषण द्वारा कथित रूप म ही अधिव हुआ है । इसलिये सावंत का घटना प्रधान काव्य न कहकर चरित्र प्रधान काव्य कहना ही अधिन समाचीन है । २३ वस्तुतः सावंत चरित्र प्रधान कथा मृष्टि है । कथा विकास ता उसका पृष्ठाधार मात्र है । २४ सावंत की चरित्र मृष्टि का आधार राम-कथा क ही नाकप्रसिद्ध पौराणिक पात्र म । सावंतकार क चरित्र चित्रण-बीशल का परिचय इस वात म मिलता है कि उसन दबा और राजवशीय पात्रा के दवत्त और कौनिय का प्रमानन करवे उन् मानवीय धरानन पर प्रस्तुत किया है । कवन राम का चरित्र एक सीमा तक इस कथन का अपवात् ही सकता है । राम कवि क आराध्य देव हैं अतः उनक चरित्र को वे सामान्य मानव की कोटि तक चित्रित नहीं कर सकत व । इसीलिए राम के चरित्र म दबी गुणा का हा प्राधाय है फिर भी राम चरित्र का अमाधारण एव आदर्श रूप कवि की आराध्य देव के प्रति पूज्य भावना का ही परिणाम है । अय सभी पात्रा के चरित्र विवेचन म कवि न प्रमगानुकून अधानवीय एव मानवीय गुणा की प्रतिष्ठा की है । साकेत की चरित्र योजना म राम-कथा के सभी

२१ डा० कमलाकांत पाठक मधिलीशरण गुप्त व्यक्ति और काव्य पृ ४२०
 २२ डा० नगम साकेत एक अध्ययन पृ० १०२
 २३ ए० द्वारिकाप्रसाद साकेत मे काव्य सस्कृति और वसान पृ० १३६
 २४ डा० कमलाकांत पाठक मधिलीशरण गुप्त व्यक्ति और काव्य, प ४४३

पात्र किमौन किमी रूप म आ गय है । इतम महत्व की दृष्टि स उमिता लक्ष्मण राम, सीता भरत ककेयी और अश्वत्थ एव जय पात्रा म कौशल्या मुमिता माण्डवी मन्तरा रावण एव हनुमानाणि उल्लेखनाय है ।

उमिता—साकेत महाकाव्य का मर्म महत्त्वपूर्ण पात्र उमिता है । वहा एम काव्य का नायिका है । साकेत का मृजत प्रणय क मून म कायापथिता उमिता का हा चरित्र चित्रण ह । साकेत का सम्पूर्ण कथा की गति प्रसार एव सवहन म उमिता का महत्त्वपूर्ण स्थान है । २० नगत्र का मत है कि चरित्र प्रधान काव्य का सफलता क निण यत्र बाधित है कि उमक मभा पात्र मुख्य पात्र क चरित्र पर ध्यान प्रतिधान द्वारा प्रभात पात्र तथा कभा परिस्थिति नीर कभा पृष्ठभूमि क रूप म उपस्थित पाकर उमका प्रकाश म नाये ।^{२५} इस दृष्टि स साकेत का चरित्र चित्रण पूणत सफल कहा जायगा । उमक मभा पात्र प्रत्यक्ष या पराग रूप म उमिता क चरित्र विकास म सम्बन्धित है । उमिता क सम्पूर्ण चरित्र का अध्ययन तीन रूप म किया जा सकता है

१ आरम्भिक जिसम हम उम नव-परिणिता राजवधू एव आत्मा गृहिणा क रूप म पाते ह ।

२ उमिता क चरित्र का द्वितीय रूप विरहिणा का है ।

३ तृतीय सवगुणसम्पन्न आत्मा नारा ।

साकेत क प्रथम मग म ही हम उमिता क दान जान है जहाँ उस अनिष्ट-मौल्यसाधिता निय गुणसम्पन्न नव परिणिता राजवधू क रूप म कवि न प्रस्तुत किया है । गुप्तज्ञान मूर्तिमता तथा मजाव सुवर्ण का नयी प्रतिमा विधि क हाथा ढकी कल्प मित्या का कथा कहकर उमिता का मनागम स्थावृति का चित्र अंकित किया है ।^{२६} उमिता का कवि न म्यग का मुमन कहकर सम्मानित किया है

स्वर्ण का यह मुमन धरता पर गिता,

नाम है इसका उचित हा उमिता ।^{२७}

इसी मग म लक्ष्मण-उमिता का पारम्परिक हास्य विता चित्रित है जिसम उमिता की परिहासवत्ति आश कन्नात्व एव शब्द गम्भीर प्रेम का परिचय मितता है । उमिता का म्मणा हृदय आद्धान उन्माह और उमगा म भरा है । वह चित्रकलाप्रवीण वाक्यरत्न विनयनात और पति का स्वरूप म वर्ण

२५ डॉ० नगत्र साकेत एक अध्ययन पृ० १००

२६ साकेत, भा १ पृ० २६

२७ वही पृ० ०८

करन वाली रमणी है।^{२८} उमिता का हास्य-प्रसंग विनाशकारी एवं पति परायणता के साथ स्वाभाविक मोक्ष प्रथम सग म ही पाठक के हृदयपरत पर उमके व्यक्तित्व की अमिट रूप छवि अंकित करती है।

राम के राधाभिषेक की चर्चा नरमण के बाद प्रिय रिज आय का अभिषेक है मत्र कहा आनन्द का अतिरक्त है^{२९} मत्र वाक्य म रा मित जाती है। त्रितीय सग म हा मधरा की मुमंत्रणा से कवर्यी मरा राम के वन गमन का वरदान माँगना उमिता के जीवन का मत्रम वरा अभिषाण बन जाता है। नरमण राम के साथ वन जान को उद्यत हा जान है। गीता भी पति के साथ जाती है किन्तु उमिता अपन पति के साथ वन जान का आग्रह न कर अपन मन्तृ धय एवं त्याग का परिचय देती है। उमिता अपन मन का प्रिय पथ का विघ्न नहीं बनने देती। वह अपन स्वाध का त्याग कर अनुराग का विराग पर वनि दे देती है। वह अपन मन को विकार एवं शोक भार म भी चण नहा होने देना चाहता

कहा उमिता न—ह मन ।
तू प्रिय पथ का विघ्न न बन
आज स्वाध है त्याग भरा
हा अनुराग विराग भरा
तू विकार से पूण न रा
गात्र भार से चूण न हा।^३

उमिता के इस कथन म वरा विचित्र मनावनातिर सधय है। यकी उमके प्रम और वक्तव्य की कसौटी बनता है। यहाँ हम उमिता को त्यागमयी देवी के रूप म पाते हैं। पति वियोग की वेदना म वह लावण्यमूर्ति उमिता कुम्भनाभ रता के ममान कुशकाया वाली मुखरान्ति एवं जगन्त नीनी और्वे त्रिये मूर्च्छित मोन पडी लिखाया देती है।^{३१} उमिता की दशा बभी दयनीय हो जाती है। दशरथ का उसे रघुकुन की अस्याय बहू^{३२} कहना उचित ही है। उमिता का चरित्र करुणा की सा तात् प्रतिमा बन जाता है और उमकी

^{२८} साकेत पृ० ३

^{२९} वही पृ० ३३

^३ वही, सग ४ पृ ११

^{३१} वही सग ६ पृ० १६० ६१

^{३२} वही सग ६ पृ० १६८

विरह वदना क उच्छवास नवम सग क छत्रा म करुणा का सात बनकर फूट पन्त है। सावन का नवम सग उमिता क विरह विपात् का चरम निशाना है। प्रिय क वियाग म जम्बु अबनि जम्बर म स्वच्छ गत का पुनात स्वच्छ ब्राह्म जवधि पित्त-पाडा मा हा जाता ह।^{३३} नाग गग हा जात है और उमक हृत्प का विरहाग्नि तालबन् स घघक उटना ह। प्रिय क वियाग म वह उपवन का बन बनाता है कुन बलक का अधुन स घानी है * तथा अपन मन मन्त्रि म प्रिय का प्रतिमा स्थापित कर सम्पूर्ण भागा का त्याग कर अपना जावन मागमय बना लता ह

मानम मन्त्रि म सना पति की प्रतिमा आप
जानी या उस विरह म बना जरता आप
जाता म प्रिय मूर्ति थी भूत थ सन भाग
हुआ योग स भा अधिक उमका विपम वियाग। *

स्वामा क ध्यान म वह आत्मविस्मृत मा हा जाता ह। काम वामना म वह पान्ति नहा वरन कामदेव को शिव क कृताय नम्र क सदृश्य अपना मि दूर बिन्दु शिवाकर भयभात कर देता है। वह प्रापित पतिकाजा क दुःख म सम दुःखिना भा होना चाहता है।^{३४} वह विरह क माव अभिमान भा स्वीकार करता है। विरह म भा उस वात मान का विचार रहता ह।^{३७} प्रकृति क उपासना क प्रति उमिता क मन म जय भी जाउपण है विनृपणा नहा। गूरुताम को विरहिणा गापिकाजा का भाति वह यत् नहा कन्ता कि मधुवन तुम बन रहत हर।

विरह विमाग श्याम गुत्तर क टात् कत न जर ॥

वरन् उमिता मभा क्रतुआ का स्वाग्न करना है

हमा हसो ह शशि पुत्र पुता।

हमा हिदार पर बट क्षुता।

यधष्ट मे रात्त क निण हें।

मठा नगा हूँ इतना पिय हूँ।^{३८}

३३ सावत गग ८ पृ० ३००

३४ वहा पृ० ५६८

३५ वही पृ० ६६

३६ वही, पृ० ७५

३७ वही पृ० १८०

३८ वही, पृ० २६६

यहां रहा अपन दश की दशा और उपज न बार म उमिता शत्रुण स समय समय पर पूछती है। विरह का अंगि म तपरा उमिता प्रम की मात्वि मूनि घन जाती है। विरह की कठार परिस्थितिया म भी उगवा यही विश्वास है कि— प्रम की हा जय जीवन म यही आता है मग म म।^{३६} हृदय की उतारता और मवत्नशीलता हा उमिता क चरित्र का ऊचा उटाती है।

उमिता क चरित्र का तृतीय पक्ष वत् है जब म उस अत्यय विश्वास स पूरित वीर क्षत्राणी के रूप म पात है। शत्रुण का शक्ति तगा का समाचार पाकर उमिता क्षत्राणा वश म जाकर शत्रुण क समाप उपस्थित हा गयी। वह कातिरय क निकट भवाना^६ तग रही था। उमके आनन पर सी अरुणा का तज फूट रहा था। उमक माथ का सि दूर सजग जगार सदृश्य था।^{४१} उमक दायें कर म विण्ट शून था और वह गजना कर रही थी कि

धारो घन का आज ध्यान म भी मन नाआ
जात हा तो मान हतु ही तुम सब जाआ।
× × ×
विध्य हिमानय भान भना सब जाय न घीरा
चत्त मूय कुल-कीर्ति कला रक जाय न धीरा।
× × ×
ठहरा यह मैं चतू कीर्ति सा जाग आग
भागें अपन विषम कम फन अधम जभाग।^{४२}

उमिता क उक्त कथन म कितना प्राणवान उद्बाधन है। दश प्रम का ज्वाना है परात्रम और साहस का जन्मत वग है। शत्रुण क इस कथन पर कि

क्या हम सब मर गय हाय जा तुम जाती हो।

वह वीरा क पाव धान को हा जाना चात्नी है जिसम उसकी सवा भावना लतयता है। विद्योगिनी उमिता का ओजमयी वीर क्षत्राणी एव सेवा भाव पूरित नाग का यह स्वरूप ही शत्रुणनीय है। वसीनिए अन्त म भी राम का उमिता की गण गीता गानी पत्ता

^३ साकेत पृ० २४

^४ वही मग १२ पृ ४७

^{४१} वही पृ ४७३

^{४२} वही पृ० ४७४ ७५

तून तो मह घमचारिणी क भी उपर
घम स्थापन किया भाग्यशानिना इस भू पर । ४३

अन्न म प्राणप्रिय लग्नमण स मितकर वह मही कहना ह कि
'स्वामी स्वामी जन्म जन्म के स्वामी मर । ४४

वासुदेव म उमिता का लौकिक चरित्र स्वर्गिक गुणा स सम्पन्न ह । उसक
चरित्र म नारा स्वभाव की दुःखताएँ भा हैं और जातिगत विशेषताएँ भा ।
उमिता क चरित्र का विकास परिस्थितिजन्य सम्भों म हुआ ह । उसक
व्यक्तित्व म एक बार रूप का आरोपण एव शीतसौजय का सम्माहन
है ता दूसरा बार साहम शीय स्वाभिमान एव स्वदेश प्रेम का गौरव
भा है । वह विरहिणा है किन्तु वनव्यनिष्ठ एव सद्यमशील । यद्यपि
विरहिणा का लकर हिन्ता क समाशवा म उमन चारित्रिक औत्स के सम्बन्ध
म पयाप्त मतभेद है किन्तु उमिता क मण्डि चरित्र का अनुशीलन यह
स्वीकार करने का वाय करता है कि हिन्ता काय जगत की वह अद्भुत
चरित्र सृष्टि है । काय की य चिर उपेक्षिता साकत म हा नता हिन्ता
महाकाया की चरित्र भूमि म प्रथम बार जिस वष म प्रकट हाता है वह वष
अशुविगन्ति हाकर भी भाजमय आश प्रदान होकर भी स्वाभाविकता क
निरट एव दक्षी गुणा स मण्डि हाकर भा नारा सुनभ ह । ४५ डा० सत्यद
न उमिता के चरित्र का सुनना नियन्त्रिण स वस्त हुए सिखा है— उमिता
पर म जनय गय उस आगापून दिव्य नीपशिता का भानि प्रबन्धित है
जा दूरदेशगामा पुण्या का प्रदान प्रदान करने का कामना का प्रदान ह ।
उमिता म जितना राना है उतना हा गाना है जितनी अवच्छ है उतना हा
मुक्त है जितनी छिपी है उतना ही गना है । फिर भा उसम बार रमणात्व
ता एक जनीरिण दापित उपस्थित कर दा है । उमिता का दापक घट घट म
जनया जा मक्ता है । ४६ अस प्रकार उमिता क चरित्र म महाकाय्य क
नायकत्व प क निर्वा की पूण क्षमता है ।

साकत का नायकत्व—काव्यशास्त्राय दधि स साकत क नायकत्व का
प्रश्न कुछ उलझा हुआ है । साकत के समीपक जहाँ उमिता का एकमेव स

४३ साकत पृ० ४६५

४४ वही, पृ० ५००

४५ डॉ० श्यामसुन्दर घ्यास हिन्दी महाकाव्यों म नारा चित्रण, पृ० १०६

४६ डॉ० सत्यद सुप्तजी की कता पृ० १५० २५

नायिका स्वीकार करत है यही नायक व सम्बन्ध में भी उनमें माध्य नहीं। आचार्य नन्दलाल वाजपयी भरोषे नायक मानते हैं।^{४७} प्रा० त्रिलोचन पाण्डेय^{४८} और विश्वम्भर मानव^{४९} व अनुगार राम साकेत व नायक हैं।

✓ डा० प्रतिपानसिंह व अनुगार लक्ष्मण इस (साकेत) काव्य व नायक हैं।^{५०}
डा कमलाकांत पाठक के मतानुसार— मैं समझता हूँ साकेत व नायक लक्ष्मण है। यद्यपि लक्ष्मण सत्त्व राम व पार्श्वधर्मी रह अग्रधान रह पर साकेत की कथावस्तु के क्षेत्र में भी है। प्राणाय की दृष्टि से वास्तविक नायकत्व उर्मिला का है और औपचारिक नायकत्व लक्ष्मण का।^{५१} गिरिजान्त शुक व गिरिश व अनुगार— साकेतकार न लक्ष्मण का साकेत का नायक तो बनाया है किन्तु साथ ही पग-पग पर उन्हें रामचन्द्रजी का जाति बना दिया है।^{५२} डा श्यामनन्द विशार न लक्ष्मण व तिला है कि— नायक के गुणों का विस्तार व न ता पूणत उर्मिला में कर सके हैं न लक्ष्मण में और न राम में वर उद्देश्य व जाति में नायकत्व उत्पन्न कर रहे गया है।^{५३} वास्तव में साकेत में नायकत्व की समस्या उत्पन्न इसलिये हुई कि एक जोर साकेतकार राम के प्रति अपनी पूज्य भावना व कारण उह काव्य में सर्वोपरि स्थान देने से बचिन नहा रख सका और दूसरा आर उर्मिलापति व रूप में लक्ष्मण का नवीन रूप में उभारने तथा मुख्य कथा संचालक की स्थिति प्रदान करने का लोभ सबरण भी नहीं कर सका। साकेत की रगस्थली पर लक्ष्मण जोर उर्मिला काव्यारम्भ से प्रविष्ट होते हैं और कायान्त भी उही व सवाला से होता है। सम्पूर्ण कथा की संचालन विधि में लक्ष्मण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः साकेत व नायक लक्ष्मण और नायिका उर्मिला सिद्ध हात है।

लक्ष्मण—साकेत में लक्ष्मण का चरित्र परम्परित रामकाव्य का अपक्षा अधिक उन्नत बन पाया है। काव्यारम्भ में लक्ष्मण सुकुमार प्रवृत्ति व विना प्रिय एक नित नायक व रूप में हमारे सामने आते हैं। उर्मिला के साथ

^{४७} नन्दलाल वाजपयी आधुनिक साहित्य पृ० ६८

^{४८} त्रिलोचन पाण्डेय साकेत दशम पृ० ६५

^{४९} विश्वम्भर मानव खड़ी बोली के गौरव ग्रन्थ

^{५०} डा प्रतिपानसिंह बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य पृ० १३४

^{५१} डा कमलाकांत पाठक मधिलीशरण गुप्त व्यक्ति और काव्य पृ० ४४५

^{५२} डा गिरिजान्त शुक व गिरिश मत्तजी की काव्यधारा पृ० १४०

^{५३} डा श्यामनन्द विशार आधुनिक हिन्दी काव्यों का शिल्प विधान पृ० २२४

हाम्यपूर्ण वातालाप में लक्ष्मण मौम्य-स्वभाव के हास विलासप्रिय राजकुमार चित्रित किये गये हैं। यह उनके चरित्र का वास्तविक रूप है।

लक्ष्मण के उग्र रूप का चित्रण तृतीय सर्ग में दृष्टिगत होता है जब वन गमन का सूचना से वे क्रोधित होकर बकयी और महाराज दशरथ का कटु-म कटु वचन कहते हैं

‘जग मातृव तू जब भी जताती टसक बिसका भरत का है बनाना
भरत का भार डालू और तुमका नरक में भा न रख ठौर तुमका।

^ ^ ^
बुला से सब सहायक शीघ्र अपना कि जिनके दयता है व्यथ मपन।

X ^ Y

भला वे कौन है जो राज्य दवे पिता भा कौन है जो राज्य दव। ५६

इस अवसर पर वे राम के समक्ष पर न्यायान्त नही होते। यही तब कि बकयी का ‘नागिना’ अनुभाषिता ‘स्मृजा’ तब कह दते हैं। अन्तत राम के आदेश से मयमित्तान्त है। लक्ष्मण का मवा भावना का प्रत्यक्ष प्रमाण उनके अकाल राम-सीता के साथ साग्रह वन गमन है। लक्ष्मण का त्याग और तपस्वी भाव महान् है। एक ओर वे राम के सच्चे अनुयायी हैं तो दूसरी ओर उर्मिता के स्वामी भी। तभी तो लक्ष्मण कहते हैं

यदि मैंने निज वधु उर्मिता हा का जाना। ५५

उर्मिता के प्रति सच्चा स्नेह भाव हूँ तो भी लक्ष्मण सखी सीता का मवा में वीरप्रता वनकर रहते हैं। लक्ष्मण का चारित्रिक गरिमा का प्रमाण युद्ध क्षेत्र में मिलता है जहाँ वे समान-भरत-महा मघनाथ का पावन प्रसन्न हान ह सच्चे पांडा का भीति मघनाथ के वन का प्रशमा करके युद्ध का आह्वान करत हैं। लक्ष्मण में वीरत्व और आज का भाव सावन में स्वयं-स्वयं पर दृष्टिगत होता है। माताहरण के अवसर पर उनका निम्न वचन श्लाघनीय है

पक्ष मवना है रश्मिराजा क्या मंगलम के तम में भा।

जाय उगनवा तूगा अपना आपा का मैं दम में भा। ५६

इस प्रकार युद्धाद्यंत लक्ष्मण में राम जब विश्राम के चिह्न बनते हैं तो उनका उत्तर बड़ा आत्रपूर्ण है

५५ सावत, सर्ग ३ पृ० ७६ ७७

५६ वही सर्ग १३ पृ० ४८८

५६ वही, एकांश सर्ग पृ० ४८६ २७

हायहाय ! विभीम ? शत्रु अब भी है जाता
 वाराणस म पत्नी इमारा तथा मीता ।

× ×
 यति वरा का मार त गुन लभमा का लार्ज
 ना मरा यत् णाय मु। मी गुगति न पार्ज ।

एक जय जवमर पर भरत का सत्य-वत सति चित्ररूप जान लग उनका
 अभिमान जाग्रत हा उठता है

आय हाग भगत यति कुमतिवश वन म
 ना यह मवत्प मिया है मीत मन म
 नना म शर का लक्ष्य चुनूगा क्षण म
 प्रतिपद्य आपना भा न मुनूगा रण म । ५७

एक प्रकार लक्ष्मण क चरित्र म स्तन मवत्पनातना भक्ति भाव माहम वारव
 पराक्रम जाति गुणा का अद्भुत सम-वय हुआ है । समष्टि रूप म लक्ष्मण क
 चरित्र क दा पक्ष है—एक ता वारवता का और दूसरा भावक एव प्रमा पति
 का । क्या एक पक्ष म जहाँ उनकी स्वभावगत चंचलता क कारण क्या-क ।
 उग्रता जाया है वहा समय सत्रा भात माघना एव तपस्यापूण जीवन क कारण
 उनक चरित्र का दूसरा पक्ष उज्वल बना है । कुछ समाक्षका का मत है कि
 गुप्तजी क रामानुवर्ती हान क कारण लक्ष्मण क चरित्र का पूण विकास नहा हा
 पाया है । दूसर शास्त्रीय दृष्टि स नायक म जिन उतात्ता गुणा की आवश्यकता
 हाना है उनका सब-वा जभाव लक्ष्मण म लियायी देता है । इसक अनिर्वक्त
 नायक म सम्पूण पाना का नतृव करन का जा अपूव क्षमता होनी है वह भा
 लक्ष्मण म दृष्टिगाचर नही हानी । यहाँ लक्ष्मण राम के अनुज और अनुयायी
 है । राम जमी प्रणना दत है उस अपन जीवन का लक्ष्य बनात है ।^{५८} लक्ष्मण
 क चरित्र क सम्बन्ध म उपयक्त विचार उचित नहा जान पन्त । प्रथम
 जाधुनिक युग म भाषक विषयक जाणर्शा म जाभूत परिवर्तन हो गया है ।
 दूसर जिस रूप म साकतकार न लक्ष्मण का प्रस्तुत किया है उसम लक्ष्मण क
 पूण चरित्र विकास की उपक्षा भी नही की जा सकती । तीसर साकेत म
 नायकत्व भार का बहन उमिता न लिया है । उमितापति होन क कारण ही

^{५७} साकत सग = पृ २३७

^{५८} डा० द्वारिकाप्रसाद सक्मना साकेत मे काव्य ससृति जीर वसान
 पृ० १४५-४४

नशमण साकेत क नायक है। फिर भी गुप्तजी न लक्ष्मण क चरित्र म नवीनता लान वा प्रयास किया है। लक्ष्मण का स्वभावगत जावश जोर चाबय उह मानवीय बनाता है यही कवि की सफलता है। गुप्तजी न परिवर्तन यद्युक्त किया, किन्तु नशमण का मनुष्याचित्र रूप ही चित्रित किया। उसम हम इस धरती क मनुष्य की प्रवृत्तियां ज्ञाकती हुई मिलती ह।^{५६}

राम—राम साकेतकार क आराध्य स्व ह अत उनका चरित्रानन करत समय कवि की पूज्य भावना मवश बाधक रही है। राम का आदर्श मानव या महापुरुष क रूप म ही कवि चित्रित कर सका है। रामभक्त परिवार का धाता और स्तकारजय निष्ठा क कारण गुप्तजी न एक जोर राम का ईश्वर माना है तो दूसरी जोर युग क प्रभाव जोर बौद्धिक दृष्टिकोण न उह मानव क रूप म प्रतिष्ठित किया है। कवि न स्वयं कहा है कि— राम तुम मानव हा ? ईश्वर नहीं हो क्या ?^{५७} और

राम तुम्हारा वन स्वय ही वाय है।

कार्क कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है ॥^{५८}

यहां नहा गांधाजी का त्रिमे गय पत्र म गुप्तजी न स्पष्ट स्वाकार किया है कि साकेत म मुम राम को प्रभु कहत ही बना है।^{५९} गुप्तजी क राम निश्चिन्त रूप स भगवान है।^{६०} यद्यपि कवि न विश्राम क वन पर उह अवतार माना है। पर बुद्धिवात् क प्रभाव क कारण उह मानव ही रक्ता है।^{६१}

बस राम क चरित्र म आदर्श मानवाचित गुण है। ब माता पिता क भक्त एव जानाकारी है। कतव्यपरायणता त्याग क्षमा और विनय उनक चरित्र क प्रमुख गुण हैं। वनवाम की आना मिल जान पर भी भरत और कचया क प्रति उनके मन म कोई दुर्भाव पत्ता नहा हाता। विषम-म विषम परिस्थितिया म भी ब अटूट धम धारण किय रहत हैं। साकेत के राम मानवता क लिए जो संदेश प्रदान करत है वह अमृत है

^{५६} प्रा० विनाचन पाण्डय साकेत दर्शन, पृ० ६१

^{५७} साकेत मुद्रपृष्ठ

^{५८} साकेत, भाग ५ पृ० १५

^{५९} १० कहेयाज्ञान गहन साकेत क नयम संग का काव्य बंधव पृ० १४२

^{६०} डॉ० उमाकान्त गायल भविष्योत्तरण गुप्त कवि और भारतीय सभृति क आध्याता पृ० १६६

^{६१} डॉ० कमलाकान्त पाठक भविष्योत्तरण गुप्त ध्यविन और काव्य प० ४५६

मैं आया का आग्न बनाने आया
 जन सम्मुख धन का पुच्छ बना आया ।
 मुग्न शक्ति हनु मैं शक्ति मचाने आया ।

× × ×

भव म नव वभव व्याप्त कराने आया
 नर का श्रमरता प्राप्त कराने आया ।
 मन्त्र नहा मैं यही स्वर्ग का लाया
 म्भूतन का ही स्वर्ग बनाने आया ॥ १५

राम शक्ति और तज्ज क निधान है चिन्तु म्भूतना उपयोग व दर्शण क बबर
 कौणपा क मन्त्र को चूर करन क निष्पन्न करत है । व ऋक्ष जीव वानरा क समान
 बन मानवा तब को आपन्य दन वाल १५

बहु जन बन म है वन ऋक्ष वानर स
 मैं दूगा जब आयत्व उह निज कर म ॥ १६

परिवारजना क प्रति स्नान और शोभा का भाव स्थान-स्थान पर उनक कथना
 म प्रकट होता है । व सच्च जय म जाणन मानव है । सावन म व मानवता
 का साकार मूर्ति बनकर अवतारण हुए ह । व एक उच्च काटि क मानव है १६
 राम की प्रतिमा म साकतकार न भी अनन्त शोभा अनन्त शक्ति और अनन्त
 सौन्दर्य का समावेश किया है—परन्तु उसम मानवत्व कुछ अधिक है—साथ ही
 कुछ नवानता भी है १७ जा भा हा यन्ता कहना हा पन्था कि सावन क
 राम वाल्मीकि और तुलसी क राम स भिन्न है । उनक चरित्र म युग का
 सम्भावना साकार हुई है । साकत क राम हमार युग के राम है ।

सीता—साकत म सीता का चित्रण भी नवीनता निय है । सीता एक आर
 भारताय जाणन नारी है जिनम पतिपरायणता त्याग सेवा शोभा जीव सौजन्य
 है ता दूसरी आर व युग जीवन का मर्यादा के अनुरूप श्रमसाध्य जावन-यापन म
 गौरव का अनुभव करन वाला नारी है । उह वन म राघवभक्त का मुक्त
 प्राप्त है व जात्मनिभर और स्वावलम्बन म विश्वास रखना ह

१५ साकत, सग ८ पृ० २३४-२५

१६ वही सग ८ पृ० २३५

१७ टी० द्वारिकाप्रसाद साकत म काव्य ससृष्टि जीव दर्शन पृ० १६२

१८ टी० नगन साकत एक अध्ययन पृ० ११२

और व हाथा रहा नहा पनती है
 अपन परा पर खडा आप चलती है ।
 थम वारि विदुष्य स्वास्थ्य शुक्ति फलती है
 अपन अचन स व्यजन जाण बनती है ।
 तनु लता मफनता स्वाज आज नी जाया
 मरी कुटिया म राज भवन मन भाया ॥ ६६

वायव्य म हम मोता का एक कुन वधु व म्य म पात है । शश्व परिवार
 म व एक आश गहिणा लिताया ली है । परिवारजना म (विशेषकर
 लक्ष्मण और उमिना स) शस-परित्यास एव व्यग्र विना म उनका महज
 व्यक्तिव भुगिरित हुआ है । तत्तर राम व उन-गमन की सूचना पाकर पति
 व भाग हा बन जान म अपन का धय मानती है । सीता मनोस्थ की माकार
 मूर्ति है । अपहण ल जान के पश्चात् शवण जय उद् गती बनान का
 प्रताभन लता है ना व उस धुरी तरह फटवागो नी नये है वन अपन सनात्व
 वन व प्रभाव म उस स्पहीन व ल ली है । उनकी राम व प्रति जो मच्छी
 आस्था और प्रेम है उसी व वल पर उगत पति विमोग की कथा का मया
 है । माता पतिपरायणा शश्व धम का पालन करन वाली आश भागीय
 नारी का रूप है ।

भरत— साकेत व भरत 'शमचरितमानस व भरत म बहुत भिन्न नहा
 है । उनकी चरित्र-मूर्ति का आधार परम्परित विपताण ही है । साकेत म
 यवशयम उनक शन उम समय हात है जय व ननिहात म लौट कर आत है ।
 पितृ मरण और राम-वत-गमन की सूचना स व म्मग्निन रह जान है । अपन
 राधाभिपन की सूचना पाकर व हा श्वाश्रिम वटकर मूर्तिन हा जाने ।
 सचन हात पर व वक्या का घण्टी और शिमन वक्कर मक कुबुन की
 निन्दा करत है । मातृ-मनह म विज्ञान हाकर व आवन म राज-य का
 निरस्वार करत हुए वत है ।

राज पर हा क्या न अब हू जाय ।
 रोभ मर का सूत हा कर जाय
 भर यव कोई न रूप न म्म ।
 सब जगत म ही नया आरम्भ ॥ *

६६ साकेत मग ८ पृ० २२

० वही मग ७ पृ० २०

व चाहत है— विगत हा तपति रं र मात्र । इग प्रकार यही भरत समाजवा और ममाना व आर का वान्तिवारी ढग स प्रतिपादन करत हुग शिवायी न है । न्य अयमर पर भरत त्रिम प्रकार ग्नाति का अनुभव करव अपा न्य की अभिव्यक्ति करत है यह अयगनीय है । तन्पर शक्ति ह्य म अपगयी व ममान भरत माना वीशल्या व ममा जा १

तुम ही हा अम्ब नाना अम्ब
पति विमाना पुत्र हीना अम्ब ।
भरत अपगया भरत है—प्राप्त
ना उस जाग अपना आप । ३१

भरत स्वय का पडयत्रकारा जयम अपराधा एव मन्वन् का मून बहुर श्रयाचना करत है । किन्तु माना वीशल्या यह कन्कर

मिन गया मग मुन तू राम तू वही है भिन्न कवन नाम ।

भरत क ह्य का शान्त करनी १ ।

भरत रायमिहामन का ठकराकर राम का डन चित्रकू पचन १ जीर राम क चरणा स त्रिपटकर अपन आमुआ स उनक चरण पकारत है । भरत क लिए राम इष्टव तुय है । चित्रकू की मभा म मुनि वशिष्ट राम एव अय मभाम भरत क शान एव स्वभाव की भूरि भूरि प्रशमा करत है । भरत क कारण श्री राम जीर मभाम भरत क शीन एव स्वभाव की सराटना करत हुए कन्त १ कि— मी वार घय वह एक ताल की माई न्य अवसर पर मभी भरत का धीरता गम्भीरता मातृ प्रेम विनम्रता मन्त्रायता आशि गुणा की सराटना करत १ । भरत राम की चरण पादुकाए तकर नोट आते ह जीर उ मन्त्रामन पर स्थापित कर एक भक्त की भाति चोह वपों तक बठार साधना तप एव मयम का जीवन बिनात १ । व नन्त्राशाम म तपस्विना की भाति जीवन बिनात हुग भा रायन्यवस्या का त्रिधिवत् सचालन करत है ।

भरत क अद्भुत यकिरत्व का परिचय तव मिनता है जब व हनुमान क मुख से सीताहरण एव तदमणशक्ति का समाचार पाकर क्षत्रिय धम पावन न्तु वाग्व भाव का मघारण करत है । व वीरता के रूप म हुकार कर उटत १

भारत तक्षमी पथी राक्षसा के बघन म
मिथु पार वह विनय रही है याकुन मन मे

बटा हूँ मैं भण साधुना धारण करके
अपन मिथ्या भरत नाम का धारण करके ।

× × ×

मनू अपन जन्मी भूत जीवन का राजा ।
उटा दसा शण शूर करग मना की सज्जा ।

× × ×

मज अभा साकत बज हा जय का स्वा ।
रह न जाय अब कही किमी रावण की सेवा । ७२

भरत-चरित्र की यह विापना साकतकार की निजि मूय का परिचायक है । राम कात्या का परम्परा म इस रूप म भग्न पत्रा वाग चित्रित किय गय हैं । एय प्रकार भरत का चरित्र मानवीय गुणा की मग्निता म मणित है । स्वय राम का यह कथन—

उठ भाई तुन मका न तुयम राम मग है ।
नरा पतन भारा भूमि पर आज पग है । ७३

भग्न के चरित्र की महत्ता का स्पष्ट करता है । व तपस्वी हैं और त्यागा ७४ द्रुमीनिण सारा विव उनका महत्ता का स्वीकार करता है । किन्ता निस्वार्थी और माता प्रमा । क्या कोई दसा एसा व्यक्ति सम्मुख उपस्थित कर सकता है ७५ भरत का चरित्र साकेत की मन्म मत्त्वपूर्ण मृष्टि है—यह कहन म अनिष्पाकित न हागा ।

कथयी—साकेत क पात्रा म कथयी क चरित्र निम्पण म गुप्तजा मयम अधिक मयन हुए हैं । राम-कथा क पात्रा म कथयी क कलकित एव निरमृत चरित्र को गुप्तजा की सगना न धाय किया है । सबप्रथम साकत के शिताय मग म हम कथयी का सौजय म पूण माता क रूप म पाल हैं जिम राम क ग-याभियन का प्रमयना है कथाकि राम आर भरत उमक लिए समान हैं । म पग की कुम-त्रणा से उमक मन म मदेव विष-बीज वरन हा जाता ७६ ; म-धरा का निम्न कथन उम ममान्वक आपात पदुचाता है

७२ साकत मग १२, पृ० ६५६

७३ वही, मग १२ पृ० ६६०

७४ ग० प्रतिपार्श्वमह बीसवीं शताब्दी क महाकाव्य, पृ० १ ७

गुप्तजी का साकेत अनवर दृष्टियाँ या महत्त्वपूर्ण है किन्तु उमकी महत्ता का सबसे बड़ा कारण उमका साम्प्रदायिक दृष्टि में महत्त्व है।

साकेतिक मायताएँ

साकेत एक जीवन काव्य है। साकेत का मूल विषय जीवन मानव जावन का निष्पन्न करना है। इसीलिए साकेत में कवि की आरंभ में किन्हीं विशिष्ट गिज्ञानों एवं आदर्शों की स्थापना का आग्रह न हाकर मानवतावादी जीवन मूल्या का अभिव्यक्ति का गहन प्रयोग है। मानवतावादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति में भक्ति एवं दशन सम्बन्धी यन्त्रिचिन्त विचार भी साकेत में स्थान पा गये हैं। न तो हम साकेत का भक्तिपरक ग्रन्थ कह सकते हैं और न दशन सम्बन्धी विचारों का बहन करन वाला साकेतिक काव्य ही मान सकते हैं। कवि न तो मानवा के जीवन को सम्मुख न बनाने के लिए अथवा उनके अभ्यन्त के लिए जिन भक्ति एवं दशन सम्बन्धी विचारों का उचित समन्वय है उनका ही यथा स्थान दिया है। अतएव कवि का स्वस्थ मानवतावादी दृष्टिकोण साकेत में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। यहाँ कवि की ईश्वर भक्ति मानव भक्ति में परिणत हो गयी है उमका ईश्वर प्रेम स्वदेश प्रेम में परिणत हो गया है और उमकी ईश्वर सेवा जन जन की सेवा-सुधया में बदल गयी है।^{१६} हम प्रकार साकेत वास्तव में साकेतिक या भक्ति प्रधान काव्य न होकर वस्तुतः मानव जीवन और मानवीय जीवन से ही सम्बन्धित साकेतिक दशन का काव्य है। साकेत की मानवतावादी जीवन दशन सम्बन्धी पृष्ठभूमि का निर्माण दो आधारों पर हुआ है जो निम्न प्रकार हैं

- १ साकेत का कथात्मक आधार प्राचीन परम्परा प्रसिद्ध वीरराजिक राम-कथा एवं गुप्तजी की वणव भावना के कारण राम भक्ति के सम्प्रदायगत साकेतिक विचार काव्य में स्वभाव आ गये हैं। अतः साकेत की साकेतिक पृष्ठभूमि भक्ति एवं दशन सम्बन्धित है।
- २ साकेत की जीवन-दशन विषयक धारणाओं के निर्माण में युग की प्रचलित विचारधाराओं का यथावत एवं विश्वास का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

सम्प्रदायगत साकेतिक विचार

१ भक्ति विषयक—साकेत में वणव भक्ति की विचारधारा का

प्रतिपादन हुआ है। वष्णव भक्ति का सम्बन्ध उस पद्धति में है जिसमें अलग-अलग भगवान् विष्णु को पूज्य मानकर उनका साक्षात्कार प्राप्ति मान्निष्ठ एक सामुदायिक के लिए वष्णव भक्त विष्णु के अनेक अवतारों का पूजा अर्चना विभिन्न वस्त्रों में करत हैं। पौराणिक साहित्य में अवतारवाद का परिचय कल्पना के विकास के साथ-साथ विष्णु के अवतारों की संख्या में भी वृद्धि होता गया। महाभारत के नागयनायापाम्बान के अनुसार भगवान् विष्णु (वामदेव) के छ अवतार माने गये—वराह नमिन् वामन भागवतराम अश्वत्थाम पुत्र राम और कृष्ण। इसके पश्चात् महाभारत में ही उनके अनिर्दिष्ट चार और अवतारों के नाम जाड़े हुए इनकी संख्या दस माना गया। वे चार हैं—हंस, कूर्म, मत्स्य कल्कि। वायु पुराण में इन अवतारों की संख्या बारह दी गयी और उपर्युक्त दस नामों के साथ-साथ अज्ञेय तथा वन्द्यमान नाम और जोड़ दिये गये। धामदुर्भागवत पुराण में इन अवतारों की संख्या प्रथम स्वर्ग के तीसरे अध्याय में बारह उल्लिखित है और द्वितीय स्वर्ग के मानवें अध्याय में यह संख्या नई दी गयी है। विष्णु के अवतारों में संख्या की निरन्तर अभिवृद्धि का दमक हुए ऐसा प्रतीत होता है कि विष्णु की भक्ति की महत्ता जस-जस बढ़ती गयी वस-वस अवतारों की संख्या में भी अभिवृद्धि होती गयी। राम विष्णु के ही अवतार हैं। सम्पूर्ण अवतारों में राम और कृष्ण ही वे दो अवतार हैं जिनके आधार पर अवतारवाद की संख्या आज तक जावि है। वाष्णव में राम और कृष्ण ही आज विष्णु के अवतारों के प्रतीकमान बन गये हैं। इन दोनों अवतारों में भी राम का चरित्र सम्पूर्ण देवी गुणाएँ और आदर्शों में परिपूर्ण ज्ञान के कारण युगों में मानव जाति का प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहा है। राम के चरित्र का लेकर आदि कवि के महाकाव्य में आज तक विभिन्न काव्यों की अनेक मूर्तियाँ प्रवृत्त हुई हैं। वष्णव भक्त राम का चरित्र गायन आराध्यदेव की उपामना एक गुणगाथा के रूप में भी करत रहे हैं। गुणगाथा का माकन की वाच्य रचना में एक उद्देश्य निज प्रभु अर्थात् राम का गुणगान भी रहा है जिस पर माकन की मूल प्रेरणा एक उद्देश्य शीघ्र के अलग-अलग विस्तार में विचार किया जा चुका है। गुणगाथा निम्नलिखित एक वष्णव भक्त एवं कवि हैं। अन्तु माकन में वष्णव भक्ति का विचारधारा और तन्मन्बन्धी सिद्धान्त का प्रतिपत्ति हो जाना स्वाभाविक ही है।

राम का गुणगाथा अपना स्वरूप मानते हैं। माकन के सम्पूर्ण कवयों में राम के प्रति कवि का पूज्य भाव प्रकट होता है। उन्होंने राम का सर्वव्यापक

वष्णव भक्त अपन उपास्यत्व की लीलाजा जीर महान् कार्या का गुणगान किया करते हैं। गुप्तजी न भी काय क अष्टम मग म अपन इष्टत्व राम के महत् गुणा का उल्लेख किया है। उनका राम आर्यों का जन्म बताने वाला मुख शान्ति हनु क्रांति मन्वान बाल विश्वासी का विश्वास वचान वाला तापित शापित बरहान नीन का उद्धार करने वाला समाज म मयात्न स्थापित करने वाले नर को इश्वरत्वं प्राप्त कराने वाला और भूतन को स्वर्ग बनाने वाला है।^{१६४} इसके अनिर्विकल वष्णव भक्ति क अन्तगत भगवान के नाम स्मरण का महिमा और समर्पण भाव की भावना को भा गुप्तजी न साकेत म अभिव्यक्त किया है। भक्ति का युगान बनाने क लिए गुप्तजी न युगानुसृत उत्तार दृष्टि का भी परिचय दिया है। साकेत क राम गुहनिपात् वानरा आदि स भा य-पु भाव का व्यवहार करते हैं। वष्णव भक्ता के लिए गुरु का जो महत्त्व है वह वशिष्ठजा क प्रति राम द्वारा श्यवन की गयी श्रद्धा भावना म स्पष्ट दिखायी देता है। इस प्रकार साकेत म गुप्तजा का वष्णव भक्ति भावना पूर्णत अभिव्यक्त हुई है। भक्त म जो भावकता पूज्यभाव जागृध्य दय क प्रति श्रद्धा जीर समर्पण होना चाहिए वन्मव साकेत म उपलब्ध है।

(अ) ब्रह्म का स्वरूप और राम—गुप्तजी न साकेत क प्रथम मग म प्रारम्भ म ही यह स्वीकार किया है कि ब्रह्म निगुण एव मगुण नो म्प्य म होता है। वही अगित्त श ब्रह्म भू भाग दूर करने क लिए निगुण म सगुण होता है।^{१६५} साकेत क अष्टम मग म भी राम का ब्रह्म का सगुण स्वरूप कहा गया है। ईश्वर क मभा जनन गुण उनमें विद्यमान हैं। ब्रह्म की शक्ति क समान मीना को भी जगत की सृष्टिकारिणा माया क रूप म कवि ने चित्रित किया है

उन मीना को निज भूति मति माया को

प्रथम प्राणा को और कान्तजाया को।^{१६६}

साकेत क राम पूज्य ब्रह्म स्वरूप है। व जन्म का भी चतन करने का सामर्थ्य रखते हैं।^{१६७} व सप्त शिव सुन्दरम् की साकार प्रतिमा है।^{१६८} व मवण

१६४ साकेत, अष्टम मग, पृ० ३४ ३५

१६५ वही प्रथम मग पृ० १८

१६६ वही अष्टम मग पृ० २२१

१६७ वही पंचम मग पृ० १४६

१६८ वही सप्तम मग पृ० २१८

और अन्तर्दामी है।^{१६६} उसकी दृष्टापूर्ति में ही सम्पूर्ण जगत् का श्रेय है।^२ इस प्रकार गुप्तजी के राम में ब्रह्म के सम्पूर्ण गुण हैं। जहाँ तक राम के सम्प्रसादगत दाशनिष्ठ स्वरूप का प्रश्न है वह विशिष्टान्तवाक्य के गणित है। ब्रह्म की इस कल्पना के मूल में गुप्तजी के पारिवारिक मस्कार भी महापत्र रहे हैं। डॉ० उमाकांत गोयल ने लिखा है कि— रामानुजाचार्य की परम्परा में रामानुज द्वारा प्रचारित एवं गणोद्धित श्री सम्प्रसाद से इनके परिवार का सर्वाधिक सम्बन्ध रहा है।^{३ १} इसलिये गुप्तजी ब्रह्म के विषय में विशिष्टान्तवाक्य की भाव्यताओं के समर्थक सिद्धाधी दत्त हैं।

(ब) जीव—विशिष्टाद्वैत के अनुसार जीव ब्रह्म का अंश है। गोम्बामी तुलसीदास ने भी कहा है कि ईश्वर अंश जीव अविनाशा (रामचरितमानस उत्तरकाण्ड दोहा संख्या ११६ के पश्चात्)। साकेत की उर्मिता भी यही है उर्मि हूँ मैं हम भवाणव की नया।^{२ २} विशिष्टान्तवाक्यी जहाँ ब्रह्म को स्वतन्त्र व सर्वत्र मानते हैं वहाँ जीव को परतन्त्र और अणु। मानने में भ्रम भी यही कहते हैं

हा ! अमर भी मृत्यु वमगत जीव

मुक्ते होकर भी अधीन अतीव।^{२ ३}

जाव की कर्मनुसार गति है और वह पूव जन्म के अनुसार ही ससार में सुख दुःख भोगता है। साकेत के उद्धरण भी कहते हैं कि

सर्व भाग्य का ही भोग है

किन्तु भाग्य भी पूव कर्म का योग है।^{२ ४}

हम प्रकार जीव के बंधन सासारिक दुःख भोग की प्रवृत्ति एवं ब्रह्म में अभेद्यता का बंधन गुप्तजी ने विशिष्टाद्वैतवाक्य के दर्शन से प्रभावित होकर ही किया है।

(स) जगत—विशिष्टान्तवाक्य के अनुसार जगत को सत्य और ईश्वर को जिवित अंश माना गया है। साकेतकार ने भी जगत को कर्म क्षेत्र कहते हुए निरंतर स्थिर रहने वाला बताया है। गुप्त विशिष्ट के शब्दा में

^{१६६} साकेत अष्टम सर्ग पृ० २४२

^२ वही नवम सर्ग पृ० ३४०

^{२ १} डा० उमाकांत गोयल मधिलीशरण गुप्त कवि और भारतीय संस्कृति के आध्याता पृ ४१६

^{२ २} साकेत नवम सर्ग पृ० ३२५

^{२ ३} वही सप्तम सर्ग पृ० १६४

^{२ ४} वही पंचम सर्ग पृ० १५३

सतत वस क्षेत्र है नर लोक । २०४

जगत का नियता ब्रह्म है जो मसार के काम यापारा का संचालन करता है । गुप्तजी न भी कहा है

ईश के दगन क अनुसार हुआ करते थे सब यापार । २०५

समार के दुःखमय स्वरूप की ओर यदि न निम्न शान्त म सतत किया है

इस भव पर है अमित विनाश तनस सता

जिमके सम्भे दुःख साक भय जापता ॥ २०७

मृष्टि की रचना ब्रह्म की माला और फ्रीडा के त्रिण होनी है । साकेतवार न भी यही कहा है — साकश तीला धाम न मसार को पथ स्थान क लिए ही यह क्षेत्र किया है ।^{२०८}

विशिष्टाद्वतवा क अनुसार माया जीव और ब्रह्म म क्षेत्र उल्लङ्घन किया करती है । साकेत म दसो का वणन बग्न हुए तन्मण गृहनिपात से कहते हैं कि

जाव और प्रभु मध्य अडो माया खनी

यह दुरत्यया और शक्तिशाला बनी । २०९

इस प्रकार जीव जगत मृष्टि माया और ब्रह्म विषयक साकेतकार क दार्शनिक विचारों को दरान से यही प्रतीत होता है कि साकेत का दार्शनिक मृष्टभूमि के निर्माण म विशिष्टाद्वतवा का प्रमुख स्थान रहा है ।

साकेत महाकाव्य की भक्ति और तन्मण सम्बन्धी मायनाजा का अध्ययन करत पर ऐसा प्रतीत होता है कि यदि न साकेतिक रूप म ही दार्शनिक प्रणिया को काय म यत्न-तम स्थान स्थित है । साकेत का दगन बन्तुन तन्मण नहीं, जीवन-तान है । क्योंकि साकेत तन्मा कि तन्मण कहा गया जीवन काव्य है । युग की प्रमुख प्रचलित विचारधाराओं म प्रभावित होकर इसके जीवन-तान का निर्माण हुआ है । एक शान्त म साकेत क जीवन-तान का मानवतावादी कहा जा सकता है । मानवतावाद अतमान युग की वह विचारणा है जिमके निर्माण म युग के उस सम्पूर्ण उन्नत चिन्तनबोध का योगदान रहा है जो मानव के भगन विपानागी तत्त्वा स अनुप्राणित है ।

२०४ साकेत, मूलम मग पृ० २१२

२०५ वही द्वितीय मग, पृ० ५६

२०७ वही, पंचम मग पृ० १४१

२०८ वही, प्रथम मग पृ० १८

२०९ वही, पंचम मग पृ० १४२

जीवन दशान पर युगोत्तर विचारधाराओं का प्रभाव

१ गांधीवादी विचारधारा—जिस समय मानव की रचना हुई थी उस समय गांधीजी के व्यक्तित्व और विचारधारा का प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय जन जीवन और चेतना पर व्याप्त था। यद्यपि गांधीजी ने कभी भी यह नहीं कहा कि उन्होंने किसी नयी दार्शनिक या वैचारिक परम्परा को जन्म दिया है जो गांधीवाद कहनाय तो भी उनका व्यक्तित्व चेतना मन्तव्य था कि उन्होंने जिन जन जीवनांशों और व्यापक मानवीय विश्वासों को अपनाया और आचरण के रूप में स्वीकार किया वही कालान्तर में गांधीवाद ही मना पा गया। गांधीवाद के दार्शनिक आधार हैं—सत्य अहिंसा आत्मिकता नीतिमूलक धार्मिक आचरण सामाजिक दृष्टि से सदाभाव और सुधारवाद (जिसमें अन्तर्गत जन्म अस्पष्ट जातियों का उद्धार सम्मिलित है) आर्थिक दृष्टि में सर्वोत्थ और समान वितरण और राजनीतिक दृष्टि में रामराज्य के आदर्शों का साकार करना। गांधीवादी विचारधारा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। गुप्तजी के मान्यता में यह विचारधारा पूर्ण रूप से पायी जाती है। मानव में गांधीवाद के प्रायः सभी आदर्श किसी न किसी रूप में मिल जाते हैं। साकेत की सीता गांधीजी के आदर्शों के अनुरूप कान भिल्ल वाताआ को नीची जाति के होने हुए भी प्रेमपूर्वक अपनाकर उच्च कानना बुनना सिखाती है (अष्टम सर्ग)। साकेत में राम वन गमन कर रहे हैं और जब प्रजाजन उनका राकन के लिए रथ के आगे गेट जाते हैं तो उनकी भावना में गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन की स्पष्ट छाप दिखायी देती है (पंचम सर्ग)। साकेत के राम गांधीजी की भाँति शापित और पीड़ितों का दुख दूर करने के लिए हैं। उनमें अपरिग्रह की भावना विद्यमान है। वह कहते भी हैं— मैं यहाँ जन्म नहीं बाँटन आया।^{२१} इसी प्रकार साकेत में गांधीवाद की जय सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ भी मिलती हैं। गुप्तजी पर गांधीवाद का प्रभाव पचना स्वाभाविक भा है—वैज्ञानिक पदाथवादी नास्तिकता के विरुद्ध आत्मिकता और आत्मिकता गांधीवाद के प्रधान लक्षण हैं भक्ति उसमें व्याप्त है समस्त गांधीवाद बौद्धिक मानव का आध्यात्मिक परिवर्तन करता है और वह आर्थिक मूल्यों के स्थान पर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है।^{२१} गांधीवाद की

२१ साकेत अष्टम सर्ग पृ २२४

२११ डा० सत्य - समीक्षात्मक निबंध, पृ १४४

उपयुक्त सम्पूर्ण विशेषताएँ गुप्तजा न स्वाकार का ह और उनका व्यावहारिक रूप साकेत में प्रतिपादित भी किया है।

२ साम्यवादी विचारधारा—साकत पर साम्यवादी विचारधारा का आधारभूत सिद्धांत का भी प्रभाव दिखाया देता है। साम्यवादी समाज में जिस समानता आर्थिक समता और वगैरहीनता का समर्थक है साकत में गुप्तजा ने उनका 'यूनाधिक' रूप में समर्थन किया है। साकत का सामाजिक जीवन में सभी वर्गों के लोगों का समान महत्त्व है। एकात्मक संघ में शत्रुघ्न भरत के समस्त राज्य की व्यवस्था का वर्णन करते हुए सामाजिक जीवन के सम विकास की कक्षा करते हैं।^{१९} साकत के राम पिछले वर्ग के लोगों का (वन में रहने वाले लोग जो रोठ और जानरों का तरह रहते हैं) सामाजिक समानता का अधिकार प्राप्त कराते हैं।^{२०} साकत का कवि समाज के लिए 'यदिन बनिदान की महत्त्व देता है। साकत के राम कहते हैं— हम हा ममष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानों।^{२१} वास्तव में साकतकार साम्यवाद का राजनीतिक विचारधारा या दान्तिकारी साधना द्वारा लक्ष्य प्राप्ति का समर्थक नहीं है। साकेतकार ने साम्यवाद के उग्र नष्ट करने गहज और स्वाभाविक सिद्धांत का ही स्वीकार किया है।

३ राष्ट्रवादी विचारधारा—गुप्तजा राष्ट्रीय कवि है। राष्ट्रियता का भावना उनका कान्य में सबसे शिवायी दती है। विश्वधुव का भावना से अनुप्रेरित होकर भी स्वयंसे प्रेम और राष्ट्रिय गौरव का कर्मा भी नष्टा भूत है किन्तु उनकी राष्ट्रियता मनुचित मनावतिया का परिणाम न होकर व्यापक सांस्कृतिक विश्वासा से पूर्ण है। गुप्तजा का राष्ट्रिय भावना के जो मूल साकत में बिखर हुए हैं वे निम्न प्रकार हैं

- १ भारतीय अनीन के गौरव का जाहवान
- २ मातृभूमि के प्रति सम्मान का भाव,
- ३ स्वतंत्रता के लिए संघर्ष।

'साकत में भारत की गौरवपूर्ण परम्पराओं, राष्ट्रिय महत्त्व के प्रतीकों (जैसे हिमासय शरयू आदि) के प्रति सम्मान का भावना सबसे व्यक्त हुए हैं। साकत का उमिता युद्ध के लिए आह्वान करना हुए महा कर्ता है कि

१२ साकत एकात्मक संघ पृ० ४०६ ४०७

२१३ वही, अष्टम सर्ग पृ० ३५

२१४ वही अष्टम सर्ग पृ० २३१

हिमानय का भाव नहा झुना चाहिए गंगा जमुना सिंधु और सरयू के पाना
की मर्यादा कम नहा हानी चाहिए

विष्य हिमानय भास भला शक जाय न घोर।
चंद्र सूर्य कुल का रीत बना रह जाय न वारा।
चंद्र कर उतर न जाय मुनी कुल मौखिक माना
गंगा यमुना सिंधु जीर सरयू का पानी ॥ २१४

सावत म गुप्तजा न राम और रावण व युद्ध की भी राष्ट्रीय युद्ध का रूप
दिया है। सीता का हरण भारतीय कुल लक्ष्मी का हरण कहा गया है

राक्षसिया स घिरी हमारी दबी सीता
बलागृह म बाट जाहती लग हुई है।
× × ×
पर धर इस भूमि पर पामर पापा
कुन लक्ष्मी का हरण करे व सहज सुरापी
भरना उनका रधिर करलो उनका तरपण ॥ २१६

भरत भा उसा प्रकार क उद्धार व्यवन करते है

भारत लक्ष्मी पढी राक्षसा की ब धन म
सिंधु पार वह बिनल रही है याकुल मन म। २१७

वस्तुन सावत क रचनाकाल म भारतवर्ष परतत्र था यजना स उपयवन
पत्निया म गुप्तजी न साना क रूप म भारतमाना के बधन की ही बात कही
है। जहाँ तक परतत्रता की भावना का सम्बन्ध है साकेतवार न राष्ट्रीय प्रेम
क कारण भा जाय मस्कृति का मवद्रष्ट कहा है। राम रावण युद्ध भी एक
प्रकार स जाय और कौणप सस्कृतिया का युद्ध था जिसम आय सस्कृति ही
विजया हूँ। इस प्रकार सावत म गुप्तजा की राष्ट्रीय भावना पूणत व्यक्त
हूँ है।

४ मानवतावादी विचारधारा—सावत क जीवन-दर्शन का प्रभावित
करन वाली सबसे अधिक महत्वपूर्ण विचारधारा मानवतावाद की है। सम्पूर्ण
काव्य म जिस जावन दर्शन को कवि न स्वीकार किया है वह मानव-कल्याण
और विश्व धुत्व की भावनाओं स अनुप्राणित है। सबसे प्रथम गुप्तजी ने अपन
दृष्ट्य राम का हा मानव कहा है। सावत क राम मानव की महत्ता का

१४ सावत द्वाण सग पृ० ४७६-७५

११६ वही पृ ४७१-७२

११७ वही पृ० ४५५

स्पष्ट शब्दा में स्वीकार करते हैं। ब्रह्म का अवतार भा मानवता की रक्षा के लिए ही हुआ है। सावन में कवि का हृदय ईश्वर के गुणगान में इतना तल्लीन रहा कि साधा देना जितना कि वह मानवता के प्रेम में निमग्न है उसका प्रशंसा में जान है तथा उसका उन्नति के लिए प्रयत्नशील है।^{२१८} गुप्तजा ने राम के चरित्र में भी मानव के ईश्वरत्व का निरूपण किया है। राम का चरित्र मानवीय सदगुणा के कारण महत्त्वपूर्ण है। सावन के राम अवतार ज्ञान के कारण हमारा ध्यान के पात्र नहीं बरन उस सन्देश के कारण है जिसमें वे नर के ईश्वरता प्राप्त कराकर भूतन का हा स्वयं बनाने के लिए कर्मकर्म है। था वाजपयी जी के शब्दों में— सावन में प्रथम बार मानव का उत्कर्ष अपना चरम सीमा पर ईश्वर के समकक्ष लाकर रखा गया है जो मध्य युग में किन्ना प्रकार सम्भव न था। सावन इसी कारण हिन्दी की प्रथम मानवता आत्मवाणी या आत्म मानवतावाणी रचना है।^{२१९}

यही यह उद्देश्यमयी है कि गुप्तजा का मानवतावादी एक विशिष्ट कवि का है। उसमें मानव महिमा का स्वीकृति है मानवतावादी भूया की प्रतिष्ठा का आग्रह है और मानवता के भगवत विधान का प्रयास भी है किन्तु मानव का सर्वोपरिता के प्रति गुप्तजा आश्रय नहीं है। मानवतावादी का नवान विचारधारा के अनुसार मानव ही सर्वोपरि है। वह सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट कृति है। मनुष्य किसी कल्पित मत्ता या शक्ति के अर्थात् नया वह स्वयं अपने भाग्य का विधान और निमाता है। प्रकृति का सम्पूर्ण उपनिषदा पर उभरता एक-छत्र साम्राज्य है किन्तु गुप्तजा इस प्रकार के मानवतावादी दृष्टिकोण का मानव में स्वीकृत नहीं कर सके हैं। वे मानव में ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा के लिए भी ईश्वर का नहीं भला मक हैं, मनुष्य के पुरुषार्थ के प्रति जासबावान हाकर भी भाग्य और प्रारूप के विश्वास का नहीं छोड़ सकें हैं। जन्तु गुप्तजा का मानवतावादी दृष्टिकोण निम्नलिखित नवान और मुगान नहीं कहा जा सकता। उसमें यौद्धिकता के स्थान पर भावुकता की प्रधानता है। मानव में गुप्तजा भागवतीय मानवतावादी के प्रभाव के हैं।^{२२०} पारिवर्गिक एवं सत्कारण

२१८ डॉ० शरिताप्रसाद सावन में काव्य संहति और रंगन पृ० ८१

२१९ आचार्य नन्दनार वाजपयी आधुनिक साहित्य पृ० ६७

२२० डॉ० वागुदेवभरण अग्रवाल का मत—भूमिका में—डॉ० रामाशरण गान्त कृत भाष्य प्रथम में—मधिरागरण गुप्त कवि और भारतीय संहति के आरदाता भूमिका पृष्ठ के

प्रभावा के कारण गुप्तजी से सम्बुद्ध मानवतावादी जाति-मन के इस रूप का अपनापन की अपेक्षा की जा सकती थी ।

इस प्रकार साकत की दार्शनिक भित्ति के निर्माण में प्राचिन और नवान विभिन्न विचारधाराओं का योगदान रहा है । साकत के जीवन-मन की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उगम कथि ने सामन्तवादी पद्धति को अपनाकर बलान्त से नकर गापीवादी तत्त्व प्रचलित महत्त्वपूर्ण दार्शनिक सिद्धान्तों का सफरता से समान्य किया है ।

कामायनी

कामायनी

कथानक समीक्षा

कथासार—एव मृष्टि के अत्यधिक विनाश की प्रतिश्रियास्वरूप महाप्रलय हानी है जिसमें समस्त दश जाति का विनाश हुआ है। ब्रह्म मनु (एव जाति का ध्वसावशय) बचत है जो एक नौका में बठ हुए है। प्रलयकाल का लक्ष्य दश भयकर है—जिसमें धनगजन शशा का ताण्डव नतन चपनाञ्ज का क्रन्दन ज्वालामुखिया का विस्फाट पचमना ना भरव नय और मसुद्र का मर्याण उत्तघन कर समस्त पृथ्वा का जन निमग्न कर देना है। मनु की नाव महामत्स्य का एक घण्ट से एक गिरि शिखर का किनार जा लगती है।

प्रथम (चिन्ता) मग म मनु हिमगिरि का उत्तुग टग पर बठ हुए चिन्ता निमग्न है। व दश मृष्टि का ध्वस और प्रलय का उपरान्त जनप्लावन का दृश्य का देखकर कातर है। द्वितीय (आशा) मग म आशा नामक प्रवृत्ति का उत्पन्न उनका हृत्स्य म जाता है। उधर मूय का विरणा का उत्पन्न से कालरात्रि पराजित होकर जन म अन्तर्निहित हो जाती है। मनु एक गुहा में अग्निहात्र का वायु म निरत हारर कममया मस्वृति का अम्युत्स्य करन का उपशम करत है। मनु का मन म अपार सबन्ता है जिसकी चाट हृत्स्य का बचाटता है। जावन का आशा निराशा का द्वन्द्व उनका हृत्स्य का आश्लित किय है। तृतीय (श्रद्धा) मग म मनु का कामकाया कामायना अधान् श्रद्धा से भट हो जाता है। श्रद्धा उह दया माया, ममता और सहानुभूति मर्मपित करती है। श्रद्धा का सामास्य से मनु का मन का एकाकीपन का द्वन्द्व समाप्त हो जाता है और व भविष्य का मधुरिम कल्पना करत है। चतुर्थ (वाम) मग म अनग की ध्वनि मनु स्वप्न में सुनत हैं जहाँ कामकाय मनु का कहत है कि वह अपने का श्रद्धा का वाण्य बनावे और ज्ञान का सयाग में नवान मृष्टि का विधान हाणा। पचम (वामना) मग म मनु का मन म वामना का अतुत्स्य हाता है और व कामकाया श्रद्धा का रूप मौत्स्य पर आसक्त हो आगमद्विस्मृत हो जात है। षष्ट (वज्रा) मग म श्रद्धा का नारा म्यक्त्तव म मज्रा भाव का जाकरण हाता है जिसका कारण मनु का प्रति आत्मममरण में उसे मकाच हाता है। अन्तनागत्वा वह मनु का जावन विनाम

की गणिना बन जाता है। गणम (कम) गग म मनु कमनिरत हात है। व प्रनय रात स यो आकृति जोर चित्ता तामर पुगान्ति का महायाग म यग करत है जिमम थडा शरा पापिा पनु की चति ग जाता है। मनु की हिमक प्रवति स थडा क मन म शात उपग्र जाता है। चित्तु मनु बिनय भाव म थडा का मन्तुल कर रत है। अष्टम (८व्या) मग म गर्भिणा थडा जागनुक (हान वान शिशु) का भावना म मुटिया बनानी है तस्या म मून वानकर वस्त्र बनाना हुई ध्यस्त रहती है। थडा का उन्मान भाव मनु का जमहनाय हा जाता है। व भावा शिश स ८व्या करन लगत है जोर यनी तक कि थडा का जकता छात्र बन जान है। नवम (९वा) मग म मनु का प्रथम ता काम का स्वर मुनाया दता है जिमम बना गया है कि तुम थडा का भूव गय। फिर व सारस्वत प्रश्न म आत है। वही द्वा उनका स्वागत-गम्मान करता है। व सारस्वत प्रश्न क शासक बन जान है। दशम (स्वप्न) मग म थडा अपन पुत्र मानव क साथ एवान जोर उतास जीवन प्रिताना है। एक त्ति स्वप्न म थडा दखता है कि मनु सारस्वत प्रश्न म द्वा क अधान हा वही क शासक बने है। मनु थडा पर मोहित हा उस पाना चाहत है तभा प्रजा विनोह कर देती है। थडा स्वप्न स भयभान ग जाता है। एकादश (मघप) मग म थडा का स्वप्न गावार हा जाता है। मनु का स्वच्छाचारिता प्रजा क अत्यधिक धाम का कारण बन जाता है। जाकृति और चित्तान जा प्रजा क नना है स मनु युद्ध म घायत हाकर मूर्च्छित हा जात है। द्वादश (निर्वेत्) मग म द्वा क मन म गानि भाव पया हाता है। थडा मनु का दूना हुई वही आ जाती है जहा मनु मूर्च्छित है। व कस्था स आप्यायित हाकर मनु का सहाना है। थडा क कुमुम कामन स्या म मनु जागते है किन्तु थडा स त्तिजित एक स्या क प्रति विरक्ति क कारण क भाग जात है। त्रयोदश (दशन) मग म थडा मानव का स्या का मीपकर मनु की योज म बन देती है। मनु उस मरस्वती नना के तट पर एक गुहा म भित जात है। मनु पशचात्ताप प्रकट करत है। थडा का पुनर्मिलन उह आनन्तित भा करता है। थडा के सम्मुख गुहा क निविडतम म वह ननित नटेश क त्रिय रूप का दशन कर विमुग्ध हो जात है। चतुदश (रस्य) मग म थडा क साथ मनु जानद की लाज म बन दत है। थडा उह विविध त्राक त्रिताती हई त्रिपुर म ल जाती है जहाँ व निराधार स्थित है। मनु के पूछन पर थडा (इच्छा ज्ञान और कमलाक) नाम त्रिपुरा का रहस्य समयाता है कि ताना क पृथक-मधक रहन क कारण हा मन का कछा पूण नहा नाना। तभी थडा क स्मित हास्य स महायाति

से रिया निवालकर ताना बिटुआ को तय कर देती है। ममार म तिनवा
 पूरित हो जाता है। श्रद्धा और मनु आनन्द की भूमिका पर स्थित हो जात
 है। पञ्चश (आनन्द) मग म इण कुमार मानव और प्रजा सहित वहाँ पदुच
 जाती है। वहा ममरमता की भाव महिमा व आग अवगत का कृतज्ञता प्रकट
 करती है। मानव भी श्रद्धा की गाण म ही शांति पाना है। मनु ममरमता
 का उपदेश देने हुए आनन्द की भूमा म खान हो जात है।

कथात्मक आधार

कामायनी की यह अत्यल्प वस्तु सम्पूर्ण महाकाव्य को आगद किया हुआ
 है। कथा के प्रमुख सूत्रा का सम्बन्ध मनु श्रद्धा तथा इण नामक पाथा म है
 जितन कथात्मक सूत्र भारतीय वाङ्मय के विभिन्न ग्रन्था म विद्यन्ते पन्ते है। वेद
 ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद् पुराण रामायण महाभारत एवं अनन्य सम्प्रदायगत
 ग्रन्था म मनु का कथा मितता है। प्रमाञ्जी न कथा मयाजन व तिरा मभी
 ग्रन्था का सम्यक् अध्ययन करने के उपरान्त कामायनी की काव्य-वस्तु का
 मयोजन किया है। कामायनी महाकाव्य के आमुग म करि न कथा मयाजन
 सूत्रा का स्पष्ट और मप्रमाण उतरण किया है। प्रमाञ्जा न कहा है कि—

आय साहित्य म मानवा व आदि पुष्प मनु का नित्याम वना स तन्त्र पुराण
 और नित्याम म तिररा हुआ मितता है। मनु भारतीय नित्याम व आदि
 पुरण है। राम कृष्ण और बुद्ध इत्या की वणज है। १ स्पष्ट = कि कवि न
 मनु व व्यापक आख्यान का कामायनी का कथात्मक आधार बनाया है। माय
 नी कथा शृंगरा और काव्यात्मक औत्सव्य व तिरा उमन कल्पनाशक्ति का भी
 समुचित उपयोग किया है। २ कामायनी का कथा शृंगरा का मिलान व
 तिरा कहा गया थोडा बहुत कल्पना का भी काम म त आन का अधिहार
 गरी छाड गया है। ३

वस्तु के स्रोत

कामायनी म मनु स मन्वन्धित निम्नादि कथाए है

१ जनपदावन की घटना

२ मनु और श्रद्धा का मिलन

१ कामायनी, आमुग १० १० (अनन्य सम्प्रदाय)

२ वही, , , "

मनु और इन्द्र का मित्र (सांख्यत प्रवेश म)

४ आनन्द की गात्र म म नाण भमण ।

१ जनपत्नावन की घटना

जन्म घटना का उद्गम स्वयं विदेश के विभिन्न ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार से मिलता है। पुराणों में जन्म घटना का उद्गम प्रत्येक रूप में हुआ है। वहीं प्रत्येक का अर्थ समझना मूर्खता का घिसा विनाश या समाप्ति है। विष्णु पुराण में नमित्तिक प्राकृतिक तथा आत्यन्तिक नाम के तीन प्रत्येक का वणन है।^३ इन्द्र का उद्गम ब्रह्म पुराण में भी है।^४ अग्नि पुराण^५ तथा श्रीमद्भागवत पुराण^६ में भी नमित्तिक प्रत्येक का उद्गम है। मत्स्य पुराण^७ में जन्म कथा का विस्तृत वणन है। इसके अनिश्चित भविष्य पुराण^८ में मनु का नौका बनाकर प्रत्येक का न मरना करने का उद्गम है। जनपत्नावन की घटना का वणन अथ पुराणों में भी है।^९ महाभारत में जनपत्नावन की घटना का वला मुद्गर वणन प्राप्त है। यहाँ प्रथम तो महाप्रलय की भयकर स्थितियों का वणन है तत्पश्चात् मनु सप्तर्षि और समस्त विपत्ताओं के बीच एक नौका में बच जात है। ब्रह्मा के कथनानुसार मनु मूर्खता रचना करत है।^{१०} डा० द्वारिकाप्रसाद ने अपने पाथ प्रबन्ध में समार के विभिन्न देशों और धर्मग्रन्थों की जनपत्नावन सम्बन्धी घटनाओं का वणन किया है और बतनाया है कि किस प्रकार वाइविल और कुरान की कथाओं का शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों में साम्य है।^{११} किन्तु जनपत्नावन की घटनाओं तथा कामायनी में उल्लिखित एतद् विषयक वणन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कामायनाकार ने पूनत भारतीय ग्रन्थों का ही आधार बनाया है।

मनु से सम्बन्धित घटनाएँ भी भारतीय ग्रन्थों से ही ली गयी हैं। मनु का

३ विष्णु पुराण ६।३।१२

४ ब्रह्म पुराण २३१।१

५ अग्नि पुराण २।८।२

६ श्रीमद्भागवत पुराण ८।२४।७

७ मत्स्य पुराण १।१०।३४

८ भविष्य पुराण प्रति सग पव ३।४।१ ५४

९ पञ्च पुराण १ ३६ स्कन्द पुराण (वष्णव खण्ड) वायु पुराण मूर्खता प्रकरण अध्याय ६६

१० महाभारत वनपर्व १८७।२ ५५

११ डा० द्वारिकाप्रसाद, कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन, पृ० ५८-६३

उल्लेख वेग म भी हुआ है। पुराणा म चौह मवन्नरा की कल्पना है। प्रयेक म एक एक मनु अर्थात् स्वयभू स्वराचिप उत्तम तामम, र्वन चापुप ववस्त माग्नि भीत्य रोच्य तथा चार मन्मावण्य नामक मनुआ का उल्लेख है।^{१२} वग तथा अय प्राया म भा मनु क जनक मया का उल्लेख है। वास्तव म भारतीय माहिय म मनु क दो रूप मिलत ह—एक ता प्रजापति मनु और दूसर स्मृतिकार मनु। विद्वाना म इस मत पर वभिन्न है कि प्रजापति और स्मृतिकार मनु एक हैं या नहा। शभ धीमती महात्मी वमा के अनुसार—' वग म मनु का स्थिति की परीक्षा क उपरान यह मानने के निग बहुत अवकाश रह जाता है नि मनुस्मृति क प्रणता और मवन्तर क प्रवक्तव भिन हा मक्त ह।^{१३} स सम्बन्ध म प्रसाजी का मत यह है नि— मवन्तर क अथात् मानवता क नवयुग क प्रवक्तव के रूप म मनु की कथा आयों का अनुश्रुति म दृष्टता स माना गया है। अनिण ववस्त मनु का ऐतिहासिक पुरप मानता हा उचित है।^{१४}

वामादनी का धृता विरान प्रसाजी क कल्पनाविनास का परिणाम है। पुराणा म इतिहास का नत्व अवश्य है किन्तु अतिरजित या अतीविक रूप म। डा० शम्भुनाथसिंह का यह कथन ठाक ि है कि—' पौराणिक कथाआ म इतिहासिक मत्य छिगा रहता है। अत प्रसाजी न पुराणा म वर्णित कथाआ का तर्कों क आधार पर ऐतिहासिक मथा के रूप म स्वीकार किया है।^{१५} इसका प्रमाण यह है नि जनक वावन एक मवन्तर का उदान पुगण कथाआ स भिन्न रूप म लिया। अत कथा-मयोजन म प्रसाजी का अटिकाण पौराणिक तग ऐतिहासिक और वतानि स।^{१६}

२ धृता और मनु का मिलन

धृता मनु की कथा का आधार वग पुराण है। मनु की भांनि धृता क विषय म भा वगानि प्राया म भिन्न भिन्न उल्लेख है। प्रसाजी न वामादनी क आमुग म धृता विषयत विभिन्न श्रोता का उल्लेख किया है। ऋग्वेद क वातरिग्य मूक्त म धृता या दृहिता तपम कहकर धृता का मूय का पुत्रा

^{१२} सभिप्त माकण्डय—ब्रह्मपुराणां क (कथाणाक) पृ० २८३

^{१३} मयाप्रमात् पाण्डय, वामादनी एक परिचय नूमिका पृ० १

^{१४} वामादनी आमुग पृ० १

^{१५} डॉ० शम्भुनाथसिंह हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास पृ० १६८ ६८

^{१६} पत्नी, पृ० ५७

३ मनु और इंद्र का मित्रा (शांख्यत प्रश्न म)

४ आत्म की राज म कथाण भरण ।

१ जनप्लावन की घटना

इस घटना का उल्लेख मुख्य विशेष क विभिन्न ग्रन्थों में भिन्न भिन्न प्रकार से मिलता है। पुराणों में इस घटना का उल्लेख प्रत्येक रूप में हुआ है। वहीं प्रत्येक का अर्थ समस्त मृत्ति का घन विनाश या समाप्ति है। विष्णु पुराण में नमित्तिर प्राकृतिर तथा आत्यन्तिक नाम क तीन प्रत्येक का वणन है।^३ इंद्र का उल्लेख ब्रह्म पुराण में भी है।^४ अग्नि पुराण^५ तथा श्रीमद्भागवत पुराण^६ में भी नमित्तिर प्रत्येक का उल्लेख है। मत्स्य पुराण^७ में इस कथा का विस्तृत वणन है। इसके अनिर्दिक्त भविष्य पुराण^८ में मनु का नौका बनाकर प्रत्येक का न रखा करन का उल्लेख है। जनप्लावन का घटना का वणन जय पुराणों में भी है।^९ महाभारत में जनप्लावन की घटना का बड़ा मुद्दर उणन प्राप्त है। वहीं प्रथम तो महाप्रलय की भयकर स्थितियों का वणन है तत्पश्चात् मनु मत्स्य और समस्त विपत्ताओं का बीच एक नौका में बच जात है। ब्रह्मा के कथनानुसार मनु मृत्ति रचना करत हैं।^{१०} डा० द्वारिकाप्रसाद ने अपने शोध प्रबंध में सप्तार के विभिन्न देशों और धर्मग्रंथों की जनप्लावन सम्बन्धी घटनाओं का वणन किया है और वननाया है कि किस प्रकार वाइबिल और कुरान का कथाओं का शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थों में साम्य है।^{११} किन्तु जनप्लावन की घटनाओं तथा कामायनी में उल्लिखित एतद् विषयक वणन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचत हैं कि कामायनीकार न पूणत भारतीय ग्रन्थों को ही आधार बनाया है।

मनु से सम्बन्धित घटनाएँ भी भारतीय ग्रन्थों से ही ली गयी हैं। मनु का

३ विष्णु पुराण ६।३।१२

४ ब्रह्म पुराण २३।१।१

५ अग्नि पुराण २।८।२

६ श्रीमद्भागवत पुराण ८।२।४।७

७ मत्स्य पुराण १।१०।३४

८ भविष्य पुराण प्रति मग पव ३।४।१५४

९ पद्म पुराण १।३६ स्कन्द पुराण (वल्गव खण्ड) वायु पुराण, मृत्ति प्रकरण अध्याय ६६

१० महाभारत वनपर्व १।८।२।५५

११ डा० द्वारिकाप्रसाद कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन पृ० ५८-६३

कहा गया है ।^{१७} गुजर्वेद^{१८} तथा शतपथ ब्राह्मण^{१९} में भी अर्द्धा का मूलम्य दुहितृ कहा गया है । तत्तिरीय ब्राह्मण में अर्द्धा का ऋत की पुत्री तथा काम की माता कहा गया है ।^{२०} पुराणा में अर्द्धा का स्वयं प्रजापति की पुत्री माना गया है ।^{२१} श्रीमद्भागवत महापुराण में मानवात्मनि मनु और अर्द्धा में ही मानी गयी है ।^{२२} जहाँ तक अर्द्धा का काम का पुत्री होने का प्रश्न है स्वयं त्रिण प्रगात्जा न प्रत्यय का आधार स्वयं में ग्रहण किया है । अर्द्धा का अनुष्मणित्वा में उगका काममात्र में उत्पन्न होने का कारण कामायनी कहा गया है ।^{२३} स्वयं और मनु के विवाह के रिषय में भी भिन्न भिन्न मत हैं । कहा वह मत्य का पत्नी ' और स्वयं घम की पत्नी माना गया है ।^{२४} स्वयं मन्मथ में श्रीमद्भागवत पुराण का उत्तरम्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है । क्योंकि वहाँ स्पष्ट रूप से अर्द्धा का व्यवस्वत मनु की पत्नी कहा गया है ।^{२५} और प्रगात्जा न भास्वमा ऋषिवाण का अपनाया है । स्वयं पुराण में यह भी कहा गया है कि अर्द्धा और मनु के मयाग से स्वयं पुत्र हुए ।^{२६} प्रगात्जी न भी मानव मृष्टि का विकास अर्द्धा और मनु में ही बनाया है । स्पष्ट है कि प्रगात्जा न यहाँ पौराणिक आधार पर अर्द्धा मनु के मित्रन प्रमग की मृष्टि की है ।

१७ ऋग्वेद ६।१।६

१८ यजुर्वेद १६।४

१ शतपथ ब्राह्मण १२।७।३।११

२ अर्द्धा देवा प्रथमजा ऋतस्य । तत्तिरीय ब्राह्मण १।२।१२
अर्द्धा कामम्य मातरम । तत्तिरीय ब्राह्मण २।८।८।८

२१ माकण्डय पुराण, ५०।१६।२० विष्णु पुराण १।७

२२ तना मनु अर्द्धाव सनयामास भारत ।

अर्द्धाया जनयामास दणपुत्रान् म आत्मवान् ॥ भागवत स्कन्ध, ६।१।११

२३ काम गोत्रजा अर्द्धा नामपिका तथा चानुक्रम्यत । अर्द्धया अर्द्धा कामायनी धादमानुष्टु भर्त्विति । ऋग्वेद १०।१५६ (अनुक्रमणिका)

२४ एतरेय ब्राह्मण ७।२।१०

२५ माकण्डय पुराण, ५०।२१ विष्णु पुराण १।७

२६ श्रीमद्भागवत पुराण ६।१।१४

२७ तना मनु अर्द्धाव सनयामास भारत ।

अर्द्धाया जनयामास ऋणपुत्रान् म आत्मवान् ॥

इसके अनन्तर निजल प्रदश म मृष्टि क पुनारम्भ क लिए श्रद्धा और मनु मिलकर प्रयत्नरत हात हैं । इसी बीच आकुलि और विनात नाम क न अमुर पुराहिता म मनु का साम्राज्यार गाना है जिनके परमपर मनु पर मन करत है जिसम श्रद्धा गरा पाकित पर का बलि द न जाती है । इन घटनाओं का पुराणा म विवचन नती क्याकि इनका आधार यजुर्वेद ऋग्वेद एवं साम्राज्य ग्रन्थ ही है ।

मनु के पशु-धनि-कर्म म श्रद्धा का नूठ जाना गभवती हाता और तत्पन्तर भावी मन्तति के लिए ऊनी वस्त्र एवं मुन्तर कुटार आदि का निर्माण करना कवि-कल्पना प्रमूत हैं । इन वषणा का आधार पौराणिक या एतिहासिक नहा है ।
३ मनु और इडा मिलन (सारस्वत प्रदश म)

मनु क मन म वासना का अग्नि प्रताप्त हाती है । व श्रद्धा की गभावम्या म विभ्र रहत है । गमस्य शिश क प्रति मन म ईष्या भाव जाप्रत होता है । एक दिन व गभवती श्रद्धा को छाडकर उजाट मारस्वत प्रदश म पदुवत हैं जहाँ की रानी इडा मनु को नगर का शासक नियुक्त करता है । मनु क प्रयासा म नगर समृद्ध एवं सम्पन्न बन जाता है । मनु इडा म अपनी वामना नृपति का प्रयास करत है जिसके कारण मारस्वत प्रदश की जनता विद्रोह करती है । सधय म मनु घायत हात ह । उपयुक्त घटनाओं म सारस्वत प्रदश का स्थिति का एतिहासिक एवं पौराणिक आधार प्राप्त हाता है । एतिहासिक दृष्टि म मारस्वती नदी का तटवर्ती प्रदश मारस्वत प्रदश है । ऋग्वेद म हम नदी का उल्लेख भी है । आधुनिक विज्ञान पत्राव म वहन वाली नदी को मारस्वती मानत है किन्तु प्रमात्रजी न मप्रमाण सिद्ध किया है कि मारस्वती नदी पश्चिमा अफगानिस्तान क पास गा-गार म वहना थी जहाँ मन्त मिनु प्रदश था । अन्तु क्याकि व समीप स्थित प्रदश का हा मारस्वत प्रदश माना है ।^{२५}

जहाँ तक पुराणा का सम्बन्ध है वही मारस्वती नदी का उल्लेख अवश्य है किन्तु मारस्वत प्रदश का वषण नहा है । पद्य पुराण म मारस्वती नदी का प्रणया मितनी है ।^{२६} स्वतः पुराण म मारस्वत प्रदश का द्वागवती नगरी नाम प्राप्त है ।^{२७} अन्य कुछ पुराणा म मारस्वत वष का उल्लेख मितनी है ।^{२८}

^{२५} बोरसोत्साय-स्मारक सप्त पृ० १७० ७३

^{२६} पद्य पुराण मारस्वती आश्यानि मृष्टि मन्त अध्याय १८

^{२७} इन्द्र पुराण, ब्रह्मण्ड घर्माश्वमाश्व अध्याय १८

^{२८} माण्डूक्य पुराणादि (कल्याण) पृ० २०७ मारस्य पुराण (हिन्दी अनुबा) पृ० २६० वायु पुराण (हिन्दी) पृ० ११८ अग्नि पुराण अध्याय १०७ ८

जिसमें प्रतीत होता है कि यह नाम रक्षा से सम्बंधित है। मनु ने इन्द्र के माघ जो अनीतिपूर्ण आचरण करने का उपाय किया उसका वधन बनाम तो नती किन्तु ऐतरेय ब्राह्मण से क्यागाम्य रगता है। सारस्वत प्रदेश में जा जन विद्वाह चित्रित किया गया है वह रवी कोष का प्रतीक है।

धूम कतु म चना रूप नागण भयत्
त्रिय पूँछ म चाना अपनी अति प्रनयत्
अतिरिक्ष म महाशक्ति हुवार कर उगी
सब शम्भ्रा की घारें भीपण वग भर उठी।³²

एक जनप्रान्ति का ननुत्व करते हुए अमुर पुरोहित आनुति और किलात का दियाया गया है जिन्हें मनु घराशापी कर देत है यह प्रमग प्रगाजी की निजी कल्पना पर आधारित है। अन्त में मनु ही रद्र बाण से प्रहार से मूर्ति छत हा जात है। मनु इन्द्र मितन और सारस्वत प्रदेश से सम्बंधित क्या गण म इन्द्र और मनु का मितन तथा मनु का इन्द्र पर स्वच्छ प्रम आरोपित करने का प्रयत्न और दवी प्रवाप शतपथ ब्राह्मण के आधार पर और सारस्वत नगर में मनु का इन्द्र को मागप्रश्नन आदि ऋग्वेद पर आधारित घटनाएँ हैं। कवि ने बन्कि आख्यान को कल्पना से सवारने का सुन्दर प्रयास किया है।

४ श्रद्धा-मनु का पुनर्मिलन और आनन्द की खोज में कलाश भ्रमण

कामायनी महाकाव्य की क्या-वस्तु का अन्तिम अंश प्रसादजी की दार्शनिक एवं तत्त्व चिन्तक दृष्टि पर निर्मित हुआ है। यहाँ एतिहासिक तथ्या का प्राय कोष है। इस क्याभाग में मनु नटराज शिव का ताण्डव करते हुए देखते हैं। उन्हें इच्छा पान और त्रिया के त्रिकोण की वस्तुस्थिति का परिणाम होता है। कलाश में ही इन्द्र श्रद्धा पुत्र मानव और सारस्वत प्रदेश की प्रजा पहुँच जाती है और सब मितकर एक समुक्त परिवार के रूप में बस जात है। मनु को अरण्य आनन्द की प्राप्ति होती है।

शिव के ताण्डव नृत्य का वधन पुराणा में प्राप्त है।³³ शिव के ताण्डव नृत्य पर संस्कृत भाषा में एक शिव-ताण्डव स्तोत्र की भी रचना हुई है। शिव महिमा स्तोत्र के अनुसार शिव का ताण्डव नृत्य विश्व के क्याण के लिए है।³⁴ प्रसादजी ने भी शिव के ताण्डव नृत्य को आनन्दमयी भूमिका पर प्रस्तुत किया है।

³² कामायनी सधप सग पृ० २०२ (दशम संस्करण)

³³ माकण्ड्य ब्रह्मपुराण अंक (कल्याण) पृ० ३४२-४४ तिग पुराण २०६
०५ २८

³⁴ शिव महिम्न स्तोत्र १६ ३३

“आनन्त पूण ताण्णव मुत्तर

धरत थ उज्ज्वल धम माकर । ३५

इसी कथा में त्रिपुर या त्रिकोण का भी बणन मिलता है। त्रिपुर कल्पना भारतीय वाङ्मय का प्राचीन रूप है जिसका उद्भव कृत्क एवं ब्राह्मण प्रथा व अनिर्दिक्त आय पुराणा में भी विस्तारसहित मिलता है। शिव पुराण^{३५} लिङ्ग पुराण^{३७} मत्स्य पुराण^{३८} श्रीमद्भागवत पुराण^{३९} महाभारत^{४०} आदि में त्रिपुर कथा का उद्देश्य इस रूप में हुआ है कि अगुरा न जाहूँ चौंटा और स्वर्ण के तीन पुरा का निर्माण स्वताआ में सुरक्षित हान व त्रिण किया जिनका स्वस शिव द्वारा किया गया। शक्रागमा^{४१} में त्रिपुर रूपक बणन भिन्न रूप में किया गया है। वहाँ त्रिपुर व तीन कोण इच्छा ज्ञान और त्रिया मान गये हैं। ये तीन कोण तीन शक्तियाँ में परिव्याप्त हैं जिन्हें इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति और त्रियाशक्ति कहा है। इनमें इच्छाशक्ति मूर्ति रचना की वामना उत्पन्न करके मनुष्य को सामागिक कर्मों में लीन कराती है। इस त्रिकाण का ही त्रिकोण या समार कहते हैं। इस त्रिकाण का शासिका त्रिपुरा देवी मानी गयी है जो ब्रह्मा विष्णु एवं शिवस्वरूपा है। यह देवी इच्छा ज्ञान एवं त्रियाशक्ति से युक्त हाकर चक्रमा रूप में मूर्ति व काय करती है अग्नि रूप से संहार करता है और रवि रूप से समार की स्थिति का काय करती है। जब तक ये तीन पुर पयव-यूषक बन रहते हैं समार का रूप उपाधिपुक्त रहता है। इनके समाप्ति अर्थात् समरम हान ही यह आनन्त रूप में परिणत हो जाता है। त्रिपुरा रूप्य व अनुसार धडा को ही त्रिपुरा देवी माना गया है। वही अपनी अतन्त्रशक्ति द्वारा त्रिपुरा का एक करता है।^{४२}

वामायनी व मनु कलाग पर पढ़कर अगण आनन्त का अनुभूति करत है। उन्हे नटराज शिव व चण्णा में ही अगण आनन्त का प्राप्ति जाता है।^{४३}

३५ वामायनी, आनन्त मग पृ० १५

३६ शिव पुराण एवं महिना मुञ्ज मण ५।१।१०

३७ लिङ्ग पुराण अध्याय ७१

३८ मत्स्य पुराण अध्याय १०६।४०

३९ श्रीमद्भागवत पुराण, ७।१०।५३।३०

४० महाभारत का पव अध्याय २३।३४

४१ तत्रालोक, भाग २ पृ० १०४

४२ त्रिपुराहृत्य ज्ञान मण अध्याय ६

४३ वामायनी रहस्य मग पृ० २७२-७३ (अमम मन्वरण)

कथाग पक्ष का जो यणन कामायनीका र विषय है उगका उरुग भी पुराणा म मितता है । कलाश गिरि की जिग अनुपम शोभा एव मागरोरर क जिग विषय रूप का यणन पुगणा म हुआ है उमी क अनुमाग प्रगाजी न भी कामायना म कलाश प्रेश का त्रि अति विषय है ।

एग प्रकार उपयक्त आधार घया का अनुशीलन करत पर स्पष्ट सिगापी देता है कि इग कथा भाग की निर्मिति म प्रगाजी का कपनाशक्ति का ही अधिक् याग रहा है । उहान क ग्राहण घया शवागमा पुराण आदि घया म विवीण कथा-मामपी को लकर कामायनी क कथानक का भव्य निर्माण किया है ।

कथायातु म रूपक तत्व की प्रतिष्ठा

कामायनी मन्वाव्य के आमुग म प्रगाजी न विग्या है— यति थडा और मनु जयात मनन के सहयोग स मानवता का विकास रूपक है तो भी कथा भावमय और शताध्य है । यह मनुष्यता का मनोवचानिक इतिहास बनने म मन्वायक हा मवता है । ४४ एक अय स्थान पर प्रगाजी ने लिखा है कि यह आख्यान कना प्राचीन है कि इतिहास म रूपक का भी अन्भुत मिश्रण हा गया है । इसलिए मनु थडा और इग कथा अपना एतिहासिक अस्तित्व रखत हुए सावकितिक अथ की भी अभिव्यक्ति कर तो कोई आपत्ति नही । मनु जयात मन क दोना पक्ष-हृदय और मन्तिष्क का सम्बन्ध क्रमण थडा और इग स भी सरलता से लग जाना है इनी मवके आधार पर कामायनी की कथा-मृष्टि हुई है । ४५

प्रगाजी क उपयक्त कथना से स्पष्ट है कि कामायनी की एतिहासिक कथा म रूपक तत्व का भी समावय है । यहाँ उल्लेखनीय यह है कि मूलत कामायनी एतिहासिक काय ही है । हाँ गौण रूप म रूपक तत्व का भी कामायनी की कथा म समावेश है । कामायनी की कथा म रूपक तत्व की व्यजना मुख्यत तीन प्रकार से हुई है

१ प्रमुख पात्रा के मनोवचानिक रूप चित्रण म

२ कथानक क सर्गों के नामकरण एव क्रम म

घटनाका की अप्रस्तुत अथ-मयोजना मे ।

कामायनी क कथानक की रूपकात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रगाजी न

४४ कामायनी, आमुग पृ० ६ १०

४५ वही पृ० ६

काय के प्रमुख पात्रों के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के साथ-साथ उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप में भी चित्रित किया है। कामायनी के मनु मन के थड़ा हृदय की और इटा बुद्धि की प्रतीक है। कामायनी की कथा में स्पष्ट होता है कि मनु थड़ा के सान्निध्य से ही आनन्द की प्राप्ति करते हैं। इटा मनु को भौतिकता के सघष में उलझाकर उनका जीवन दुःखमय बना देती है। इस प्रकार यन्त्रि मास बुद्धि का आश्रय ग्रहण कर मनुष्य का मन (मनु) सुख का प्राप्ति करना चाहता तो सघषों में पड़ जाता है। मन (मनु) हृदय (थड़ा) अर्थात् रागात्मिका वृत्ति का आश्रय प्राप्त करके ही आत्मविश्वास के साथ जीवन-मथ पर अग्रसर होता हुआ अमण्ड आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। कामायनी के अन्य पात्रों में आबुलि और किलात नामके पुरोहित आसुरी वस्तियाँ के प्रतीक हैं जो मानव के मन (मनु) को पाप बन्ध (हिमा यन्) में प्रवृत्त करते हैं थड़ा मनु का पुत्र कुमार नव मानव का प्रतीक है।^{४६} डा० नगद्वय तो कामायनी में उल्लिखित दस थड़ा के पशु चरम मोक्षता यदि के प्रमथ न्द्रियाँ अहिंसा धर्म और भाग सांकेतिक अथ मान हैं।^{४७}

पात्रों के अतिरिक्त कामायनी की कथा की रूपात्मकता सगों के नामकरण एक प्रथम से भी स्पष्ट है। प्रत्येक सग का नामकरण मानवीय प्रवृत्तियों के आधार पर चिन्ता, आशा थड़ा काम वासना आदि रूप में किया गया है। सबसे बड़ा विशेषता इन सगों के विवामग्रम की है। इन सगों का उमी प्रकार चित्रित किया गया है जिन प्रकार यह वस्तियाँ मानव हृदय में उन्नि गेकर विकसित होती हैं। चिन्ता मानव मन का आरम्भिक वृत्ति है। अभाव के कारण मनुष्य के मन में चिन्ता का उन्म होता है तभी मनुष्य का चिन्ता प्रथम मन अज्ञानि से निवृत्ति पान के लिए व्यग्र होता है कि आशा का भाव उन्म होता है। आशा मन का शान्त करती है तभी थड़ा का विवाम ज्ञान है जो मानव के चरम मन का आस्था और विश्वास का सबसे प्रथम करती है। तत्पश्चात् काम और वासना नामके वस्तियाँ जाग्रत होती हैं। वासना के भावों का रोकने के लिए लज्जा का उत्पत्ति ज्ञान है। वासना की तापना मृष्णा के रूप में परिणित होकर मानव को बन्ध में प्रवृत्त करता है। बन्धवृत्त मन अहंभाव के कारण इर्ष्यानु हा जाता है और थड़ा का अवहनना करके बुद्धि अर्मान् इटा का आश्रय लेता है। बुद्धि (इटा) आश्रित मन भौतिक

^{४६} डॉ० नगद्वय कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ पृ० ४५

^{४७} वही, पृ० ४६

सम्पन्नता के लिए तब-तब व्यक्त देगता है। यह बुद्धि पर विजय प्राप्त के लिए सधपरत भी हाता है। सधय म अगपय हात पर मनुष्य के मन म निर्वे (धराय) की भायना का उन्य हाता है। पात्र गाकर मनुष्य का मन पुन श्रद्धा की आर उ मुय हाता है और श्रद्धा के सहयोग से उस जात्म-माधात्कार (दशन) होना है। सभी मानव मन अपनी पराजय का रहस्य समझता है। अन्तत मानव मन इच्छा ज्ञान और क्रिया आदि वृत्तिया का समन्वय (सम रसता) करके असण्ड आनन्द की प्राप्ति करता है। इस प्रकार सगों के विकासक्रम म एक सुन्दर रूपन की यात्रना हु है।

इसी प्रकार जनप्लावन त्रिपुर मानसरोवर बनाग आदि घटित घटनाआ के सावतिक एव प्रतीक अथ भी भारतीय दागनित मायनाआ की पटभूमि म मित जान है। उगाहरण के लिए कामायनी की प्रस्तुत कथा म मानसरोवर की यात्रा मनोमय कोप म स्थित जीव की आनन्दमय काप म स्थित होन के लिए साधना ही है। यह आनन्दमय कोप ही बनाश है। त्रिपुर इच्छा पान और क्रिया का त्रिकोण है जिनका सम वय रद्धा के द्वारा हाता है।

इस प्रकार कामायनी की प्रस्तुत कथा म मानवता के विकास का सुन्दर रूपक समोजित किया गया है। जहाँ तक रूपक तत्त्व के सफल निर्वाह और समति का प्रश्न है विद्वाना के अलग-अलग मन है। एक लेखक के शब्दा म— पूर आमूय के परिशीलन से यह बात ही जाता है कि कथा के इतिहासानुमानित हान के जाग्रह के साथ रूपक तत्त्व का निर्वाह ही उनको अधिक अभीष्ट है।^{४८} किन्तु यह दृष्टिकाण पूणत उपयुक्त प्रनीत नहा होता। कयाकि कामायना म प्रस्तुत कथा प्रधान है और अप्रस्तुत कथा गौण है। दूसरे रूपक तत्त्व के पूण निर्वाह के लिए कवि अपनी ओर से विशय प्रयत्नशील नहा रहा है। कवि न स्पष्ट कहा है कि कथा म साकेतिक अथ की अभिव्यक्ति भी दिग्यायी पता मुय (प्रसादजी) कोई आपत्ति नही। स्पष्ट है कि कामायनी म रूपक तत्त्व की प्रतिष्ठा कवि का अधिक अभीष्ट नहा। इस कथा के रूपक म कुछ असगतिया भी है। जस जब मनु मानव मन अथवा मनोमय काप म स्थित जीव का प्रतीक है ता उसक पुत्र कुमार को नव मानव का प्रतिनिधि मानकर भी समति नहा कयाकि इस तरह पिता-पुत्र म तगभग एक ही प्रतीकाथ की

^{४८} श्री पानचन्द्र निजन कामायनी पर प्रबोधचन्द्रोदय का प्रभाव (साहित्य सादेश जगत १९६२ अंक १ भाग २२)

पुनर्गति हो जाती है।^{१६} इस प्रकार की अमरगति या कर्मबन्धन का उन्मूलन का विचार है कि— प्रस्तुत कथा का पूरी तरह अप्रस्तुत सच जगत् के लोकात् नष्ट है। जाति प्रस्तुत कथा का थोड़ा सा सा स्वतंत्र अन्वेषण करना चाहिए।^{१७} निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कामायनी की कथा मरिचिकता और रूपक-तत्त्व का अभूत समन्वय हुआ है जो असूतपूर्व है।

कथानक की अर्थ विशेषताएँ

कामायनी की कथा-वस्तु की अर्थ विधाताओं का विवेचन सामान्य कथा विधान नवीन प्रयोगों की उद्भावना मौलिकता एवं कल्पनात्मक प्रयोगों की दृष्टि में किया जा सकता है।

१ प्रसादजी ने कामायनी के कथा विधान में जहाँ तक चार ऐतिहासिकता और पौराणिकता की रक्षा करते हुए कथावस्तु का प्रमाणिक बनाया है वहाँ दूसरी ओर मौलिक प्रयोग-भावनाएँ भी की हैं। वेदा ब्राह्मण ग्रन्थों उपनिषद्, पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों में विद्यमान कथाओं का कल्पना और काव्योक्ति द्वारा अभिनव ढंग से संप्रतिष्ठित कर महाकाव्योक्ति गरिमा में मण्डित किया है।

२ कामायनी के कथानक में निम्नांकित घटनाएँ कवि का सबसे मौलिक उद्भावनाएँ हैं

- (अ) श्रद्धा के पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव के कारण मनु के मन में ईर्ष्या का उत्पत्ति चार परिणामस्वरूप श्रद्धा का जन्म होकर मनु का सारस्वत प्रणय चला जाना।
- (ब) सारस्वत प्रणय में मनु के विच्छिन्न जनशक्ति। राजनैतिक दृष्टि में यह घटना कथानक का युगानुसृतता का भाव प्रतिपादन करता है।
- (क) श्रद्धा के स्वप्न की घटना।
- (ख) मनु और श्रद्धा का कलाप यात्रा। इस ओर मानव का परिणय सम्बन्ध एवं सारस्वत प्रणय का विषय मण्डित इस ओर मानव का कलाप प्रस्तुत।
- (ग) इनके अतिरिक्त भाव अन्तर्गत एक प्रयोग है जिनमें कवि ने परिवर्तन-परिवर्द्धन किया है। जगत् मनु का पुनर्गति के लिए

^{१६} डॉ० कर्माचार्य महेश और डॉ० विजयलक्ष्मी स्नानक कामायनी कथानक पृ० १४१

^{१७} डॉ० नगेश कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ पृ० ५२

नयी वरन् देव प्रसूति का कारण बन करगा शूद्रा का मनु की पालिता पुत्री के रूप में चित्रित किया जाएगा मनु का बेटा एक पुत्र का हाना आदि ।

शास्त्रीय कथा विधान का दृष्टि से कामायनी की कथा वस्तु में गति-यथा एव अथ प्रकृतिया की सफल याजना तो हुई है साथ ही पाश्चात्य दृष्टि से विचार करें तो प्रारम्भ विकास चरम सीमा, तिगति और अन्त आदि कार्यावस्थाएँ भी पूरी जा सकती हैं ।

४ कामायनी का कथानक की गद्यस्य महत्त्वपूर्ण विशेषता आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इतिहास का पुनः मूल्यांकन है । भारतीय इतिहास का जितना सम्प्रदाय और गौरवमय आयोजन कामायनी का इतिवस्तु में हुआ है वह अन्यत्र दुर्लभ है । कामायनी में इतिहास और रूपक तत्त्व का भी अद्भुत समन्वय हुआ है ।

५ कामायनी का कथा वस्तु घटना विरल है । यद्यपि महाकाव्य का कथा-याजना में घटनाओं की प्रधानता मिलती है । कामायनी की घटना श्रुतनी विस्तृत नहीं । वह इतिहास के द्वारा आगे बढ़ती है । उसमें दीपता की अपेक्षा गाम्भीर्य अधिक है ।^{५१} कामायनी के कथानक में धारावाहिकता का अभाव में भी एक ऐसा ज्वलन्ती-प्रताप विद्यमान है जिसके कारण विभिन्न प्रसंगा में सफल सम्बन्ध निर्वाह हुआ है । इसका अतिरिक्त कथानक यद्यपि तीव्रगति से विकसित नहीं होता एक वही वही उसमें शक्ति भाँटि दी जाती है फिर भी घटना-वृत्ति काय में सत्रय बनी हुई है ।

इस प्रकार कामायनी महाकाव्य के कथा निर्माण में प्रसादजी ने इतिहास मनाविधान और कल्पना का प्रयोग से मानवता के विकास का अद्भुत रूपक प्रस्तुत किया है ।

चरित्र विरलेपण

कामायनी की पात्र मृष्टि-श्रुतता जल्प है कि उस चरित्र प्रधान काव्य नहीं कहा जा सकता । कामायनी में कुल ८ पात्र हैं जिनमें प्रमुख तीन हैं—मनु शूद्रा और इन्द्र । इनके अतिरिक्त तीन अन्य पात्रों में अमुर पुराहित आकुति कितात और मनु शूद्रा का पुत्र कुमार मानव है । काम और राजा अशरीरी पात्र हैं जिनका कथा विकास और घटनाचक्र का प्रभावित करने का दृष्टि से विशेष महत्त्व नहीं है ।

^{५१} १। प्रमथकर प्रसाद का काव्य पृ ३१७

प्रमूढ पात्र

मनु—मानवता व जनक मनु कामायनी महाकाव्य व नायक है। काव्य शास्त्राय दृष्टि व महाकाव्य व नायक म जा धय श्रीमान शीघ्र मान्य पराक्रम और अत्यन्त उत्साह जता चाहिए जम्हा जनक चरित्र म जभाव हा है। फिर भा सम्पूर्ण काव्य व कथा-मञ्चानत और उद्दृश्य (फल) का प्राप्ति म व आद्यान्त कायन्त चित्रित किय गय है। मनु का चरित्र अनिष्टम और कपला का ममन्त्रित पृष्ठभूमि पर अंकित किया गया ह। कामायनी म मनु व जनक रूप निमाया दन है। डा० फलहर्मि न तान रूपा^{४२} १।० शक्तिप्रसाद न चार रूपा^{४३} और डा० व्यामनन्त किशोर न मनु व पाँच रूपा^{४४} की प्रचानता स्वाकार का है। मनु व सम्पूर्ण चरित्र त्रिकाम का अध्ययन निम्नांकित चार रूपा व जलगत किया जा सकता है

१ प्रलय-काल व जननर त्व-मृष्टि व ध्वसावाप व रूप म बच हुए मनु जा पुष्ट शारीरिक गठन एक त्व अशाय व्यक्तित्व धारण किय हुए चिन्ताशून्य निष्वायी दन है।

२ श्रद्धा का जीवनमगिना बनाकर शून्य निमाण करत जा मनु जा वासुदेवानिरक म अविवका बनकर श्रद्धा का निजत प्रथम म छात्रक चल जान है।

३ गारम्बन प्रथम म इला व सम्पक म प्रजा पावन करत हुए मनु जा वासुदेव म विनाम प्रवृत्ति व कारण अगपय हो जान है।

४ श्रद्धा व पुनसम्पक म जानन् का राज म रत मनु जित् सफलता मिलता है।

कामायनी का प्रारम्भ मनु व हा जन्मवाह्य यकित्व व निष्पण म हाना है। उनक व्यक्तित्व क म पय ह—एक पतिहासित और दूसरा साविक।

^{४२} मनु का पहला प्रजापति रूप है दूसरा बन्धक वमराण्डा ऋषि का रूप है मनु का एक तामरा रूप और भा जा मनु इला मुग व जन्म हान पर जानन् गय का साजत हुए मन म रगा जा सकता है।

डा० फलहर्मि कामायनी सौख्य पृ० १६७

^{४३} १।० शक्तिप्रसाद कामायनी काव्य मसूहि और दशन प० १०४ म १०८ तक (१) ऋषि मनु (आ) शून्य मनु (२) प्रजापति मनु (३) जानन् व अधिका मनु।

^{४४} १।० व्यामनन्त किशोर आधुनिक हिंदी महाकाव्यों मे शिल्प विधान पृ० - ७२८ (१) नरक तपस्वी (आ) बिलक (२) शून्य (३) सुविवाहा (उ) जानन् तत्कर्मी।

तामिस शक्ति म मनु का चरित्र यन्त्रि वाच मय एवं पौराणिक प्रथा म उपजाय है । वही यवम मनु का प्रजापति मृत्पापति श्रद्धाव प्रथम-पाप यन-जती एवं मृष्टितीर्ता आदि कहा गया है । नाकतिर दृष्टि म मनु का मन का प्रतीक मानकर उक्त दृष्टिया का ग्रामा मान्य विकल्पमान यन्त्रि चारत एवं अभीष्ट काय का मन्पात्रनर्ता बनाया गया है । प्राचात भाग्याय प्रथा म मनु का चरित्र अत्यन्त व्यापक एवं विशाल रूप म अक्षित किया गया है । प्रजापती न कामायनी क मनु का निर्माण करत समय एतद्भागिन मनु का जाशिक रूप हा ग्रहण किया शय चरित्र विकाम उनकी निजा कल्पना पर आधारित है । काव्यारम्भ म ही मनु क सम्पुष्ट शरीर-गठन का पश्चिम दत हुए उनक व्यक्तित्व म श्चीय अश की अवतारण का गया है

जवयव का दड मांग पशिया
उजस्विन था वाय अपार
स्फीत शिराण स्वम्भ रक्त का
हाता था जग म सचार । ५५

पौरप जीर योवन स जातप्रात हाकर भा मनु चिन्ताकार है ।^{५६} उनकी चिन्ता का कारण अबस्मात ही जन्पनावन द्वारा मन् दव मृष्टि का ध्वम है । मनु स्व जाति क विनाश क कारणों की चिन्ता म डर हुए माचत है

जाज आमरता का जाविन हू
मैं वन् भापण जजर दम्भ
जाह सग क प्रथम अक का
अधम पात्र मय-सा विक्वभ । ५७

एस स्थिति म श्रद्धा क सम्पक स मनु क हृदय म आशा का सचार हाता है । मनु श्रद्धा पर जासकत हो जात है । श्रद्धा नारी का समपण भाव उकर उनके जावन म प्रविष्ट हाता है । श्रद्धा और मनु प्रणय-भूत म बध यज्ञानि कर्मों की सम्पन्न करत हुए गृहस्थ जीवन मे प्रविष्ट होत है । यहा हम मनु का चचन कामुक कामनाप्रिय हिंसक एवं स्वार्थी यक्ति क रूप म देखत है । व आकुति जीर विनाश क परामश म श्रद्धा क पात्रित पशु की बनि द दत ह । इन

५५ कामायनी, चिन्ता मग प० ४

५६ वही प० ६

५७ वही प० १८

कार्यों में श्रद्धा का प्रतिराय उह अच्छा नया नगना । व गभवता श्रद्धा न अपनी उदाम काम वामना की तृप्ति चाहत हैं । मनु कहत है

‘तुच्छ नहा है अपना मुख भा श्रद्धा । वह भा कुछ है

दा तिन क हम जावन का ता बहा चरम मव कुछ है । ५८

मनु इन्द्रियजन अभिनायात्रा की तृप्ति का ही जीवन का ध्यय मान लत है । श्रद्धा क भावी मतति क प्रति प्रेम क कारण जनक मन म ईप्या भाव उत्पन्न हाना है और एक तिन ना चला आज मैं छाया यहा मचिन मवन्न भार पज ५९ वन्त हुए श्रद्धा का निजन प्रान म अकना छात्कर बन जात है ।

श्रद्धा म विमुक्त हाकर मनु मार्ग्वत प्रदा पहुचत है । वनी इना क रूप सौन्दर्य पर राक्षस मारम्बत प्रत्या क नामन का मचानन वरत है । किन्तु यही भा इना पर एनाधिकार की भावना यह सबटपूण म्यिति म राल नता है । इहा पर निरकुश अधिकार का कामना म मनु वनाम्हार वरन का प्रयत्न वरत है परिणामस्वरूप मार्ग्वत प्रत्या की प्रजा विना कर दनी है और मनु धायन हा जात है । इम प्रमग म युद्ध करत हुए यद्यपि मनु का प्रजापति याडा एव कुशल प्रणामक का रूप भा हमार समक्ष आता है किन्तु इन्द्रिय निम्ना कामुकता एव अतृप्त वामना म व यही भी मुक्त नहा हा पात ह ।

श्रद्धा क पुनागमन स मनु क चरित्र म जापानिक परिवर्तन आ जाता है । मनु ममार स पराट भुय हाकर जानन् की ग्राज म बन पडत है । श्रद्धा क पुन मग्गक म उनक वामनापूण जीवन की रति हा जाता है । मारम्बत प्रत्या क कटु अनुभवा क कारण उनका सम्पूर्ण अन्कार और मिथ्यात्म ममाप्त हा जाता है । काव्य क प्रारम्भ स त्रिम मनु का म स्वार्थी इन्द्रिय लिप्सु भीतिवताप्रिय र्व्यानु पात है व अच निवृत्तिमार्गी हाकर अराण्ड आनन् की ग्राज म चल नत है । अपन पुत्र बुभार और र्वा का मारम्बत प्रत्या म छात्कर श्रद्धा क साथ हिमालय प्रस्थान करत हैं । वही नतिनन्तम (शिव ताण्डव) क दान म उनका हृदय पवित्र हा जाता है तथा मनु पुकार उठत है

यह क्या श्रद्धा ! वम तू त चल उन चरणा तक म निज मग्बन सब पाप पुष्य त्रिमम जन जन, पावन बन जात है निमल मिटत अमाय स पान लश समरम अराण्ड आनन् वग । ६

५८ कामायनी कम मग प० १०

५९ वही ईदार्ता मग, पृ० १५४

६ वही मन्त मग, पृ० २५४

हामिक दृष्टि में मनु का चरित्र यन्त्रि पाद मय एव वीरगणित प्रथम में उपलब्ध है। वहीं यद्यपि मनु का प्रजापति गृह्यापति श्रद्धांश प्रथम पाठ यज्ञ-कर्ता एव गृह्यकारि आदि कहा गया है। गाणित दृष्टि में मनु का मन का प्रतीक मानकर उक्त दृष्टिया का स्वामी महान्य विश्वशासन बलिष्ठ चंचल एव अभीष्ट काय का सम्पादनार्थक बताया गया है। प्रजापति भाग्यप्रिया मनु का चरित्र अमन्य व्यापक एव विशद रूप में अस्ति किया गया है। प्रजापति न कामायनी के मनु का निर्माण करत समय अनिर्वाचित मनु का जासिक रूप ही ग्रहण किया शय चरित्र विशाग उनकी निम्नी कल्पना पर आधारित है। काव्यारम्भ में ही मनु के सम्पूर्ण शरीर-गठन का परिचय दत्त हुए उनके व्यक्तित्व में दशाय अज्ञ की अवतारण का गया है

अवयव का दुःख मांस पशियाँ
उजस्विन धा वाय अपार
स्फाल शिराण स्वस्थ रक्त का
हाता धा जग म संचार। ५५

पीरप और यौवन से जानप्राप्त हाकर भा मनु चिन्ताकातर है।^{५६} उनका चिन्ता का कारण अकस्मात् ही जनप्रावन द्वारा मनु देव गृष्टि का ध्वंस है। मनु देव जाति के विनाश के कारणों का चिन्ता में डूब हुए साचत है

आज जामरता का जीवित हूँ
म वह भाषण जजर दम्भ
आह सग के प्रथम अक का
अधम पात्र मय-सा विष्कभ। ५७

एक स्थिति में श्रद्धा के सम्पर्क से मनु के हृदय में आशा का संचार हाता है। मनु श्रद्धा पर आगवन हा जात है। श्रद्धा नारी का समपण भाव लेकर उनके जावन में प्रविष्ट होती है। श्रद्धा और मनु प्रणय-भूत में बंध यज्ञानि कर्मों को सम्पन्न करत हुए गृहस्थ जीवन में प्रविष्ट हात है। यहाँ हम मनु का चंचल कामुक कामनाप्रिय हिमक एव स्वार्थी यक्ति के रूप में देखत है। वे आकुलि और विनाश के परामश से श्रद्धा के पातित पशु की बनि दे दत ह। एत

५५ कामायनी चिन्ता सग प० ४

५६ वही प० ४

५७ वही, प १८

श्रद्धा मनु का इलाक़ा मान और श्रिया प्रणाली का भ्रमण करती हुई आती स्थिति मात्र स विद्या का एकाकार कर अर्थात् समरसता का मधार कर उक्त अभ्यन्धित का योज करती है। उक्त मनु का अहम् भाव इहम् म समविष्ट हो जाता है। उक्त समूह विश्व भ्रमण बनना का विनाम प्रदान होता है। मनु का अगण्ट ज्ञान की प्राप्ति शक्ती है।

एक प्रकार कामायनी व नायक मनु का चरित्र यथाथ जोर आत्मा की समन्वित भूमिका पर अवतरित हुआ है। मनु का चरित्र म प्रधान-यत्न की मभा रखा उभरा है। मनु का चरित्र विनाम म प्रणाली न मनावधानिक अन्तः का पूण परिचय शिवा है। मनु का चरित्र म जिन विना निगता कामनात्रय कुष्ण अहम्वाञ्छिता और पराजयवाता प्रवृत्तिया का चित्रण किया गया है उनका कारण व यथाथ का भूमिका पर आमान हाकर सामान्य मानव का श्रणा म आत है। एता दुबलताआ व कारण मनु का चरित्र यथानुसंग जोर अनुकरणाय बनता है। उनका चरित्र का दूसरा पक्ष वह है जिनम उक्त निवृत्तिमार्गी विद्या ज्ञान पक्ष का यात्रा रूप म प्रस्तुत किया गया है। बान्य व अन्तिम तान मगों म मनु एतिहासिक और पौराणिक परिमन्त्रों का अनुरूप उक्त एक ममान व्यक्ति शिवाया एत ए। मनु का य ए ममन्त शिवा का परिष्कार करके उक्त महत् चारित्रिक गरिमा प्रदान करता है। मनु का चरित्र का एक अन्य पक्ष भी है वह है मनावृत्तिमूत्र। मनु का मन का प्रताक मानकर उनका काय-व्यापार एवं गतिविधिया का अध्ययन किया जाय ता कोई असमर्ति नही मिलता। मनु का चरित्र जहाँ एक ओर मन की अहकारजय चक्रिवाणी और वाग्ना त्रिप्पु प्रवृत्तिया का प्रताक है वहीं दूसरी ओर समय शीत ज्ञान-वाता और विवृत्तिमूत्र स्थितिया का सुन्दर रूप प्रस्तुत करता है। चरित्र का मूत्र यजना यह है कि बुद्धि व वशाभूत होकर मानव जावन म मध्य विप्लव एवं अनृण आकाशाआ के एतिहासा का जन्म होता है।^{११}

महाकाव्य व नायक की शक्ति से विचार करें तो कामायनी म चित्रित मनु चरित्र का हम पूण विवृत्तित मन्काव्य का अनुरूप चरित्र नही कह सकते। प्रमाण न मनु का जिन रूप का प्रस्तुत किया है वह ममथ एवं सफल नायक का परिभाषा म पूरा तरह नही जाता है।^{१२} प्रथम तो मनु का चरित्र म नायक का अनुरूप गुणामक उत्कष का अभाव है। व सबत्र ही श्रद्धा व सम्पक

^{११} प्रा शिवकुमार मिश्र कामायनी और प्रसाद की कविता गगा प० ५६

^{१२} डा विजयन्त स्नातक कामायनी दशन प १५५

साधित्व से उत्थानमूत्रक गति का प्राप्त करत ८ । दूसरे वाक्य के मुख्य पत्र (अखण्ड आनन्द) की प्राप्ति के लिए भी अपनी पूरा शक्ति और सामर्थ्य से प्रयत्न नहीं हाने ८ । उनके चरित्र में न तो स्वसम्भूत उत्पन्न भावनाओं का उत्पन्न हुआ है और न मत्त्व शीत, त्याग मयम समपण आदि मानवीय गुणा की मफत प्रतिष्ठा हो पायी ९ । वाक्य के आरम्भ में मनु चतुर्विध बालाकरण के प्रभाव से चिन्ताग्रस्त १० मध्यभाग में जीवन का विकृतिया से आमान ११ और अन्तिम भाग में समाज की विडम्बनाओं और मघपों में विमुग्ध हाकर कल्पित आनन्द (१) की स्वाज्ञ में रत १२ । मानव सम्यता के सम्हापक के रूप में मनु के चरित्र में जिस पौरुषीय विराटत्व और उत्थानमूत्रक चारित्रिक गरिमा की जगशा भी उम प्रमाज्जी कामायनी के मनु में नहीं कर पाय हैं । वास्तव में महाकाव्य के इतिहासिक नायक के रूप में उन् (मनु) हम एक महान् चरित्र नहीं कर सकत १३

श्रद्धा—श्रद्धा कामायनी का मज्जम महत्त्वपूर्ण पात्र-भूटि है । उम वाक्य की नायिका मानव में कोर् आपत्ति नहीं है । वाक्य का मभा प्रमुख घटनाएँ उमके ध्यक्त्व में प्रभावित हाकर परिचालित हाती ८ । कामायनी महाकाव्य के फल (आनन्द) की प्राप्ति में यकी मनु की महापक हाती है । नायकत्व के अधिकार गुणा का मघान श्रद्धा का चरित्र है । श्रद्धा के चरित्र में नारीत्व के आदेश की सम्पुण उत्पन्न कल्पनाओं का सुन्दर ममाहार हुआ है ।

वाक्य में श्रद्धा का आगमन तृतीय मग में हाता है । यकी श्रद्धा का उत्तर हृदय की बाह्य अनुवृत्ति कहा गया है जिमकी अनुकन जम्बी वाया गाघार मग के नात राम वान मया के चम के बीच यौरन की निम्न छवि में दाए हाकर विश्व का कर्मण कामना की मूर्ति मा निवाया ८ रती है १४ श्रद्धा का परार मग के आवरण में पूण है । वह जन्म में भी स्फूर्ति मचाकर वरन की क्षमता रगती है १५ श्रद्धा के मन में ललित कलाओं का ज्ञान प्राप्त करन का नवीन उत्साह है जिमके कारण वह गाघवों के लक्ष में आकर निमान पर द्यर उपर भक्तन रगती है और तभी मनु में श्रद्धा का गाशाङ्कार होना है १६ श्रद्धा अपना जन्मिनाओं का अनुमान करके द्यर में कर मनु के जीवन

१३ डॉ० गोविन्दराम शर्मा हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य पृ० - ६२

१४ कामायनी, श्रद्धा मग पृ० ४६ ४७

१५ वही, पृ० ५१ ५२

१६ वही पृ० ५३

म प्रवेश करके भविष्यत् स आत्रात और काम म शिवाय रत् मनु को एव
दिव्य गन्ध श्नी हुई करती है कि

काम मगत म मन्विह्य श्रय ?
मग रक्षय का है परिणाम
निरम्युत कर उमका तुम भूय
वातात हा अमपय भवधाम । १७

श्रद्धा मनु को आश्वस्त करके हूय कहता है कि जिम तुम अभिशाप ममश रत्
हा वही श्श्वर का वरदान है । १८ तत्कार व श्या माया ममना मधुरिमा
और अगाध विश्वास महिन अपन रननिधि स्वत् हूय का मनु क समक्ष
ममपिन कर ता है । श्रद्धा का यह ममपण भारतीय नारीत्व का गरिमा का
परिचायक है । श्रद्धा मनु को शक्तिमान और विजयी बनने क लिए भी
उत्साहित करती है ।

मनु क जावन म श्रद्धा का प्रवेश उनके जीवन की निराशा कुण्ण और
चिन्ता का दूर कर लेता है । श्रद्धा और मनु गृहस्थ जीवन म प्रविष्ट होते हैं ।
यहाँ स श्रद्धा का नारीत्व और मातृत्व रूप विरगिन हाता है । वह एक पति
परायणा आश्रय पत्नी के रूप म लिखाया श्नी है । उमम नव-परिणीता-वधू का
नजा का पूण भाव है । छवि क भार म दबा श्रद्धा नजा और उल्लान
का जावपण है । एमा श्रद्धा का पावर मनु की काम-वासना उदाप्त
शती है । किन्तु श्रद्धा मनु की वासनाजय प्रवृत्तिया का अधानुकरण नही
करता । श्रद्धा का मनु क सामपान और शिमा कायों (यम म पण वनि आदि)
म भी अर्चि है । सुखी जीवन दतीत करन क लिए वह मनु स कन्ती है कि

औरा को हसन त्या मनु
शमा और मुय पाजा ।
अपन उर को विस्तृत कर ला
सब को सुखी बनाआ । १९

श्रद्धा म श्रद्धा की उदात्त भावना प्रकट हुई है ।

श्रद्धा क चरित्र म नारी का मातृत्व रूप भी सुन्दर रूप स अंकित हुआ है
गर्भिणी श्रद्धा का भावा मन्तनि क लिए कुटीर बनाना पशजा का उन म वर्य

१७ कामायनी प० ५४

१८ वही प० ५६

१९ वही, काम सग पृ० १३२

के निग्न तकला पर मूत कानना पुआना वा छाजन और बतमा उता व झून का निमाण करना थडा व नारामुवभ मातृ रूप का प्रमाण है । थडा गृहवधमी है जिमके गृह विधान का रखवर मनु चकिन हा जात है ।^७ थडा व मन म भावी शिशु व मुग्य चूमन बून पर चुवान मीठा रमना और मधुन बाव सुनन की तावमाण ह जिन् वह हृत्प्य म सजाय कुशन गृहिणा का भाति गभावस्या म वतका मा पीना मुग्य आँखा म अरम म्न्ह और मानुत्व बाध म झव पान पदारग बाँध गृह कार्यों म तान रहना है ।

भावा सम्मति व प्रति इर्ष्यानु हाकर मनु थडा का निजत प्रश्न म अक्ता एरकर चन जान ह । म परित्यक्तावस्या म भी वह मातृव का भाग मन्न करता है । वियोग और वात्मय व रग-मुग्य का मन्ती ह् थडा यना व्यप गियाया दता है । व प्रश्न करता है

जावन म मुव अधिव या कि तुम मन्तरिना वृत्त वावागा ।

× × ×

या ताना प्रतिविम्य एव व इम रत्स्य वा गातागा ।^{७१}

मो अवस्था म थडा एक तिन स्वप्न दगता है जिमम मनु की तुगा का चित्र गियायी तना है । प्रिय के अनिष्ट की आजका म व्यप हाकर पुत्र मन्ति व मनु का ग्राज म चन तना है और मनु का धायन जवस्या म पाकर तनका ममुचित उपचार करती है । मनु जिन्तान उम त्याग दिया था व प्रति भा थडा व मन म घणा या काय का भाव रूप नही पोता । थडा यहाँ पतिपगयणा एव गाती नागा का परिचय तना है जिमका चरित्र मन्तिमा व मम्मुग तडा और मनु ताना नतमन्तक हा जात हैं । मनु कहत है कि

तुम अरम वर्या मुगाग वा और स्त की मधु रजना

चिर वतृप्ति जावन मन्ति या तुम रगम गताय बना ।

किनका है उपकार मुगाग आधित मग प्रणय हुआ ।^{७२}

कामायनी करता हुआ इना कहती है कि

'ह दवि ! तुगाग म्त्रि गग,

× × ×

ग ममा न ना अपना विगाग ७३

^७ कामायनी, ईर्ष्या सग, पृ० १५०

^{७१} वही, स्वप्न सग, पृ० १७६

^{७२} वही निर्वे सग पृ० २६

^{७३} वही, दान सग, पृ० २४०

श्रद्धा श्रद्धा म भी रीर्षा गग करी । यह मातया क भाग्यान्व एव गमरगता
 क प्रसार के लिए मानव का शत्रु क पाप पादरत्न मनु क गाय अगण्ड आनन्द
 की उपवस्थि के लिए कलाश की आर प्रख्यात करती है । अन्त श्रद्धा मनु
 क आनन्द पथ की प्रशिक्षा घनरत्न उक्त भगवान् गिर क पाण्डव नर्य का
 शत्रु करगता है और दुःख पान क श्रिया क त्रिपुर का गमवयवत्क मनु का
 अगण्ड आनन्द ही प्राप्ति करगी है । त्रिपुर समन्वय क कारण गमरगता क
 मात्स्विक भाव का मन्त्र मनु क हृदय म हाता है । यह उक्त गमन्वय म मुक्ता
 कर मन्त्र मुक्त की प्राप्ति करगता है ।

स प्रकार कामायनी का श्रद्धा नारी जाण्ड की माका प्रनिमा प्रनर
 हमार समन प्रस्तुत हाता है । उमक चरित्र म भारतीय नारीत्व की अपूर्व
 व्यजना हु है । कल्या माया ममता आदि गुणा की माकार मूनि है
 सची प्रमिका आण्ड पनी मानृत्व की अनुपम विभूति प्रम जीर त्याग की
 अनुपम आण्ड देवा है । श्रद्धा की चरित्र रचना प्रमाञ्जी की नारी कल्पना क
 उच्चतम साम्प्रतिर जाण्ड का यजिन करन क लिए ही हु है । प्रमाञ्जी क
 मन म श्री नारा जाति क प्रति श्रद्धामिकन भावना था । अत साम्प्रतिर
 चतना जीर पुनरुत्थान के महान् आण्ड का स्थापना तथा राष्ट्राय भावना क
 विकास को भी नारी चरित्रा क माध्यम म ही व्यक्त किया है । नारा का
 साम्प्रतिक निरूपण उनकी साहित्यिक साधना का मुख्य विषय बना है ।^{७४}
 समाजिक श्रद्धा पात्र म निस्सन्देह हम प्रमाञ्जी की नारी सौन्दर्य सम्बन्धी
 भावना जाण्ड नारा सम्बन्धा विचारधाराए एव नारी सौन्दर्य के चित्रण की
 कला का स्वरूप देय सकत है ।^{७५} कामायनी म प्रमाञ्जी ने श्रद्धा के सम्बन्ध
 म उचित ग कला है कि

नारी ! तुम केवत श्रद्धा हो ।

विश्वास रजत नग पग तन म

पीयूष सान मी वहा करा

जीवन क सुन्दर समतन म ।^{७६}

प्रमाञ्ज न श्रद्धा क यकित्तक निर्माण की पृष्ठभूमि म जहा एतिहासिक प्रमाणा
 की पुष्टता प्रमाण की है वहा श्रद्धा के चरित्र की प्रतीकारमक व्यजना म भी

^{७४} डा० दवेश ठाकुर प्रसाद के नारी चरित्र प० ४०८

^{७५} डा० तारिकाप्रमाञ्ज कामायनी मे काव्य सस्कृति और दशन प० ११७

^{७६} कामायनी, लजा मग प १०६

वे सफ़्त रते हैं। प्रतीक रूप श्रद्धा नारी हृदय का सम्पूर्ण उन्नत बलिया का प्रतिनिधित्व करती है। 'कामायनी' का अग्रमुक्त पक्ष में हृदय का सच्चा प्रतिनिधित्व करने का उद्देश्य (श्रद्धा) पूर्ण क्षमता है। विश्वामययी रागात्मिका बलि स्त्री श्रद्धा का जमा विकास 'कामायनी' में हुआ है। प्रमाण के बिना अन्य नारी चरित्र में नहीं हुआ।^{७७} श्रद्धा का चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उम्मा को कल्याणकारी स्वरूप है। मनु ने स्पष्ट स्वाकार किया है

ह मवमगत । तुम महता
भवका दुग धपन पर सहती
कल्याणमयी वाणी बहती
तुम क्षमा निरम म हो रती । ७८

कवि ने स्वयं कामायनी का कल्याण म जगत की मगतकामना बना है

वह कामायनी जगत की मगतकामना बनती । ७

इस प्रकार नारी का आत्मा रूप में जितने श्रेष्ठ गुणों का कल्पना की जा सकती है श्रद्धा का चरित्र में वे सभी गुण रूप में प्राप्य हैं। हिन्दी का महाकाव्य की चरित्रभूमि में श्रद्धा का व्यक्तित्व और मनाभावा का अन्तर्गत व्यक्त उमका स्वरूप अपने आप में अस्तित्व है।^{८०} प्रमाण काय का एक समीक्षक का मत है कि श्रेष्ठ का मान्यिक परम्परा में कामायनी का यह उन्नत महान् विचारक एक नवीन प्रयोग है।^{८१} कामायनी का श्रद्धा उग आत्ममयी पाशवत नारी का प्रतीक है जो युगांतर नारी जाति की प्रगणना का मोत रहेगा।

इहां—कामायनी महाकाव्य का घटनाचक्र में दृष्टा का प्रवेश यद्यपि नवम मग में होता है तथापि महत्त्वपूर्ण कथा-सूत्रा का विकसित करने में उमका योगदान उपात्तीय है। इसीलिए का कामायनी का प्रमुख पात्र-मृष्टि का अन्तर्गत ही समाहित की जाती है। मनु और श्रद्धा की भांति दृष्टा का भी इतिहासिक एवं प्रतीकात्मक व्यक्तित्व है। गार्विक दृष्टि में वह बुद्धि नस्त्र की प्रतीक है। का गतिहासिक व्यक्तित्व की पुष्टि का निम्न प्रमाणों में

७७ डॉ० विजयानन्द काव्य कामायनी परान पृ० १६०

७८ कामायनी परान मग पृ० २४६

७९ वही आनन्द मग पृ० २६०

८० डॉ० श्यामसुन्दर श्याम हिन्दी महाकाव्यों में नारी चरित्र पृ० १०८

८१ डॉ० प्रभाकर प्रसाद का काव्य पृ० ४०८

कामायनी के आमुग म मरुत्तपूण गता वि है । प्रगण के अमुगाय व प्रजापति मनु की पय प्रजिवा मनुष्या वा शागा करत याता कता गयी है । ऋग्वे म ऋग का भी बुद्धि का साधत करत वारी मनुष्य का चनता प्रगण करत वारी कता है । बुद्धि का विराग राय म्थागता इयाति ऋग क प्रभाव न ही मनु न रिया ।^{८२} किन्तु कामायनी के आमुग म प्रगाण १ ऋग (इडा) एनिहामिर अमित्र रा परिणय ऋग क विण जनपय श्राद्धण ऋग्वे तथा अमर रोग क जा मवेत ऋग है उतका उपयोग ऋग क चरित्र विराग म उतान नहा किया है । य मकत वेवत ऋग क अमित्र का ऋगिण म मरुत्तपूण मात्र जोस्त है ऋगके गिवाय उनकी और का उपयोगिता नता ।^{८३} वास्तव म प्रसादजी न ऋग के चरित्र म आधुनिक युग की बौद्धिक क्षमता म युक्त एव एमी मरुत नारी का व्यक्तित्व रण किया है जा जाज क वचानिक युग का ममन्त शक्तिमत्ता एव नुवता का एक साथ पूरा-पूरा जाभाग ऋग म ममथ है आधुनिक युग की नारा जिम हम अल्ट्रा-माडन क विणयण स विभूषित करत हैं और जो अपनी बौद्धिक पूणता के साथ पुष्प के साथ रहकर छनता करती है ऋग के व्यक्तित्व म कुछ-कुछ तेगी ता मवता है ।^{८४} इना का बुद्धिवाणी रूप नारी श्रद्धा क चरित्र का एक प्रकार म पूर्व भी है । ऋग क चरित्र म नारी का यथाथ रूप अकित हुआ है ।

इना मरुत्तवत प्रदश की राना है । वह नयन मन्त्रोत्सव की प्रतीक एव अमन्त्र नयन का नवमाता के समान दष्टिगाचर हानी ह ।^{८५} उसकी तक जात भी विवरी जनके शशिमण्ड क समान स्पष्ट भाव अनुराग विराग एतत पय पत्राश चपत के समान दृग त्रिगुणात्मक शिवता चरणा की तात नरी गति एव वक्षस्थत पर एतत सभृति क सब विद्यान नान जरात आतोक वमन तपत वह एक ओर बुद्धिवाण के अतिरेक की प्रतीक है तो दूसरी ओर

^{८२} कामायनी आमुग प० ८ ६

(अ) ऋग मरुत्तव-मनुपस्य शासनीम । (ऋग्वेद १३१ ११)

(ब) मरुत्तवना साधयतीधिपत इडा देव भारता विश्वमूर्ति निस्त्रो देवी स्वधयावर्णि रत्नमच्छिद्रम पान्तु शरण निपन्थ । (ऋग्वेद २।३।८)

^{८३} डा विजयद्र स्नातक कामायनी दशन, प १६३

^{८४} डा० मन्त्राय मन्त्रान द्वारा सक्वित जयशकरप्रसाद चित्तन व कला प १३

^{८५} कामायनी ऋग सग प० १६८

आधुनिका (नारा) व समान लिंगायी दंता है।^{५६} इडा प्रतिमा प्रसन्न मुख म
बनेश सह रह मनु का स्वागत करता हुई उट्ट सारस्वत प्रदेश का शासन
प्रबन्ध मौप दती है। यह मनु का बुद्धि और विज्ञान व द्वारा सारस्वत प्रदेश
का शासन करने का कर्ता है

हा तुम हा हा अपन मताय ?

जा बुद्धि कट्ट उमको न मानकर फिर किमकी नर गण जाय
जितन विचार मन्वार रह उनका न दूसरा है उपाय।

X X >

मवका नियमन शासन करत वम वटा चना अपना क्षमता
तुम ही मव निर्णायक हा कहा विपमता या समता
तुम जपता को ज्ञान करा विज्ञान महज भाषन उपाय।^{५७}

इटा न केवल प्रदेश का भौतिक समृद्धि व लिए ही मनु को प्रेरित नहीं किया
करने आमन व चपर विचारर उम विज्ञानाभुग भी किया

इटा लानती थी व आमव जिमकी बुझना प्याम नहा

तृपित कठ वा पी पीकर भी जिमम है विश्वास नहीं।^{५८}

यहां नर हम इडा व क्षत्रिय म बौद्धिगता का अनिरेक पात है। उमक रूप
मौल्य म आर्वापिन हाकर अनृपत विनामी मनु इडा पर बलात्कार करना
चाहत है जिमक परिणामस्वरूप जन विनाह हो जाता है। मघप व पश्चात
इडा गानि म प्रेरित नगर विगत बाला पर विचार करने लगता है कि मनु
का मह उमक लिए जनम नहा रह पाया।^{५९} उपकारा मनु आज अपराधा
है।^{६०} इटा किंचित्त उनजन म पड जाना है कि जिम वह लण्ड दन बटी है
उमी की रगनाती कर रही है।^{६१} एता इमी मानसिक दृष्ट म पची थी कि
मनु का बुद्धि हुई श्रद्धा जा पहुँचा। उम दगार एता वा हृष्य भी इवीभूत
हा गया

^{५६} बामायनी, उटा गग पृ० १६८

^{५७} वही, पृ० १७१

^{५८} वही स्वप्न गग पृ० १८३

^{५९} वही निर्वे गग पृ० २०८

^{६०} वही पृ० २१०

^{६१} वही, पृ० २११

इहा आज कुछ खिा हा रही तुगिया का रेगा उगा

पहुँची पाग और फिर पूरा मुगवा विगराया विगा ? १२

यहाँ म द्रव्य क पत्रि म नारी मुनभ ग्वभाय गरिवता हाता है । मनु के पुन पन जान पर ँडा अपन को मयस अधिर अगराधी समगती है ।^{१३} थडा क जीवन को दु गमय बनान म अपना याग मानार व ँ गी होनी हु^{१४} थडा म क्षमायाचना भी करती है

त्रिग पर मैंन छीना मुहाग । ँ देवि । तुम्हारा न्यिय राग

मैं आज अविान पानी हू । अपना का नया मगती हूँ ।

×

×

×

दो क्षमा न तो जपता विराग सार् चननता उा जाग ॥ १५

एन क जीवन म एक और परिवतन जाता है । व थडा क आश पर कुमार के माय जपन हृत्य म कोमन बतिया का विवाग करके सारस्वन प्रेश क गामन-मूत्र का सम्पानकर नगर की अपूव बभव वृद्धि करता है । अन्न म कुमार जोर प्रजा सहित थडा जोर मनु के दाना क त्रिग वह कनाश गिरि की यात्रा करती है । वनी पहुचकर इना वमुधव कुटम्बकम क भाव को ग्रहण करती है

या इना शीश चरणा पर व पुलक भरी गगल स्वर ।

वाणी—मैं धय हुई हू जा यहाँ भूत कर आयी ।

ह देवि । तुम्हारी ममता बस मुन गीचनी नायी ।

×

×

×

हम एक कुटम्ब बनाकर यात्रा करन है जाये । १५

वास्तविकता का ज्ञान होने पर इहा स्वाय और भीतिरता की मबुचिन गीमाआ का अतिप्रमण कर जाना की अधिकारिणी बन जाती है ।

इस प्रकार ँडा के चरित्र म एक ओर विप्लव और सघप है ता दूसरी आर त्याग और प्रम । थडा के सम्पक म आकर उमके चरित्र म निखार आ जाता है प्रतीकात्मक दृष्टि म ँडा यवसायात्मिका बुद्धि का प्रतिनिधित्व करती है । एन क चरित्र मे प्रमाणित हो जाता है कि थडारहित बुद्धि सकट

१२ कामायनी निर्वेद सग पृ० २१३

१३ वही पृ० २३०

१४ वही दशन सग पृ २४

१५ वही आनन्द सग प० २८६ ८७

और सधप म उनझनी है श्रद्धासमवित हान पर ही बुद्धि को मफनता मिलती है। इना क चरित्र क माध्यम स कवि न नारी चित्र की जिन रखाआ को अकित करना चाहा है व पूणत नहा उभर पायी हैं बयाकि इडा क व्यक्तित्व की पूण यजना काव्य म नही हुई है। हां इडा क चरित्र म प्रमात् का इस भावना का पूण अभिव्यक्ति अवश्य भित गयी है कि केवन प्रमुद्ध मस्तिष्क लेकर ही समाज का कल्याणमयी भूमिका की नाव मुदुद नही की जा सकती।^{१६६} समष्टि रूप म प्रसात्जा न इडा क चरित्र चित्रण म जाधुनिक युग की बौद्धिक क्षमता स मुक्त एक ऐसी सबल नारा का व्यक्तित्व रान किया है जो आज के बतानिक युग की समस्त शक्तिमत्ता और दुबलता का एक माध पूरा पूरा आभास मन म समथ है।^{१६७}

अथ पात्र—श्रद्धा-मनु पुत्र कुमार (मानव) क दशन हम स्वप्न सग म हात ह। उमक चरित्र का विणप विस्तार कामायनी म उपनग्थ नहा है। वह विपत्ति म मा का अवन्ध ह। मूर्च्छित पिता का दग्धर उसक गोर् रान हो जात है और वह मा स पिता का पाना दन क लिए कहता ह।^{१६८} कुमार क मन म अपनी मा (श्रद्धा) क प्रति अनय प्रम है। मा की आता स वह इडा क साथ रहत हुए सारम्बत प्रदश का आ-मम्पप्रता का बढाना है। मानव क चरित्र म पिता मनु का मननमानता माना की स्मरणचना बतिया जीर रान क सङ्काम क कारण बतानिकता एक बौद्धिकता का अद्भुत सामञ्जस्य हुआ है। आकृति जीर कितान अमुर पुराहित है जा प्रनीक रूप म जामुग बतिया क प्रतिनिधि है। कम सग म व मनु का असद् परामश स्वर उनक द्वारा श्रद्धा क पालित पनु का बति स्तित्वा दत है। सधप मग म यन् पुराहित सारम्बत नगर का जन शान्ति का प्रतिनिधित्व करत हुए मनु क विरड हा जात है। मनु क द्वारा दनरा बय हाता है।^{१६९} कुमार आकृति और कितान जाति पात्रा का चरित्र-भाजना का पूण विकास कामायनी म नहा हा पाया है। कामायनी का ही पट्टभूमि म मानव (कुमार) क चरित्र विकास का सुन्दर प्रयत्न इसा युग क एक जय महाकाव्य म हुआ है।^१

१६६ डॉ० दबस ठाकुर प्रसाद क नारी पात्र, पृ० २०६

१६७ डॉ० विजयन् मानव कामायनी दशन, पृ० १६८

१६८ कामायनी, निर्बन्ध सग पृ० १५ १६

१६९ बहो सधप सग पृ० २०१

१ डॉ० रामगोपाल दिनेश्वर सारभा (महाकाव्य)

चरित्र विश्लेषण मूपात्र

१ कामायनी की चरित्र-यात्रा का समग्र प्रभाव निम्न है। पुत्र एक शुभ है। कामायनी व मनु प्रथम बार स्वाभाविक ढंग से सहज मान व रूप में चित्रित किये गए हैं। मनु व चरित्र में भारतीय काव्यशास्त्र में उल्लिखित नायकाचित गुणों का यद्यपि अभाव है किन्तु जिन मानव्य सुबननाओं और सबलताओं का सघात उनका चरित्र बना है उन्के कारण वह युग का परिभाषा में एक प्रमुख पात्र अवश्य हैं। सहज मानव चेतना का प्रतीक हान व नात मनु का चरित्र विकासशील है धीरोत्त गुणों से समन्वित विकसित चरित्र का समति न कामायनी व कथानक व गाथ बढ सकती है न उसके प्रतिपाद्य व साथ ही। अपनी विशिष्ट स्थिति व कारण मनु जहकार स्वायत्त इच्छित्तिप्सा अस्थिरता आदि जनमद मानव चेतना का हीनतर मानव प्रवृत्तिया से मुक्त नहा हा मनु व किन्तु प्रमथ दुगुणा पर विजय प्राप्त करके जहाँ व पूणत समरम मानवत्व जाध्यात्मिक शतावली में शिवत्व की सिद्धि करत ह वहाँ धीरोत्त स्थिति से भी ऊपर उठ जात है।^१ १ श्रद्धा का चरित्र महाकाव्याचित गरिमा से पूण है।

२ कामायनी व चरित्र विश्लेषण का आधार मनावधानिक होने व कारण काव्य व सभा प्रमुख पात्र (मनु श्रद्धा इत्यादि) प्रतीक-अथ के स्पष्ट यज्ञक जीर कथानक व रूपन तत्व व सफन नियामक रहे हैं।

कामायनी व पात्रों में इतिहास-पुराण सम्मन व्यक्तित्व जीर प्रताकात्मक चरित्र दाना का सफन निवाह हुआ है। पौराणिक श्रद्धा और मनु का लोभ भन ही कथानक-व्यक्ति व ह पर कामायनी की श्रद्धा जीर मनु को पत्कर उनकी सत्ता में वार्त्त जविश्वाम नहा कर सकता। प्रसात् ने श्रद्धा जीर मनु का नव निर्माण नहा पुननिर्माण किया है परन्तु उनके पुननिर्माण से पात्रों का पौराणिकता नष्ट नहीं हुई है। हरिजीध न प्रियप्रवास में कृष्ण का इतना जाधुनिक बना लिया है कि उनका पौराणिकता नष्ट हा गया है पर प्रसात् जी न श्रद्धा मनु तथा इत्यादि नवयुग की चेतना भर कर भी उनका पौराणिकता मिटन नहा दो।^१ २

४ कामायनी का चरित्र चित्रण आदर्श-मुनी यथाथवाणी पद्धति पर किया गया है। श्रद्धा का चरित्र ता जादान जात्तपूण है किन्तु मनु जीर

१ १ डा नगत्त कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ प० २०

१ डा० रामनाथसिंह कामायनी अनुशीलन प ७४

इस यथाय जावन गति स विकसित हात हुए भा अन्तत आत्मा का उपरान्त
म हा जवन यकित्तव की साथरता का परिचय त्त है ।

५ नारी चरित्र का पूण महिमा क प्रतीक श्रद्धा और त्याग क चरित्र ह ।
कामायनी की श्रद्धा म नारात्व का सम्पूर्ण त्रिबास यजित हुआ ह । यह
चरित्र युगा तक नारा-चरना क इतिहास म प्ररणा का जमर प्रतीक बनकर
म्यन रंगा ।

रचना शिल्प

भाय पत्र (वणन कौशल)

१ प्रकृति वणन—कामायनी छायावाद का एक सजालतम कृति है ।
छायावाद का एक प्रमुख विशेषता प्रकृति निरूपण है । प्रसादना प्रकृति क
चतुर चितेर बलाकार ह । यद्यपि प्रगुमन कान छायावाद क कवि चतुष्टय
म पन्न का हा प्रकृति का कवि कना जाता है किन्तु पन्न प्रकृति क कामन
जीर मुकुमार रया क ही कनाकार है कयाकि उनका काय प्रकृति पयवक्षण
णकि, प्रतिभा कल्पना तथा कामलगत पलावनी का मनारम उद्यान
है ।^{१ ३} जबकि प्रमादजी प्रकृति क भव्य और भयकर निमाणाकारा जीर
विनाशकारा सूक्ष्म और विशाल मभाक्षया क कवि हैं । वस्तुतः प्रकृति प्रगा
साहित्य का निजी मस्कृति है जगता है उस उनका सारा साहित्य इमा प्रकृति
गम्यति म नवर निवना हो ।^{१ ४} कामायनी म प्रकृति चित्रण का काय
प्रचलित सभा प्रगातिया क अतिरिक्त कवि न गिनत हा एक स्या म भा
प्रकृति दान किया है जो उनक शौरिक प्रकृति तान प्रशम का परिचायक है ।

(अ) आत्मबन रूप म—आत्मबन रूप म प्रकृति चित्रण की दो प्रणातियाँ
है—विम्बप्रहण प्रणाता तथा नाम परिगणन प्रणाता । प्रमादना न कामायनी
म प्रथम का हा अधिकांत प्रहण दिया है । आत्मबन रूप म उद्यान प्रकृति
क विकसन और रम्य दाना रूप अरिन किय है । काव्य क प्रथम गम म
प्रकृति का भयकर रूप अकित हुआ है । यथा

हा हा कार हुआ प्रानमय
कग्नि कृति हाव ध चूर
हूण निगन यधि नायण रव
बार बार राना धा शूर ।

^{१ ३} जावन प्रकाश जागा साहित्यिक निघण्टु, पृ० २४८

^{१ ४} पृ० नारायण यज्ञा, कामायनी दिग्दर्शन पृ० १८४

\ × ×
 उपर गरजना सि मु सह्रिया
 कुटिल मान क जाता सी
 बसी आ रहा पेन उगलती
 बन फसाय ध्याना मा ।
 धमती धरा धधरती ज्वाना
 -वाना मुतिया क विश्वास
 जोर सङ्कुचित क्रमण उतक
 अवयव का हाता था ह्मास ॥ १ ५

प्रकृति क मुरम्य रूप का चित्रण भी हुआ है

यह विवर्ण मुल प्रस्त प्रकृति का
 आज नगा हमन फिर स
 वर्षा बीती हुआ गृष्टि म
 शरत् विवास नय मिरे स
 नव कोमल जानक विवरता
 हिम सगृति पर भर अनुराग
 सित सरोज पर ब्रीडा करता
 जस मधुमय पिय पराग । १ ६

(आ) उद्दीपन रूप म

सध्या नात्र सरारुह स जो श्याम सराग वितरत थ
 तत्र पाटिया के जचन को व धीर स भरत थ
 नृण गुत्तो स रामाचित नग सुनत उस दुख की गाथा
 नडा की मूनी मासा स मिलकर जा स्वर भरते थ । १ ७

(इ) जालकारिक रूप म

नात्र परिधान वाच सुकुमार खुन रेहा मृदुत्र अघपुना अग
 विना हो -या विजना का फून मध वन बीच गुनाबी रग । १ ८

१ ५ कामायनी चिन्ता सग पृ० १३ १४

१ ६ वही आशा सग पृ २३

१ ७ वही स्वप्न सग पृ १७६

१ ८ वही नडा सग पृ ६६

(ई) मानवाकरण रूप मे

उपा मुनहल तीर बरसती जय लक्ष्मी मी उल्लिखित हुई
उपर पराजित बाल रात्रि भी जन म जन्तनिहित हुई । १६

(उ) उपवेश रूप म

जावन तरा क्षत्र अण है यवत नीन धनमाला म
मौलामिना-मवि सा सुदर मण भर रहा उजाता म ? ११०

उपयुक्त प्रमुख रूपा व अतिरिक्त प्रसाज्जी न प्रकृति का सबदनात्मक प्रतीकात्मक दाशनिव रहस्यात्मक एव पृष्भूमि व रूप म भा चित्रित किया है । कामायना म रातिवातीन ऋषि व अनुमात्र कवि न न ता पटश्लु एव वारहमासा व रूप म प्रकृति का चित्रण किया है जोर न दूत-दूती व रूप म । जाशा सग व अंत म कवन एक स्थान पर कवि न अवश्य रजनी का सम्प्राधित करत हुए कहा है कि— मरा प्रम भावना चन्ता या धार्ति तुष कही मिल जाय ता या हा मत लोटाना कयाकि तुझ भा तरा भाग अवश्य मिलया । १११

सारान यह है कि कामायना म प्रकृति का कवन सौन्दर्य निरूपण ही नहीं हुआ है बरन् प्रस्तुत जोर अप्रस्तुत विधान द्वारा कवि न मानवीय चेतना जोर अनुभूति का भी प्रकृति के उपात्तन प्रतीका द्वारा यजित किया है । का य का प्रारम्भ प्रकृति वणन स हुआ और उसका अन्त भा प्रकृति का मोम ही होता है । काय के चरम उद्देश्य अर्थात् जान् एव समरमता का प्राप्ति भी प्रकृति व पुनीत प्रागण बलाश म हा हुई है ।

२ सौन्दर्य चित्रण—प्रसाज्जी ने प्रकृति, पुरुष पत्न्य और आत्मा—सभी व सौन्दर्य का अनुभूति आर चेतना का दृष्टि म रखा है । इमीनिए कामायनी म स्पूत जोर सुदम गाना हा दुलिया स सौन्दर्य का चित्रण हुआ है ।

(ध) मानवीय रूप सौन्दर्य—जनी नक व्यक्ति मोत्य का प्रश्न है प्रसाज्जा न थडा और मनु व व्यक्तिव चित्रण म बाह्य मोत्य ऋषि का पश्चिम लिया है । थडा व शारीरिक सगटन का वणन करत हुए प्रसाज्जा न उस हृदय की बाह्य अनुभूति कहा है । अन्त मुगमल्लन का गाभा इस प्रकार दिगाया गया है जस सामकान व समय नात्रम व पहा का चार्ति पर वापर की रजना म एक सधु दग्ध नपया वाता वातामुगा ही । थडा व अन्त पुषराल वाता का

१६ कामायनी, आशा मग पृ० २३

११ बरी, चिना मग पृ० १६

१११ बरी आशा मग पृ० ४० ४१

मुग पर गिरता एसा प्रताप जाता है जस मान मय शावक चत्तमा का मुधा का पान करन भाव है। उगरी मुग्धात वाताक की उज्जरन रसिम क ममान विग्राम करता हु प्रताप हाता है। एसा श्रद्धा तत्र की जाशा किरण और कामन हृष्य कवि का कानि क समान कानता की श्रिय मय नगरी बनकर मानम का हनचन का प्रान्त कर र्ना थी।^{११२} प्रसात्जी त श्रद्धा क सौन्द्य निरूपण म आध्यात्मिक एक अपाधिप्य सौन्द्य दृष्टि का भी परिचय लिया है। श्रद्धा का सौन्द्य निरूपण हिन्दी साहित्य म अस्तिम है। इस प्रकार मनु का भी पराप्रमा तजम्बा बनिष्ट रूप म अकित किया है जा जाति मानव क आजमय रूप का परिचायक है।^{११३} मनु पुत्र मानव का भी कवि न तजम्बा विशोर क रूप म चित्रित किया है।^{११४}

(आ) प्राकृतिक रूप सौन्द्य—प्रकृति का रूप सौन्द्य अकित करत हुए प्रसात्जी न जनक रम्य और सश्रित्त भाव चित्र खाच है। चिन्ता सग म सागर क प्रथम वातान रूप का कुछ ना छत्ता म एसा श्रुद्ध रूप प्रसात्जी न अकित किया है जा प्रकृति क विवरान स्वरूप का स्पष्ट करता है। सिधु म नगरिया पान क समान फन फताय चनी जा रहा है। विनाम क आवग क समान जन मघान बडन तगता न। यन् कछप-मा धरणा ऊम चूम तकर विचरित हा जाती ह। उन्धि मयागहीन तकर धरा का डवा देता है। करका-रत्न हाता है जोर सम्पूण सृष्टि म पचभूत क ताडव नत्य का दश्य लियाया देता है।^{११५}

इसी प्रकार का सश्रित्त चित्र जाशा सग म हिमानय पवन का कवि न अकित किया है। उस विश्व कल्पना क समान उन्नत सुग शातनता एव सत्ताप का निगान डूबती हुई अचना का अवतम्बन और मणिरत्न निधान कहा है। उमक चरणा म नारवता की विमन विभूति है धरना की धारा म जीधन की अनुभूतियां बिखर रहा ह और पवत की शिला सधिया स टकरानर पवन गुञ्जार भर र्ना है जा एसा प्रतात हाता है माना चारण-कविया का भाति हिमानय की दुर्भेद्य अचन दढ़ता का प्रचार कर रहा है। सायकानीन घनमानाआ के बीच की गगनचम्बी श्रणियां ऐसी दिग्वायी देता ह कि मानो क पवतराज

११२ कामायनी श्रद्धा सग पृ ४६ ५०

११३ वही चिन्ता सग पृ० ४

११४ वही जान-सग पृ० २७७

११५ वही प १४ १५

हिमानय की रानियाँ हूँ जा तुपारकिराट धारण किय बाग्या कं
छीट क वस्त्र जाहूँ हैं ।^{११६}

(इ) भाव सौंदर्य—भाव सौन्दर्य का अवन करन म भी क
कलाकार है। इस नृत्ति स लज्जा का रूप विधान अत्यन्त है।
क अतस क जावपण विकपण म युक्त प्रवृत्तिमूलक भाव है।
चित्र अकिन कर्त हूए कवि न बना हूँ कि— लज्जा क कारण :
का हिचक और अत्यन्त समय पनका पर जोरें युक्त जानी है। परि
अधरा तक सहमकर रूक जानी है। मकत की भाषा बनकर
परवशता क समान नारी क सौंदर्य पर नियंत्रण करता हू।
काँव न रति की प्रतिवृत्ति तथा नारा क चकन और किन्ना
सरभिका कहा है। वह चेतना का उज्ज्वल वर्णन है। लज्जा क
भावचित्र नृत्त्य है

नाशा बन सरन कपाशा म आँखा म अजन सा लगता
कुचित अलका सा घुघरानी मन का मगर बन कर जगत
चरन विशार मुन्दरता की में करती रहती रखवाती
में वह हल्की-सी मसनन हूँ जा बनती काना का नाना

लज्जा क अतिरिक्त विलास म चिन्ता का और वाचना स
का चित्रावन करन समय कवि न भाव-सौन्दर्य चित्रण का अ
प्रशिक्षित किया है। इन सूक्ष्म अमूर्त भावा का सुन्दर प्रतीक का
कृत रूप म प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार व्यक्ति प्रवृत्ति और
का भव्य चित्र विधान कवि का सूक्ष्म-सौन्दर्य चेतना अनुभूति ए
का परिचायक है।

३ मनावज्ञानिक निरूपण—कामायनी का कथा वस्तु म रूप
प्रतिष्ठा हान क कारण काव्य के नायक मनु मन क, भेदा हृदय :
वृद्धि की प्रतीक है। अन काव्य म पात्रा की मनावस्थिया क रूप
करन तथा कथाक्रम का तन्मूर्त्त मयाजित करन म कामायनी
का विवचन स्वाभाविक रूप म हा गया है। 'कामायनी के
निरूपण का निम्न रूप म उल्लिखित किया जा सकता है

^{११६} कामायनी, अज्ञात सग पृ० २६ ०

^{११७} वही लज्जा सग, पृ० १०८

१. मग प्रथम

पापा का मातृगिर वृत्तिया क रूप म मित्रण

२. घटनाक्रम नियोजन म ।

कामायनी क सम्पूर्ण सर्गों का नामकरण मातृगिर वृत्तिया क आधार पर हुआ है। काव्य म उक्त प्रथम भा दशा प्रकार आयोजित है जिन प्रकार मानव के मन म वृत्तिया का जन्म होता है। प्रथम मग म प्रथम-काल का भयकर प्रतिक्रियाभा क कारण मनु का मन चिन्ता है। जन्तु इम मग का नाम चिन्ता रखा गया है। चिन्ता क पश्चान् हृदय म आशा नामा भाव का उद्भव होता है। आशा स जीवन म प्रेरणा जाग्रत होता है और मन हृदय क प्रताक रूप श्रद्धा का कामन वृत्ति क रूप म पाकर काम जीव वागना क अधीन होता है। हृदय का प्रताक श्रद्धा वागनाजय उल्लसता क कारण राजा का अनुभव करता है किन्तु वागना स उत्तमिज मनु का मन वागना वृत्ति क त्रिण काम जगत म प्रवेश करता है। मनु अप्यायश श्रद्धा का छात्र बुद्धि (ज्ञान) क पाश म बंध जात है। इम क पश्चात स्वप्न मग का आयोजन है जिसम श्रद्धा आप्तप्रमत्त मनु का दशा का लक्ष्यता है। यह हृदय क उम भाव का लक्षण है जिसम वह मन का साथ पूरा तरह नहा छात्र पाता। बुद्धि क विराट क फलस्वरूप सधप उत्पन्न होता है। सधप म परास्त ज्ञान पर मनु क मन म निर्वैभ भाव उपपन्न होता है। श्रद्धा क पुन सम्पक स मनु का 'याकुन मन आनन्द ताक क दशन हनु व्यग्र होता है। श्रद्धा ज्ञान जीव क्रिया क त्रिपुर रहस्य को समझ लन पर मनु का आनन्द का प्राप्ति होता है। सर्गों क नामकरण और उपयुक्त सजाजन क्रम से स्पष्ट है कि कवि न मनावनानिक आधार पर हा सर्गों क शापक जीव क्रम आयोजित किय है।

कामायनी क मुख्य पात्र है—मनु श्रद्धा जीव श्रद्धा। कामायनी क मनु मन क प्रताक है। भारतीय विचारधारा क अनुसार मन का भौतिक रूप प्रदान किया गया है। उस चचन दूरे एव शक्तिशाली इन्द्रिय के रूप म भा माना गया है। वह सम्पूर्ण शक्तिया का राजा है जिसका काय सकल्प विवल्प का मनन करता है। भारतीय विचारानुसार शुद्ध ज्ञान एव नियंत्रित मन ही आनन्द का प्राप्ति कर सकता है। पश्चात्य विचारधारा क अनुसार मन का एक ठाम द्रव्य माना गया है जा सम्पूर्ण सचतन प्राणिया म विद्यमान रहता है। फायल क अनुसार मन क चतन क अचतन दो रूप है। इनम अचतन मन का ही अधिक महत्त्व दिया गया है क्योंकि उसक द्वारा काम नामक प्रवृत्ति

का सञ्चालन होता है। मक्षप म मन शरीर का सञ्चालक नियामक एव प्रक है। प्रमाजी न कामायनी म मन के प्रताक मनु के चरित्र का जिस रूप म विवक्षित किया है उमम उपयुक्त दाना श्लिष्काणा का किसान किमी रूप म ममावेश तत ह्रा भी मन क सम्बन्ध म उनकी निजी धारणा ग्ही है जा उनक साहित्य म (कामायनी क अतिरिक्त भी) यक्त हृद है।

भारतीय विचारधारानुसार प्रसादभी न मन अर्थात् मनु का ज्ञान पथा- हृत्य और बुद्धि (श्रद्धा और इत्था) —स सञ्चालित माना है। मात्र बुद्धि का अनुगमन वरक मन भक्त सक्ता है। हृत्य का सम्पन्न पावर ही वह वास्तविक ज्ञान की उपनिधि वर सक्ता है। जन मनु सम्पूर्ण सक्त्प विकल्प म मुक्त होने क लिए श्रद्धा का सबल चात है

यह क्या ? श्रद्धा । वम तू न चन उन चरणा तव न निज मन्त्र

मन्त्र पाप पुण्य त्रिमम जन जन पावन वन जाते है निमन्त्र ॥ ११५
 श्रद्धा हृत्य की प्रतीक है ॥ ११६ ॥ य श्लि स मन (मनु) पर उगवा प्रभात स्पष्ट हा है। व मानसिक वक्तिया क सञ्चालन म महत्त्वपूर्ण सागदान ज्ञा है। ज्ञा का कवि न बुद्धि की प्रतीक माना है ॥ १० कामायनी की इडा के चरित्र म तव चित्त और ज्ञान विज्ञान से सम्बन्धित भौतिक उपलब्धियां जाति जा भी सम्बन्धित या बुद्धि क गुण है विद्यमान है। मनु पुत्र कुमार नव मानव का और विलास-आभुति तामसा वक्तिया क प्रताक है। इनक अतिरिक्त राजा और काम जमा मनावधानिक वक्तिया का अशरीरी पात्रा क रूप म अविन किया है। भारतीय प्रथा म काम का विभिन्न रूपा म उरग्य मितता है। यजुर्वेद म काम का एक देवता क रूप म उपनिषदा म आध्यात्मिक शक्ति कामायन क काममूत्र म जीवन की अनिवाय प्रवृत्ति पुराणा म कामना क प्रतीक एक शवागमा म मोक्ष एव प्रेम क प्रतीक रूप म उचितित किया गया है। पाप न काम का विविध कला है जा कामना की ही प्रताक नहीं वरन् व्यापक प्रेम का भी प्रतीक है। मक्षप म काम क तान रूप मितन है

- १ आध्यात्मिक
- २ मृत्रनात्मक
- ३ वागनात्मक ।

११५ कामायनी ज्ञान मग पृ० २५४
 ११६ हृत्य की अनुकृति बाह्य उचार । वही श्रद्धा मग पृ० ४६
 ११७ विपरी अर्थक ज्ञानवज्ञान । वही इडा मग पृ० १३८

मूल व फलस्वरूप मनुष्य का अनेक विधाएँ एवं दृशा स ग्रस्त जाना पन्ता है।

काव्य विना मिद्वान्त वा कामायना म अभाव है। जन्म तर जन्म मिद्वान्त का प्रश्न है वर जन्म और मनु की अहंकारमूलक भावनाओं म मिलता है।

इस प्रकार कामायना म मनावनानिर् दृष्टि स भा मुद्र चित्रण हुआ है। प्रमाणा न बड़ कौशल म काय और मनाविधान का समाहार किया है। प्रस्तुत काय म मनाविधान का स्तना मूर्धम एवं गूढ विवचन है कि ज० नगर प्रभृति विधान कामायनी का मनाविधान वा दृष्टादृज कहत है।^{१२३} इस उक्ति म कामायना का गन्त शान्तिवता और प्रगाथ मनमन-व का ज्ञान यजना हाता है। यस्तुत कामायना म मनाविधान म काय और काव्य म मनाविधान एक माय विधाया त्त न। मानस (मन) का एसा विश्रुपण जीर कायामत निरूपण विन्ती म शायत नानाविधा व वात हुआ है। कामायना म विहित मनाविधान मुगन्ति एवं प्रोद है।^{१२४}

४ रस-परिपाक और भाव चित्रण—भारतीय साहित्यशास्त्रिया व अनुसार मन्वासाय म मभा रमा का निष्पत्ति जाना चाहि और शृंगार वा एव शांत रस म स विधा एव की प्रमुखता जाना चाहि क्यकि मन्वासाय का एक तस्य रस मिद्रि भी हाता है। कामायना म इसका निरूपण लक्षण प्रथा का आयागमान यनावर नया हुआ है। कामायनावार न जीवन क श्यापक घगानन का लेकर समस्याओं का समाहार करत हुए जर्ण भाव निरूपण विधा है वही रस निष्पत्ति हुई है। कामायना म शृंगार जीर शान्त जाना रमा की प्रधानता विधायी दनी है। वास्तव म काय का प्रस्तुत क्या म शृंगार रस की एव अप्रस्तुत क्या म शान्त रस की प्रधानता है। इनक अतिरिक्त वरग गेठ नयानक वार सागरय जाति रमा का भा वार म योजना हुई है।

सयोग शृंगार—शृंगार रस व मयाग और वियाग जाना रूप कामायनी म मिलत है। श्रद्धा जीर मनु व मिलत प्रसंग म शृंगार रस व सयोग का की मुद्र श्रजना हुई है। यथा—

इत चना मद्राथ व मुद्रुमारता व ना
उर ग व पाकर पुरय का नममय उरवार।

१२३ डॉ० नारय साकेत एक अम्पयन, पृ० १५६

१२४ श्री नारय वारवया भाषुनिक साहित्य पृ० ११५

प्रमाञ्जी १ कामायनी म मम्य ऋ म मृतात्मा काम वा हो वणन किया है

काम मगत म मञ्जि त्रय मग ऋणा वा है परिणाम

निरस्मृत नर उगता तुम भूत धातो हा अमयत भव धाम । १२१

ऋ प्रसार प्रमाञ्जा की काम मम्यभी विषारधाम अम्यत ध्यात है कपाति यत् काम वा मरुप अणरीरी एव धम अविन्द है ।

कामायनी न घटा-ध्यातार म प्रायः क पां प्रमुग गिज्ञान ऋष्टय है

- १ स्वप्न गिज्ञान (धियारी आय ड्रीम)
- २ काम गिज्ञान (धियारी आय माया)
- भूत गिज्ञान (धियोग जाव मिलिण)
- ४ हास्य विना गिज्ञान (धियोग जाव वि)
- ५ अह गिज्ञान (गा धियोग) ।

प्रायः न स्वप्न वा मानव वा ऋमित ऋटा वा प्रवाणन माना है । प्रायः के मतानुसार मनुष्य की व काम-यामनाण जा सामाजिक प्रतिस्था के कारण ऋमित और कुण्ठित हास्य अचनन म स्थित रहता है निरा-वात म स्वप्न वनर अभियक्त हाती है । कामायनी म ऋ स्थाना पर स्वप्न का वणन किया गया है । काम सग म मनु श्रद्धा के प्रति आत्म समर्पित हा जान क पश्चात अनिश्चय की अवस्था म रत है कि श्रद्धा को ग्रहण किया जाय या नय । तभा उह स्वप्न म काम का जादश मितता है जिसम मनु का ध्यान मगनमय भविष्य का जाव आकर्षित किया जाता है । ऋके अतिरिक्त स्वप्न सग म श्रद्धा मारम्भन नगर म मनु का ऋ क प्रति अममाजिक आचरण जीर उमक परिणामस्वरूप ऋ क वाप का दृश्य देखती है ।

काम गिज्ञान के उत्तगत प्रायः न जिन जात्पिम काम्पनकम और इल्लदा काम्पनेकम की चर्चा की है वह कामायनी म भी मानव का श्रद्धा (अपनी मा) क प्रति जावण एव मनु के मन म गमम्य शिशु के प्रति ईप्या का भाव जिसके कारण व ऋ का अकनी छोकर चले जान है आः प्रमगा म दृष्टय है ।

भूत गिज्ञान का सकेत कामायनी की निम्न पक्तिया म मितता है

स्वप्न चतना के वीशत का भूत जिस कहत है

एक विटु जिसम विपाः के न उमडे रहते है । १२२



यत्र समाप्त हो चका तो भी घषव रहा थी ज्वाला
 लक्षण दृश्य । गधिर के छोटे अस्थि त्वड की मात्रा ।
 कर्णों की निमम प्रसंगता पण की वातरवाणी ।
 मिनकर वानावरण बना था कोई कुत्सित प्राणी । १२५

भयानक रस— स्वप्न सग का निम्न पक्षिणया म भयानक रस दृष्टय है
 जातिगत फिर भय वा व्रतन । वसुधा जम वाप उठी ।
 वह अतिचारी दुबल नारा परिश्राण पथ नाप उठी ।
 तत्रिध म हुआ हृद हृकार भयानक त्वचन थी
 अर जातजा प्रजा । पाप की परिभाषा बन शाप उठी ॥ १६

कथन रस— कामायनी के चिन्ता सग के प्रारम्भ म त्व जानि के
 विनाश तो गेयनर मनु की लक्षा का वण करणाजनक वणन हुआ है

निवत्त रहा था मम वन्ता
 करणा विवत बहाना सा । १७

चिन्ताप्रप्त मनु गात्र रह के कि

चिन्ता करता हूँ म जितनी उस अतीत की उम मुस्य की ।
 उतनी हा अनंत म जननी, जाती ग्वाण त्व की । १३१

यासत्य रस— र्प्या सग म गभउती श्रद्धा भविष्य के मुत्तर स्वप्ना म
 उनगी हुई मातृत्व का प्रनिष्पति बनकर कामायपूण भावा की यजना करता है

म उमके लिए बिछाऊंगा फूटा के रस का मृत्त फेन ।
 झूठ पर उगे क्षताउगी दुतरा कर लूंगी वन चूम
 भरी छाता म त्रिपटा इस घाटा म तगा मत्त घूम । १३२

शांत रस— गान्त रस का म्याया भाव निर्वै है । प्रसात् न वाप्य का
 चारहवाँ सग (निर्वै) गमा के लिए निष्ठा है । निर्वै का मुत्तर उपाकरण
 मनु के निम्न कथन म दृष्टय है

१२५ कामायनी, रम सग पृ० ११६

१२६ वही, स्वप्न सग, प० १८५

१३० वही चिन्ता सग, प० ४

१३१ वही पृ० ६

१३२ वही, र्प्या सग पृ० १५०

विश्व कि जिगम मृग की आधी पीठ की लगी उगी,
 त्रिगम जीवन मरण घना था बुबुबु का माया लगी।
 रंगी भाव उग्ररत मगद गा लिंगा गा त्रिश्याग भरा
 वर्ग का गन्ध काता गा मृष्टि विभय हा उग हा।^{१३३}

उपयुक्त रमा क अतिरिक्त कामायनी के मध्यम मग म रोग रम का रम्य और आनन्द सग क त्रिपुर मित्त और नटराज त्रि क ताण्ड्य नतत म अद्भुत रम का भी आभास मित्तता है। हास्य रम का कामायना म जभाव ही है। इसका कारण कवि का चिन्तनशील एवं गम्भीर स्वभाव है। इस प्रकार कामायना म रम-गाम्भीर्य एक उन्नत भाव मृष्टि का परिचय स्थान स्थान पर मित्तता है। कामायनी की रम निष्पत्ति क त्रिण जनक स्वभाव पर ता विभाव अनुभाव सचारी भावा आदि रस अवयवा की कवि न आवश्यकता का अनुभव नग का है। प्रमाणा का रम रम मिद्ध कवि है कि जनक स्थाना पर मात्र जानम्यन उद्दीपन आदि त्रिभावा अववा सचारी भावा की सम्यक योजना स ही रस-व्यञ्जना हा मयी है। उदाहरण क त्रिण नजा नामक सचारी भाव का कवि न वृत्त मार्मिक रग म प्रस्तुत किया है कि क्व जवला हा रमोक् म समथ त्रियाधी नेता है। कामायनी की रस निष्पत्ति न्तनी प्रथर और पुण है कि कवि का अनुभूतिया म पाठक का सञ्ज म ही साधारणीकरण हो जाता है।

कामायनी

१ नामकरण— कामायनी का नामकरण पात्रगत आधार पर हुआ है। कामायना मन्वाकाव्य की नायिका थडा है। थडा काम की पुत्री हान क कारण कामायनी कही गया है। जसा कि प्रमाणाजी न स्वय त्रिया है कामगात्रजा थडा नामाधिक। थडा कामगात्र की वात्रिहा है इसत्रिए थडा नाम क साथ उम कामायना भी कहा जाता है।^{१३४} यद्यपि काव्य के नायक मनु हैं किन्तु उनके चरित्र को सामान्य कानि के एक मानव के रूप म ही चित्रित किया गया है। थडा का चरित्र बहुत ऊचा एवं भाव्य है। वह मनु का ही नटा धरन् सम्पूर्ण मानव जाति की प्रेरणा का स्रोत है। अस्तु थडा क चरित्र का प्रमुलता और महत्ता की दृष्टि से काव्यका नामकरण कामायनी मवधा उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त काव्य म मवत्र थडा शब्द का प्रयोग

^{१३३} कामायनी निर्वाण सग पृ० २२३

^{१३४} वही, आमुव पृ ७

होन हल भी कवि ने 'कामायनी' नामकरण इसलिए भी किया कि कामायनी शब्द सश्रद्धा की अपेक्षा अधिक कमनायता, रमणायता और नवीनता का परिचय मिलता है। इस सम्बन्ध में प्रमाञ्जा के पुत्र श्री रत्नशङ्कर प्रसाद ने लिखा है कि— कुछ लोग कहे हैं कि प्रमाञ्जी ने इस काव्य का नाम पत्न श्रद्धा रखा था ऐसा नहीं। पाण्डुलिपि के मुद्रपट्ट पर कामायनी (श्रद्धा) अंकित है। श्रद्धा के नाना स्वरूपा में उसके काम गाथिय स्वरूप ही कवि का अभिहित रहा इसलिए यह शीघ्रवाचा नाम कामायनी विवाहित हुआ मृष्टिमूर्त काम के वृत्ति-गोचर की समग्रता का निरक्षण-पर्यायवाचन जमा कि काव्य में हुआ है कामायनी द्वारा ही शक्ति हो सकता था। अतः 'काम काव्य' का नाम कामायनी कवि का कल्पित म उमकी कल्पना के साथ ही साकार हुआ किन्तु कामायनी की तत्त्वशक्ति श्रद्धा है अतएव बोधक में श्रद्धा लिखा गया।^{१३५} इस प्रकार काव्य का नामकरण प्राप्त एवं काव्य का मूल भावना पर आधुनिक लेखकों के कारण संभव था उपयुक्त है।

२ साय सप्तोत्तर—कामायनी की सम्पूर्ण कथा १५ सर्गों में विभक्त है। प्रत्येक सर्ग का सामक्यण मनावधानिक प्रवर्तितया के आधार पर किया गया है जग—चिन्ता आशा श्रद्धा काम कामना राजा कथ र्व्या इत्यादि स्वप्न निर्वेद्य श्रद्धा रक्ष्य और आनन्द। कामायनी के सर्ग-क्रम की एवं मत्स्वपूर्ण विशयता यह है कि उनका द्वारा कथानक के रूप में लक्ष्य का विकास उची गपनता में हुआ है। प्रत्येक सर्ग का मनोवधानिक आधार हान हुए भा कवि ने उनका पूर्वापर अतिरिक्त का बनाय रखा है। कथा का जो मूल एवं सर्ग में समाप्त होता है उमा का विकसित रूप जागामा सर्गों में मिलता है। प्रवर्तितमूर्तक विवाह की दृष्टि में ता सर्गों का क्रम और भी अधिक उपयुक्त कियायी जाता है। सर्गों के नामकरण और सप्तोत्तर के प्रति कामायनी का रसमिता बितना मजग रहा है इसका अनुमान हम बात में ही लगाया जा सकता है कि कवि ने सर्गों के नाम निश्चित करने के उपरान्त भी उनमें परिवर्तन किया था। उदाहरण के लिए कामायनी के 'काम' मध्य और निर्वेद्य सर्गों के पूर्व नाम के क्रम में पुत्र और ग्वाहति (मर्चि)।^{१३६} इस परिवर्तन में निश्चय ही कवि का कुछ दृष्ट्य रण होगा। जग 'काम' शब्द

^{१३५} जनभारती पृष्ठ १२ अंक १ म० - ००१ प० ५

^{१३६} जनभारती (प्रमाणिक) पृष्ठ १२ अंक १ म० थी रत्नशङ्करप्रसाद का लेख 'कामायनी में सर्गों का नाम परिवर्तन' पृ० ४

कमलाण्ड का मापक है और उसका एक गीर्गम अथ ही लगाया जा सकता है। अतः कवि ने यम के स्थान पर व्यापक भाव यात्रात्मक गम का प्रयोग किया। इसी प्रकार युद्ध शब्द का व्यापक का ही परिणाम है जहाँ मध्य शब्द के द्वारा अन्तर ब्याप्तता प्रसारक मध्यों का व्यञ्जना होता है। युद्ध का परिणति मध्यम होता है जहाँ मध्यम शब्दों का कवि ने यम स्वावृत्ति का मध्यम नाम रखा था किन्तु वास्तविक में उमन नामा गम कि मध्य की समाप्ति के पश्चात् मानव जिग शांति भाव में पूरित होता है उसके आधार पर मध्य की अपेक्षा निर्वै नाम ही उपयुक्त है। कामायना की गम सख्या काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों की दृष्टि में भी उचित है।

३ भाषा शैली— कामायनी में भाषा और शब्द का उत्कृष्ट रूप मिलता है। कामायनी की भाषा सम्पूर्ण काव्य गुणा में उत्कृष्ट और शास्त्राय दृष्टि में सम्पूर्ण है। उसमें गम्भीर भावा और अनुभूतियाँ का अभिव्यक्ति करने का पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य है। कामायनी में प्रमात्मी का भाषा का प्रौढतम रूप मिलता है। प्रमात्मी ने शब्दों के सुन्दर चयन जनकारों के उचित प्रयोग व्यञ्जनाशक्ति की साथ ही अभिव्यक्ति और शब्दों की समशीलता जानि के द्वारा भाषा का सब प्रकार से सुन्दर और मशकत किया है। प्रमात्मी की भाषा का कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार हैं

कामायनी की भाषा का मुख्य गुण उसकी चामणिकता है। इसमें अतिरिक्त ध्वन्यात्मकता चित्रमयता गातात्मकता जानकारिकता जानि अथ विशेषताएँ भी विद्यमान हैं। कामायनी की भाषा में मूल भावों के अमूल्य चित्र अंकित करने की अपूर्व क्षमता है। उदाहरण के लिए रजनी को इन्द्राव जननी चिन्ता के लिए अभाव की चञ्चल वातिका जानि विशेषणपूर्ण प्रयोग भाषा-मौल्य की अभिवृद्धि करते हैं। छायावाणी भाषा पद्धति के अनुकूल प्रतीकात्मक प्रयोग भाषा की व्यञ्जनाशक्ति की अभिवृद्धि में सहायक हुए हैं। यथा

मधुमय वसन्त जीवन वन के बहु अतिरिक्त का नहरा म।

कब आम ये तुम चुपके से रजनी के पिछला पहरा म।

तुम्हें देखकर आत या मतवाली कोयाँ धोती धी।

उस नारवता में अन्तर्साईँ कलियाँ न आँव खाती वा। १३०

यह पवित्रता में वसन्त यौवन का रजनी का पिछला पहरे विशोरावस्था

का मनवाला बोधन यौन्य का और कलियों प्रेम का प्रतीक है। किन्तु और लज्जा के रूपकिन्ता में भाषा का विचित्रमयता दृष्टय है। आत्मवागिक प्रयोग का कामायनी में मयत्र प्राप्य है। कामायनी का भाषा में माधुर्य और प्रमाणा गुणा का ही प्रधानता है। किन्तु मयत्र और स्पर्शा आदि मर्मा में आजगुण भाषिणीया दत्ता है। जहाँ तक शब्द चयन का सम्बन्ध है प्रमाणा का न मयत्र वाता भाषा के तत्सम परिष्कृत और शुद्ध रूपा का ही प्रयुक्त किया है।

अधिकार स्वला पर प्रमाणा का न तत्सम भाषा के स्थान पर मयत्र का भाषा स्वल्प का मयत्रा किरण का किरण पात्र का पार आदि प्रयोग किया है। परम्परागत गारारण वाचनान के शब्दा का भाषा प्रयोग किया गया है जम—मयत्र बयार ताव पिठना पहर परछाई आदि। कुछ शब्दा का मधुर बयान के लिए उनक रूप का भी विकृत किया है जम—नार का नार मुम्बान का मुम्बयान जातय ता जातय और निवद का निवद जादि। नोवाकिन्ता और मुम्बरा के प्रयोग द्वारा भाषा में मजाबना उत्पन्न करने का कामायनीवार न प्रयोग किया है जम—जावन का ताव हार बटना चीन गया गटवा मयत्र जावना फिर जधर उमक गाग मयत्र हूए छत्र मया हाथ में आह तार आदि।

कामायनी में विदवा का प्रयोग का एकलम अमान है। कवय आशा मयत्र में जीवन का छाना के ताव नामक पक्ति में पारमा के ताव शब्दा का प्रयोग हुआ है। कहा कहा कामायनी का भाषा विकृत भी हा गया है। कया का हुआ है जहाँ कवि का गूढ भावा की गहम्यमय अभिव्यक्ति के लिए नवान और अपरिचित प्रतीका का प्रयोग करना पया है। कामायनी का भाषा का विशिष्ट गुण मयत्रा भाव सम्प्रयोग पक्ति है। सम्पूर्ण बाध्य में कहा भाषा निधिर् नया हूद है। कहा-नया निरर्थक भाषा का प्रयोग अवश्य है। जम ही कि मयत्र मयत्र मा जा जिनता चा जुन न। यहाँ कि मयत्र निरर्थक है कयाकि मयत्रुति के अनिश्चित मयत्रा का मयत्र नया। कामायनी का भाषा प्रमाणा की ही नहीं। सम्पूर्ण छायावादी का भाषा पक्ति एक नामय्य का प्रतिनिधि के करना है।

भाषा का भक्ति कामायनी का मयत्रा में भाषावादी बाध्य भाषा का प्राय मभी किन्तावाले विद्यमान है। प्रमाणा की मयत्रा में जनवाग का साहचर्य है किन्तु तक काग्य मयत्रा का किन्ता नया हू है कयाकि मा मयत्रा प्रयोग के कारण मयत्रा में मजाबना भाषा है और मधुर शब्दा न मयत्रा मयत्रा मयत्रा किया है। जहाँ कहा हूगारु कल्पना और नय प्रतीका का कवि न प्रयोग किया

है वही शला म क्लिष्टता अक्षर आ गया है। कदा-कदा कामायना म सर्गादि सम्बन्ध एव मगुक्ता वाक्या का भी प्रयोग है। जग—सज्जा मग की ५० पंक्तियाँ मिलकर एक वाक्य का निर्माण करता है। एग स्वयं पर अथ बाध म बाधा उपस्थित होती है। प्रगाज्जा म प्रगगा म अनुसृष्ट ही विभिन्न शक्तियाँ का प्रयोग किया है। चित्ता मग म यत्नि गुम्फा शनी है ता सज्जा मग म अलवृत्त और इहा मग म शरी का रूप प्रगीतामक हा गया है। कामायना की शला की उल्लेखनीय विजयना उमरा अभिव्यक्त प्रणाली है। कामायना वार मूम म मूम अनुभूतियाँ और जतवृत्तियाँ का सरलता म साथ अभिव्यक्त कर सका है। मगी म कामायना की भाषा शला की सफरता का रहस्य निहित है। निष्कप रूप म कहा जा सकता है कि कामायनी की भाषा शला प्रगाज्जी का स्वयं की शरी है। उहानि किमी परम्परागत वाक्य शला या पद्धति का अनुसरण न करके अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य म वन पर शरी का भव्य उपात्त एक गरिमापूर्ण बनाया है। डा० प्रमणकर म शला म— भाषा शरी मभा म कामायनी एक मौनिकता म अनुप्राणित है। उसकी वाक्यात्मक शरी म छायावाङ्मयी ममस्त विभूतियाँ का कवि न एक मगान् कलाकार की भाँति सप्रहित कर लिया। वह उस युग का प्रतीक बन गयी जो कला और जीवन म सामञ्जस्य म प्रयत्नशील रहा है। १३८

४ अलंकार योजना— कामायना की भाषा शरी म प्रसाधना म अलंकारा का भा महत्त्वपूर्ण स्थान है। कामायनी म विभिन्न प्रकार म शलायातकारा का प्रयोग हुआ है। कामायनीकार न अलंकारा का प्रयोग केवल बाह्य सौन्दर्य की वृद्धि म चिन्तन किया अपितु अपना मूढ सौन्दर्यानुभूतियाँ का अभिव्यक्त करने म चिन्त ही किया है। कुछ प्रमुख अलंकारा म उदाहरण निम्न प्रकार है

अनुप्रास
 शित्तज भाव का ककुम मितता मतिन कालिमा क वर स
 शोकिन का वाकना वधा हा अथ कदिया पर मन्त्राता। १३९

यमक
 तुम फून उगगा ततिका-सी कम्पित कर मुख-सारभ तरग।
 म मुरभि राजना भक्कूगा वन-वन वन कस्तूरी-कुरग। १४

१३८ डा० प्रमणकर प्रसाद का काव्य पृ० ६२५

१३९ कामायनी स्वप्न मग पृ १७५

१४ वही प्या मग पृ १५

श्लोक

द्रुतनाथ मणि महा चपक था साम रहित उल्टा नटका ।
जाज पवन मृदु माम न रहा जस बीत गया मन्का । १६१

उपमा

उषा मुनहले तीर बग्गनी
जय नक्षमी सी उन्ति हुई । १६२

उत्प्रेक्षा

बार बार उम भाषण रब स कपनी धरती टग विषय
मना नाल व्याम उतरा हो जातिगन क हनु जायप । १६३

रूपक

मध्या धनमाना मा मुद्गर जाड रग निरगा छोट
गगत घुम्पिना शत्र अणियाँ पन्न हूण सुपार विराट । १६४

विरोधाभास

जाती बन सरन कपाना म जाँगा म जजन-मा नगना १६५
जयवा

जागृत था मान्य यद्यपि बह गाती था मुकुमारा । १६६

मानवीकरण

मृत्यु अरो चिर निर । तरा अब हिमाना-मा शीतन १६७

जयवा

बह विबल मुग प्रमत्त प्रवृत्ति का आज नगा हमन फिर म । १६८

उपयुक्त अनकारा क अनिरिक्त सप्तह दृष्टान्त विषय उन्नत वाप्या
जाति अनेक जनकारा का प्रयोग बाध्य म हुआ है । मृत क निर अमृत और
अमृत क लिए मृत उपमान ना कामायनीकार न प्रस्तुत किय हैं । कामायनी

१६१ कामायनी आगा मग, पृ० ५४

१६२ वहा जागा मग, पृ० २

१६३ वही चिन्ता मग, पृ० १४

१६४ वही आगा मग, पृ० ३०

१६५ वही नजा मग, पृ० १०३

१६६ वही, कम मग, पृ० १२५

१६७ वही चिन्ता मग, पृ० १८

१६८ वही आगा मग, पृ० २३

क अनकारा म कहा भी कृत्रिमता रही है। य रमणीय गद्य और वाक्य क कला पक्ष की अभिवृद्धि म महाकाव्य है।

५ छन्द विधान—कामायनी म प्राचीन और नवीन शैली प्रसार क छन्द का प्रयोग हुआ है। प्राचीन छन्द म जादूक पादाकुञ्चक रूपमाना मार रासा आदि छन्द का प्रयोग हुआ है। कामायनी का सबसे प्रमुख छन्द ताटक है। चिन्ता आशा स्वप्न जोर तिर्यक शर्मा म इसी का प्रयोग हुआ है। श्रद्धा सग म शृंगार तथा काम और लज्जा सग म पादाकुञ्चक छन्द का प्रयोग हुआ है। वासना म रूपमाना सघष म रासा तथा कम म मार छन्द का प्रयोग है। कुल शर्मा म मिश्रित छन्द का भी प्रयोग है। उत्तरार्णव क त्रिग शर्मा सग क प्रथम चरण म पादाकुञ्चक जोर त्रितीय चरण म पदरि छन्द का प्रयोग हुआ है। पादाकुञ्चक जोर पदरि दाना म सातह मात्राएँ हाती है जोर दाना क सयोग स प्रमाञ्जा न मिश्रित छन्द का निमाण किया है। जग

पत्र भर की उम चञ्चलता न खा लिया हृदय का स्वाधिकार।

श्रद्धा का अब वह मधुर निशा फनाती निष्पन्न जघकार। १४६

आनन्द सग म प्रसादजी के आँगू बाण्य की भाँति एक समीतात्मक छन्द का प्रयोग हुआ है। इसम कुल मित्राकर २६ मात्राएँ हाती है जिनम १४ १४ क अन्तर पर विराम लिया जाता है। जस

चञ्चलता धा धीर धीर वह एव यात्रिया का दन

सज्जिता क रम्य पुनिन म गिरि पथ स न निज सम्बन। १५

कामायनी क छन्द विधान म प्रसादजी न सामान्यतः जिन प्राचीन मधुर छन्द का प्रयोग म किया है व कवन जिनम शैली तीन शर्मा (रहस्य आनन्द तथा इन्द्र) म लियाया दन है। प्रसादजी न प्रत्यक्ष सग क जन्त म छन्द-परिवर्तन करने की शास्त्राय पद्धति का अनुपालन नहीं किया। उनक छन्द विधान की विशयता यह है कि वह भाषा भाव एव विषयानुरूप है। आतंकारिक भाषा क कारण अनेक स्थला पर छन्द म समीतात्मकता के गुण का भी समावेश हो गया है।

निष्कर्ष—निष्कल्प रूप म कहा जा सकता है कि काव्य शिल्प की दृष्टि स कामायनी सम्पूर्ण हिन्दी का आधार की श्रेष्ठतम काव्यकृति है। कलात्मक

१४६ कामायनी श्रद्धा सग पृ० १३६

१५ वही, आनन्द सग पृ २७७

उपनिषद् का दृष्टि से उस हिन्दू का या भारतीय काव्यकृतियाँ म हा नहा वरन विश्वकाव्य का श्रेष्ठ कृतिमा क नाय रत्नकर दत्ता-परम्पा जा सक्ता ह । सग-मयाजन, वस्तु-वर्णन भाव चित्रण साध्य निरूपण प्रकृति चित्रण भाषा शता का रूप-मन्त्रा मनस्त्व का प्रतिष्ठा जनकार-याजना छन्द विधान आदि सभा दृष्टिया स कामायना क काव्यत्व का सुन्दर सगठन र्जा है । कर्नात्मक काव्य मौल्य की व्यापकता जीव मन्ता क कारण कामायना महाकाव्य क इतिहास म एक मवधा नवान एव स्मरणाय जायाय जात्ता हद विश्वकाव्य की नामा म प्रवा करता है ।^{१४१}

कामायनी का कर्ना शिल्प कर्ता उद्यत और उत्साह ह कि वह कर्भा भा धूमिल नहा र्जा मवता । प्रसात्री न काय की विस्तृत पर भूमि पर उम विराट सधा तूलिका स जपन (कामामना क) चित्र आक ह जिनक रग न कभी धुधल हा सक्त ह और न कर्भा र्गवाण हा मिट मवता है ।^{१४२}

काय एक कर्ना शिल्प को दृष्टि म कामायना अस्त्रिय कर्ताकृति है । उमक समान काय गौरव और कर्नात्मक गग्गिमा लकर रची जान वाना काय कृति की हिन्दू म जाज नी प्रताप्ता है ।

जीवन-दशन

सजन प्ररणा और सदेश

कामामना कर्तमान युग का सर्वोत्कृष्ट काव्यकृति ह । प्रत्येक श्रेष्ठ कर्ना कृति का निर्माण क्रिमान क्रिमा गदप्ररणा का परिणाम हाता है । मर्गनाया का निर्माण ता निश्चय हा मन्नी मृजा प्ररणा क परिणामस्वरूप र्जाता है । कामायना का काव्य-जना और जायन-जान क मन्त् रूप का र्गकर म् स्पष्ट जाभाम हाता है कि ह्य काव्य का रचना क्रिमा कर्तना मृजन प्ररणा का र्जा परिणाम है । कामायना क आमून म कवि द्वारा किय गय मवता म य प्रतात हाता है कि कामायना की मृजन प्ररणा क मूत्र म प्रतात्री का प्राचान भाग्नीय या मय क प्रति अनय निर्या नार प्राचान कर्नात्म्य क प्रति प्रेम का भाव निहित है । यर्ग नहा कामायना का रचना जय जनक युगान परि स्थितिया क परिणामस्वरूप भा हूँ है । कामायना का कवि एक ध्यायक जावन-जान न प्रभावित था । भारतीय गात्रिय मन्कृति इतिहास एक म्जन

^{१४१} दत्ताप्रमाण पाण्ड्य बीसवीं शती की श्रेष्ठतम काव्यकृति कामायना पृ० २५

^{१४२} शर्चा राना गुण, बच्चारिकी पृ० ११६

क अथवा द्वारा उगा जाता क प्रति एक दृष्टिगत स्थिति है यः पा-
आन-साद ।

आन-सा का प्रतिष्ठा शरीर मानव स्वभाव का भावना भा कामायनी
का मृजल प्ररणा कही जा सकता है । प्रमा-जा भारतीय मस्कृति क उत्तम
स्वरूप की भी कामायना क माध्यम म अभिव्यक्ति मना चान्त थ । मकानान
जावन मध्य मानिकवा- जीवन मू या का उत्तर यथाधवा- दृष्टिगत क
अनिशय प्रचार एक रिपात क अनिवा- प्रभावा क कारण उत्पन्न जावन
विपमनाभा विदुपताभा विख्याताभा का दूर करन क रिण कवि एक मन्
मन्त्र भा दना चान्त थ । मक अभिव्यक्ति प्रमा-जा का प्रतिभा और
कनात्मक अभिव्यक्ति का आप- भी कामायनी की मृजल प्ररणा कया जा सकता
है । कामायना का मृजल प्ररणा का सबसे मन्त्वपूर्ण कारण कवि की मानवता
वा- जावन-दृष्टि और मानवाय जावन मू या क प्रति जा-सा ह । मका आम्पा
स प्रति- ाकर कवि म मानव रिनाय कृति क रूप म कामायना का मृजल
रिया है । वास्तव म कामायना की प्ररणाशक्ति भारतीय मस्कृति की उत्तर
व्यापक एक क-याणभनिवशा दृष्टि- जिसका क- रिदु सम-वय ह । प्रमा-जी
क मसूच गा-यि म म जावन-दृष्टि रिवाया पत्नी है वह मन्वयात्मक है ।
उनका प्ररणा का सान भारत का जनात नान-गौरव और श्वय-मिमा हा है ।
कि- भा क जनाता-मुय या पुनरुत्थानवा- न-ा- । मक विपगत उन पर
गष्ट्रायता कानिकता और नान-त्रात्मक मानवतावा- का गहरा प्रभाव
प- ह । इस तरह प्रमा-सा-यि म प्राचानता जीर नवानता आ-यात्मकता
जीर भौतिकता यथाधवा- तथा ज-शवा- का मु- सम-वय हुआ है । किन्तु
कामायना म प्रमा- क सम-वया-मक दृष्टिकोण का जीर भी विकसित जीर
पूण रूप रिवायी प-ता है । उमम प्रमा-जा न भारतीय मस्कृति को विश्व
मानव मस्कृति म गष्ट्रायता का जतरगष्ट्रीयता म य- चि- चेतना का
सम-दृष्टि चेतना म विमान करक मानवतावा- का नवीन और ज-श रूप
उपस्थित किया है । य- सम-वया- जा मानवतावा- का नवानतम और
ज-श रूप है कामायनी की प्ररणाशक्ति है । मकी म-ना प्ररणा भारतीय
मस्कृति क चिर-तन तत्वा म पापित जीर नान-त्रात्मक मानवतावा- विचार
धारा-ा स अनुप्राणित है । १५३

कामायनी की मन्त प्ररणा क समान उसका उद्देश्य भा महान् है क्योंकि

'महान कविमा की भाँति प्रमाँ ना काव्य जावन म अनुप्राणित है और जावन का अभिव्यक्ति ही उमका उद्देश्य है। १५५ वस्तुतः चिर प्रगतिशील वर्तानिक बुद्धि क साथ चिरस्थिर जीव चिरमयमित श्रद्धा क कल्याणकारि सपाग का प्रतिष्ठा ना कामायना क कवि का चरम नश्य है। १५५ काव्याचार्यों न काय रचना का उद्देश्य चतुर्वग फल (धर्म जय काम जय मा न) प्राप्ति बनाया है। कामायना का उद्देश्य आनन्द का उपरति है। कामायना क नामक मनु आनन्दमय नाक म पहुँचकर हा जावन क उद्देश्य का प्राप्ति करन है। कामायना क कवि न कया भाँ

जावन का उद्देश्य नया है ध्यान भवन म त्वि रना
 किन्तु पहुँचना उम मामा तक जितक आग रा नया
 जयकर उम आनन्द भूमि पर जितका मामा कया नया ।

स्पष्ट है कि कामायनाकार न जावन क मन्ततम ध्वय माग (आनन्द) का प्राप्ति का उद्देश्य बनाकर ना प्रस्तुत काव्य का रचना का है। धर्म जय जय काम कामायना म जयभाङ्गन गौण रूप म उर्णित रूप है किन्तु उपरिभूत नया। धर्म जीव काम का ना विभिन्न रूप कामायनी म चित्रित हुआ है। नया माया ममता प्रेम जीव अस्मिता जति उन्मत्त जन्मों का ना कवि न युग धर्म क व्यापक मिद्वान्ता क रूप म श्रद्धा क माध्यम म प्रतिष्ठित किया है। जय नामक फल का स्थापना नया स्वप्न और मधुप नामक मर्गों म शिवाया तना है। काम का प्रतिष्ठा माग क माधन रूप म । दूर है। श्रद्धा काम वागना नया और स्वप्न नामक मर्गों म काम का मनावतानिक रूप म अवन हुआ है। अस्तु उद्देश्य का दृष्टि न कामायना तुनमाङ्गन रामचरित मानम की कति का रचना मिद्व नया है बराकि उमका अन्तिम नश्य नाक मगत हाँ ।

कामायना महाकाव्य का मृजल प्ररणा क सूत्र म ना नाय क मन्त का ध्वनि भा परिब्रजान्त है। कामायना महाकाव्य का मयम मन्त्ररूपण मन्त वर्तानिकता जीव वीद्धिना क अनिवाया प्रभावा म जाग्रान्त मानवना का ममरमता क विचार-ज्ञान नाग आनन्द का उपरति क बनता है। ममरमता का मिद्वान्त यद्यपि शक-ज्ञान का उपरति है किन्तु प्रगाँत्रा न कामायना म

१५५ डा० प्रमाँरर प्रमाँर का काव्य, पृ० ५६१

१५६ गंगाप्रगाँ पाण्ड्य बीमर्षी शनो की अष्टमम काव्यरूति कामायनी—
 अर्पता बान प० १

क जपयत द्वारा बना जाता है और वह ही प्रतीक है। यह वा-
भावात्मा ।

आत्मज्ञान की प्राप्ति द्वारा मानव स्वभाव का भावना भी कामायनी
का मृजत प्रणवा कहा जा सकता है । प्रमात्मा भारतीय संस्कृति का उत्कृष्ट
स्वरूप का भी कामायनी का माध्यम है अभिव्यक्ति का चारित्र्य । महाकाव्य
जावन-नपथ भौतिकवादी जावन मूल्या का उत्कर्ष यथावधान दुष्टिवादी का
अतिशय प्रचार एवं विचार का अतिशय प्रभावा का कारण उत्पन्न जावन
विषमताओं विद्वेषताओं विस्मयताओं का दूर करण का विचार कवि एवं मन्त्र
मन्त्र का दाना चारित्र्य था । एक अतिशय प्रमात्मा की प्रतिभा और
वचनमा अभिव्यक्ति का आयतन भी कामायनी की मृजत प्रणवा कहा जा सकता
है । कामायनी का मृजत प्रणवा का सबसे महत्वपूर्ण कारण कवि की मानवता
वाणी जावन-दृष्टि और मानवाय जावन मूल्या का प्रति आस्था है । महाकाव्य
का प्रगतिशील कवि न मानव चिन्ताय कृति का रूप में कामायनी का मृजत
प्रिया है । वास्तव में कामायनी का प्रणवाशक्ति भावनाय संस्कृति का उत्कर्ष
व्यापक एवं व्यापकभित्तवशा दुष्टि है जिसका कारण विचार समन्वय है । प्रमात्मा
का समूच साहित्य में जा जावन-दृष्टि चिन्ताया पत्नी है वह समन्वयात्मक है ।
उनका प्रणवा का स्वतन्त्र भावन का अनात चान-गौरव और लक्ष्य मन्त्रिमा हा है ।
फिर भी वह अनात-मुग्ध या पुनरुत्थानवादी नहा है । इसके विपरीत उन पर
राष्ट्रायता वचनिकता और जावन-त्रात्मक मानवतावादी का गहरा प्रभाव
पत्त है । एक तरफ प्रमात्मा-साहित्य में प्राचीनता और नवीनता जाघ्यात्मिकता
और भौतिकता यथावधान तथा जावन-दृष्टि का सुन्दर समन्वय हुआ है । किन्तु
कामायनी में प्रमात्मा का समन्वयात्मक दृष्टिकोण का और भी विरगित और
पूण रूप चिन्तायी पत्ता है । उसमें प्रमात्मा न भारतीय संस्कृति को विश्व
मानव संस्कृति में राष्ट्रायता को अन्तरराष्ट्रीयता में दृष्टि चेतना का
समष्टि चेतना में विनीत करके मानवतावादी का नवीन और जावन रूप
उपस्थित किया है । यहाँ समन्वयात्मक जा मानवतावादी का नवीनतम और
जावन रूप है कामायनी का प्रणवाशक्ति है । यही महान प्रणवा भारतीय
संस्कृति का चिरन्तन तत्त्वा से पापित और जावन-त्रात्मक मानवतावादी विचार
धाराओं से अनुप्राणित है । १५३

कामायनी की महान प्रणवा का समान उसका उद्देश्य भी महान् है क्योंकि

'महान् कविया का भाति प्रसात् वा काय जावन स अनुप्राणित है जीर जीवन का अभिव्यक्ति ही उसका उद्देश्य है। १५६ वस्तुतः चिर प्रगतिशील वैज्ञानिक बुद्धि के साथ चिरस्थिर और चिरसमर्पित श्रद्धा के बल्याणकारी मयाग की प्रतिष्ठा ही कामायना के कवि का चरम लक्ष्य है। १५५ काव्याचार्यों ने काय रचना का उद्देश्य चतुर्वर्ग फन (धर्म जय काम जीर माक्ष) प्राप्ति बनाया है। कामायना का उद्देश्य ज्ञान का उपनदि है। कामायना के नामक मनु आनन्दमय लोक में पहुँचकर ज्ञा जावन के उद्देश्य का प्राप्ति करत है। कामायना के कवि ने कहा भी है

जावन का उद्देश्य नरा है श्रान्त भवन में त्रिब रहना
 किन्तु पहुँचना उम मीमा तक जिमके जाम राह नहा
 जयरा उम जानत भूमि पर जिमकी सामा क्या नही।

स्पष्ट है कि कामायनाकार ने जावन के महानतम ध्यय माक्ष (ज्ञान) का प्राप्ति का नय्य प्रनावर हा प्रस्तुत काव्य का रचना की है। धर्म जय जीर काम कामायनी में जयभाट्ट गौण रूप में दर्शित हुए हैं, किन्तु उपक्षित नहीं। धर्म जीर काम का ता त्रिनिष्ट रूप कामायना में चित्रित हुआ है। न्याया माया ममता प्रेम और जहिया जाति उपात आत्मीयता का भी कवि ने युग धर्म के स्थापक मिदाना के रूप में श्रद्धा के माध्यम में प्रतिष्ठित किया है। अय नामक फन की स्थापना दूना स्वयं और मधय नामक सर्गों में किया गया देता है। काम का प्रतिष्ठा साथ के साथ रूप में आ हुआ है। श्रद्धा काम यासना नजा और स्वयं नामक सर्गों में काम का मनावनातिक रूप में अर्पित हुआ है। अस्तु उद्देश्य की प्रति में कामायना तुलसीदास रामचरित मानस का काति का रचना मिद्ध देता है क्योंकि उमका जन्मि लक्ष्य लोक मल हा है।

कामायना महाकाव्य का मृजल प्रस्था के सूत्र में वा काय र मत्त का धरति भी परिख्यात है। कामायना महाकाव्य का मृजल मन्त्रु मत्त धर्मानिकता और बौद्धिकता के जनिमाना प्रभावों में आशान्त काव्य का ममत्ता के विचारमान राग जानत का उपनदि बरना है। मन्त्रु का मिदान्त यद्यपि लक्ष्य की उपनदि है किन्तु प्रगात्ता न का

१५५ डॉ० प्रमोदर प्रसाद का काव्य पृ० ४६३

१५६ गंगाप्रसाद पाण्डेय बौगवी शर्मा का धर्ममय काव्य काव्यिकी का अपनी बात, पृ० १

व्यवहारवादी जातिवादी म अनुप्राणित करके मानव जाति के प्रति एक शाश्वत मन्त्र के रूप में प्रसारित किया है। रामायणी में जिन सामग्रियों का बान कथा गयी है उगता सम्बन्ध बतलमान जीवन की जगमानताएँ एक विषमताओं का दूर करती हैं। यह समरमता यदि मानव के अतीतगत में हृदय और बुद्धि की है तो व्यवहार जगता में जातिवादी एक व्यवहारवादी (सधाधवादी) मूल्यांकन म वष की है। समरमय की यह प्रतिष्ठा मनुष्य की उछा पान और त्रिया के सन्तुष्ट म भा का गयी है। रामान जाति का विन्मयना हा ता यह है

पान दूर कुछ त्रिया भिन्न रूप वषा पूरा ता मा ता ।

एक दूगर म न भिन मर वर विडम्बता एग जावन का ॥ १५६

कामायनीवार में यह गिद्ध कर लिया है कि यद्ध के शासन में प्रचलित नारक मानव-सघष यान्त्रिक विन्मय और युद्ध का हा तम दना है। वीरिन अनिवात मानसिक जशान्ति का जमन्ताता है। श्रम (जसन् हृदय) या भाव जगन के सान्निध्य म रहकर ता मनुष्य जाति के चरम उदय जानत का प्राप्ति कर सकता है। समरमता के अनिर्विकल प्रमातजा न तारा जाति का भा उत्थान मूर्तक सन्त्रण लिया है। श्रद्धा का चरिय और कृत्तित्व नारा के लिए उच्चतम प्ररव जातिशो का प्रताक है। रामायना का समाधिक मन्त्ररूपण सन्त्रण मानवता की जय विजय का है। मानवता की जय जावन के शक्ति वषा म समरमय स्थापित करन म हा निहित ॥

शक्ति के विद्यत-वर्ण जा व्यस्त विवर्त विरार है हा निरूपाय ।

समरमय उनका कर समस्त विजयिना मानवता हा जाय । १५७

कामायनी महाकाव्य की उपयुक्त पक्तियाँ म कवि न जा स दश प्रसारित किया है वर सबकानान और विश्वजनीन है। एम प्रकार मन्त्र भूजन प्ररणा एक मन्त्र सन्त्रण स अनुप्राणित ज्ञान के नारण कामायनी अमर काथा की श्रणी म निबद्ध होकर एक सार ही महाकाव्य और महान का र दाना है।

सांस्कृतिक निरूपण

महाकाव्य में जातीय और राष्ट्रीय सभृति के निरूपण का प्रयत्न ता हाता ता है विश्व महाकाव्या में सम्पूर्ण मानव सभृति के निर्माण का भा चेट्टा रती है। कामायनी में निरूपित सभृति का स्वरूप कवन जातीय एव राष्ट्रीय

१५६ कामायनी रहस्य सग प २७२

१५७ वही श्रद्धा सग प ५६

हा नया वर्ण विश्वजनान ह । कामायनी म मास्मृतिक निरूपण की रक्ति म
 १ उक्तवनाय विपत्ताय स्पष्ट लिखाया गना है

१ प्रसात्ता न भारतान मस्मृति क र्वाय जीर मानवाय र्पा की
 प्रतिष्ठा वरत ता मानवाय मस्मृति का श्रुत बताया ह ।

२ भारताय जीर पाश्चाय मस्मृति क आनाग्भूत मित्रान्ता त्वा और
 जातों का मध्यक निरूपण वरत गना का तुतना म भारतान मस्मृति का
 पूण एव मगत मिद विना = ।
 दव सरक्ति

प्राचीन भारताय वा मय म र्वा मस्मृति का निरूपण किया गया है ।
 र्वनाआ का वणन मुख्य रूप म वना-पुराणा म मिलता ह । वना म उन
 र्वनाआ का वणन हुआ है जा मुख्यत प्राकृतिश शक्तिया क प्रताक है
 जम—प्रवाण का मूप और अग्नि जन का वरुण वायु का मरुत जाति ।
 जात्कान म प्राकृतिक शक्तिया का ती मनुष्य र्वा क रूप म पूजन गगा ।
 र्न शक्तिया का मर्या वरना चना गयी जीर वरिक् र्वा परिवार म र्नका
 मर्या १ तर माना जाता है । १५८ पुराण का तर जात आत वरिक् र्वा
 र्वना वन गय । कामायनी म जिय र्वा मस्मृति का निरूपण किया गया है
 वर अधिवागत वरिक् र्वा परिवार का मस्मृति है । मस्मृति का प्रमुक्त
 विशपताय निम्नाकिन बताया गया है

- १ जनोक्ति गति-मध्यप्रता ।
- २ अनन्त एश्वय का प्राप्ति ।
- ३ मध्य एव विनात भवना म विनाम ।
- ४ गगानप्रियता ।
- ५ अतवारप्रियता ।
- ६ गाम एव गुधापान म रक्ति ।
- ७ यता म आम्था ।
- ८ विनामप्रियता ।
- ९ आमराण का प्रवरता ।
- १० अमरता ता भावना का प्रगाय । १५६

कामायनी म र्वा मस्मृति की उपयक्त विपत्ताआ का निरूपण विना

१५८ ४।० मम्पूपाण हिदू देव परिवार का विवास पृ० ६०
 १५६ ४।० गतिप्रगाय कामायनी म वाप्य सरक्ति और दशन प० १०८

मग म मिल जाता है। दब मस्त्रति क स्वगायनग मगु विगित हावर जब दब मृष्टि क विगान क रारणा पर विगार करत है तभी शेष मस्त्रति की विगारणा हमार मस्त्रुग आती है। प्रगात्रा य यामाया है कि स्व जाति राना शक्तिमस्त्रुग भी हि प्रगति उतर पग तम म श्रुती रणा धा और मरणी स्वताआ क चरणा न जायात हावर प्रतिनिध कगिती रती थी।^{१९} प्रगात्रा न देवताआ का विगविनागा करत है। उनर मुग गुरा म गुरभित एव अरण रहन थ और नत्र अनुराग के जातम्य म भर रहन थ। य अनग की पीटाआ ता अनुभव कर अग भगिषा ता तय करत हूण निय हा अभिमार की शीलाग करत हूण मरर उमव मनाया करत थ। यवि क शला म स्वता विगत वामना त प्रतिनिधि थ।^{१९१} वामायनी म मनु न जिन यथा ता विधान किया है उनग भी यती गिद्ध शोता है कि यग म पगुआ की वति ती जानी थी और गोमपान किया जाता था।^{१९२} हम प्रकार वामायनी म स्व मस्त्रुति क जिन स्वस्व का निरूपण हुआ है वह भोग प्रधान शिवायी रती है। प्रतय शान पर उम मृष्टि का अचानक ही ध्वम गी गया और उमक एवमाण जीवन प्रतिनिधि क रूप म मनु जग र

आज अमरता का जीवित हूँ मैं वह भाषण जरजर दम्भ

आह गग क प्रथम अक का अघम पात्र मय सा विक्कम।^{१९३}

मानव सस्त्रुति

प्रतय क उपरात जिन नवीन मस्त्रुति का प्राटुर्भाव हुआ वही मानव मस्त्रुति क रूप म प्रसिद्ध है। भारतवय की शिल्पि से इस मस्त्रुति को आय मस्त्रुति अथवा मोमित अर्षी म हि दू मस्त्रुति कय जाता है। भारतीय मस्त्रुति का निर्माण अनक जानीय मस्त्रुतिया के मिथण स हुआ है जिनम श्वित आय

- ३ वर्णाश्रम धर्म,
- ४ धर्म नियमों का व्यवस्था
- ५ उपनिषद् पद्धति का प्रचार
- ६ धर्मव्यवस्था
- ७ नाग की महत्ता
- ८ विश्वधर्म एवं विश्वधर्मपुत्रत्व
- ९ धर्म अथ धर्म और धर्म का महत्त्व
- १० स्वर्णधर्म एवं राष्ट्रीयता की भावना ।

भारतीय सभ्यता के अत्यन्त प्राचीन और वैदिक जन्म के विधान कर्मकाण्ड उपनिषद् वर्णाश्रम धर्म एवं धर्म नियमों का व्यवस्था पर बल दिया गया है । दूसरा नवान और आधुनिक है जिसमें अन्तर्गत गणराज्य की भावना विश्वधर्मपुत्रत्व धर्मव्यवस्था आदि का महत्त्व दिया गया है । कामायनी में भारतीय सभ्यता के प्राचीन और नवीन जन्म का निरूपण हुआ है ।

प्राचीन भारतीय सभ्यता का कर्मकाण्डो स्वरूप

कामायनी में एक सभ्यता के स्थान पर मनु के पाँच नवजात वर्णों का उद्भव किया गया है । आत्मा मनु के मनु पात्र धर्म कर्म ११६ । अग्निहोत्र में अवशिष्ट अन्न का भी विसा जीवित प्राणी की प्राप्ति के लिए दूर रखा जाना है । ११७ जहाँ तक सम्कार का प्रश्न है कामायनी में श्रद्धा को ग्रहण करने में प्राणीकरण सम्कार एवं गर्भाधान सम्कार का उद्भव मिलता है । आन्त की प्राप्ति में कलाश प्रयाण में वानप्रस्थ और मायास आदि आश्रमों का सम्कार का भी उद्भव मिलता है । वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था का नाम कामायनी में मिलता है । मास्वत प्रश्न के नाग अपने अपने वंश बनाकर परिश्रम करने हुए जावन मिलता है । ११८ जहाँ तक आश्रम-व्यवस्था का सम्बन्ध है मनु के मास्वत में चार आश्रमों की रूपरेखा मिल जाती है । मास्वत के आरम्भ में निम्नलिखित पर ध्यान करने हुए मनु ब्रह्मचर्य आश्रम के धर्मों का पालन करने है । अन्त के मिलन के पश्चात् एक भारस्वत प्रश्न में उनका जावननामा का स्वरूप गृहस्थाश्रमों का है । तब और आन्त मर्गों में मास्वत-व्यवस्था का कर मास्वती के तत्पर मनु का तपस्या में जाना जाना वानप्रस्थ का और

११६ कामायनी आत्मा मनु १० १२

११८ यज्ञो स्वन मनु १० १८१

संग में मिल जाता है। स्व मस्त्रुति के पंचमायण मनु विनिता हाकर जब देव मृष्टि के विभाग के कारण पर विचार करता है सभी देव मस्त्रुति की विषयनाम हमारे सम्मुख आती है। प्रमात्मी न बालाया है कि स्व जाति ज्ञाना शक्तिमग्नय थी कि प्रतीति उतर पग पग म ज्ञाना रत्नी था और परणा स्वताभा के कारण म आशाना नाकर प्रतिनिधि बर्णना रत्नी था।^{१९} प्रमात्मी न देवताभा को तिगविलागा करता है। उतर मुग मुरा म गुरभित एक अरण रहत थ और नत्र अतराग के जालम्य म भर रहत थ। व अनग की पालाभा ता अनुभव कर अग भगिया ता तय करत हुए निये ता अभिमार का प्रीत्याग करत हुए मरत उगव मताया करत थ। वकि के शक्त म स्वता विरत वागना न प्रतिनिधि थ।^{१९१} कामायनी म मनु न जिन यथा का विधान किया है उनग भा यहा गिद्ध हाता है कि यथ म पणआ की यदि दी जाती थी और मोमपान किया जाता था।^{१९२} स्व प्रकार कामायनी म देव मस्त्रुति के जिम स्वस्व का निष्पण हुआ है वन भोग प्रधान सिन्धी स्त्री है। प्रत्ये ज्ञान पर उस मृष्टि का अचानक हा ध्वम ता यथा जीर उगव एकमात्र जीवन प्रतिनिधि के रूप म मनु शप रत

जाज अमरता का जीवन है कि वन भाषण जरजर दम्भ

जाह गग के प्रथम अक का अषम पात्र मय सा विष्कम।^{१९३}

मानव सस्त्रुति

प्रत्ये के उपरांत जिम नवीन मस्त्रुति का प्रादुर्भाव हुआ वही मानव मस्त्रुति के रूप म प्रगिद्ध है। भारतवर्ष की दृष्टि से इस मस्त्रुति को आय मस्त्रुति अथवा गीमित अर्थों म हिंदू मस्त्रुति कहा जाता है। भारतीय मस्त्रुति का निर्माण अनक ज्ञानीय मस्त्रुतिया के मिश्रण से हुआ है जिनम स्विक आय शाक्य हूण पठान मुगल अग्रज आदि विभिन्न जातिया की सास्त्रुतिक विणयनाभा का योगदान प्रमुख है। भारतीय मानव मस्त्रुति की प्रमुख विणयनाए निम्नांकित है

१ पंच महायना का विधान

२ पोषण मस्कार

^{१९} कामायनी चिन्ता संग पृ० ६

^{१९१} वही चिन्ता संग पृ० १ ११

^{१९२} वही कम संग पृ० ११६

^{१९३} वही चिन्ता संग पृ १८

मनेत्र करता है। जाति मग म कानन परत का उत्पन्न म गियागपना करत ह्य मनु मयाग धम क पासा म तपर गियाया २१ है।^{१६६} कामायनी म कितान और आशुनि आशुगी मशुति क प्रतीक है। भारतीय ससृति का नथोन रूप

भारतीय मशुति क आशुनि स्वल्प क रिमान म प्रातान मशुति क आशुनी का भी मशुत्वपूण पागपान है। कितन तवान स्वल्प क रिमान म आशुनि क मग का विचारधारा का पयात्त प्रभाय पडा है। भारतीय मशुति की एक विगपता समवयवात्त प्रवनि है। कामायना म मशुत्वयवात्त का ममरमता क मिद्धात क अतगत मफल प्रयाग हआ है। कामायनाकार न कयन प्रवत्तिमूनक ममउय ही जतिन नहा गिया है वरन व्यक्ति और समाज अधिवृत्त जीर अधिकागी पुण्य और म्प्री एव व्यक्ति और ममष्टि क मशुत्वय पर भा बन गिया है। कामायनी म तागी की महत्ता पर भा पयात्त बन गिया गया है। कामायनी का थडा का चरित्र नारी जाति का मशुण विगपताआ एक गुणा का कशु है। प्रमात्तजा न कामायना म थडा क जीवन चरित्र को एतन गिय जीर मगान रूप म अकित किया है कि वह मशुण तागी जाति स ऊपर एक पराशक्ति क रूप म गियाया देती है। प्रस्तुत मशुवाक्य म थडा का चरित्र इस प्रकार विवसित किया गया है कि वह सतत अपन स्व का उय परिवार समाज राष्ट्र तथा विश्व क तिल करती जाती है। उमक चरित्र क विकास म जीवन क सभा प्रमुख मूल्या की प्राप्ति का पय ग्तिगोचर हाता है। इन विगपताआ क कारण यति हम थडा का राष्ट्र ससृति की आत्मा कह ता काई अत्युक्ति नही। भारतीय मशुति क मिवाय विश्व की काई अय मशुति थडा जसा चरित्र नही उत्पन्न कर सकती।^{१६७}

विश्वधुत्व की भावना कामायनी की सबसे महत्त्वपूण साम्कृतिक विगपता है। कामायनीकार न मानवतावाणी जावन मूल्यो के आधार पर कामायनी क साम्कृतिक भवन का निर्माण किया है। थडा मनु स प्रथम मिनन म हा मानवता की जय जीर विश्व के कल्याण की बात कहती है। वह किसी राष्ट्र या जाताय मशुति क अभ्युत्थ की बात न कहकर मशुण विश्व क मगत की कामना करती है। थडा चतना के भाव मत्या से पूण सुन्दर इतिहास का विश्व क हृत्पगतन पर गिय अक्षरा स अकितहोने जीर मानवता की कीर्ति

^{१६६} कामायनी दान सग पृ० २५४

^{१६७} डा रामानामिह कामायनी अनुशीलन पृ० २७०

को सबत्र फलाने की यात कहकर विश्वबधुत्व की भावना ना परिवच्य देनी है।^{१६८} कामायनी म कवि ने स्पष्ट शब्द म मनु व द्वारा कहलाया है

हम अच न और कुटम्बी हम केवल एव हमी है
 तुम मव मेरे जवयव हा जिसम कुछ कमा नहा है ।
 शापित न यहाँ है कोई तापित पापा न यहाँ ह
 जीवन बमुधा समतन है समरस ह जानि जहाँ ह ।^{१६९}

कवि ने विश्वबधुत्व एव वमुधव कुटम्बवम व साथ साथ स्वर्ण प्रेम एव राष्ट्रीयता की भावना को भी विस्मृत नहा किया है। कामायनी म म्यान म्यान पर पवतराज हिमालय कलाण पवत मानसरोवर मारम्बन प्रवेश वन आनि व वणन म शेष प्रम की भावना को यवन किया है। "म मग म कल्याण भूमि यह योग शक्त कहकर स्वर्ण प्रेम एव राष्ट्रीय भावना को ही प्रमाणी न अभियक्त किया है।

कामायनी म हृदयगानी भारतीय मस्कृति ओर बुद्धिवाणी पारश्चात्य मस्कृति व मधय का निरूपण वरु भी प्रमाणी ने भारतीय मस्कृति की ही श्रष्टता का प्रतिपादन किया है। वम कामायनी म जिन मस्कृतिव जीवन मूल्या की प्रतिष्ठा हुई है व विश्वजननि है। कामायनी व पारिवारिक सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक नतिक आध्यात्मिक मूल्य भारतवष व लिए जितन उपयोगी हैं उतन ही विश्व व अच राष्ट्रो के लिए भी कामायनी म मानवता की भावनात्मक सना हिंदू जानि व लिए ही नही हिन्दुस्तान के लिए ही नही, वरन् सारी मानवता की रक्षा के लिए सुगरित हो उठी है। दुर्गीतिण कामायनी भारतीय जीवन एव भारतीय साहित्य की ही नही वरन् विश्व साहित्य तथा विश्व जीवन की एक अमूल्य सम्पत्ति बन गया है।^{१७०} प्रमाणी विश्वबधुत्व व उत्तम आत्मी म प्ररित होकर भी भारतीय आत्मी स प्रभावित थ। भारतीयता का भावना उनकी सम्पूर्ण साहित्य चतना को अनुप्राणित किया है। इस दृष्टि स विचार करें तो मन्वता व जिन विश्वास को कामायनी म चित्रित किया गया ह वह पारश्चात्य ओर पौरात्य मन्वताओ का मर्मिलित रूप है किन्तु भारतीय मन्वता ओर मस्कृति व रसागमय, आध्यात्मिक कमनिष्ठ स्वरूप व सम्मुख पारश्चात्य मन्वता की यात्रिक

^{१६८} कामायनी, श्रद्धा सग पृ० ५८ ५६

^{१६९} वही मानस सग पृ० ८७ ८८

^{१७०} डॉ० रामसातसिंह कामायनी मनुगीसन, पृ० ७८

भौतिक भोग प्रधान सम्मता बहुत अधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत नहीं है। विष्णु कामायनीकार ने दोनों सम्प्रदायों के स्वरूप समन्वय द्वारा जिस आस्था की स्थापना की है वह निश्चय ही महत्वपूर्ण है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कामायनी में सृष्टि का स्वरूप समन्वयवादी ढंग हुआ भी प्रसादजी की निष्ठा और आस्था भारतीय (आर्य) सम्प्रदाय का प्रतिबिम्ब है। कामायनी की सांस्कृतिक उपलब्धि उमका मान्यतावादी स्वरूप है।

दाशनिक पृष्ठभूमि

कामायनी की दाशनिक पृष्ठभूमि का निर्माण प्रमुख रूप से प्रवागमा का प्रत्यभिज्ञान तथा भारतय दर्शन की अनेक महत्वपूर्ण विचारधाराओं का आधार पर हुआ है। हमारे जनितिकन यौद्धा का दुखवादा दणिकवादा शूयवादा चाप वापिन के परमाणुवादा विज्ञान का भौतिकवादा विकासवादा एव उससे जगभूत परिवर्तनवादा मध्ययुगीन नियतवादा एव आधुनिक राष्ट्रीवादा की जहिमासूनक विचारधाराओं का योगदान भी कामायनी की दाशनिक भित्ति के निर्माण में स्पष्ट सिद्धांत देना है। इन सम्पूर्ण दाशनिक सिद्धान्तों और विचारधाराओं के योग में प्रसादजी ने कामायनी में जो दाशनिक उपपत्ति का है वह है समरसता का सिद्धान्त और आनन्दवादा। कामायनी का सम्पूर्ण दाशनिक उपपत्तियाँ एव प्रपत्तियाँ को वही दो शब्दों में आत्मसात किया जा सकता है।

कामायनी में जिस समरसताजय आनन्दवादा की उपलब्धि हुई है वह मूलतः प्रवागमा में प्रतिपादित समरस्य एव जानन्दवादा से प्रभावित अवश्य है किन्तु उसकी पूर्णतः अनुकृति मात्र ही नहीं। कामायनी का आनन्दवादा दाशनिक सिद्धान्त या वादा की दृष्टि से प्रसादजी की अपनी मौलिक सृष्टि है जिसके निर्माण में उन्होंने मुख्य रूप से शक दर्शन यौद्ध दर्शन वेदान्त दर्शन उपनिषद् तथा वर्तमान युग की साम्यवादी प्रवृत्तियाँ का आवश्यकतानुसार उपयोग किया है। किन्तु किसी एक मतवादा का पक्कर उसकी अधः उपासना प्रसादजी को अभीष्ट नहीं।^{१७१}

प्रत्यभिज्ञादर्शन और कामायनी

भारत में शक के पाँच सम्प्रदाय प्रसिद्ध हैं—१ शक सम्प्रदाय २ पाशपत सम्प्रदाय ३ कालामुक्त सम्प्रदाय, ४ कापालिक सम्प्रदाय और ५ वीर शक सम्प्रदाय।

इन सम्प्रदायों का विकास दश म निम्न स्थानों पर और शिवाराधना की निम्न निम्न पद्धतियों को अपनाकर हुआ। शिव सम्प्रदाय मुख्यतः तमिल प्रदेश में पाण्डुपत गुजरात में तथा बीर भव मत का प्रचार कर्नाटक प्रदेश में हुआ। वानामुनि और कापानिका के विषय विवरण उपरोक्त न हान से प्रतीत होता है कि इनकी क्रियाएँ एवं सिद्धान्त इतने गुप्त थे कि आगे चलकर इनकी परम्पराएँ नष्ट प्रायः हो गयीं।^{१०२}

श्री माध्वाचार्य ने सर्वदशन संग्रह नामक ग्रन्थ में चार शिव स्थानों का उल्लेख किया है—नकुलीश पाण्डुपतिज्ञान शिवज्ञान प्रत्यभिज्ञान और श्वेश्वरज्ञान।^{१०३}

प्रत्यभिज्ञान का विकास काश्मीर में हुआ था इसलिए यह काश्मीर शिवदशन नाम में भी प्रसिद्ध है। इसमें मूल प्रवक्तक वसुगुप्त मान जाते हैं। वसुगुप्त के दो प्रधान शिष्य थे—कल्लट और सामान्त। कल्लट ने स्पन्दशास्त्र का और सामान्त ने प्रत्यभिज्ञान का प्रवर्तन किया। इस शास्त्र का मूल ग्रन्थ शिवदृष्टि है। अभिनव गुप्ताचार्य ने उन प्रत्यभिज्ञान सूत्रों पर ईश्वर प्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी नामक टीका तथा तन्त्रालोक तन्त्रमार परमायमार आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे।^{१०४} इन्हीं ग्रन्थों में प्रत्यभिज्ञान की दार्शनिक विचारधाराओं का विवचन है।

प्रत्यभिज्ञान पूर्णतः अद्वैतवादी दशन है जिसके अनुसार त्रिवेदिकम् की स्थिति को प्राप्त करना जाव का अंतिम लक्ष्य है। इस दृष्टि से प्रत्यभिज्ञान दशन और शंकर के वेदान्तज्ञान का प्रतिपाद्य समान है। वेदान्त में अहम् ब्रह्मास्मि की स्थिति का जीव का चरम लक्ष्य माना गया है। यन्मुने 'ब्रह्म' की प्रत्यभिज्ञा या पहचान ही जान के कारण ही इसे प्रत्यभिज्ञादशन कहा है।^{१०५}

१ अरमा—प्रत्यभिज्ञान के अनुसार आत्मा को चतुर्थ स्वरूप कहा गया है। वही आत्मा का शक्ति के नाम में भी सम्बोधित किया जाता

१०२ डॉ० यत्तव उपाध्याय आय ससृष्टि के मूलाधार, पृ० १०६
 १०३ वही, शिवदशन संग्रह पृ० ७० ७८
 १०४ डॉ० द्वारिकाप्रसाद शर्मा काश्मीर के काव्य ससृष्टि और दशन, पृ० ४११
 १०५ डॉ० विश्वभक्त उपाध्याय हिन्दी साहित्य की दार्शनिक दृष्टि, पृ० २५५

है और उम परम शिव म अभिष माता जाता है । कामायनी म प्रगाञ्जी न प्रत्यभिज्ञाशन के अनुसार आत्मा का महाशक्ति कहा है जा मीनामय आत्मा रत्ना घानी है

कर रही मीनामय आत्मा महाशक्ति माग हूँ मी थ्यता ।

विश्व का उमीला अविराम म्या म गय हान अनुरता ॥ १७१

प्रगाञ्जी न आत्मा क तिम घना घरा का भी प्रयाग किया है

तानना एक विलसनी आत्मा जगत् घना धा । १७२

यत् आत्मा ही परम्-तत्व और परम् शिव है । म्गी शिवरूप आम-नत्व म अयान् शिव स (आत्मा की इच्छा म) विश्व का निमाण शाना है

काम मगत स मण्डित श्रम सग इच्छा का है परिणाम । १७३

२ जीव—प्रत्यभिज्ञाशन म त्रिपाम्य जावद्ध जीव का क ताम म सम्प्रोषित किया गया है । १७४

म जाव की चार माण मानी गया है—सकल प्रयावत विधाना क न जीव शुद्ध । १७५

जीव का शुद्ध-स्वरूप की प्राप्ति शिवोऽहम् के ज्ञान पर हाती है । कामायनी म मनु जीव के प्रतीक है । उनका जीवन चिन्ताग्रस्त है भोग विनास की प्रवृत्ति भेद-बुद्धि र्प्या स्वाथ भावना जानि क वारण क प्रथम मग स नकर निर्वेत् सग तव तान प्रकार क मला एक ज्ञान कता नियति राग विद्यादि छ कबुका से घिर हुए बचनग्रस्त रहते हैं । रहस्य सग म श्रद्धा क सयाग म इच्छा क्रिया तथा ज्ञान के त्रिकोण मिलने पर शांभव स्थिति उत्पन्न हो जाती है । उसी क परिणामस्वरूप ये शिव रूप होकर अनन्त जावद्ध शिव की प्राप्ति करत ह

स्वप्न स्वाप जागरण भस्म हो इच्छा क्रिया ज्ञान मिललय थ ।

त्रिव्य जनाहत पर निनात् म श्रद्धायुत मनु बस तमय थे ॥ १७६

३ जगत—प्रत्यभिज्ञाशन क अनुसार मृष्टि या जगत चिति का

१७६ कामायनी श्रद्धा सग पृ० ५३

१७७ वही जानद सग पृ० २६४

१७८ वही श्रद्धा सग पृ० ५५

१७९ ईश्वर प्रत्यभिज्ञाविमर्शनी भाग २ पृ० २२०

१८० तत्रालोक, भाग १ पृ० २१६

१८१ कामायनी रहस्य सग पृ० २७३

स्वरूप माना गया है जो अपना इच्छा के अनुसार विश्व का उदय या उन्मय करती है। कामायना में प्रमादजी ने विश्व का चिन्ति की इच्छा का परिणाम ही कहा है यह समार महाचिन्ति का तालामय अभिव्यक्ति हान का कारण जानल्लमय है और जात्मा का समार का प्रति अनुराग हाना भा स्वाभाविक ही है। प्रमादजा ने जगत का प्रति मिध्यात्व का दृष्टिकोण नहा अपनाया

अपने दुःख सुख में पुलकित यह मूढ विश्व सचराचर
चिन्ति का तिराट त्रु मगन यह मत्स्य सतत चिर मुन्दर । १८८

इस प्रकार प्रमादजी ने कामायना में आत्मा जीव और जगत का अपना प्रत्यभिप्राशन के सद्धान्तिक आधार पर साकार की है।

तीन पदाथ (पशु पशुपति और पाप)

सभी शक्तियों का प्रति प्रत्यभिप्राशन में पशु पशुपति और पाप तीन पदार्थों का स्वीकार किया गया है। जीव ही पशु है जो जगत की पाप में बंधा हुआ है। यह पशुपति (शिवत्व) का प्राप्त नहा कर पाता। पशुपति का प्राप्ति उम शिवत्व पाप (शिवत्व-हम) अर्थात् प्रत्यभिप्राशन होने पर होता है। कामायनी में मनु का स्थिति जीव की है। यन्त्र का भौतिक जाग्रत में बंधन रहता है। किन्तु श्रद्धा का सम्पन्न स अन्तर्गत शिवत्व बोध पशुपति (नटराज) का दमना में होता है। उम स्थिति में उम सम्पूर्ण समारण्य सिंगापी दता है—य अपन-धराय का भू-भूमि पर आनन्दमय समरमताजय आनन्द का स्थिति का प्राप्त करन है।

आनन्दवाद—कामायनी का मूढ प्रतिपाद्य आनन्दवाद ही है। यह आनन्दवाद मानव का उक्त अवस्था का प्रतीक है जिसमें वह सम्पूर्ण भूभाग भूतकर विश्ववधुत्व का प्राप्त भाव से मुक्त होता है। कामायना में आनन्द का जिन रूप की प्रतिपाद्य है वह सम्पूर्ण आनन्द है—वाह गीतर विश्व रूप में प्रगति आनन्द नहा यो आनन्द स्पष्टत औपनिषदिक परम्परा से प्रभावित शक्तियों—प्रतिपाद्यित अभ्यन्त आनन्दवाद है जिसमें आनन्द और परमात्म का ना ना वरन् आनन्द और जगत का ना पूरा लय ही भावना निहित है। १८९

१८८ कामायना आनन्द मग पृ० ८८

१८९ दृ० नगर कामायनी का अन्वयन की समारण्य पृ० १८९

कामायनी के आनन्द का स्वरूप जगत के भौतिक आनन्द से भिन्न है। सत्कार में जा मधुसूय तब क्षणिक अनुभूति का भाव है वरुता वस्तुतः आनन्द की छायामात्र है। द्रुग आनन्द के प्राप्त होने पर यागना का आकर्षण और अगृहीत समाप्त हो जाती है। उमका स्वरूप गतिविध है। वरु अगण है। द्रुग आनन्द की उपलब्धि होने पर मातव अभय की स्थिति का अनुभव करता है। विश्व के वास्तव दृढ़—जस गुण द्रुग और जल चान स्थितियों समरसता के कारण समाप्त हो जाती है।

सब भय भाव भुजवानर दुःख गुण को दृश्य बनाता।

मातव कह र। यम में हूँ यह विश्व नीट बन जाता। १८६

जगत के सम्पूर्ण द्रुग की जात्यतिक्रम निवृत्ति भी हो जाता है। प्रसादजी न जानन्दवान की स्थापना मृष्टि के भौतिक मधुसूय से मुक्ति प्राप्त करने के लिए की है क्योंकि जगत की विन्म्वनाया में फगा हुआ मनुष्य जीवन के वास्तविक गुण को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक वह आनन्द के आध्यात्मिक स्वरूप को पहचान न ले किन्तु इसका यह अर्थ कभी नहीं कि व्यक्ति पलायनवादी और निवृत्तिमार्गी हो जाय। प्रसाद का आनन्दवान सबवान के सिद्धांत पर स्थित है सबवान का उदय निवृत्ति द्वारा उतना सिद्ध नहीं होता जितना विश्व को कमस्थान मानने से सिद्ध होता है। यह कौरा कम नहीं समवधारक कम है। १८५

कामायनी में इस ओर सचेत भी किया गया है

यह नीट मनोहर कृतिमा का या विश्व कम रगस्थत है

है परम्परा तग रही यहा ठहरा जिसमें जितना बन है। १८६

उपयुक्त पक्तियां में काम ने मनु को विश्व की कम रगस्थली में ठहरने की शिक्षा दी है। श्रद्धा न भी चित्ताग्रस्त मनु से यही कहा है

दुःख के डर से तुम अज्ञात जटिलताओं का कर अनुमान

काम से सिद्धक रह हा जाज भविष्यत् से बन कर जनजान। १८७

सत्कार (सग) मंगल और श्रममण्डित है। उस तिरस्त्रुत करना उचित नहीं जिस तुम जगत की ज्वानाओं का मूल और अभिशाप समझते हो वह ईश्वर के वरदान का रहस्य भा है। विश्व भूमा का मधुमय दान है

१८४ कामायनी आनन्द सग पृ २८६

१८५ आचार्य नन्ददुलारे वाजपयी आधुनिक साहित्य पृ० ११८

१८६ कामायनी काम सग पृ० ७५

१८७ यही श्रद्धा सग पृ० ५२

काम मगल से मण्डित श्रेयस्य सग इच्छा वा है परिणाम ।

× × ×

विषमता की पीडा से व्यस्त हा रहा स्पन्दित विषय महान्

यही दुःख मुक्त विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान । १८८

इस प्रकार प्रमादजी का आनन्दवाद आत्मिक होत हुए भा पृणत अभौतिक नहा । आत्मिक हात हुए ना उसका अनुभूति अशरारा नहा । उसम काम की प्ररणा आ सात्त्विक सुख की प्राप्ति एक साथ होता है ।

समरसता—समरसता शब्द और सिद्धान्त दाना की ही प्रसादजी न शव दशना म ग्रहण किया है । शवदशना म शिव और शक्ति तत्त्व के समन्वय का प्रतिपादन किया गया है । वामाधना म इस समरसता के सिद्धांत का कवि न इत्या काम और ज्ञान नामक त्रिपुर के समन्वय द्वारा प्रतिपादित किया है । वामाधनाकार न यह प्रतिपादित किया है कि मानव की इन तीना प्रवृत्तिया का समन्वय हात पर हा याम्बविय आनन्द की उपलब्धि सम्भव ह । ज्ञान श्रिया और इच्छा नामक तीना शक्तियों प्रमा पुष्ट्य का बुद्धि अहकार और मन का प्रमा तमोगुणी तमोगुणी एव रजोगुणा प्रवृत्तिया है । मना यनानि दुष्टि म मानव मन की इन प्रवृत्तिया म समरस्य स्थापित हात पर यह पृणत की स्थिति का पहुँचकर अलण्ड आनन्द की प्राप्ति उसा प्रार करता है जिस प्रकार मोगी समाधि की अवस्था म ब्रह्म का अनुभूति । वामाधनीकार न स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि इच्छा ज्ञान और श्रिया का भिन्न जीवन की विद्यम्यना है

ज्ञान दूर कुछ श्रिया भिन्न है इच्छा क्या पूरी हो मन की

एक दूसरे से न मिल सक यह विद्यम्यना है जीवन का । १८९

मन ताना के मिलन पर मनु का शिष्यान्त का प्राप्ति हाती है । मनु शिष्य अनान्त निना मुक्त यागिया की भाति परमानन्द का दान का शान्त हात है । वामाधनी की दाननि उपलब्धिया म समरसता का सिद्धांत सर्वोपरि महत्त्वपूर्ण है । प्रमादजी न इस सिद्धांत का जीवन के व्यवहार जगत म ना प्रतिष्ठा किया है । उदाहरण के लिए उन्हात पुष्ट्य आनन्द का मषय का समाप्त करन के लिए समरसतापूर्ण मन्वय का आनन्दयता पर बन दिया है । काम न मनु से नहा नी है

१८८ वामाधनी, श्रद्धा मग पृ० ५३ ५४

१८९ यही शब्द मग पृ० ७७

गुण भूत मर पुण्यव्यय भात म पुण्य मत्ता है तात का
समरसता है मत्त्वय्य यती अतिार और अतिारी की । १६

मगी समरसता का उपाय जम जीर मता का कारण भी माता है ।

यथा—

समरस य जम औ मता मुत्तर मातात का था ।

मगी समरसता का उद्देश्य मारम्यत प्रमत्त म जाती हृद श्रद्धा अपत पुन का भी दती है

मवकी समरसता का प्रपार मर मर मता का पुकार । १६१

कामायनी के अन्तिम मग म ता इम समरसता का यथा विमत्त प्रभाय चित्रित किया गया है ।

शापिन न यही न की तापित पापा न यही है ।

जावन धमधा समनन ह समरस है जा नि यती है । १६२

इस प्रकार कामायनी म समरसता क तान रूप मिलत है—व्यक्ति की समरसता समाज की समरसता तथा प्रकृति और पुण्य का समरसता । व्यक्ति की समरसता श्रद्धा क द्वारा व्यक्त हुई है समाज का समरसता क अभाव म मारस्वन प्रदण म विप्लव तथा सधय हाता है तथा प्रकृति तथा पुण्य की समरसता जानत सग म नियायी गयी है । १६३

समरसता परमात्ति एत आन दमय अवस्था की जननी है । उम अवस्था का प्राप्त कर उन पर मानव क लिए कुछ भी प्राप्त करना अशय हो जाता ह । यही जीव की जीवन यात्रा समाप्त होती है । जब जम-मरण म कुछ भी नहा रन्ता और अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति हा तान स कम की गति भी यहा शान्त हा जाती है । यती सतचिन और जानद का सामजस्य तथा सामरस्य है यही भारतीय दशन जावन धम और कम का चरम लक्ष्य है । १६४

इस प्रकार समरसता का सिद्धांत कामायनी की अनुपम देन हे जिस कवि न वतमान असंतुलित जीवन म समाधान के रूप म चित्रित किया है ।

१६ कामायनी इडा सग पृ० १६२

१६१ यही पृ० २४४

१६२ यही पृ २८८

१६३ डा रामनालसिंह कामायनी अनशीलन पृ १७८

१६४ डा० उमशमिथ भारतीय दशन पृ० २५

गवागमा एक तत्रा न प्रभावित हा। हूण भा यह सिद्धान्त नितान्त सुमीन और नवीन है। एम सिद्धान्त क प्रयोग स कामायनी ही महान नया बना ह वरन सिद्धान्त भा महान् ना गया ह।

नियतिवाद—शवागमा म नियति का विश्व क श्रिया-व्यापारा का मयाजिवागति क रूप म वर्णित किया गया है। वह कमपत्तन बना शिव गति है। शव दशन म नियति बना विद्या राग का न आत् विचुका म एर है जा जीव का आवृत्त करन २। तत्रागति म नियति का नियमन करन वाली कहा गया है

नियति निर्घोचना घत्त विशिष्ट कायमण्डल । १६५

प्रसाज्जान कामायना म इमरा (नियति) घट्टण उस चननशक्ति क रूप म किया है जिसक सम्मुख मानव विद्वान् हा जाना है—ममार का ममन्त्र श्रिया व्यापार नियति क द्वारा हा चलता है। वह व्यक्तिगत नहा ममन्त्रिगत है। नियति कवन मनु का जावन ही परिचालित नहा कर्ता वरन् समग्र समार उसी स नियन्त्रित है। १६६

कामायना म शत्रु हा नियतिवाद का स्वर मुनाया दता है कयाकि सृष्टि क कम चक्र का संचालन बना करना है

कमचक्र सा धूम रहा है यत् शत्रु बन नियति प्रख्या
सबक मद्य रगा हर्ष है का व्यापुन नया लपणा।

× ×

नियति चलानी कम-चक्र यह तुष्णाजनिन ममव वायना । १६७
काव्यारम्भ म प्रलयशान का ममालि क मा नियति क शासन का कवि न मुचित किया है

उम एवान्त नियति पागन म चल विद्वान् धार धीः

एत ज्ञान्त स्पन्दन नरग का हाता नया शत्रु नार । १६८

एसा मग म कवि न नियति का एक नटा कहा है किमरा रूप भीषण भी होता है

१६५ तत्रागती, ६।१६०

१६६ दलि प्रेम-कर प्रसाद का काव्य, पृ० २६८

१६७ कामायनी रहस्य मग पृ० २६६ ६७

१६८ वही जाग मग पृ० ३४

इस नियति तटी क अति भीषण अभिषय की जायानाम रहा।

गाम्भीरी शू यता म प्रतिगम असपत्नता अपिक् कुसांन रही। १४६
वागना सग म नियति क कीदुक का देगकर मनु समतृत्त हाा हृण चिद्रित
किय गय है

दगत थ अग्निगासा म कुमुत्तम मुक्त

मनु समतृत्ता गिज्ञ नियति का गग बयन मुक्त। २

सषय सग म इसी नियति को विक्षयणमया क रूप म अचित्त किया गया है
जिस दगकर गभी ध्यानुन हा जात है

तात्व म थी तीव्र प्रगति परमाणु विकल थ

नियति विक्षयणमयी प्राण से सब ध्यानुल थ। ३ १

कामायना म इस प्रकार नियति का एव नियन्ताशक्ति क रूप म चिद्रित किया
गया है किन्तु कामायना का नियतिवाद मनुष्य को अकमण्य और निराश
नहीं बनाना वरन् अकम स क म की ओर प्रवृत्त करता है। कामायनी का
नियतिवात् भाग्यवात् का उस विचारधारा स भी भिन्न है जिसम पूर्वजन्मा
क क म का पत्र मानकर यचित निष्क्रिय भाव स परिस्थितिया की विन्म्वना
को सहता रहता है। नियति का प्रसात्जी अचतन प्रकृति का काय-कनाप
मानत ह। सचेतन प्रकृति नियति क रूप म ही सक्रिय होती है प्रसादजी
को ऽष्टि म प्रकृति का नियमन और विश्व का सन्तुनन करन यानी शक्ति
नियति है जो मानव अतिवात् की रोक याम करती है और विश्व का सन्तुलित
विकास करन म सहायक होती है। प्रसाद का यह नियति सिद्धान्त साधारण
भाग्यवात् या प्रारूपवाद से भिन्न है। नियति एक अनप शक्ति है किन्तु वह
जन् और अज्ञानमूलक नहा है। ३ २

उपयक्त विवेचन से स्पष्ट है कि— प्रसात्जी न नियति का भारतीय
दशन की ठोस चित्तनभूमि पर प्रतिष्ठित किया है। वह विश्वनियता की
इच्छाशक्ति है प्रसात्जी ने उसका पूणत स्वतन्त्र तथा स्वैच्छाचारिणी
माना है। ईश्वर की इच्छाशक्ति हान क कारण जय सता नहा है। उसके

१४६ कामायनी इत्त सग पृ० १५८

२ वही वासना सग पृ० ८३

१ वही सषय सग पृ २०

२ प्रसाद का जीवन दशन बना और कृतित्व—मम्पादक महावीरअधिकारा
म आचाय वाजपयी का कामायनी का दार्शनिक निरूपण नामक
निबन्ध पृ० ६३

कम चक्र के प्ररत्न का उद्देश्य सदब जाव के लिए कल्याणमय है क्योंकि वह अंत में उस शिव तत्त्व की ओर अप्रसर होने का प्रेरणा देता है जिस प्राप्त करके वह जान-दलाक का जाव बन जाता है। २*३

अप्य दामानिक विचारधाराओं का प्रभाव

ग्रीमवा शताब्दी में गांधीजी का आविभाव राजनीति के क्षेत्र में हुआ, परंतु तत्कालीन भारताय जावन के सभी क्षेत्रों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था। गांधीजी के विचार (जावन-ज्ञान) में हिंदी काय का प्रतिनिधि कायधारण यथष्ट रूप में प्रभावित हुई। महाकाव्य युग जावन की चेतना के आकलन का विराट प्रयास होने के कारण उसमें अपन युग का उत्तम विचार धाराओं की प्रतिच्छाया का समावेश होना स्वाभाविक ही है। कामायनी व्यापक अर्थों में एक युगान महाकाव्य होने के कारण गांधीवाद के मूल सिद्धान्तों से प्रभावित है। काय के प्रारम्भिक मर्मों में अहिंसा का जिस विचारणा का समर्थन कवि ने श्रद्धा के माध्यम से कराया है वह गांधीवादी प्रभाव का व्यञ्जक है। कामायनी की श्रद्धा मनु के हिंसात्मक कार्यों का दृढता से विरोध करता है। अपन पालित पशु की यज्ञ में बलि स्थित जान पर बल कहना भी है कि किसी श्वना के नाते बलि देना कितना घाथा है। २*६

अप्य अनिश्चित जिन प्रकार मानव का माना विप्रभूट में काय निश्चि वातावा का कानना बुनना गिगानी है उमा प्रकार कामायना का श्रद्धा भी शया में तपना तपन बुनती है। तपना द्वारा मूल कानना और बन्ध बुनना गांधीवादी का सामाजिक आर्थिक विनाम पात्रना का प्रसार है। ५

गांधीवादी के अनिश्चित डा० नगन कामायना पर बौद्ध-ज्ञान के शून्यवादी मणवादी शून्यवादी तथा विनामवादी और उमके अगभूत परिवर्तनवादी परमाणुवादी शक्तिमत्तावादी आदि का प्रभाव भी बतनाया है। २*६

शून्यवाद

‘मौन नाम विश्वम अधरा शून्य बना जा प्रकृत अभाव,
वना मत्य है अरा अमरत मुक्तवा यही कनी अय टाव। १*७

२*३ डा० रामगोपाल शिवा हिंदी काव्य में निष्पत्तिवाद पृ० २०८ ३०६

२*४ कामायनी कम मग पृ० १ ६

२*५ यहा ईप्या मग पृ०

२*६ डा० नगन कामायना के अध्ययन की समस्थाए पृ० ६६ ६८

२*७ कामायनी चिन्ता मग पृ० १८

कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र

कथासार

प्रथम सप्त—दुर्योधन का युद्ध पाण्डवों और कौरवों में हुआ। युद्ध में पाण्डवों की जीत हुई। युद्ध का समाप्ति पर सभी आनन्द निमग्न थे। किसी को भी युद्ध का विनाशकारी अर्थ और बामनस दृष्टि का स्मृति नहीं थी। किन्तु धर्मराज युधिष्ठिर का हृत्पथ ब्रह्माकुल था। वह उस विजय की ओर नहीं हुआ अमर्ष्य नर-महाराज और विनाश की स्मृति करके शौरानुर हो रहा था। वे सोचते थे कि पाँच अमर्ष्य नरों का द्वेष में भारत देश का महाराज हो गया। करोड़ों मानव और नारियाँ पुत्र-पति विहीन हो गई। उन्मान साक्षात् करके उस सौ इस राज्य का उपभाग में क्या करूँगा? इसी प्रकार का विचार भी युधिष्ठिर का हृत्पथ इतना गिरा हुआ कि वह पाप में बहकर भाष्म पितामह का पास चले गए।

द्वितीय सप्त—अजय भीष्म ने आये हुई मृत्यु से कह दिया कि अभी जान का साग नहीं है और यह कहकर धर शय्या पर पड़े रहें। जान का करण में उन्हने प्राणा को छान लिया था।

उन्ही समय धर्मराज का भाष्म पितामह ने चरणस्पर्श करके देखा। धर्मराज ने अतमंत अधीर और व्याकुल होकर कहा कि—हे पितामह महाभारत विषय हुआ। तत्पश्चात् धर्मराज ने युद्ध का विनाशकारी परिणाम का विवरण किया और मन-गणप की शय्या को ध्वस्त किया। तब भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को समझाते हुए कहा कि यह अवश्य-भावी है उस पाण्डव नरों का मरण था। युद्ध का अनर्थ कारण है स्वायत्त राजनैतिक प्रवचना और प्रतिगोप। कौरवों ने पाण्डवों का अपमान किया अतः प्रतिगोप का भावना से युद्ध हुआ। अन्तु धर्मराज का यह विचार शय्या निम्न है कि युद्ध करके पाप किया। भीष्म पितामह ने कहा कि पाप और पुण्य का बाध कोई विनाशक देगा नहीं लायी जा सकती।

युद्ध की समाप्ति पर ही विचार करते हुए उन्मान तप त्याग समस्त और करण का महत्त्व पर भी भाष्म पितामह का अनिमन था कि निरक्षय

ही यह महत भाव है किन्तु इनकी उपयोगिता विनाप परिस्थितियाँ मत्ता होती है। यक्तिगत धर्म के रूप में यह सहायक हो सकते हैं किन्तु सामाजिक अभ्युत्थान के लिए यद्ध का भी आश्रय लेना पड़ता है। पाशविकता के सामने आत्मबल का कोई बल नहीं चलता है। भीष्म पितामह ने श्रीराम का उत्पत्तरण किया कि उन्होंने भी कानन में मुनिया के अस्थि-समूह को देखकर दत्या का वध करने का प्रण किया था।

तृतीय सग—इस सग में शांति का समस्या पर विचार किया गया है। भीष्म पितामह ने कहा कि सभी शांति चाहते हैं। कोई भी मरने मारने के घणित व्यापार में लिप्त नहीं होना चाहता किन्तु विवश होकर युद्ध का प्रण किया जाता है। सभी शांति के इच्छक हैं। शांति दो प्रकार की है एक तो कृत्रिम शांति जिसका आधार अत्याय और पापण है दूसरी वास्तविक शांति जिसका आधार प्रेम और अहिंसा है। सत्ताधारी वर्ग चाहता है कि वह शासित का शोषण करे और शांति भंग न हो। किन्तु शांति का यह कृत्रिम रूप जनमत का बहुत समय तक स्थिर नहीं कर सकता क्योंकि दमन जन मानस में घणा पैदा कर शांति करा देता है और यद्ध हात है। अस्तु ऐसे युद्ध के लिए उत्तरदायी आतातायी शासक है। भीष्म पितामह ने कहा कि प्रतिशोध से तो शौर्य की शिखाएँ दीप्त होती हैं। प्रतिशोधहीनता तो मत्तापाप है। अत्याय और शोषण का तो प्रतिशोध ही चाहिए। शांति का प्रथम व्यास व्याय और समता है। इनके अभाव में समाज में सच्ची शांति स्थापित नहीं हो सकता।

चतुर्थ सग—ब्रह्मचर्य के ब्रती धर्म के महान्मन्म और वन के जागर भाष्म ने कहा कि धर्मराज व्याय को चुराने वाला ही वर्ण को आमन्त्रित करता है। स्वत्व का अवपण पाप नहीं है। वाच भी अकारण किसी में उड़ना नहीं पाता। अत्यायी स्वयं दूसरा के व्यायोचित स्वत्व का छीनकर यद्ध करता है। जन यद्ध का उत्तरदायित्व सुयोधन पर है क्योंकि उनमें पाण्डवा के अधिवारा का हरण और हनन कर युद्ध किया।

किसके अनिर्दिक्त भी मत्ताभारत यद्ध के अनन्व वारण थे। सुयोधन ने शोषण का भरा सभा में अवहरण किया था। भीष्म ने कहा कि यद्ध में जिन व्यक्तिमा और नरेशा ने तुम्हारा और सुयोधन का साथ किया वह भी व्यक्तिगत कारणों में है। उत्पत्तरण के लिए, जजन का वध करने के प्रयाजन में वध सुयोधन का आर स नत्ता। राजा द्रपत्त ने शोषाचाप में धर चकान के लिए पाण्डवा का साथ दिया। सभी प्रकार जिसाने किसी रूप के कारण राजा युद्ध

म सम्मिलित हुए। राजसूय यज्ञ भी युद्ध का कारण बना क्योंकि दूसरा पक्ष रक्षा करने लगा। इस प्रकार महाभारत-युद्ध की भूमिका निर्मित हुई। महाभारत एक ज्वालासूयी व समान विस्फोट था जिसका निष्पत्ति बहुत समय से ताप संचित होता रहा था।

भीष्म पितामह ने कहा कि पाण्डवा के राजसूय यज्ञ की समाप्ति पर भी पाण्डवा ने राजाभास प्रम और मन्त्रभावपूर्वक रहने का कहा था किन्तु तुम जुए में द्रोपदी का हार गये। पितामह ने स्वयं को भी युद्ध के लिए दोषी बनाते हुए कहा कि मरे मन में प्रम और कृतव्य का सघष था। मुझे पाण्डवा में प्रम था किन्तु कृतव्य के यज्ञ के कारण मैं सुयोधन का आर स तटा। उन्होंने कहा कि मरी बुद्धि ने मुझे हत्ये का शासन कर दिया और सम्भवतः मैं भी यदि बुद्धि का अनुशासन न मान सुयोधन का त्याग के लिए लज्जित होता तो वह सम्भवतः चतुर्ता और युद्ध न होता। किन्तु अतः सब मैं चुका। माना बात को भुनाकर नये युग का सूत्रपात करा।

पंचम सर्ग—सप्तम सर्ग के आरम्भ में कवि ने तत्कालीन समाज का भाषण परिस्थितियों का चित्र अंकित किया है कि किस प्रकार सधन इष्या और द्वेष की अग्नि प्रकटित थी। धर्मराज ने विजय भी प्राप्त की किन्तु व युद्ध की विभाषिका पर विचार निरत थे। भीष्म पितामह की बात सुनते-सुनते धर्मराज का उठे कि सबकुछ विनाश का बीजला दृश्य है। धर्मराज ने कहा कि हे पितामह राक्षसा समूह माना भर समझ आकर उपहास कर रहा है कि मैं पाण्डवा हूँ। मैं ऊपर से साधु वृत्ति धारण किया रहा किन्तु प्रणिष्ठाप की भावना और राज्य निष्ठा ने मेरे तप-त्याग का तिराजनि दे दी। मुझे यह राज्य पाप-नर्मों में प्राप्त हुआ है। युधिष्ठिर ने पञ्चाक्षर करत हुए कहा कि मुझे युद्ध के पूर्व यह बोध क्या नहा हुआ कि युद्ध का कारण राज्य का भाग और धन है अथवा मैं युद्ध करता हूँ नही। राज्य मित्रागत है तो मैं ही मरना सबकुछ किया है। अस्तु जब मैं तोम से द्वितीय युद्ध नहूँगा। धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा कि यह युद्ध मैं यहाँ विजयी हागे। मनु का यह पुत्र निराशा नहीं है। वह नये धर्म का रूप प्रकट करेगा।

षष्ठ सर्ग—प्रारम्भ में कवि ने स्वयं युद्ध की समस्या पर विचार किया है। धर्मराज के युद्ध विषय को अज्ञान विज्ञान-युग की परिस्थितियों के परिपाम में भी माया है। अरम्भ में कवि ने अज्ञान में प्रकट है कि धर्म या त्याग का शीघ्र समाप्त में क्या जनता? शांति की सुवासित ज्योति में क्या क्या अभिविधा और मरण हागा? भाष्म युधिष्ठिर युद्ध, अज्ञान कापी और

मन्मा मसीह जाति न शान्ति-स्थापना का प्रयास किया है। मन्मा न इन महानुभावा की वाणी को मिर लुकाकर सम्मान भी दिया है किन्तु कोई भी उनके जाटशो को मानता नहीं। मानव आज भी पुराने माग पर हा चल रहा है।

आज का युग पुराने युग की भांति बबस भा नहा ह। आज मानव ने बुद्धि क द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ससार के सभी रहस्या को जान भी कर लिया है। धरती जाकाश सागर सबत्र वह गतिगामी है। जल वायु जग्नि और विद्यत मानव क दास ह। किन्तु यन् यही है कि बुद्धि की भांति मानव के हृदय का समविकास नहा नो पाया है। उस आज प्रेम और बलिदान की आवश्यकता है।

कवि कहता है कि विज्ञान क जवपणा स अतत मनुष्य चाहता क्या है ' समार वासना म डूब रहा है। पृथ्वा क सम्पूण रहस्या का जानकर मानव नक्षत्रा का जानन म प्रयत्नशील है। युद्ध और सहार का प्रिय मानव ग्रहा तक पहुचना चाहता ह। किन्तु यह लक्ष्य उचिन नहीं। विज्ञान का नक्ष्य समार म गमरमता का प्रतिप्टा होनी चाहिए। साम्य की स्निग्ध और न्ग रश्मि स नो विश्व म सरसता जायेगी किन्तु एसा कब होगा ?

सप्तम सग—वाव्य का यन् सबसे बटा सग है। प्रारम्भ म कवि स्वयं विचार कर रहा है कि एक व्यक्ति यदि पाप की खाट म गिरकर भी निकलन का प्रयास करता है तो वह महान् है। समार म पाप और पुण्य उत्थान और पतन मन्मा है। युधिष्ठिर का जब यह बाध हुआ ता भीष्म पितामह न भा वही दान कन्ने नि धमराज कुरुक्षेत्र क युद्ध स मानवता का सहार या जत नहा हो सकता। दुःख की घटा दूर हाकर सुख शान्ति के फून भी गिनग। द्वापर युग की समाप्ति पर जिस नवान युग का समारम्भ हागा उमम मानव अवश्य हा प्रगति-मय गामी हागा। मनुष्य न जभा भी मन्मानता का निम्नान नहीं किया है जयथा वह बर भाव त्याग न्ता। धमराज ' तुम मानव-क्याण क माग का नेजर समार म बन्ने। समाज म सच्चा शान्ति की स्थापना तभा हागा जब सभी का अपन अधिकार प्राप्त हा जायेग।

भीष्म न कहा कि बन्न पहन व्यक्तिता क समान अधिकार और कतव्य थ। अत जीवन म सबत्र शान्ति थी। व्यक्ति क मन म स्वाथ का उत्पय हुआ और उमन अधिकारा का मचय आरम्भ किया। अन्तु शान्ति भग हूँ मघप हए। तभा शासक का जन्म हुआ। राजतन्त्र का उद्देश्य अधिकारा का मर ता तथा नाय का स्थापना था। राजतन्त्र क भय स साम टीक रहन सग किन्तु कालान्तर म राजाशा न नी शासन प्रारम्भ किया। यह शासन जब

जब नमाप्त नया जगत् शांति अमम्भव है। व्यक्ति का ज्ञापनमुक्त होना अनिवाय ॥

पितामह १ क्या वि घमराज । तुम्हें मर्यादा ग्रहण न कर दुःखी जनता का सुखा बतान का प्रयास करना चाहिए । मर्यादा से व्यक्ति मसार को नजर ममज्ञान चिन्ताया से दूर जाता ॥ वास्तविकता यह है कि नश्वर मसार से भी हम बतव्य पालन करना चाहिए । मसार से मुक्त हो तो ही । माहमी व्यक्ति मुक्त हो रहने करता हुआ मसार का संगम और मुक्त बतता है । मर्यादा से मसार से पलायन करता है । वह मसार के काम नया आता । मानव के पास उससे अन्तःकरण से ही विद्यमान है अथवा नया । अतः उम मन पर ममम रमरर मानवता के विकास से विश्वास नित्य हुए जीवन का जोन-नयाण के पथ पर अग्रसर करना चाहिए । पितामह १ अतः से क्या वि घमराज । जागा के रूप जाता है । एक दिन अथवा हा पर धरा गुड का जगत् से मुक्त होगा । हार से मानव का महिमा घटता नया जोर न जान से तत्र बनगा । स्नेह जोर बतान से ही पृथ्वी स्वयं के ममान से मकगा ।

कथानक-समीक्षा

कथानक के आधार और स्रोत— कुर्यात् काय कथानक का मूल आधार महाभारत है । महाभारत के सौप्तिक पर्व से युधिष्ठिर का मृत सम्बन्धियों के अन्तिम संस्कार सम्पन्न करने समय पात हाता है कि वण उनसे अग्रज ध । स्वयं उनका मन ज्ञान हो जाता है । 'शान्ति पर्व से युधिष्ठिर राम १ मम्भुज विष्णु से अपना अन्तिम-वचना का प्रस्तुत करते हैं । वे गुड का निश करत हा वन ममन से उद्यत हात ॥ किन्तु अपने पीछे भाग्या तथा द्रोणा के विराय एवं धार्तराज के परामर्श पर वे हस्तिनापुर आते हैं जहाँ उनका राज्याभिषेक हाता है । श्रीकृष्ण के आदेशानुसार वे राज्य पम के पात बाध हनु नाम पितामह के पास जाते हैं । भाष्य पितामह के विष्णु से म गधम का उपदेश देते हैं । इम बतानाप से युधिष्ठिर के प्रति नाम पितामह १ मकाल विषया का विवचन किया है । नाम पितामह के शरणमान के वाप ममराज युधिष्ठिर पुन मारमन्त हाकर मारमन्त रत्न है । म्हा ध्याम जोर श्रीकृष्ण विभिन्न प्रकार से ममान है ।

महाभारत से उपमक कथानक म्हा पर्व से आश्रमधर पर्व तक पाता हुआ है । किन्तु कुर्यात् से प्रस्तुत कथानक शान्ति पर्व म्हा पर्व तक हा परिमामित है ।

कथानक की विशेषताएँ

कुरुक्षेत्र काव्य के कथानक पर विचार करते समय हम निम्नांकित तथ्याओं को दृष्टिगत रखना चाहिए कि

- १ कुरुक्षेत्र एक विचार प्रधान काव्य है घटना प्रधान नहीं।
- २ कुरुक्षेत्र के कवि का प्रमुख ध्येय प्रसंग काव्यकारा का भाँति कथा कहना नहीं बरन एक विशिष्ट विचारणा का प्रस्तुत करना है।
- ३ कुरुक्षेत्र में कथानक की योजना का कवि ने विशेष महत्त्व नहीं दिया है।

१ ऐतिहासिकता—कुरुक्षेत्र काव्य की कथावस्तु की ऐतिहासिकता का जहाँ तक सम्बन्ध है उसमें महाभारत की कथा के सद्भूमि रखकर ही देख सकते हैं। घटनाओं की दृष्टि में प्रस्तुत काव्य का कथानक तनिक भी महत्त्वपूर्ण नहीं क्योंकि कोई भी घटना घटित हो चुकी चित्रित नहीं की गयी है अतः घटनाओं की ऐतिहासिकता का उस रूप में (घटित होने में) प्रश्न ही नहीं उठता। सम्पूर्ण काव्य के यत्किंचित तथा कथित कथानक का विकास दो पात्रों (युधिष्ठिर और भाष्म) के पारस्परिक संवाक्य के माध्यम से ही हुआ है। इन पात्रों की ऐतिहासिकता ही प्रस्तुत काव्य के कथानक की ऐतिहासिकता के रूप में ग्रन्थीय है।

दूसरे महाभारत के पात्रों के सम्बन्ध में विद्वानों के अनेक मत हैं। उन्हें ऐतिहासिक और अतिहासिक माना ही माना गया है। प्रस्तुत प्रसंग में उल्लेखनायक यह है कि कुरुक्षेत्र के रचयिता ने महाभारत में प्रतिपादित ऐतिहासिकता का जक्षण बनाया है।

२ काल्पनिकता और मौलिकता—महाकाव्यकार का कल्पित इतिहास पुराण के जीणकाय कथानकों का युग-जावन के अनुरूप जाकार प्रदान करना होता है। कुरुक्षेत्र के रचयिता ने जाचित कल्पनाशक्ति के सशक्त प्रयोग द्वारा कथावस्तु में मानिकता का प्रदर्शन किया है।

महाभारत में भाष्म पितामह युधिष्ठिर के प्रति राजनीति बणात्मक राष्ट्रशांति तथा मय जष्यात्मनान मान मृष्टि का उत्पत्ति एक प्रलय युद्ध नाति मय-मघानन विधि धमाचरण आदि अनेक विषया पर मविस्तार उपदेश दन है। कुरुक्षेत्र में कवि ने काव्य के मूल प्रतिपाद्य विषय का ही दाना के पारम्परिक विचार विनिमय का माध्यम बनाया है। कवि ने प्रसंगपर विषयों के प्रतिपादन द्वारा कथावस्तु में अनावश्यक जाकार बद्धि नहीं का है। इससे

विपरीत वायु का प्रतिपाद्य युद्ध और शान्ति का समझा का विविध प्रकार
में सामायाग उल्लिखित किया गया है ।

२ युगानुसृतता—कुरुक्षेत्रकार कल्पना के प्रयोग में समय का सामायाग
मण्य रहा है । उसमें बाल विपरीत कुछ कहा कहा है । काव्य मय का युग
जावन के अनुसृत ग्राह्य बनाने के लिए कवि ने स्वतंत्र चिन्तन का महारा भो
किया है । कवि के ग शान्ति म— यद्यपि मैं सबत्र इस बात का ध्यान रखा
है कि भाष्य और यद्यपि क मुक्त में बाद ऐसा बात नही निकल जाय जो
द्वार के लिए सबदा अस्वाभाविक है । हाँ शान्ति स्वतंत्रता अवश्य ली
है कि जहाँ भाष्य निम्ना बात का वणन कर रहा है जो हमारे युग के अनुसृत
पत्ता ग उसका वणन नये और विशद रूप में कर दिया जाय । स्पष्ट
है कि कवि ने महाभारत के बयानक का युगानुसृत जाकार दन के लिए हा
स्वातंत्र्य का मनुष्याग किया है ।

कुरुक्षेत्र के बयानक का सचम बना विगपता यह भा है कि कवि ने प्राचीन
कथा के गरा जाधुनिक युग का एक महत्वपूर्ण समझा का चित्रित किया है । वह
समझा है युद्ध और शान्ति की । युद्ध का समझा यद्यपि मानव जावन का एक
चिरलन समझा है किन्तु वर्तमान युग-जावन के परिप्रदय में उमके मरूप
प्रतिश्रिया परिणाम आदि पर विचार कवि का निजा मूम-मूम के हा उल्लेख हैं ।

कुरुक्षेत्र के कथा-संवाजन में कवि साष्ट प्रपत्तगान भा रहा है ।
प्रबधारमकता कवि का बघन के रूप में वर्ण्य रहा है । प्रस्तुत काव्य में
कवि का प्रमुग उभय विचारधारा का प्रतिपादन है । जहाँ कथानक हम काय
का पूरा करने में मगम नग हुआ वहाँ कवि ने स्वय कल्पना का प्रारम्भ कर
किया है । उल्लेख के लिए एक मग में कवि स्वय युद्ध का समझा पर
विचार करता है । वह द्वार युग की सामाया का छा विना युग के विकास
का पृष्ठभूमि पर हम समझा के समाधान और निशान का चप्पा करता है ।
दूसरे शान्ति में बानावरण के अनुसृत बयानक का गति प्रगत का गया है ।
हाँ पाण्डव के शान्ति में कुरुक्षेत्र में युद्धानर काय के बानावरण का कवि
ने भाव विचार का अभिप्रेत के लिए यह बौध्द में चना है । जो जहाँ
कथा मगरा काम कुरुक्षेत्र के बयानक में नग चय पाया वहाँ स्वय पाठ्या
के मम्मग आ गया है । १

१ कुरुक्षेत्र निबन्ध पृ० २६

२ डॉ० मन्मथ पाण्डेय प्राधुनिक हिंदा काव्य में निरासायाग पृ० २२६ २७

कुरुक्षेत्र का य व कथानक म कुछ प्रटिया भा ह । प्रस्तुत प्रबंध म कथावस्तु की महाकाव्याचित यापकता नहा है । एमा प्रतीत होता है माना दो व्यक्तिना क मवाने म ही काय का जाति जत समाहित है । घटनात्मक विनियोजन क जभाव न कथात्मक दष्टि स कुरुक्षेत्र का महत्त्वहान बना दिया है । कदाचित इसीलिए कतिपय समीक्षका न कुरुक्षेत्र का एक महाकाव्य मानन म सकोच किया है किन्तु कथानक का मात्र अभाव ही उस महाकाव्य की गरिमा स युक्त या रहित होने म सहायक नहा हा सकता । कथानक का ह्रास वतमान युग क साहित्य की एक विशेषता बनती जा रहा है । यह बात काव्या के साथ ही नहा बरन् कथा साहित्य (कहानी उपन्यास नाटक एकांकी आदि) पर भी लागू हाता है । महाकाव्य का प्राण तत्त्व उसक उद्देश्य का महानता और विचारा की उच्चता है जा कुरुक्षेत्र म विद्यमान है । जहा तर्क कथा वस्तु का सम्बंध है वह मयाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित ज्ञान क कारण एर जार प्राचीन तथा दूसरी आर आधुनिक युग-बोध का प्रतिफलित करन की प्रेरणा से प्ररित होन क कारण नवीन भी ह । वाजपयीजी न उचित ही कहा है—

हम यह भी स्मरण रखना हागा कि कुरुक्षेत्र काय प्राचीन पृष्ठभूमि पर रसा गया है । उसम सम्पूर्ण आधुनिकता हा ही नहा सकती । महाभारत म आय हुए नीष्म और युधिष्ठिर-सवाद का हा नय साच म ज्ञान का चष्ठा की गयी है । उसम पूरा आधार महाभारत का भी नहा है और न पूरी नवानता ही है । प्राचीन और नवीन क मिश्रण स जा चाज बन सकती है वह बना है ।³

कुरुक्षेत्र क यथा-तत्त्व म बौद्धिकता की भा प्रधानता है कयाकि यह एक चिंतन प्रधान काय ह । आद्यान बौद्धिक मथन ती काव्य की उपलब्धि रही है ।

एस प्रकार कथानक का दृष्टि स कुरुक्षेत्र क मृजन की अपनी सामाए है । कुरुक्षेत्र की कथावस्तु म विज्ञान युग क महाकाव्य की विशेषताए न्तिताया दता हैं और इस दष्टि स आधुनिक महाकाव्या की यह सम्भावना भी प्रकट हाता है कि कथाविहीन कायकृतिया भा धारिक तारतम्य और वमचढ़ता क कारण महाकाव्यात्मक औत्पत्य सम्पन्न हो सकती है ।

धरित्र विरलेपण

न्तिना क आधुनिक महाकाव्या म कुरुक्षेत्र जिल्प का दष्टि स एक अभिनव प्रयाग है । काव्य म कथा और पात्र का नया दलिक चिंतन का प्रधानता ज्ञान क कारण यह एक विचार प्रधान महाकाव्य बना जाता है ।

³ नन्दनार वाजपयी आधुनिक साहित्य पृ० १४५

वदानक जोर घटना विधान का क्षाणता व कारण कुम्भेश्वर म चरित्र विकास का सम्भावनाएँ धूय व बराबर हैं। काव्य म बचन दो हा पात्र ६—युधिष्ठिर जोर भीष्म—जिनक मवाप्नो व माध्यम म कवि न युद्ध का ममम्या दर विचार किया है। इन ज्ञाना पात्रा क उपनय स्वल्प का ज्ञान हुए यत् निणय करना कठिन है कि इनम नायक कान है ' कुम्भेश्वर व कुम्भेश्वर युधिष्ठिर का ज्ञान ठर्रात है न नि भाष्म का। जम्भेश्वर म कवि न ज्ञाना म म रिखा ना पात्र का नायकत्व प्रदान नहा किया है। काव्य व निवृत्त म कवि न स्पष्ट रूप म स्वाकार किया है कि उनक समक्ष मुख्य ममम्या युद्ध का है जा कि मानव जाति का सारी ममस्या का जा है। भाष्म जोर युधिष्ठिर को ना कवि न इसी ममस्या का प्रस्तुत करन क लिए आत्मबन रूप म ग्रहण किया है। जम्भेश्वर प्रताक रूप म युद्ध का ममम्या का ही कुम्भेश्वर का नायकत्व प्रदान किया जा सकता है क्योंकि काव्य का विधानक विचार-निरूपण पात्र जोर जितनी तार्किक प्रवृत्तियाँ हैं उन सबका ध्यय इसी ममस्या का प्रस्तुत करना है। धन युद्ध का ममम्या निरन्तर है, उसका सम्पूर्ण मानव जाति जोर जावन म सम्बन्ध है। मृष्टि रचना क प्रारम्भ न केवल आज तक यत् भीष्म और दुर्जान ममम्या क रूप म मानवता क ममम्य एक चनीता क रूप म सत्ता रही है। जम्भेश्वर कुम्भेश्वर का नायक प्रदान मृष्टि म यत् युद्ध का स्वाकार किया जाय ना का अंगति नहीं जगता। इस प्रताक का जाकार-स्वरूप युद्धभूमि कुम्भेश्वर का माना जा सकता है। डॉ० नगद्वर का विचार है कि जम्भेश्वर काव्य म कुम्भेश्वर युद्ध का प्रताक है युधिष्ठिर जम्भेश्वर का प्रताक है जा युद्ध का रिखा भी परिस्थिति म उचित नहा ममम्यत और भाष्म जाय नायकता क प्रतीक है जा अयाय क ज्ञान क लिए युद्ध का उचित हा नहा करन आवश्यक भा मानत है। वास्तव म नायकत्व का प्रदान काव्य म प्रच्छन्न ही हो जाता है। ५

युधिष्ठिर और भाष्म क अनिश्चित महाभाग्य क २३-जय पात्र मृच्छ रूप म आय है और उनम स प्राय मना का जायत वष्य प्रमग म एक विविध मार्मिकता का समारण कर जाता है। कृष्ण और ध्याम आदि जग भाष्म का अपना बाला का सम्पन्न कराना शत्रुनाश सुयोग्य अन्तिम-तु तथा भाष्म कृष्ण का इस घमयुद्ध म शत्रुपूवक भाग जाना अन्तिम-तु मनुनि तथा भाष्म आदि क जषय कम धूनगष्ट जोर शत्रुघाती का मत्तान शत्रुता आदि अनेक एम प्रमग है जा नारात्तप्रना म निवृत्त रूप म मनायक

५ डॉ० नगद्वर विचार और चिन्तन पृ० १२८

का प्रस्तुत कर रहे हैं। युधिष्ठिर व हृदय का अन्दरूँद निम्न शक्ति म व्यक्त हुआ है

एक ओर मयमया गाता भगवान का है
एक ओर जावन का विरति प्रबुद्ध है
जानता हूँ तडना पना वा हा विवग विन्तु
नाह-मना जात मुन पातना अशुद्ध ॥
"यमजय मुग या वि माध दु ग शान्ति तय
जात नरा कान वात नाति क विद्ध ॥
जानता नहा म कुम्भ म विता है पुण्य
या महान पाप यहाँ पूरा बन मुद्ध ॥

यहाँ १ काव्य का मूल विचारधारा (युद्ध का ममत्ता) पर युधिष्ठिर ओर
नात्म म विचार विमग प्रारम्भ हो जाता है। नात्म पितामह जनक प्रकार
का युक्तिया स युद्ध का ममथन करत हैं किन्तु शान्ति और प्रेम क पुत्रारा
युधिष्ठिर गतुष्ट नहा हा पात है। पितामह का वात मुनत मुनत पचम मग
पर जात घमगात्र ग उठत है।^१ महागात्र युधिष्ठिर म्यय पर नर-नाग
का शक्ति टर्रात ॥^२ ॥ ॥ ॥ है कि नाग मरा कय कि युधिष्ठिर
रुद्ध क कारण तापुता वा नाग कय गय। ॥ ॥ मुयाधन क समान हा
रुद्ध क विप-बीत म नरा गिरना चाहिए था। ॥ ॥ प्रकार क विचार-मघप म
व रग निष्पप पर पचन ॥ वि नाभ हा युद्ध का कारण है। जस्तु पचम मग
की अन्तिम पक्षितया म व नाभ म रण कयत का टातन ॥

यह हात मरारण गग क साम
युधिष्ठिर का विजया निकलगा
नर ममृति का रण छिप्र तना पर
शान्ति मुयाधन शिष्य पतगा
कुम्भ का धति नरा नति
पाप का मानक ऊपर और चतगा
मनु का यह पुत्र निगा नहा
नव-थम प्रतीप गव य ततगा।^३

१ कुराभन शिवाय मग पृ० १८ १६

२ वहाँ पचम मग पृ० ८१

३ वहाँ, पृ० ६१

४ वहाँ पृ० ८४

अतः य धमराज की गीता के वृष्ण की भाँति कम माग म प्रवक्त हान का ही उपदेश दत है। व चाहत ह कि धमराज असह्य नरा क जीवन का आशा बनकर लघ भू तन का पीयूष स अभिषिक्त करें।

युधिष्ठिर का भाँति भीष्म पितामह के चरित्र म भा कवि न जतन्द्र की जबतारणा का ह। उनक जन्तर म भा धम जीर स्नह का सघप चना था। पाण्डवा म प्रम करत हुए भा उह दुर्योधन का ही पक्षधर बनना पडा। वे धम जीर प्रम दोना का ही निवाह करना चाहत थ किन्तु अत म विजय स्नह की ही हर्ष धम पराजित हुआ। व अजुन स खुलकर युद्ध न कर सकने क कारण हा पराजित ना गय

धम स्नह दाना प्यारे थ वना कठिन निणय था

आ एव का दह दूमरे का द न्मिा हृत्य था।

×

×

×

धम पराजित हुआ स्नह का डना वजा विजय का

मिनी हूँ भा उस दान था जिसका मिना हृदय का।

भीष्म न गिरा पाथ क सर स गिरा भाष्म का वय था।^{२१}

कवि न भीष्म पितामह क चरित्र निरूपण म आत्श जीर यथाथ गुणा का जन्भूत समवय किया है। स्वय कवि न उन् ब्रह्मचर्यव्रती धम का महास्तम्भ बल का आगार परम विरागा पुरष कहा है। भाष्म क समान ससार म अय कौन विक्रमी होगा जिन्तान धम न्ति और प्रम के कारण अपन प्राणा का विसर्जन कर लिया।^{२२}

एन प्रकार कुरक्षत्र क चरित्र चित्रण म भारताय इतिहास क दो महान पात्रा का नितांन नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है। कवि ने यद्यपि एन पात्रा की निजा विचार अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर हा उल्घत किया है किन्तु कहा भा उनका चरित्र गरिमा म यूनता नशी आयी है। विशपता य है कि हमार युग की विचार बोधी म विचरण करत हुए भा य पात्र कतिहाम क माग म नहा भटक है। काव्य म दोना पात्रा क जीवन का एक जश हा हमार सामन आया ह किन्तु व एतना मन्त्वपूण है कि एनक सम्पूण व्यक्तित्व का एक अमित छाप पाठक क मन और मग्निष्क पर अंकित हा गानी है। धमराज युधिष्ठिर और भीष्म पितामह क एतिहासिक व्यक्तित्व मनोविज्ञान जीर

^{२१} कुरक्षत्र चतुथ मग पृ० ६५ ६६

^{२२} वही पृ ४६

कल्पना व मस्ती से कुरुक्षेत्र में निश्चय ही मौनिकता निपट है यहाँ
कुरुक्षेत्र के चित्र निष्पाण की प्रमुख विषयना है ।

रचना शिल्प

भाषण (वर्णन-कौशल)

प्रकृति चित्रण—कुरुक्षेत्र एक विचार प्रधान मन्त्राव्य है । प्रस्तुत काव्य
का समस्त भाषण-मौल्य उच्चरी विचार कल्पना का ही चक्र है । काव्य
में प्रकृति चित्रण किसी विषय पत्रि या प्रणाली का आधार बनाकर नहीं
हुआ है । और न ही प्रकृति निष्पाण कवि का ध्येय है । प्रसंगिक काव्य में
प्रकृति व कल्पित चित्र अवश्य जा गये हैं जिनमें कवि के प्रकृति चित्रण का
का नाकनिक परिचय अवश्य मिल जाता है । काव्य में चित्रित प्रकृति का
स्वरूप भाषण और शक्तिमय ही है । द्वितीय मंत्र में भाष्म पिनामः पृथिवि
में शशा (तूफान) के प्रत्यक्षी रूप का वर्णन निम्नांकित पंक्तियों में करके है

ओ मुनिष्ठिर म कथा—तूफान क्या है कथा ?

विना तर्क आता प्रत्यय का नाम व कथा हुआ
गान-गा उन मन्त्रों का तात्पर्य शक्तिमय
जीव मूलाच्छ्रित पर धृ पर मुक्तता शोध में
उन मन्त्रों पादपों का जो कि शाणायाः ?
गण भाषणां हुमा का शरणा कर टूटना
दृष्टि गिरत भाषणा के माय नाड विष्णु के
अंग भर जात बनाना के निहित तर गुण स
लिप्त पता के शशा में पड़िया का श्म म । १३

पंचम मंत्र के प्रारम्भ में कवि ने प्रकृति के रोद्र रूप का एक और चित्र अंकित
किया है

पर जय यही ना पवन रण अम्बर है
उड़ रहा पवन में शहा मान पन्न है
बानाह्वन-ना ओ रण कात गह्वर में
वायव्य का रण कर्ण शरणा गाण म ।
मध्य ना वन दहन दार का भारी
विष्पाट बहिर्गिरि का वतन भयनाग । २४

२३ कुरुक्षेत्र, द्वितीय मंत्र पृ० - १

२४ यही पंचम मंत्र पृ० ७५

प्रकृति के सवेदनात्मक रूप का भी चित्रण कवि न किया है। महाभारत के युद्ध की समाप्ति पर पृथ्वी और आनाश दोनों विषण्ण हैं। त्रिशांता मगध गम्भार उन्तसी है

रण शांत हुआ पर हाय अभा भा
धरा अवसन्न डरी हुई है
नर नारिया के मुख-देश प नाश की
छाया भी एक पची हुई है
घरता नभ दाना विषण्ण उन्तसी
गभीर दिशा म भरी हुई है
बुद्धि जान नहीं पड़ता घरणी यह
जीवित है कि मरी हुई है। २५

कुरक्षत्र म त्तिनकरजा न प्रकृति के चित्रण का अपक्षा उसका शक्ति का वर्णन अधिक किया है। एक प्रकार से प्रकृति नियति का ही दूसरा रूप है। वह मानव कल्याण के सम्पूर्ण बभूव को एक काप की भांति संयोजित किया हुए है। मानव मन्थना का प्रारम्भिक अवस्था में प्रकृति का सम्पूर्ण दान निःशुल्क रूप से सभा को प्राप्त थी। भूमि भी उसी प्रकार सभी को सुनभ थी जैसे आज जन जोर जनित निर्विघ्न प्राप्त हैं।^{२५} किन्तु मनुष्य प्रकृति पर अधिकार करता गया और आज स्थिति यह है कि वारि विद्यत वायु ताप सब पर उसका अधिकार है

प्रकृति पर सबत्र है विजयी पुष्प आसीन
हृदय नर के करा म वारि विद्यत भाप
हुकम पर चन्ता उतरता है पवन का ताप।
नहीं थाका वहां यवधान

ताप मक्का नर सरित गिरि सिंधु एक समान।^{२७}
यहां नहीं आज पृथ्वी का प्रत्येक उपकरण मनुष्य की पहुँच में है
यह मनुज
जिमका गगन में जा रहा है यान
कापत जिमक करा का दान कर परमाणु।

२५ कुरक्षत्र पंचम सर्ग पृ० ८४

२६ वही सप्तम सर्ग पृ० ११८

२७ वही अष्टम सर्ग पृ० ६६

सोच कर अपना हृत्प गिरि सिंधु भू आकाश
है मुना जिमका चुके निज गुह्यतम इतिहास ।

× × ×
एक तपु हस्तामलक यह भूमिमण्डल गात्र
मानवा ने पत्र निते मत्र पृष्ठ जिसका गात्र । २८

गप्तम सग म प्रकृति के आन काप का वणन करत हुए कवि न बहा है नि
प्रकृति म बभव का अनन्त कोष है । प्रकृतिसम्पदा का निरंतर उपभोग करने
पर भी वह कभी समाप्त नहीं हो सक्ता । पृथ्वी स आकाश तक जन प्रकाश
जीर पवन न कभा घटत है न मिमटत है । पृथ्वी अन्न घन पत्र पृल और
रत्न उगाने वाली है पत्रना म हा अनक रत्न भरे हुए ह । समुद्र म मुक्ता
बिद्रुम और प्रवाल बिम्बर हुए ह । उनका उपभावना केवन मानव है

यह घराती पत्र पत्र जन्न घन रत्न उगाने वाली
यह पात्रिका मृगय जाव की जटवी सघन निराला ।
तग शृग य शल कि जिमम हीरक रत्न भर है
य समुद्र जिनम मुक्ता बिन्म प्रवाल बिम्बर है । २९

इस प्रकार कुरक्षेत्र म प्रकृति क मुन्दर मशालिष्ट नित्र भी है किन्तु बहुत
कम । इन चित्रा म स्निग्धता क प्रकृति चित्रण कोशर का परिषय तो मिनता
ही है साथ ही प्रकृति क सम्बन्ध म उनकी विचारधारा का भी परिषय मिल
जाता है ।

रस-परिपाक—कुरक्षेत्र म मुनिश्चित प्रबन्ध-याजना का अभाव होने क
कारण यह कहना बहुत कठिन है कि काय म प्रधान रस कोन-सा है । वस्तुतः
कुरक्षेत्र म किमी-न किता भाव का यात्रना प्रत्यक काव्य सण्ड म होती गयी
है । यही भाव अन्तत रम घात गय है । कुरक्षेत्र म सभी रस तो नही हों
धीर वीर्याम भयानक रोग करण और शान्त रमा की ध्यजना अवश्य
उत्तमनाम है । सम्पूर्ण रमा की स्थिति पर सुतनात्मक दृष्टि रा विचार किया
जाय तो काव्य म वीर रम की एक अविच्छिन्न धारा सिगायी दता है जिमके
आधार पर काव्य म वीर रम की प्रधानता एक सीमा तक स्वीकार की जा
सक्ती है ।

घार रस—नीचम वितामह और सुधित्तिर के मवाता म अनर म्यना पर

२८ कुरक्षेत्र पत्रम सग पृ० ६६

२९ वही पत्रम सग पृ० ११२ १३

धीर रस की सुन्दर व्यजना हुई है। भीष्म पितामह का निम्नांकित कथन दृष्ट्य है

कायरा सी घात कर मृत्तको जला मत आज तक
है रहा आदम भरा वीरता बलिदान ही
जाति मन्दिर म जनाकर शूरता की आरती
जा रहा हू विश्व से चला युद्ध क ही यान पर।^३

वीररस रस

रधिर सिकन जवन म नर के खण्डित निय शरीर
मृतवत्मला विपण्ण पडी है घरा मौन गम्भीर।
सन्ता हुद विपावन गध स दम घटता सा जान
दवा नासिका निकन भागता है द्रत गति पवमान।^{३१}

अथवा

जिस मस्तक को चचु मार कर वायस रत्न विदार
उन्नति क्रोप जगत का था वत् स्यात स्वप्न भण्णार।
नाच नाच खा रहा गृद्ध जा वन किसी का चीर
किसी सुकवि का स्यात हृदय था स्नह सिकन गम्भार।^{३२}

करण रस—तृतीय सग क आरम्भ म भीष्म पितामह क समक्ष युधिष्ठिर
अपन बन्धु वाघवा क निधन पर जा शोक भाव व्यक्त करते है उमम कर्ण
रस की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है

वार गति पाकर सुपाधन चना गया है
छाड मरे मामन अशप ध्वस का प्रसार
छोड मर हाथ म शरीर निज प्राणहीन
योम म वजाता जय टुटुभिन्ना वार-वार
और यह मृतक शरार जा बचा है शप
चुप चुप माना पूछता है मुन स पुकार
विजय का एक उपहार में बचा हू बीना
जीन विमका है जीर किमकी इइ है हार ?^{३३}

३ कुरक्षत्र द्वितीय सग पृ० २७

३१ वही पञ्चम सग पृ० ८१ ८२

३२ वही पृ ८२

३३ वही तृतीय सग पृ० १७

शांत रस—वाक्य क अन्तिम अक्षर म युधिष्ठिर के मन म जिस निर्वेग भाव का जागृति होता है अथात् सांसारिक कामनाओं का प्रति तो विरक्ति का भाव उत्पन्न होता है उमम शांत रस की मुख्य अभिव्यक्ति है

यत् हागा महारण राग क साथ युधिष्ठिर हा विजया निवृत्तगा
 नर ममृति का रण छिन्न लता पर शांति मुधा फल निव्य फलगा ।
 कुरंगोत्र की धून नहा एति पय की मानव ऊपर जीर चलगा
 मनु का यत् पुत्र निराश नगी, नव धम प्रदाय अवश्य जलगा । ३४

वात्सल्य रस—वाक्य क अनुप रण म भावम पिनामह जहाँ यह कन्त है
 कि युद्ध भूमि म न अजुन क वाण म गिर गय क व पुत्रवन स्तह क अधीन
 थ । एक दम कथन म वात्सल्य भाव की मुख्य भावी निर्यायी होती है

प्रम अधीन पुकार उठा मर शरार म मन म—
 ना अगना मधुस्व पाथ । या मुक्ता मार गिराश्रो
 अब है विरल अगह्य मुप तुम स्तह धाम पङ्कजाओ । ३५

शृंगार अद्भुत जीर हास्य नामर रमा का कुरंगोत्र म अभाव है । कुरंगोत्र म
 किसी एक रम क पूण परिपार के अभाव म भा वाक्य म स्थान-स्थान पर
 एतन अधिक रममय स्थल हैं कि प्रस्तुत वाक्य विचार प्रधान हात हुए नी
 पात्रक का भाव विभार किस रता है । कुरंगोत्र की रम योजना म वीर और
 शान्त रमा की भा प्रमुखता है । महाकाव्य क शास्त्राय रक्षण की दृष्टि म वा
 शान्त या शृंगार म किसी एक रम की प्रधानता जाना चाहिए ।

भाषा शस्त्री—कुरंगोत्र म साहित्यिक मन्त्र वाणी का प्रयोग किया गया
 है । उसकी भाषा के स्वरूप निर्माण म मुख्य शब्द चयन साकोक्तिया एवं
 महायरा क प्रयोग विनाशमता साश्लिषता प्रमगानुक्त कोमल एवं कठोर
 गण्यवली आदि का विचार सागठान रण है ।

कुरंगोत्र की भाषा म जहाँ एक ओर बलवत सांस्कृतिक मन्त्र नाम मन्त्रिण
 कथा मुमुक्षु आदि मन्त्रित शब्दों का प्रयोग है ता दूसरा आर निवृत्त मनमनी
 ममानव साचार सुपात निमान तमवीर शाय मन्त्रित आदि शब्दों का प्रयोग
 का भा प्रयोग हुआ है । एतम म कतिपय का छाटकर जेप एव प्रचलित हैं
 और उनका प्रयोग भाषा क स्वरूप का मशका बनान क लिए ही किया गया है ।

एतम की मुख्य और उपयुक्त योजना द्वारा कवि न भाषा का
 गुणगति एवं चकितनाती बनाया है । कुरंगोत्र म कोमल और कठोर दाना

३४ कुरंगोत्र गतम मग पृ० ६४
 ३५ वही अनुप रण पृ० ६३

प्रकार क भावा का यज्ञना हु है । तनुसार ही भापा का प्रयाग हुआ है ।
 कवि का जहा जिम प्रकार क भाव व्यक्त करन हैं उसी प्रकार की भापा का
 प्रयाग किया गया है । उदाहरण क लिए निम्नारित न स्पष्ट स्पष्ट है

या हा नरा म भी विकारा का शिखाए आग-भा
 एक म मिन एक जलती ह प्रचण्डावग स
 तप्त हाता क्षुद्र अतर्योम पहल व्यक्ति का
 जीर तत्र उठता घनक समुदाय का आकाश भा
 श्रम म शक घणा स गरन रूपा रूप म । ३६

अथवा

वना न वामन वायु कज मन का था कभा न राजा
 पत्ता की चुरमुट म टिपकर विहग न का बाता । ३७
 ययकन उदरणा म भापा क राजा रूप स्पष्ट है ।

आज कुरुभ्र का भापा का प्रमुख गुण है । सम्पूर्ण काव्य म आज का
 खान्द्विना-सा प्रवाचन लिखाया जाता है । यथा प्रसंग भापा जना महत्र जीर
 प्रसाद गुण-सम्पन्न ना है । भापा म चिन्तोपमता भा है जस

गरा का नाक पर नर हुए गजराज जम
 घक टर गरम सन्त पन्नगराज-जस
 मरण परवीर जीवन का जगम यत्र भार डान
 उदाय कान का भायाम मना का सभात । ३८

कुरुक्षत्र क कवि न गान्य का जावन्ति द्वारा भा भापा की शक्ति से बनाया
 है जम

गर घम है जमय उक्त अगाग पर चरना
 शर घम है शापित अरि पर पर कर चरण मचरना ।
 शूर घम कहन = छाना तान तार मान को
 शर घम कन्त म कर उवाचन पा जान का । ३९

अथवा

एक गप्प ककान मृता क स्मृति-शून्य का गाप
 एक शुष्क ककान जाविना क मन का मनाप ।

३६ कुरुभ्र विनाय मग पृ २२

३७ महा चतुष मग पृ० ६७

३८ वही पृ० ४२

३९ वही पृ ६०

एव गुरुक ककाल मुषिष्टिर की जय की पदवान
एव गुरुक ककाल मन्मभारत का अनुपम गान । ४

वाक्य म कतिपय स्थिता पर भाव शक्ति का उद्घाटन करने वाल प्राग-मभत्य
क ना जन्म उद्घाटन मिल जान ह जम

भात्म हा अथवा मुषिष्टिर या कि हा भगवान्
गुड हा कि अगात् गाथा हा नि इनु महान । ५

नाकाकित्या एव मुन्नावरा क प्रयोग म श्री कुराव का भाषा म मजावना
उपम का गया ह जन

- १ 'गान अपन पाम जन्मिम प्राध म ।
- २ ध्वग अवगप पर मिर धुनता है गीत ।
- ३ गवना मुमुद्धि पितामह हाय । मारा गया ।
- ४ आ गया गी द्वार पर तलवारता ।

कुरावो म जनक गतिया का प्रयोग हुआ है जम—प्रश्न गाना दुष्टान्त
धर्मी सब गाना मनोवचानित गनी नुवनामक शता पुनरावृत्ति गाना
वचनारम्भ गाना नाटकाय गाना जाति । इनम म कतिपय क उद्घाटन इस
प्रकार है

प्रश्न शली—इमा धली का वाक्य म मचम अपिब प्रयोग हुआ १
किम गान था गन सन म यत् विनाश छायागा
भारत का तुभाय्य घून पर चडा हुआ जायगा । ४२
अथवा

जमा है क जही जात्र जित पर चरता जातन है
वध है क घर यो जोर यत् उगा गान का घन है । ४३

दुष्टान्त शली

हिमा का जाधान तपस्या न कर वही गता है
रवा का गन शान्त मनवा स हागता रहा है । ४४

सब शला—मध्यम गग म भीत्म पितामह १ भाववात् या गवन्त करत

४ कुराव परम गग पृ० ८५

४१ धरी, पदम गग पृ० ६५

४२ धरी कनुम गग पृ० ११

४३ धरी, मन्म गग पृ० ११५

४४ धरी नृतीय गग पृ० २५

मनु का यह पुत्र निराग नहा नव घम प्रताप अवश्य जलगा । ६६
 पाए मग व प्रारम्भ म कवि उन्हा सन्धा की जावति करत हूण प्रान करता है

घम का तापन स्या का दापव
 वत्र जलगा वत्र जलगा विश्व क भगवान । ६७

इस प्रकार कुराश्रम म विभिन्न शक्तिया व प्रयोग द्वारा काव्य क उत्कृष्ट म ता
 यडि हू ही है माध हा शक्तिया का प्रचरता एव सम्पन्नता का दग्गन हूण यह
 भा पात हाता है कि कुराश्रम का कवि शक्तिया का धनी है । ६८

अनकार-भोजना—कुरुश्रम म अर्थानकार एव शान्तानकार शान्त का हा
 प्रयोग हुआ है । विनाप स्य न अर्थानकारा की यात्रना दिनकर क वाच्य-वाचन
 का परिचायक है । अनकारा क प्रयोग म भाषा क स्य-सौन्दर्य म ना अभिव्यक्ति
 हू हा है माध ता क भाव-व्यजना म भा मत्वायन हूण । कुछ प्रसून
 अनकारा क उदाहरण निम्न प्रकार है

उपमा

शरा का नात पर नर हूण गजराज जग
 धर हू गहना छस्त पद्मगराज जस । ६९

रूपक

नर नारिया क मृग स्य प नाश का
 छाया मा एक पना हूद है । ७०

अपरा

नर ममृति का रूप छिन्न मना पर
 शान्ति मुधा फन दिव्य फनगा । ७१

उत्प्रेक्षा

बाहर म भाग कर्म म जा शिपना हू कना
 ना भा गुनता हू अहंताम शून कात मा
 और गान-जागत म चीत उरना हू माना
 शान्ति पुकारना हा अजन क सात का । ७२

६६ कुराश्रम, पृ० ६६

६७ वही पृ० ६७

६८ कुराश्रम सामागा पृ० ०

६९ कुराश्रम, पृ० ६९

७० वही पृ० ६६

७१ वही पृ० ६६

७२ वही पृ० ७६

सदेह

ऋत्विक् पढत हं वद कि षच्चा दहन की ?
 प्रशमित करते या ज्वलित वह्नि जीवन की ?
 हं कपिश धूम प्रतिमान जया के यश का ?
 या धुधुआता है क्रोध महीप विवश का ? ५६

अतिशयोक्ति

बात पूछन की विवेक स जभा वीरता जाता
 पा जाती अपमान पनित हो अपना तेज गवाती । ५७

अप हृति

भरी सभा म राज द्रौपदी की न गया थी तूटी
 वह ता यही करान जाग थी निभय हानर फूटा । ५८

जसगति

ज्या-ज्या साडी विवश शोपदा की खिचता जाती वा
 त्या-त्या वह आवत दुरगिन यह नग्न हुई जाती थी । ५९

उपयुक्त जनवारो के अतिरिक्त कुरम्भ म और भी बहुत स अनकारा
 (जस—विराधाभास ल्पटात विशयोक्ति सहोक्ति एव उत्तेज जादि) का
 सुन्दर प्रयोग हुआ है । अर्थानकारा म कहा-कहा अनुप्रास और वक्राक्ति का
 प्रयोग अवश्य मिनता है किन्तु बहुत कम । मानवीयकरण जैसे नवान अलकारा
 क प्रयोग भा काय म मिन तात न । पचम सग म विजय का मानवायकरण
 करत हुए कवि न एस अनकारा का सुन्दर उदाहरण उपस्थित किया है

अयि विजय ! रघिर स किलन्न वसन है तेरा ?
 यम-दण्डा स क्या भिन्न नसन ह तेरा ?
 नपटा का मानर शनक रहा जचन म
 ह धमा ध्रस का भरा कृष्ण कुतन म । ६

प्रताक विधान—त्तिनकरजा न कुरम्भ म जनक सुन्दर प्रताका का
 प्रयोग किया है जा कामन और कठार भाया की अभियक्ति म पूणत
 सहायक है । जस

५६ कुरम्भ पृ ७६

५७ वहा पृ० ६१

५८ वही चतुथ सग पृ ५६

५९ वही पृ ५७

६ वहा पचम सग पृ० ७८

पर हाय यहाँ भी घघक् र्ग अम्बर है
उत् र्नी पवन म दाह्व लान लहर है
काताहल-सा आ रहा काल गह्वर म
वाडव का गर बगन क्षम्य सागर म । ६१

यहाँ कान गह्वर मृत्यु आर वाक्व भयकर अमय क प्रताक है ।

कामल प्रताका का भा वाय म याजना हुई है । जम—छठ मग म
निम्नांकित काशाश दृष्टय ह

वाहिए उनका न बचन पान स्वता ह मांगत कुछ स्नह कुछ बनिपान
माम नी को मुनायम चीज ताप पानर जो उठे मन म पसाज-पमीज
प्राण क सुलस विपिन म पूत कुछ मुकुमार
पान क मर म सुकोमन भावना की धार
चाटना का रागिना कुछ भार की मुमवान
नाद म झूली हुई बहती नगी का गान
रग म धुनता हुआ तिलती बचा का राज
पतिमा पर गूजती कुछ जाम का जावाज
जामुजा म दल का गनती हृद तसवीर
पुन की रग म बसा भागा हुई जजाग । ६२

यहाँ चाटना की रागिना भार की मुमवान आदि कामन नायनाजा क मुत्तर
प्रताक है ।

छठ विधान—कुर्यात्र म विभिन्न प्रकार क छत्ता का प्रयोग हुआ है ।
अधिकतर माथिक छत्ता का हा तिनकरजा न प्रस्तुत रचना म प्रनुक्न किया
है जस—सार रूपभाता जानवद्वर राघिना गरमी धार आति । स्वत
अतिरिक्त सबया रुमित मुद्वता रूप घना तरा कविस एव दाग आति छत्ता
का भी वाक्य म प्रयोग हुआ है ।

कुर्यात्र क तृतीय चतुष और मध्यम मगल म नार नामक छत्ता का
प्रयोग किया गया है जम

पागा कौन ? मनुज म उमहा याय चुरान धाता
मा कि याय मोत्रने विप्ल का माम उपात वाता । ६३

६१ कुर्यात्र, पत्रम मग पृ० ७५

६२ वहा, पत्रम मग पृ० ६७

६३ वहा, तृतीय मग पृ० ४५

रूपमाला छन्द का प्रयोग कवि ने पद्य संग में किया है जस

व्यास से पातान तक सब कुछ इस है नय

पर न यह परिचय मनुज का यह न उसका ख्य । ६४

कवित्त और मवया का प्रयोग द्वितीय तृतीय पंचम एवं सप्तम सर्गों में हुआ है । सम्पूर्ण काव्य में एक तरह का प्रयोग सप्तम सर्ग में हुआ है ।

नामकरण का उदाहरण छन्द का प्रयोग किया है जो काव्य के प्रवाह एवं गति का बनाये रखने में सक्षम है । वर्णिक वक्ता का प्रयोग भाषा काव्य भाषा के प्रवाह में साधक हुआ है । वही-वही कवि ने मुक्कक छन्द का भी प्रयोग किया है जस काव्य के प्रारम्भ में है

वह कौन राता है क्या—

इतिहास के अध्याय पर

जिममें लिखा है नौजवाना के लहू का माल है

प्रत्यय किन्ना वृत्त कुटित नीतिन के व्यवहार का

जिमका हृत्प उतना मतिन जितना कि शाप बनक है । ६५

उपयुक्त काव्य पंक्तियाँ में यद्यपि मात्राया या तुकान्तता का कोई नियम नहीं है किन्तु नय के कारण ही छन्द की सृष्टि हुई है । कुरुक्षेत्र के कवि ने प्रसंग और भाव के अनुरूप विविध छन्द का प्रयोग किया है जो काव्य के छन्द विधान का सफरता का परिचायक हैं ।

नामकरण— कुरुक्षेत्र का उदाहरण नामकरण स्थान का दृष्टि से हुआ है जिस प्रकार साकन आर्यवित्त एवं गन्धाघाटी आदि महाकाव्या के नाम स्थानों में सम्बंधित हैं । कुरुक्षेत्र कुरु प्रदेश का कहते हैं । ऐतिहासिक दृष्टि से कुरुक्षेत्र वह स्थान है जहाँ कौरवों और पाण्डवों का विश्वविख्यात युद्ध हुआ था । प्रस्तुत काव्य का मूल प्रतिपाद्य युद्ध कुरुक्षेत्र का युद्ध ही है । काव्य में जिन विचारधाराओं एवं तथ्यों का उल्लेख है वे सब भी कुरुक्षेत्र के युद्ध का ही आधार बनाकर । इस दृष्टि से काव्य का नामकरण उपयुक्त ही है । महाराज नाम पितामह या युद्धभद्र में ही शर गंध्या पर चढ़े हुए = और वंश धर्मराज युधिष्ठिर उनमें वाताताप करते हैं । इस दृष्टि से काव्य का सम्पूर्ण विधान कुरुक्षेत्र का नाम पर ही रखा है । अर्जुन काव्य के प्रतिपाद्य एवं विधान राना ही दृष्टियों से वंश नाम उपयुक्त है ।

६४ कुरुक्षेत्र पद्यम सर्ग पृ १०१

६५ वही प्रथम सर्ग पृ ६

सग विधान—सम्पूर्ण काव्य सात सगों में विभाजित है। सगों का नामकरण न करके बस उनका सख्या ही ही गयी है। छठ सग के अतिरिक्त शेष सभा सगों की वस्तु यात्रा प्रासंगिक दृष्टि से पूर्वपर नियोजित एवं सुसम्बद्ध है। छठ सग का प्रतिपाद्य और विषय कुछ पृथक्-भा प्रदान होता है। किन्तु वचारीक दृष्टि में इस सग का अन्य सगों में सम्बन्ध स्पष्टतः नियोजित किया जा सकता है।

निष्पन्न रूप में कुरुक्षेत्र के रचना शिष्य पर यदि विचार किया जाय तो उस प्रत्यक्ष कविता में कर्त्तर मफन प्रत्यक्षवाच्य कर्त्ता परगा जिनमें वचारीक एवं भावामय मौल्य का स्तना समृद्ध और ज्ञान मूर्ति हूँ है कि उन महाकाव्य भासन का वाच्य ज्ञाना पठना है। कुरुक्षेत्र का काव्य-मौल्य चमत्कार या पाण्डित्य प्रशस्त में नही बरन् गम्भीर भावा का मन्त्र अनिव्यक्ति में है। वस्तुतः भाव विचार और कर्त्ता का मनुसित सामाज्य कुरुक्षेत्र का मफनता का एकमात्र रहस्य है।^{११} 'कुरुक्षेत्र' के सम्पूर्ण वाच्य-उपकरणों में चार वचन ही अन्वय का भाषा या ज्ञान से सम्बन्धित ही सभा में सरलता है। यह सरलता कुरुक्षेत्र का वाक्प्रियता और उत्कृष्टता दोनों का कारण बना है। शिल्प का सरलता का कर्त्ता का दृष्टि में भाव में मन्त्र नही है। डा० नगण के शब्दों में कुरुक्षेत्र में वाक्प्रियता का रचना में एक मनुस्य प्रीत्या जा गया है। उक्ताने यही विस्तृत काव्य सामग्री का बिना जामात के प्रयोग करत हुए विगत और कामत चित्र जामिन किम ? उममें क्या भावा काट छीट जगत् या बनाव रूपाय का प्रयत्न नया। और इसका कारण उनका सबत अनुभूति ही है जो अनायास ही वाग्प्राय में हूँ उठता है।^{१०}

जीवन दशान

या समपाराभिहूँ शिष्य हूँ कुरुक्षेत्र काव्य के सभा सदा तक न एकमात्र से जिन गद्य का अध्ययन करके हम जिन का मन्त्रा का स्वाकार किया है वह है—'दावन-ज्ञान और परमार्थ भा है कि कुरुक्षेत्र काव्यात उपात्तना और कर्त्ता मफ प्रतिमाता की दृष्टि में स्तना और रचना नया जिनका 'दावन-ज्ञान' के जामात में दाजिमान विगत वाच्यदृति। 'कुरुक्षेत्र' में प्रतिपादित 'दावन-ज्ञान' का समावाचका न प्रगतिवादा, साम्यवादा समाजवादा

^{११} प्रा० विश्वानन्द दिनकर पृ० १०

^{१०} डा० नगण विचार और विरलेपण पृ० १५६

मानवतावादी प्रवृत्तिमूलक व्यवहारवादी जाति विभिन्न अभिधानों द्वारा सम्बोधित किया है। किंतु वास्तविकता यह है कि कुरुक्षेत्र के मायम सन्तुलनकरजा ने मानवतावादी जीवन-रूप की मायताओं को ही युद्धवादी विचार-दान की पृष्ठभूमि पर प्रस्थापित करने का सफल प्रयास किया है। इस प्रस्थापना के मूल में कवि की उत्कृष्ट जीवन-दृष्टि मानवतावादी जीवन-मूल्यों के प्रति जन-य निष्ठा-पापक मानवीय विश्वास-आशावादी कम-मय जीवन का आस्था-निरंतर विश्वासमान रहा है। कुरुक्षेत्र के निवृत्त म. कवि ने स्पष्ट रूप से कहा है कि 'पहले मुझे जशाक के निर्वेद न जाकपित किया और कविग-विजय नामक कविता लिखते-लिखते मुझे ऐसा लगा माना युद्ध की समस्या मनुष्य का सारा समस्याओं की जड़ है। युद्ध निरन्तर और क्रूर कम है किन्तु हमका दायित्व किस पर होना चाहिए ? उस पर जो अनातिथी के जाल बिछाकर प्रतिकार का आमंत्रण देता है ? या उस पर जो जान का छिन्न भिन्न कर देने के लिए आतुर है ? वस्तुतः इन्हीं प्रश्नों-चिह्नों के सम्बन्ध में कुरुक्षेत्र का जीवन-दर्शन विषयक विचारधाराओं और मायताओं का विकास हुआ है।

युद्धवादी विचार-दर्शन

कुरुक्षेत्र का प्रकाशन सन १९४६ में हुआ। स्पष्ट है कि कुरुक्षेत्र का रचना-रिनाय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध में जन-घन का भयकर विनाश महाभारत युद्ध की विभाषिणा का अनुभूति पाठक का सज्ज ही करा देता है। अस्तु काव्यारम्भ में कवि चिरवातन से हानि-वान युद्ध के मूल-कारणों का सन्धान करता है। वह मानव का स्वाध-नोप-वर्ति-द्राहाग्नि का प्र-वृत्तता एवं प्रतिज्ञाओं का भावनाओं का युद्ध का प्रमुख कारण मानता है। प्रकृतिगत स्वाध-भाव से प्रेरित होकर न मनुष्य में क्या द्वेष और प्रतिज्ञाओं की वर्त्तिमा उत्पन्न होना है जो जलन युद्ध की जननी बन जाता है। यद्यपि मनुष्य चरना नहीं चाहता किन्तु यकित्त का स्वाध-टकरा कर मधय का परिस्थिति उत्पन्न करता है। युद्ध में पूर्व यकित्त इस तथ्य पर विचार भा करता है कि क्या युद्ध ही एकमात्र उपचार है ? किन्तु विवश होकर वह चरना है और युद्ध का परिममाप्ति पर विनाश का विभाषिणा दगकर पश्चात्ताप करता है। कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध का परिममाप्ति पर घमराज सुधिष्टिर का समा-प्रकार के मानसिक मन्ताप में प्रश्न-चिह्नित किया गया है। वे भाग्य-विनामह के सम-ता-तर-वहन के विनाश का भयकर परिणाम में जानता तो भाग्य के साथ नाश-मांगकर मर जाता किन्तु रक्तपात

नया करना।^{१८} युद्ध का विभाषिका म जागन्त नातिन धमराज यह निगय
करन म अममध है कि ध्वजराज मुख जीर शान्तिराज दुग् म कौन नाति
विशद है ? व कहत है कि

‘ जानता नहीं मैं कुम्भज म गिता है पुण्य
या महान पाप यग पूरा बन युद्ध है।^{१९}

प्रस्तुतर म नाम विनामह करत है कि युद्ध का वातामुगा व्यक्तिया व लाभ
राज्य घणा एवं संख्या-द्वय व गरज स पूरता ह। कभानभा गजनातिव
करने जीर देश प्रम भा युद्ध व कारण बन जात =।^{२०} व युद्ध का एक
अतिशयना मानत है

‘ युद्ध का तुम निश कहत हा मार पर तब है टग्न सिगागियां
भिन्न स्यागों व कुनिश मघप का युद्ध तब तब किंव म अनिवाय है।^{२१}
कति युद्ध का पाप-पुण्य म पर अस्मिन् अण क तिम जावन धम मानता है।
तना ता तीम विनामह करत = कि

है मृषा नर दृश्य की जपना युद्ध करना पुण्य या दुष्पाप है
क्याकि कोद कम है गमा नहीं जा स्वय हा पुण्य तो या पाप हा।

× × × ×

जानता ह किन्तु जान व तिम चाहिए अगर जमा वाग्ना
पाप हा मरता नहीं वह युद्ध है जा मरा तना ज्वरित प्रतिपाथ पर।^{२२}
मी मरुभ म प्रान उठता है कि युद्ध व तिम त्तग्याया कौन है

युद्ध का बुनाता है अनानि ध्वजघारी या वि
धन जा अनानि नात प = पाव बनता =

× × × ×

कौन ह बुनाता युद्ध / जान जा बनता ?

या जा जाननात का युद्ध कात-भा निबन्ता /^{२३}

^{१८} कुम्भज द्वितीय मग पृ० १७ १८ (संस्करण २००२)

^{१९} वहा पृ० १६

^{२०} वही, पृ० २

^{२१} वही पृ० ५

^{२२} वहा, पृ० ४ ५

^{२३} वही तृतीय मग पृ० ४०

कवि का उत्तर है

चरता चाय जो रण को बुलाता भी वनी ॥ ७४

युद्ध की समस्या का निदान कस हो ? अन्ततः यह प्रश्न शप रहता है। इस सम्बन्ध में काव्य का अंतिम मग दृष्ट्य है जिसमें मानव समाज की सम्पूर्ण समस्याओं (जिसमें युद्ध की समस्या भी सम्मिलित है) का कारण जीवन का वृष्य कर्ण गया है। तब तक मनुष्य को चायचित्त सुख सुख नहा तब तक संधि समाप्त नहीं हो सकता एमी कवि की भावना है।^{७५} अस्तु जन समाज में युद्ध का निषेध शांति की स्थापना से हो सकता है और शांति स्थापित करने के लिए उपर्युक्त साधना और सुख सुविधाओं का समान विभाजन आवश्यक है किन्तु स्वाधलानुष वग इन साधना के सम विभाजन का बाधक है। समाज में शोषक और शोषित दो वर्ग हैं। इनमें शोषित वर्ग जब तक शक्तिशाली बनकर शोषक से संधिपन नहा होता तब तक स्थायी शांति समाज में स्थापित नहा हो सकती और युद्ध हाते रहता। कवि का मत है

रण राकना है ता उखाट विपदत फको

वक चाघ भीति स मही का मुक्त कर दा

जयवाजगा क छागा का भी वनाओ चाघ

दाता म कराव वान कूट विप भर दो।^{७६}

निष्कर्षों का यह दृष्टिकोण निश्चय ही साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित है किन्तु उपर्युक्त उल्लिखित पंक्तियाँ से पूर्व के पद ही में व मानवतावादी जीवन दृष्टि को अपनाते हुए जा कुछ भीष्म के मुख से धर्मराज को कहनात से वनी विचार वस्तुतः मूल्यवान् निम्न प्रतीत होता है

दत्त मनुष्य में मनुष्यता के भाव भरा

रूप की लुग्नि करो दूर बलवान में

हिंस्र शान भावना में आग अनुभूति की ता

हीन ता स्थापन उत्पन्न अभिमान में।^{७७}

मानवतावादी जीवन-दर्शन

युद्धवादी विचार-दर्शन का प्रस्थापना का काव्य का चरम तथ्य नहा।

७४ कुरंग प्र चतुर्थ मग पृ ८७

७५ वही मूलम मग प १११

७६ वही पृ० ११०

७७ वही पृ० १०६

वह तो जावाग्भूमि है जिम पर कुम्भार क कवि नी मूत्र मायनाए थापुन है । एवम सग क अन्त म स्पष्ट कहा गया है कि कुम्भार का धुनि नहा इति पथ की मानव ऊपर और चरमा अर्थात् कुम्भार का पद मानवता का अन्त नया । मनुष्यता क विकास का माय मुद्र क वात् ना अक्षणा रह गया है । कुम्भार म मनुष्य भर २ मनुष्यता नयी मरी । "मी मनुष्यता का नव विकास मानव समाज म रहनर करना हाणा ।^{१८} मानवता क नव विकास क लिए कवि ने जा ग्लिक्वाण प्रस्तुत किया है उमका निम्नांकित गीयका क अन्तगत अध्ययन किया जा सकता है

- १ नवान सामाजिक संरचना
- २ जाध्यात्मिक निष्ठाया म परिवार
- ३ मानवतावादी जीवन मूल्या का प्रतिष्ठा ।

नवान सामाजिक संरचना का संक्षेप

कुम्भार म ध्यान-स्थान पर मानवतावादी जीवन मूल्या पर आधारित नवान समाज रचना क संरचना का आग्रह कवि ने व्यक्त किया है । मन्तम सग म जाध्यात्मिक शक्ति म मानवता क पुनर्निर्माण और सामाजिक जीवन क समृद्ध विकास का विचार मरणा का प्रस्तुत किया गया है । इस सग म भीष्म पिनाम क युधिष्ठिर का चराम्य नार त्यागकर जीवन-मद्राम म प्रवृत्त हान का सन्देश दन है । मानव-समाज क विकास श्रम की स्पर्शा प्रस्तुत करत हुए कवि कहता है कि प्रारम्भ म मय मनुष्य समान और गुना थ । क परस्पर विवादी और कर्मदान मायामा थ । अन्त-समाज कुटम्भ क समान था । मभा धम बंधन म बन्धे थ । जन जन क मन पर धम नीति का अनुगामन था राजा का शासन नया । व्यक्ति का गुण समाज क गुण म भिन्न गहा था । मानव समाज का जीवन गरव और विवागा-मुग्ध था ।^{१९} कानान्तर म ताम यति उपर्य हूँ त्रिमन मनुष्य क मन म व्यक्ति क मय क भाव का जम लिया । पत्रम्बन्ध धारा कुम्भार चरण प्रारण एतना-गर्वा गुरू हुई । मरार की शान्ति मय था नया । तथा मन्त-नीति धारा विजयी शान्त थाया त्रिमन मरुग क दय पर समाज म शान्ति और व्यवस्था ना स्थापित का किन्तु मजत-भाय तामन प्रतीला शय एन एन प्रजा क सम्पूर्ण अधिकाय का भी अपहरण कर दिया । मनुष्य का इरादा हा नया बदि म, मन्तराय

^{१८} नन्दुवार काव्यमा सापुनिक साहित्य, पृ० १८६

^{१९} कुम्भार सत्यम सग पृ० ११८ •

शापण का जस्त्र और अकमण्य बनाने वाला विचार कहकर तिरस्कार किया गया है

भाग्यवान् आवरण पाप का और शस्त्र शोषण का ।
जिससे रपता दवा एव जन भाग दूसरे जन का ॥ ८८
अथवा

ब्रह्मा का अभिलेख पढा करत निम्नमो प्राणा ।
घोर वीर कुञ्जक भाल का बहा भ्रुवा स पाना ॥ ८९
भाग्यवान् की भाँति ही कवि ने मा त्वात्ने विचारणा का भी उपनाम किया है ।
मोक्षवादा चिन्तक जगत का जनित्य और जीवन का नश्वर कहकर मनुष्य
का सामाजिक दायित्व के प्रति उदासीन बनात है । कुरुक्षेत्र व रचयिता न
मगार स वगम्य और निवृत्ति अर्थात् सत्यास की भावना का धार भ्रमना
री है

धमराज सत्याम खाजना कायरता है मन की । ९
जनाकीण जग सत्याकुत हो निकल भागना वन म
धमराज है घोर पराजय नर की जीवन रण म
यह निवृत्ति है गानि पनायन का यह कुत्सित श्रम है
निथयस यह श्रमित पराजित विजित बुद्धि का भ्रम है । ९१

इसके स्थान पर कवि ने प्रवृत्तिमार्गी कर्मवान् की स्थापना की है । निवृत्तिमार्गी
भावना व्यक्ति का निज की मुक्ति और मुक्त का उपाय है । ससार से पलायन
करन वाता व्यक्ति समष्टि हित नहीं कर सकता । जीवन एक ममुक्त है । समाज
मनह पर खडा जनाभिनापी खारा जन पाना है किन्तु गाना उगाकर मथन
करन वाता जमृत तत्व का पान और रत्नो की प्राप्ति करता है । जीवन-सागर
के जन का खारा कन्कर छानन वाता पनायनवान् है । वे वक्ष पर विना च
ना गुधा फल पाना चाहत हैं । अस्तु ससार का त्याग के करन हैं जा अकमण्य
और जात्मभीर हैं । सत्त्वा आत्मजयी पुत्र्यार्थी और कर्मयोगी ता ससार म
रहकर दूसरा के दुख दूर करके ही जात्मनाम और कल्याण करता है । हम
मष्टि म विचार करन पर स्पष्ट सिगायी देता है कि कवि गाना के निष्काम

८८ कुरुक्षेत्र मध्यम संग पृ० ११५

८९ वही पृ ११४

९० वही पृ० १७

९१ वही पृ० १२

कर्मयोग का विचारधारा न प्रभावित है। चाक्रमाय चानागाधर निलक क
'गीतारहस्य' में प्रतिपादित विचारों का कुर्यात् क रचयिता पर प्रभूत प्रभाव
पड़ा है। कर्मवाद का स्वयं गीता और कुर्यात् में बितना समान है य
निम्नांकित उद्धरणों से दृश्य है

गीता

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यमवृत्तः ।
काय-न ह्यवश कर्म नव प्रवृत्ति जगण ॥ गीता ५० १५
'नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म त्यागो ह्यवशमा ।
अतीत्यायापि च त न प्रमिदयत्कर्मण ॥ श्लो ५० ३८

कुर्यात्

कर्म भूमि है निमित्त महान्त जय तव नर की काया
जय तव है जीवन क अणु अणु में कतव्य समाया ।
त्रिया धर्म का छात्र मनुज कस निज मुन पायेगा ?
कर्म त्याग माघ भाग क जहाँ कहा जायेगा । ६२

एक प्रकार कवि को आध्यात्मिक निष्ठाना का जहाँ तक प्रश्न है व भौतिकरानी
जीवन भूमि में सम्पृक्त है। वह सामाजिक जीवन में परे दिया अतीविक
आध्यात्मिक जगत् का कल्पना और मान-साधना का महत्त्वपूर्ण और अत्यन्त
नया मानना है। किन्तु यहाँ यह स्मरणाय है कि वह जहवांग भौतिकरानी
जावन-व्यदति (मतीग्यविस्तिव पितामपी) का भी अध्यानुकरणता नही है
जिसमें अनुमान तात्रा पीथा और मौज करण हा जीवन का मयव्व है। वह
एक पर मन का जापितय भी चाहता है। चाक-रयाण क निज कर्षकित
स्वाय क परित्याग और पुण्यायपूर्ण गयमित जावन की मृत्ता का भी उगत
स्योकारा है। धर्मगत्र युधिष्ठिर का मयम और त्यागमय जावन भाग का
उपदेश हा पितामह न निम्नांकित श्लोक में किया है

नागा तुम इम भेति मृत्ति का गग न जगत पाय,
मिट्टी में तुम नही क्या तुम में विनाश हा जाय ।
और सिगात्रा नाग्या का यहा गति जन जन का,
कहाँ बिलोत दू का मन में यहा एह में मन का ।
मन का होकर भाषित्य त्रिग तिन मनुष्य क तन पर
नाग त्याग अर्पित्य त्रिग तिन भागित्य जीवन पर

६२ कुर्यात् मयम गग, पृ० १३५

उस लिन होगा सुप्रभात नर के सौभाग्य उज्य का
उस लिन होगा शख ध्वनिन मानव की महा विजय का । ६३

मानवतावादी जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा

यह प्रारम्भ म हा कहा जा चका है कि कुरुक्षत्र म विभिन्न प्राचीन जीव युगीन विचारधाराओं का प्रतिपादन होते हुए भी उसका जीवन न्शन मूलत मानवतावादी है । काव्य म सबसे मानव मानव जगन जीव मानवाय जीवन मूल्या की महिमा का हा आर्यान किया गया है । कुरुक्षत्र क प्रथम पृष्ठ पर नी विश्व मानव क हृदय म द्वय भाव को युद्ध के निण उत्तरदायी ठहराया गया है । युद्ध की विन्धना का निरूपण और निवृत्तिमूलक वृत्तिया का विराम करके भी कवि अन्तत मानव की महत्ता को हा स्थापित करना चाहता है । कुक्षत्र युद्ध के अवसान पर मानव शवा को देखकर युधिष्ठिर का आह म कवि का ही ममभेती जातना सुनायी देता है

मनु का पुत्र बन पशु भोजन । मानव का यह अन्त

भरत भूमि क नर वीरा की यह दुःखति हा हत । ६४

क्याकि सम्पूर्ण कलाओं ज्ञान विज्ञान और धर्म का वरेण्यकर्ता वन् मानव को हा मानता है

नर वरेण्य निर्भीक शूरता के ज्वनन्त आगार

क्या ज्ञान विज्ञान धर्म क मूर्तिमान जाधार । ६५

कितु कुरुक्षत्र युद्ध के भयकर विनाश पर कवि मानवता की इति नन् मानता । वह मानवता क अम्युदय का ही आकाक्षा है

कुरुक्षत्र की घूनि नहीं वृत्ति पश्य की

मानव ऊपर जीव चरगा

मनु का यह पुत्र निराश नहीं

नव धर्म प्रतीप अवश्य जनगा ॥ ६६

कुरुक्षत्र क पठ मग म विज्ञान का सम्पूर्ण उपलब्धिया का अनुम घाता भोजना जीव नियन्ता मानव का ही क्या गया है

³ कुरुक्षत्र सप्तम मग पृ १५०-५२

६४ वही पचम मग पृ० ८२

६५ वही पृ ८

६६ वही पृ० ६६

यह प्रगति निस्सीम ! नर का यह अपूर्व विकास
चरण-तर भूगोल ! मुट्टी में निहित जागार । ६७

× × ×

यह मनुज जिसका गगन में जा रहा है धान
वापन जिसका बग का तब बर परमाण । ६८

मृष्टि का सम्पूर्ण शक्तिमा का नियन्ता और रचना की सबधच्छ कृति मानव
ही है

'यह मनुज, ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकार
बुद्ध छिपा मरत न जिसस भूमि या जागार ।

× × ×

यह मनुज, जा मृष्टि का जागार
गान का विधान का जागार का जागार । ६९

जहाँ तक विधान और मानव का सम्बन्ध का प्रश्न है, यदि बड़े-रतन का उस
चित्तनयाग का प्रभावित प्रतीत होता है जिसका अनुसार विधान निषेध है
मानव ही उसका निमाण तब सद्-अग्र प्रयाग करता है । इसादिग मनुष्य का
सबेन क्रिये गया है कि

मावधान मनुष्य ! यदि विधान है तलवार
ता इस द फेंक तजकर मां स्मृति का पार । १

विधान मानवता का बरतान और श्रेय तभी बन सरता है जब अग्र जाविदार
सिब-स्वरूप अयात् लोक-वल्याणमय का । अया प्रकार समता विधावर गा
मावता का रिताम में सत्यापन सिद्ध हो सकता है

श्रेय का विधान का बरतान
हा गुणम मवता गहन जिमता रति अरतान ।

× ×

श्रेय हागा मनुज का समता विधावर गा
गन् मिचित याद पर तब विद्य का निधान । १ १

६७ पुराण, पञ्चम स्क० ६७

६८ पुराण स्क० ६६

६९ पुराण स्क० १००

१ पुराण स्क० १०१

१ १ पुराण स्क० १०२

मानव की अपरिमित शक्ति और सामर्थ्य का वर्णन करके कवि ने अन्ततः मनुष्य की महत्ता का ही स्वीकृति प्रदान की है। किंतु दूसरी ओर क्रूरवमा मनुष्या को शृगाला और कुक्कुरा से हीन भी कहा। सहार सेवा मनुष्य का उसने वासना का भृत्य और मनुष्यता का अपमान भी कहा है

यह मनुज नाना शृगालो कुक्कुरा से हान
हो किया करता जनका क्रूर कम मलीन ।

× × ×

नाम सुन भूना नहा साचा विचारा कृत्य
यह मनुज सहारसबी वासना का भृत्य
छत्र रसना कल्पना पासण्ड इसका ज्ञान
यह मनुष्य मनुष्यता का धारतम अपमान ।^{१ २}

सच्च मानव की परिभाषा कवि ने निम्नांकित शब्दों में दी है

श्रम उसका बुद्धि पर चतय उर की जीव
श्रम मानव की असीमित मानवा से प्राप्त
एक नर से दूसरे के वाच का यवधान
ताउ द जा यस बही नाना बहा विपान
और मानव भा वना ।^{१ ३}

मानव की उपयुक्त व्याख्या का यह अर्थ नहीं कि कवि पण्डित और पतित मनुज को हय मानता है। वह तो मानव की जय का ही अभिलाषी है

जय हा जय के गन्त गत में गिर हुए मानव का
मनु के सरत जवाष पुन का पुरुष ज्योति सभव का ।^{१ ४}

मनुष्य में नाभ द्राह् प्रनिशाप का कतिपया यत्नि मानवता के विघ्न हू तो
करण त्याग तपस्त्वया इत्यादि मानव जाति का रक्षा के सबल भा है। इसी
लिए मानवता का महिमा कभी घट नहीं सकती। जाना विश्वास स्तुत त्याग
जाति जावन-मूल्या के प्रति मानवाय निष्ठा के बल पर ही कुरुभत्र के अंतिम
छन्द में कवि मानवता के उद्भव भविष्य की आज्ञा का सु युक्त संदेश प्रसारित
करता है

^{१ २} कुरुभत्र पद्य सप्त पृ १ १

^{१ ३} वही पृ० १०१

^{१ ४} वही मूलम मग पृ० १ ५

आशा व प्रतीप का जलाय चना धमराज
 एक दिन होगी मुक्त भूमि रण भाति स
 भावना मनुष्य की न राग म रहगा लिप्त
 सक्ति रहगा नग जीवन जतीति स
 हार स मनुष्य का न महिमा घटेगी और
 तज न बढगा किसी मानव का जोन म
 स्नह बलिदान हाग माप नरता व एर
 धरती मनुष्य का बनगी स्वग प्राति स । १ ५

एक प्रकार कुरुप्र महाकाव्य म प्रतिपादित जीवन-ज्ञान सम्बन्ध मायता-जी का
 अन्तमयन करन व उपरान्त हम एसा निष्पत्त पर पहुचत ह कि यह एक मानवता
 वाता जावन-ज्ञान स अनुस्यूत वृत्ति है । कुरुप्र म जहाँ एक आर भाग्य
 भगवान मा र निवृत्ति मयाम आदि परम्परागत ऋद्विचारा एक आ-यात्मिक
 निष्ठाभा का सन्तन किया गया है वहा साकारिक जीवन म जासकि तथा
 मानवाय जीवन मूल्यो (जस त्याग तप स्न बलिदान विश्रवास जाति) व
 प्रति जन-व आम्हा मण्डन की गयी है । नियति प्रवृत्ति एव जान विपान व
 जानमगतकारा रूप का हा वरण्य बहा गया है । युद्ध का अनिवापना का
 स्वाकार करव भा उसन सम्भव निगान की आर सक्त किया गया है । कुरुप्र
 की सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक उपनिधि गीता व कमदाग का मन्त्र पुष्टि
 तथा मानवता व उ-वस भविष्य व प्रति आम्हावाता दृष्टिकाण का
 प्रस्थापना है ।

‘पार्वती’ महाकाव्य
मे

मानवतावादी संस्कृति की धारणा

‘पार्वती’ महाकाव्य में मानवतावादी संस्कृति की धारणा

वैज्ञानिक युग में काव्य-लेखन एक सांस्कृतिक प्रयास है। इस लक्ष्य में विरहित होकर किया गया काव्य मृजल हमारे युग का वैज्ञानिक प्रगति और गद्यत्मक विधाओं के विकास की अपूर्व गति में पिछड़ ही नहीं जायगा वरन् अपने अस्तित्व को उतना ही क्षणिक निरुद्देश्य अनपेक्षित और एकाया बना देगा जसा कि आज अधिकांश हिन्दी कविता के नाम से प्रकाशित होने वाला काव्य रचनाओं के विषय में चरिताथ हो रहा है जयान प्रकाशन प्रचार विभाग और दिनांक। काव्य के स्थायित्व और चिरंतनत्व का प्रश्न जीवन मूल्यों का शाश्वत बल्यता से जुड़ा है। वहीं मानव बाल्य की स्थायी निधि बन सकते हैं जो मानवाय चेतना के विकसनशील स्तरों को स्थायित्व करने में सक्षम तथा सामाजिक जीवन मूल्यों के संघटन निघटन और संतुलन को साकार करने का अपूर्व शक्ति संचरण विधायक हैं। इस शक्ति का ही युग जीवन का अमित प्रवाह बना जाता है। हृदयान न साहित्य की व्याख्या करते समय उचित ही कहा है कि

Literature is only one of the many channels in which the energy of age discharges itself in its political movement a religious thought philosophical speculation and Art. We have the same energy overflowing into other forms of expression

(Study of Literature)

युग शक्ति का स्फूर्ति (शक्ति) का व्यञ्जना साहित्य और काव्य के विभिन्न रूपों में होता है। किन्तु जीवन मूल्यों के व्यापक विकास का चित्रण करने की शक्ति अधिक क्षमता महाकाव्य नामक काव्य रूप में होता है। महाकाव्य में शक्तियों में ज्ञानाय जीवन और सामाजिक चेतना के अस्तित्व का सांस्कृतिक प्रयास है। मृजल के उपकरणों अध्यात् जीवन के धारण महत्त्व नामक

गरिमायुगी उदात्त शक्ती महत् उद्देश्य युग जीवन के व्यापक चित्रण गम्भीर अभिव्यक्ति शक्ति रस परिपाक विराट कल्पना और जीवन-धन की बलवती प्रेरणा के कारण महाकाव्य निश्चय ही सर्वोपरि काव्य रूप है। "सालिए रामायण महाभारत कुमारसम्भव रघुवंश किराताजनाय शिशुपाय वध नपधाय चरित रामचरितमानस पृथ्वीराजरासा कामायनी आदि भारतीय वाङ्मय की चिरत्न निधि बन सकें।"

आज गद्य का युग है। गद्य युग का मन्त्राज्ञा य उपन्यास ही कहा जाता है। प्रा० टिन्पाइ का अभिमत है कि अठारहवीं शताब्दी में मन्त्राज्ञा-संस्कार का परम्परा ही नुस्तप्राय हो गया था। मानव ज्ञान के चतुरास्त्रों का ज्ञान व्यापक प्रसार हुआ कि हमारे और दात जस महाकाव्यकारों का भाति समस्त समाज का चित्रण दुसाध्य हो गया। साहित्य के व्यापक सन्व्यापक रूप में भा जावत के विशेष पक्ष का ही चित्रण सम्भव हुआ सका। मध्ययुगान समाज का चित्राकन उपन्यास में हुआ। १६वां शताब्दी में महाकाव्य का रूप उपन्यास में ही परिवर्तित हो गया।^१ फिर भी बहुत बड़ी संख्या में महाकाव्यों का सृजन हो रहा है। सन १९१४ में अद्यावधि हिन्दी में हो अनका महाकाव्य निम्न गये हैं।^२ यद्यपि इनमें से अधिकांश केवल नाम के ही महाकाव्य हैं।

१

- - he
ut
nd
th

cated so much has been added to the stock of human learning there was so much ecumenical freedom to exchange ideas that the epic spanning a total society like Homer's or Dante's became impossible. Any great work of literature however ambitious of universality was forced to be in some degree specialist. Now the specialty that turned out most propitious for the epic was middle class novel that began to flourish in the 18th century. By the nineteenth century the real course of the epic had forsaken the tradition for the novel.

—E. M. W. Tillyard *The Epic Strain in English Novel* pp 530-31

- २ (१) प्रियप्रवाम (२) सावन () कामायनी (४) बद्धहा-वनवाम (५) वृष्णादन (६) सावन-सत (७) मिड्राथ (८) शिववश (९) वृरजनी (१०) नन्दरग (११) जगज (१२) बद्धमान (१३) जयभारत (१४) पावना (१५) रश्मिगथा (१६) माग (१७) एतथ्य (१८) मिता (१९) तारक वध (२०) मनापनि वण (२१) कुरात

हूमर शब्दात्मक काव्य के रचयिताओं में महाकाव्य का उपाधि के लिए कल्पित
 काव्यशास्त्राय नमः का गणन निदान कर रचना का महाकाव्य कह दिया है।
 तथापि इस युग में उत्कृष्ट शक्ति के महाकाव्य भाविते गये हैं। कवि
 जयदेवप्रसाद इन कामायनी महाकाव्य इस युग का जनयन्त्रम कृति है
 जिसमें मानवता के जनक मनु के पीछे गिरावट निवृत्त का मूल रूप में नकर
 विराट् कथना और काव्य प्रतिभा के प्रथम में मानवतापति एवं विकास का
 अद्भुत चित्रण हुआ है। कामायनी का प्रथम गमय के परस्पर विरोधा प्रथना
 के समाधान का चला है जिसमें मानव मन के अन्दर हृदय-बुद्धि के
 मधय, प्रकृति के प्रेम और प्रकाश बस्तिया के साथ जीव प्रवचना अथ
 वाचुपता और काम वासना वापण और दाह नाग शैल्य एवं अल्प्य उत्साह
 आदि अनेक युगीन समस्याओं का समुचित समाधान एवं व्यावहारिक निदान
 प्रस्तुत किया गया है। इसलिये प्रसादी कामायनी युग के महाकाव्यकार और
 कामायनी महाकाव्य रचना माना जाती है।

३।० रामायण नियोग भाग्यानन्द विरचित पावनी महाकाव्य भी
 इस ममूद्र साहित्य परम्परा का रचना है। इस काव्य में भी युगीन जीवन
 चरना की विरोध व्यजना है। 'पावनी में भारतीय संस्कृति के जाति
 स्वरूप का व्यापक चित्रण हुआ है। पावनीकार ने विनाय युग के विघ्नात्
 मानव जाति के प्रति गिरावट संस्कृति का गणन प्रमाणित कर स्वयं मानवता
 वाणी जीवन मूल्यों की स्थापना का गणन प्रयान किया है। धर्म और नीति
 अथवा गणन और नये भाग्य संस्कृति के अनिवाय उपकरण हैं।
 पावनी काव्य में इन मूल्यों के जीवन मूल्यों (गणन और नये) का
 गणनमान्य मन्वत्कारण और प्रतिपादन हुआ है।

साधुनिक युग के हिन्दी महाकाव्यों में आकार की दृष्टि में पावनी
 सर्वोपरि युगाकार रचना है। पावनी महाकाव्य का कथारमक मूल आधार
 काव्य गुण है। कथात्मक गथाकार की दृष्टि में पावनीकार ने कालिका के
 कुमारगमय पर अनुकरण किया है। पावनी के प्रथम १७ सर्गों में कुमार

(२२) हर्षोपासी (२३) आषाढ (४) विश्वामित्र (२४) जन
 ताय (२५) महामानव (२६) जगन्नाथ (२७) शौर्य (२८) स्वामिन
 (२९) दमयन्ती (३०) उषा (३१) मारुती (३२) प्रमथ
 (३३) श्रीगणेशाय (३४) रामायण विनायक (३५) कृष्णाय
 विनायक (३६) गौरी का गनी (३७) अन्न (३८) रामायण
 (३९) विश्वामित्र का आदि।

सम्भव के १७ सर्गों की सम्पूर्ण कथा गृहीत की गयी है। पावता महाकाव्य के प्रथम १७ सर्गों को काव्य का पूर्वाद्ध कह सकते हैं। उत्तराद्ध खण्ड में प्रौढ़ कवि कल्पना विनम्रण काव्य प्रतिभा भाव-मौल्य रम परिपाक कलात्मक कौशल जीव प्रवृत्त प्रसाद आदि दृष्ट्य हैं। साथ ही मौलिक मृजन प्रतिभा कलात्मक जीदात्म्य वचनिक निधि और भाव-गाम्भीर्य की दृष्टि से भी काव्य का उत्तराद्ध (सर्ग १८ से २७) मन्त्रवृत्तपूर्ण है। पावता महाकाव्य के अंतिम १० सर्ग निश्चय ही कवि की चरम साधना के ज्वलन प्रतीक हैं। इन सर्गों में कवि के अध्ययन मनन जीव चिंतन न जावन-दशन के रूप में ढलकर बनवती प्रेरणा का रूप ग्रहण कर लिया है। शवागमा के निगूढ अध्ययन और तत्त्व दशन चिंतन न शिव ससृष्टि के रूप में एक महान् उपलब्धि करायी है। पावतीकार की शिव ससृष्टि विषयक परिमल्लपना नितांत मौलिक उपादेय एवं युगानुरूप है।

पावती महाकाव्य के १७वें सर्ग में पावतीपुत्र सनानी कार्तिकेय द्वारा तारवासुर का वध हो जाता है। यहाँ तक का वस्तु निधान कुमारसम्भव पर आधारित है।

१८वें सर्ग में जयन्त अभिषेक और १९वें सर्ग में विजय पर्व के आयोजन के साथ-साथ तारक के तीन पुत्रों का तप तथा ब्रह्माजी द्वारा वरदान इन का वणन है। सर्ग २० २१ और २२ में राजतपुर आयसपुर एवं वाचनपुर नामक त्रिपुरा का वणन मजीब वणन है। उत्तराद्ध—

राजतपुर में जान घम का मूर्ख छत्र वन करणा भाति
फनित हुआ कमनाम कूट की वन अधम की रचिर अनीति
शक्ति जीव वभव से मोलित दुर्ल दीन जकिचन जान
वन अजान बना जावन का मायामय नय घम विधान।

× × ×

आयसपुर में तप-श्रेष्ठ से उमर भय से कुण्ठित काम
फनित हुआ विद्यमानों के वन वभव में फिर उद्दाम
अन तीन वन जान प्रजा का अल्पदृष्टि में बनकर शान्ति
प्रकट कर नामन मवा श्री पत्र नियमा का भूपित भ्रान्ति।

× × ×

वाचनपुर में नय करणा जी श्रेष्ठ-तप का दृष्ट विकार
शान्ति मसृष्टि जीव मृग का वन छत्र हुआ मन्त्रा गावार

सम्भव क १७ सर्गों का सम्पूर्ण कथा गृहात की गयी है। पावता महाकाव्य क प्रथम १७ सर्गों का काव्य का पुनर्निर्दिष्ट कह सकते हैं। उत्तराद्ध खण्ड म प्रौढ कवि-कल्पना विनयण काव्य प्रतिभा भाव-मौल्य रस परिपाक कलात्मक कौशल और प्रवृत्तत्व प्रवाह जादि दृश्य हैं। साथ ही मौलिक मृजन प्रतिभा कलात्मक जीवात्म्य वचनिक निधि और भाव गाम्भीर्य की दृष्टि सभा काव्य का उत्तराद्ध (सग १८ म २७) महत्त्वपूर्ण है। पावनी महाकाव्य क अन्तिम १० सग निश्चय ह्य कवि का चरम साधना क ज्वलन्त प्रतीक है। इन सर्गों म कवि क जयन मनन और चिन्तन न जावन-मृजन क रूप म ढलकर बलबनी प्रेरणा का रूप ग्रहण कर लिया है। शवागमा क निगूढ अध्ययन और तत्त्व दर्शन चिन्तन न शिव सस्कृति क रूप म एक महान उपलब्धि करायी है। पावताकार की शिव सस्कृति विषयक परिवर्तन नितान्त मौलिक उपान्य एवं यथानुरूप है।

पावता महाकाव्य क १७वें सग म पावतापुन सनानी कार्तिकेय तारा तारकामुर का वध ा जाता है। यहा तक का वस्तु विधान कुमारसम्भव पर आधारित है।

१८वें सग म जयन्त अभिषेक और १९वें सग म विजय पव क आयोजन क साथ साथ तारक के तीन पुत्रा का तप तथा ब्रह्माजी द्वारा वरदान इन का वणन है। सग २ २१ और २२ म राजतपुर जायसपुर एवं काचनपुर नामक त्रिपुरा का वन सजीव वणन है। उदाहरणार्थ—

राजतपुर म पान धम का सूक्ष्म छद्म वन करणा भीति
फनित हुआ कमनाम कूट की वन अधम का रचिर अनीति
शक्ति और बभय स मान्ति दुवल दीन किञ्चन पान
वन अपान रना जावन का मायामय नय धम विधान।

× × ×

जायसपुर म दप-द्रोघ स उन्मत् भय स कृष्णिन काम
फनित हुआ विद्यु-मानी क वा बभय म फिर उन्मत्
अन तीन वन पान प्रजा का अल्पदृष्टि म वनकर शान्ति
प्रकट स नामन सवा जी पन् नियमा की भूति भान्ति।

^ × ^

काचनपुर म नय करणा जी क्रायन्त का षड्विंश विचार
शान्ति ममृष्टि और गुण का वन छद्म हुआ सहसा माकार

जिमका माया व विमाह म स्वप्ना व स्वर्णिम प्रामाण्य,
 कर निर्मित धम और सेवा का वहन कर रह जन अवमान ।

(मग २३ पृष्ठ ४७०)

त्रिपुरा व इस धार अनथ स सकन तार व्याकृत हा उठ जीवन-सत्य
 का तथाकथित धम शक्ति और माया के आहम्बर न आच्छन्न कर लिया ।
 तारक-शेष स जो अब समृति का प्रमदना हुई थी जोक म परिवर्तित हा
 गयी

धम शक्ति धन की माया म हुआ मय जीवन का नृप
 लगन रू ध विष अनथ का वीन अनाल विपथर गुप्त
 हुआ त्रिपाकत वायुमण्डल या मिमक रू जीवन व प्राण
 विकरन हुए अपना कृतिमा स भक्त भूप श्रीपति भगवान् ।

× × ×

त्रिपुरा व अनथ उपचय म विकरन त उर नीना लाव
 था का जय रू अन्त वना हृय का नूतन जात ।

(मग २३ पृ० ६७१)

त्रिपुरा व जपावाग स स्त्रीचिन्त हातर जपन ब्रह्माजी व पास गया ।
 ब्रह्माजी न ज त्रिपुर उपचार बनामा व भी बहुत महत्वपूर्ण है । ब्रह्माजी न
 त्रिपुर उपचार व त्रिग प्रम और शिष्यत्वबोध का माग मुझाया । प्रम माग और
 शिष्यत्वबोध आत्र व विश्व जीवन की विहम्बना का भी महत्वपूर्ण निदान है ।
 यहाँ पर उल्लेखनीय है कि पावनीमन्त्र की त्रिपुर उपचार की परिवर्तना
 की वादायनाकार (प्रमाणी) व त्रिपुराह का मयोजना स पूण मगति
 यगती है । प्रमाणी न त्रिपुरा का विहम्बना का वणन रम्य मग म
 किया है

'यथा त्रिपुर है मगा तुमन तीन बिन्दु त्रिभय स्तन
 अपत वर वन तुम-मृग म मित्र तु है यत् मय चित्तन ।

(शामायनी, रम्य मग)

शामायनी का त्रिपुर शक मानव मृति व मन्थ म मग तान और
 दिया की दूरी है अथान् अमामरम्य है

जान दूर कुछ किया मित्र ह मृग वया दूरी हा मन का ।

एव दूरा म न मित्र गक य विहम्बना है तारक का ॥

(यथा, मह्य मग)

दस तीना के समजन का उपाय ताना म सामरस्य (समन्वय) की स्थापना है। पावता मन्त्रकाव्य का त्रिपुर रूपक भी हमारा युग जीवन क मन्त्रम धम शक्ति जोर धन की माया का सघष है।

जयन्त त्रिपुर उपचार क उपाय पूछन ब्रह्मा शिव जोर पावता क पाम गया। तीना न वर पुत्र उपाय बताय

ब्रह्मा— जगुर शक्ति क नप क वन म हुआ तान। इनका निमाण है निमित्त भर सग नियम का मेरा जबधि-पूण वरदान एकाकी तारक का सम्भव शक्ति-योग म धा सहार पर त्रिपुरा का नया शक्ति स सम्भव है करना प्रतिवार।

× × ×

सग नियम म नही जनय का सम्भव ह कोइ प्रतिराघ है उसका उपचार शक्ति स अविन शिव का शाश्वत बाध।

(सग २२ पृष्ठ ४७४)

पावती— मुन जयन्त के वचन उमा न क्या दगा म भरकर स्नह तान। त्रिपुर के जन जीवन है शाचनाय अति निम्नत्वं कर न मकी यदि शक्ति तुम्हारा सरभित जीवन का क्षम तान शक्ति की स्पर्ति चाहता अभी बालि-मा कामन प्रम।

× × ×

उमा प्रम के बिना बन गया राजनपुर का तान विमाह इसा प्रम क जिना छा रहा आयसपुर म बन विद्रा उमा प्रम क बिना स्वर्णपुर पान रहा कवन उपापार बिना प्रम के तान शक्ति जो जय मन्त्र बनन अतिचार।

× × ×

एक पापपत हा कर मरता त्रिपुरा का गुणपत सत्कार कर सकता है विश्व जागृति कवन उमर का पकार।

(सग २३ पृष्ठ ४७५, ७७)

शिव— शिव बान गम्भीर गान्धिमय वचन स्नह म पूण उचार— प्रवृत्ति जोर प्रतिराघ भाग म चरता म अपूर्ण ममार तान शक्ति मया शिव का शक्ति करता पावन क्षम त्रिपुरा म उदार शिव का कर सकता पर तान प्रम।

(मा ० पृष्ठ ४७६)

इसी क्रम में शिव का महान सन्देश है। इस संदेश के एक-एक शब्द में मानवतावादी स्वराधाय है, सजावनी शक्ति और अमरत्व है। विस्तार नये में कतिपय पंक्तियों ही उद्धृत का जा रही है

'तन-जन व जाग्रत गौरव म कम्पित हागी अत्र अनाति
 तन्म दय अतिचार जाति का प्रत्य वनगा भाषण नाति ।
 घम घुम्पत जप पुकारा म विभार धामव मामन्त
 घन-धुरर, धीमान् तानपति मवका तान्नि कग्गा अत ।

× > <

माँगो जाग्रत मानव म व जान का वम अधिचार ।
 × > ×

जाग्रत मानव का कग्गा म माँगो व जीवन तन ।
 × × ×

जाग्रत मानव म माँगो व कवन श्रम का वरदान ।
 × / ×

मानव की मग्गति का गौरव तगा नागी का मग्मान
 नागी व स्वतन्त्र जीवन का मन्त्र बनगा चिर वरदान ।

× × ×

प्रति मानव व शीघ्र और मय तगे जत्र त्रिज व प्रवीण
 प्रति मानव व बाहु बनेगे दय शक्ति के रथा लीन ।

प्रति मानव का अघाण त्र हागा अघ-वाम म पुत्र
 मवा-श्रम से प्रति मानव व पावन पत्र हाग मन्तुष्ट ।

× > ×

तय मानव मानव धन मन मे औ तन म वन देव ममान
 शोण नय विद्व का मग्गा औ पावन अनन्त भगवान ।

जान शक्ति श्रम और मन्त्र म कर मुन्त्र का चिर नियोग,
 नय ब्राह्मण व पत्त-पत्नी म नित्य करगा ह्य विधान ।

इस मन्त्र मानवतावादी मग्गति व निमान म युगा की मचिन ध्याति का
 विनाग और नय धनता का विकाम हागा

जय जन जन व उर म पावन ध्याता का मग्गल ध्याता
 होगा उरित मन्त्र-करणा का वन कर शक्ति मग्गलमय ध्याता ।

जय जन जन व ना औ मन म छिनी मय का शक्ति कर्ण
 जाग्रत हा मग्गा मग्गा जीवन का गौरव अधिचार ।

× / ×

तब नव चतनता से होगी भग युगो की सचित भ्राति
नवयुग का निर्माण करगी श्रयमुखी जीवन की द्राति ।

(सग २४ पष्ठ ४८३)

त्रिपुर उद्धार नामक २४वें सग म शिवत्वबोध और नय स अनय रूपी
त्रिपुरा का उद्धार वर्णित है । यहा मानवता को स्वयस वभव की चेतना स
जागृत भी किया गया है

मानव हो अपन जीवन के गौरव का पहचानो
नर हो तुम अपन पौष्ट्य के वभव को पहचानो ।

नय चतना आह्वान ने जन जन क जीवन म जागरण की लटर लौटा ला

बात उठ सथ एक कण्ठ स मानवता की जय हा

गूज उठा स्वर अन्तरिक्ष म अन्त समस्त अनय हा ।

×

×

×

जीवन का थम थय जीर मुख चिर अधिकार हमारा
करना हमका सिद्ध सघ क शक्ति मात्र क पारा ।

(पष्ठ ४९९)

त्रिपुर उद्धार के उपरांत नय सग की मृजन ध्वनि शिव क डिम्ब निना
से नि मृत हुई

विषय भारती के मगत सा शिव का डमरु बोना
शिव ने आज नवीन सग का सूत्र मममय खोना ।

×

×

×

अन्तरिक्ष म उगा नान का सूय अनामित छवि स
गघकोप निज खोल कत्री ने कहा जागरित कवि से—
जाज न कतिया के काना म कवन मधुरस धोलो
नय मग क बाज मात्र की भय अगता ग्योना ।

(सग २६ पष्ठ ५०६)

एन नवीन सग (ममृति) की ममृति भा जाणश जीर महान् थी ।
त्रिपुराह शिवत्वबाध क कारण हुआ अत नवीन मृष्टि म त्रिम घम नीति
जीर ममृति का विकास हुआ वह शिवमय थी । पावती महाकाव्य क २५ २६
और २७वें सगों म शिव घम शिव नीति और शिव ममृति का वर्णन है ।
एन सगों का मृजन नितान मौलिक और नवीन है ।

शिव घम नामक सग म घम के त्रिम स्वम्प का त्रिमण हुआ है वह शव

सम्प्रदाय की बिसी मद्दानिक दूरान्ध कल्पना का प्रस्तुतीकरण नहा वरन
मानवतावादी क्याणमय (शिवम्) धम की स्थापना का प्रगमनीय प्रयास है

शिव धम म—

मानव ही रू गया एन इश्वर की आभा
जीवन ही बन गया धम की नव परिभाषा
आत्मा का परमाथ अथ म अन्वित हाता
आत्मा का परमाथ काम से सरसित होता ।

(मग २५ पृ० ५१७)

मानवता हा गवस्व था—

मानवता था मानव जूत मम्वृति का
आत्मभाव था मूत मय नूतन समृति का
नहा मनुज का मनुज मानत जो अतिचारी
उनको कात वृत्तान्त बन अतिम शिपुरारी ।

नारी का बहुमान—

नारी का बहुमान बना सस्वृति की यत्ना
जीवन भागर रहा शान्त जिसम अलबला,
मानवता की मर्यादा थी निमल नारी
शक्तिमती श्रीभूति मनोहर औ सुकुमारी ।

× × ×

वह युग युग की आतकिन औ साष्टिन नारी
महिमा मण्डित हुई प्राण धर गरिमा सारी ।

(सग २५ पृ० ५१८)

महा नही—

मानव ही था बना विश्व का नया विधाता
मानवता का बना नया मानव निर्माता
मानव म मानार हा गये विधि हरि हर म
व अदृष्ट के रूप अगुन जीवन मुन्दर था ।

× √ ×

नारी म साकार हुई थी बीषा-शाणा
नारी म ही मूत हुई मग्नी क्याणा
हुई उमा की नव शक्ति मे जाणत नारा
पान शक्ति धानाग म अन्वित थी नारी ।

(मग २५, पृ० ५२६)

२६व सग म उल्लिखित शिव नीति का स्वरूप भी बतावनीय है—

धर्म अथ औ काम भुक्ति का अवयव पूण विधान
करता था मानव समाज म शिवनय का निर्माण
नान शक्ति तप क्षम आदि का श्रयावित उद्योग
करता था कृताथ मानव का जीवन साधन योग ।

(सग २६ पृष्ठ १४६)

काव्य के अंतिम सग म शिव सस्कृति के जान-बूझा स्वरूप का विशद
याख्या है । कवि न नारी का सस्कृति और सृष्टि की सघारिणीशक्ति बहा
है । मानव के मंगल विधान और विजय पव की प्रतीक नारा ही है । इस मूल
गत्य की स्वाकृति म २७वें सग की अन्तम विशेषता है

वह सिंहवाहिनी कोटि अस्त्र-कर धारी
मानव सस्कृति की निरूप निमता नारी ।
× × ×
वह मधुर वमता यामा को उजियागी
विश्वराती स्वयं विभूति भूमि पर सारी ।
× × ×
वन वीर व धु की बहन निमला नारी
बननी सस्कृति की मुपमा काम कुमारी ।
× × ×
उम ज्याति-पव का पुष्य निमता उपा
पावन भावा की मधुर मुक्त मजूपा ।
× × ×
बल शक्ति भूमिका तजमयी बल्याणी
हा रण सफल पाकर जावन की वाणी ।

कवि न नारा के सम्मान को सांस्कृतिक विवाह का आधारमान भी
माना है

नारा का नय जो मान माप सस्कृति का
पथ उमना शक्ति मस्कार निमग प्रकृति का ।

(पृष्ठ १५६)

महाकाव्य का अन्तिम पर भा कवि मानवता का मंगलनामा रना है ।
दमित म मान

जग म मन्द दाप जयें ।

जीवन के धवनार बनकर रने प्रतीय जयें ।

पूण सत्य की प्रभा विश्व म निमन बितर
ज्योति-पव म स्नात रूप मानव का निगर
मत्य शक्ति शिव ओ मुन्दर क पय म जोर चन ।

× × ×

शिव का सागराय शिव म मगतवाग
नान शक्ति युन बन शय का चिर प्रतिहाग
शिव जावन की कल्पलता पर था जावत फने ।

इस प्रकार पावता महाकाव्य म नारताय ससृष्टि क विराट रूप का अक्षिप्त करने का भाव छपटा हुआ है। आज के विश्व जावन म मानव का गकटापन्न स्थिति कुण्ठित आत्म चेतना जोर भयावह बानावरण का मूढ कारण मानवाय चिन्तन बाध क स्तरा म मिश्रुलन जोर बौद्धि जनविरोध है। इस परिस्थिति-दुःख का विधायक मानव का अहंराध है। इस अहंवाध का व्यावहारिक दष्टि म विनाश क दुःख आणविक अनुसंधाना का स्वच्छ विनाश बौद्धि अनि या चेतना का अक्षिप्त म भी कहा जा सकता है। हमारे युग जीवन म भोतिरनावादा मूल्या का अर्थ पराकाष्ठा न मानव का जात्यात्मिक जात्यादा का आवृत्त कर युग-अत्य की स्वाहृति स भी पराट मुग कर दिया है। मर और जट का अद्य-भाषना म निष्पन्न चेतना इतप्रम आर विरुद्ध ज्ञान-ज्ञान विषयनकारा तत्त्वा पर अज्ञानस्थित रहन जगी है। परिणामस्वरूप समग्र सामाजिक समष्टि म विषयनकारा म्हाद्यमायत शक्तिदा परम्परा म म्हापित मूल्या क मूला-दहन म अनवरत रत है। समाज क विषयनकारा तावा न सासृष्टि-र तावना-गो का अवचनता भा प्रारम्भ कर गे। जोर महा कारण है कि हम समाज क अनुसन्धान म अगम्य हा गे। जगी परिस्थिति म साहित्य क्या कर सकता है? एक प्रश्न है। जम्मु—

वर्तमान युग क इस परिस्थिति दुःख म सचन साहित्यकार जागृत कलाकार और अन्वेषनता क अनुसंधाना करि का कथक पावता आवन बाध का निष्ठा निर्देश कर स्थिति मानवता का प्राप्ति पय पर स्थितान करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति स पूव हम हम का अज्ञान अज्ञान जोर निष्कूल्य सासृष्टि-र माना का स्वाध्याय मद्यम क लिए जागृत कर विरुद्ध मन्त्र प्रसारण का आवश्यकता थी। हम युवाग शक्ति का आर पना उन्नायन साहित्यकारा न निष्ठा। प्रणाली क म स्तर मर कथन का पुष्टि करण

शक्ति के विद्युत्कण जो यस्त
विकल विम्बर हृ हा निरुपाय ।
समन्वय उनका कर समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय ।

(कामायनी थ्रडा सग)

तत्कालीन परिस्थितियाँ म समाज के शक्ति-जग व समन्वय की आज
शयकता थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जीवनादर्शों के सगठन की समस्या
बनवता हानी जा रहा है । सामाजिक जीवन मूल्याँ व सुगठन क लिए
सम्भृति रूपी वट वक्ष के अतिरिक्त सुख और शीतलच्छाया स्थल की कल्पना
नहा का जा सकता । भारतीय समाज और जीवन का विविधताओ
(Diversities) का सगम सम्भृति ही बन सकती है । धम जाति वग प्रान्त
भाषा या यथावत सगठन जाज के सघष-युग म ऐक्य व प्रतीक (Symbol of
Unity) नहा बन सस्ते । वसे सम्भृति म इन सब इकाइयाँ (Unities) का
भी समन्वय हा जाता है । डा रामानन्द तिवारी भारतीयन्दन ने पावती
महाकाव्य म उसी साम्भृतिक वट वक्ष की छाया प्रदान का है । उनका साम्भृति
निरूपण विषटित मानव मूल्याँ व सगठन का प्रशसनीय प्रयाम है । सत्य शिव
सुन्दरम् जीवन व शाश्वत मूल्य हैं । सत्व शीत और नय भारतीय सम्भृति क
अमोघ अस्त्र रह हैं । डा० तिवारी न इहा चिरन्तन सगठन-तत्त्वा का युगानु
रूप पुनमूल्यांकन किया ह । पौराणिक कथा-सत्य को उहाने युग सत्य और
सामयिक परिस्थितियाँ के अनुकूल हा चित्रित किया है । पावती महाकाव्य
का शिव सम्भृति निरूपण उनकी कायकता चिन्तनशक्ति और प्रसर मधा
का सबन प्रमाण है । इम दष्टि स पावती महाकाव्य की रचना कामायनी
जम विश्व महाकाव्या का परम्परा म ठहरता है । पावती सच्च अर्थों म
महाकाव्य ही नग अपिनु महाकाव्य भा है—एसी मरी विनम द
धारणा है ।

‘सारथी’ महाकाव्य वैचारिक पृष्ठभूमि

है। इस सबका कारण क्या है? निवारण का उपाय क्या है? अनुरणाय माग क्या है? य आज युग-जावन क प्रश्न जीर समस्याए हैं। इन प्रश्ना का उत्तरदाता काव्य ही हमार युग का महाकाव्य है। इन समस्याओं क सघान जीर समाधान म रत साहित्यकार हा महाकवि कहलाने का अधिकारी है। अस्तु—

उम महाकाव्या की परख इन मानदण्ड पर करनी चाहिए। प्राचीन साहित्याचार्यों द्वारा निर्दिष्ट लक्षण जीर बहुचर्चित मायताए आज महाकाव्या लोचन क निरूपेक्षितप्राय हा चुका ह।

हिन्दी क वर्तमान युग म महाकाव्य मृजन दुत गति स हा रहा है। हरिऔधजी क प्रियप्रवास स उकर त्रिंशत्ता क सारथा तक उगभग ४ महाकाव्य निव जा चुके है। ऐसे महाकाव्य कम ह जिनम हमार युग जीवन क सघप का यजना हा। जिनम मानव क अन्तर्घटन विकासी स्तरा का स्थापित करन का विराट प्रयत्न हा जिनम शाश्वत जावन मूल्या की प्रतिष्ठा का जाग्रह हा। जिनम वचारिक विज्ञान जीर आरम-शान्ति क द्वारा मानव म जाम्था विश्वास और सौहार्द्र भाव क नव जागरण की शक्ति और सामर्थ्य हा। जयशकरप्रसाद क कामायनी काव्य म निश्चय हा जावन सया का स्थापना ह है। कामायना म हमार युग का उन्नत वाच अपन व्यापकतम परिवेश म प्रतिफलित हुआ है। उमम मानव क अन्तर्ब्याह्य द्वार हृदय-बुद्धि क सघप प्रवृत्ति क प्रम और प्रकाप वक्तिया का स्वाथ-वामना जीर अथ प्रवचना स्फ-आकषण और काम-वासना शोषण और नारी-जीवत्य जाति युगीन समस्याओं का चित्रण जीर सावहारिक निरूपण प्रस्तुत किया गया ह। उसा प्रकार की दूसरा रचना डा रामगापान शमा त्रिंशत्ता वृत मारथी महाकाव्य है जा राजस्थान साहित्य अकादमी क अकादमी पुरस्कार स सम्मानित हा चुका है।

कामायना म मानवता क जनक मनु का क्या है। सारथा म स्वय मानव का अन्वित है। कामायना म उदा जीर मनु क जाग नव-मृष्टि विधान हुआ—मानव क मितन स मानव उत्पन्न हुआ। मानव न बुद्धि का साथ किया। उमक पश्चात मृष्टि क विकास क साथ मानव म बुद्धि का अपूर्व विकास किस प्रकार हुआ? मानवता किस जाग गया? उमका भविष्य क्या है? जाति प्रश्न शय थ। इन शय प्रश्ना का उत्तर मारथा महाकाव्य है। दूसर शब्दा म इतिवृत्तामक दृष्टि से सारथी महा

वाक्य में 'कामायनी' न पूणत्व प्राप्त किया है। कामायनी' के कथात्मक पूर्वार्ध का सारथा उत्तरार्ध है। मारथा महावाक्य में मानवता के विनाश के यथापत् और कामनैतिक परापर विचार हुआ है। इसमें परम्पराशा का अनुमान भी है और प्रगति का सम्भावनाशा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण भी। विज्ञान-युग का अर्थ प्रगति में प्रगति और नयाज्ञान मानवता के नैतिक परापर विचारपूर्ण एवं मननमानवता में मानवता है। मारथा महावाक्य में जावात्मक परापर की अपेक्षा धौद्वितीय प्रवृत्त है। 'सम' शब्दों में मारथा का अपेक्षा वचार्थिक विभूति का उपरार्ध अधिक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत प्रसंग में मारथा महावाक्य का विचारणा का ही सम्प्रदान का प्रदान करेंगे।

मारथा महावाक्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार-परिधि त्रिपुर कल्पना है। त्रिपुर-कल्पना एक प्राचीन रूपक है जिसका उद्देश्य बौद्धिक और शैक्षणिक बला एक परवर्ती माहिय में भा मितता है। पारार्थिक कथाशा के अनुसार तारकामुर के वध के पश्चात् 'सर्व' नाम पुत्रा न तान पुत्रा का निर्माण किया। त्रिपुरा में पार-जयाचार प्रारम्भ हो गया। अतः 'व-मृष्टि' का प्राथना पर मित न एक ही वाग में त्रिपुर नाम के किया।

कामायनीकार ने भी त्रिपुर-कथा का यात्रना रूप में मग में का है। वहाँ मृत त्रिपुर-कथा का नाम और कम ताक के रूप में है। वहाँ शब्दों का समकाल में मार मितकर तय हो जाते हैं और समरमता के मिथान का सफलता सिद्धाधी गया है।

मारथा महावाक्य में त्रिपुर-रूपक का सुगत सपथ का पृष्ठभूमि के रूप में व्यञ्जित किया गया है। वहाँ काल प्रारंभ में मृतन-गतिवया जीवन मूर्च्छा और प्रवर्तितया के रूप में मग रूपक का 'परिधि' है।

मारथा महावाक्य के मृतया मग में शब्दों मानव का समता रही है कि वहाँ नाम भाग विवरण हुआ

गति के आरम्भ में जब
 यन विपाना ध बुताय ।
 पाग अपन गुरु जगुरु नर ॥
 और 'नर' भाग्य का विवरण किया था
 गब मनुत्र न रम मीग
 मानवा न वागता सा
 'न' शब्द के लिए था—
 'न' शब्दों में मग व

× × ×
 मृष्टि तव से चन रही है
 कम म है लीन मानव ।
 गान क जाघार पर सुर
 कर रह ह भाग नभ का ।
 आर भू जाकाश दा म
 त्रिपुर क शासक असुर ह ॥ (पृष्ठ ४२)

ऋदा न जाग कहा कि तपोपरांत शक्ति सहित शिव न मृष्टि का भ्रमण किया । देव दानव जीर मानव मृष्टिया का अवलोकन किया । व्मा अवसर पर शिव न मानव क अहम् क विषय म शक्ति स यन् कहा कि

मनुज कितना जड अभी तक
 अहम् की सामा नहा पहचानना है । (पृष्ठ ४८)

फिर समय की भयकरता का वर्णन है जा मृष्टि और मानव क विनाश का कारण है

बुद्ध वह दानव धरा पर
 नीट क पुर म सजावर ।
 जो भयकर रूप अपना
 नाग का हाता रचाना । (पृष्ठ ५१)

जिमरा परिणाम

नाग क ज्वानामुगा पर
 बठकर फिर मृत्यु गता ।
 मभ्यता क शिखर गिरत
 धून म मितता कताए ।
 जीर मस्त्रुतिया मनुज का
 आग म जन राख हाता ।
 त्रिन्तु वट तानव
 न फिर भी नरता है । (पृष्ठ ५१)

यन् ऋदा न क्या कि त्व वामना म रत है । मानव म कम का जन्म है । यन् विनाश का कारण है जिमका उपाय ताना का मन्त्रय है

मानव धरा पर मृग गगन म
 वागना ना कर ममवय
 कम भागें—गान का जमृत बनाए । (पृष्ठ ५६)

चतुर्थ सग म मानव व जम-याव का ऋणन है जिसम श्रम की महत्ता की यजना युगानुरूप हुई है

कमशील धन कर समृद्धि का
 मैं नृगार किया करता हूँ ।
 जपल पौरुष स निमग्न म
 म मौल्य अमित भरता हूँ ।
 धरती भर श्रम अबुद्ध ने
 सता म माना वरमानी ।
 हरी गातिया ने बभ्रव स
 घूम घूम मधु स्वर म गाती । (पृष्ठ २२ ५६)

मानव व गुजा गौरव की स्थापना इस सग का अत्यन्त विधान है

जम श्रिया मैं समृद्धि का
 काध्य बना गगात ब्राह्म ।
 पापाणा म प्राण तालार
 मन नभ का गात मुद्राप ।
 गित गित कर भर ब्रह्मा को
 श्रितिया १ जीवन पाया ।
 मग चिन्तन मनन विवचन
 कितन हा दशन धन आया । (पृष्ठ ५७)

मानव न गाचा कि बर परम्पराभा का निमाता है अमाप शक्ति ता
 जन्तु भण्डार है रोहनगर और रजतपुर का ध्वज बर गाता है घरा का
 धूलि म मिला सक्ता है अशुभा का शासन स्वयं तार म हटा करता है कामना
 व अन्वय म विर प्रकाश नी भर गक्ता है विन्तु

पिर क्या मग पौरुष मुक्त स
 लपा गा लिपता पिरता है ।
 जाज अनागत व नर न मा
 बाता करा अन्तर ररता है (पृष्ठ ५८)

मग धडा न मानव का परिश्रित-व्याप करारा । अडा न कहा—मानव
 जावन का न प अथ और काम नहीं — न लालन ना श्रुति नहीं द करता ।
 जाव जगत का नश्य करतु है पिर उम श्रुति न भय करा जावन व मायना
 का अन्त ररता म नश्यन करा । अरार बभ्रव तावर ना हूय न जान क्या ?
 जीवन प्रमाणांता है समरगता हा जावन की शीतलता है

जीवन तुझसे स्नेह मांगता
 तू उसका दत्ता है ज्वाला ।
 चिन्ता के सापाना से चट
 पीता विवृत बुद्धि की हाला ।
 भूत गया तू तृष्णा में जन
 जीवन की शीतल समरमना ।
 दौलत रहा जडना के पीछे
 सुप्त हुई जाती चेतनता ।
 पुत्र न भय स मुक्ति मिलगी
 जब तक त्रिपुरा के अधीन तू ।
 कम वासना पान समवय
 कर न रखेगा इन्ह तीन तू । (पृष्ठ ६५)

तभी बुद्धि आ गयी । बुद्धि का सग पाकर मानव न सोचना प्रारम्भ किया—

बुद्धि प्रिया भरी परिणीता
 मर जीवन का सवन है ।
 इसका त्याग कर मैं कैसे
 यह मर मन की हनचन है । (पृष्ठ ६६)

आग सारथा क कतिपय प्रमगीत ह । विस्तारभय के कारण उनकी प्रथम पक्तियाँ ही उद्धृत है

- १ तुम्हारे राग में अपना प्रिये ! मैं स्वर मिलाऊंगा । (पृष्ठ ७६)
- २ प्रिये चलो जीवन के मधुवन में जो वासन्ती फूल खिलाने । (पृष्ठ ८०)
- ३ स्वर नहरी के साथ मैंने जो वह मधुपान मधुर होता है । (पृष्ठ ८२)
- ४ मैं पतपड में क्या मनलब सरम मधुमास लाये हैं । (पृष्ठ ८४)

इस प्रकार गान गान बुद्धि के साथ मानव भ्रमण करता रहा । फिर एक
 कर जब उसने बुद्धि से उसका वनस्पत की मरम छाया की याचना की तो
 बुद्धि न बटा

ह मनुज ! मुझको कभी
 तुम विमा भी बिटु परया रोक कर
 पा नही सकत अटन विधाम वन ।
 तब क पय पर सना मैं घूमती
 वस्त में मरे खड़े तुम बिटु स
 बग्न बनकर देय सकत हा मुझ

किंतु मरी परिधि ता निस्ताम वह
ह जहाँ पर बिट्टु का स्थल न कोई भा बही ।
चाहत हो साथ रहना
त्याग दा ता कन्ठ को
और जा मुयम ममाआ
नष्ट कर अस्तिव निज । (पृष्ठ ८८)

मानव यह मुनर चकित हा गया । बोला
बुद्धि ! अब समया तुम्हारा भद सब
तुम मुख अनुचित निशा निगला रग
कम मरा ध्यय
सुर का जान है
वामना है भोय्य अमुग का प्रिय । (पृष्ठ ८९)

मानव न दग्ना म कन्ठ—मरा ध्यय कम है । तुम मुझे ताना पर अधिकार
निाना चाना हा जो मर निण अमम्भव है । मैं अपन अन्तर का विनय
त्रिपुग म नग कर सकना । मानव ने महा तक वह किया

मैं तुम्ह भी साथ रहना चाहता
किन्तु श्रद्धा क बिना मुमको प्रिय
तुम अवेना तो महा स्वीकार हा । (पृष्ठ ९०)

किन्तु बुद्धि न यह स्वाकार न किया

किन्तु मैं हूँ बुद्धि
मैंन ता समत्रय का कभी
माग अपनापा नहीं है आज तक ।
पाग श्रद्धा क पत्रेच कर भा मुये
बिट्टु पर रहना नग आटा नगा ।
मुम मुम गबान्त म आय बिना
पा नग सकत ।

मनुन ! भम त्याग ग । (पृष्ठ ९०)

बुद्धि क उत्तर म मानव बोप गया । उमन चौखर कन्ठ कि मुझे भूमि
पर ही रहना दा मैं यनी कितना जान और अमन्त्रय हूँ । किन्तु बुद्धि
न कन्ठ

पर अमम्भव हा गया
मौखर जाना मदी न भूमि पर

जीवन तुझसे स्नेह माँगता
 तू उसको देना है ज्वाना ।
 चिन्ता के सोपाना स चर
 पीता विवृत बुद्धि की हाला ।
 भूत गया तू तृष्णा म जन
 जीवन की शीतल समरसना ।
 लौं रहा जटता के पीछे
 सुप्त हुई जाती चेतनता ।
 पुन न भय स मुक्ति मिलगी
 जब तक त्रिपुरो के अधीन तू ।
 कम बामना नान समवय
 कर न रगगा इन्ह तीन तू ।

(पृष्ठ ६५)

तभी बुद्धि आ गयी । बुद्धि का सग पाकर मानव न सोचना प्रारम्भ किया—

बुद्धि प्रिया मरी परिणीता
 मर जीवन का सबल है ।
 इसका त्याग करूँ मैं कैसे
 यह मरे मन की हलचल है ।

(पृष्ठ ६६)

आग सारथा क कतिपय प्रमगीत है । विस्तारभय के कारण उनकी प्रथम पक्तियाँ ही उद्धृत हैं

- १ तुम्हारे राग म अपना प्रिये । मैं स्वर मिलाऊंगा । (पृष्ठ ७६)
- २ प्रिय चलो जीवन क मधुवन म दो वासन्ती फूल लिना दें । (पृष्ठ ८०)
- ३ स्वर नहरी के साथ लल जो वह मधुपान मधुर होता है । (पृष्ठ ८२)
- ४ म पतपड स क्या मतलब सरम मधुमास लाये हैं । (पृष्ठ ८४)

एक प्रकार गीत गात बुद्धि के साथ मानव भ्रमण करता रहा । फिर एक
 कर जब उसन बुद्धि स उसक वशस्थान की सरम छाया की याचना की तो
 बुद्धि न कहा

ह मनुज ! मुझको कभी
 तुम किमा भी बिट्ट पर पा रोक कर
 पा नगी मकत अटन विश्राम वह ।
 तव क पथ पर सत्ता मैं घूमती
 वस्त म मर खान तुम बिट्ट म
 बन बनकर दख सकत हा मुझ

किन्तु मरी परिधि ता निस्सीम बट
है जहा पर विटु का स्यल न बोई भी बही ।
चाहत हो साथ रहना

त्याग दा ता बट्ट का
और आ मुझम समाओ
नष्ट कर अस्तित्व निज ।

मानव यत् सुनकर बकित हा गया । बोना

(पृष्ठ ८८)

बुद्धि ! अब समया तुम्हारा भेद सब
तुम मुय अनुचिन जिशा जिचना ग्या
कम मरा ध्यय
सुर का जान है

वामना है भाग्य अमुग का प्रिय ।

(पृष्ठ ८९)

मानव न लडना म क्या—मरा ध्यय कम है । तुम मुय ताना पर अधिकार
जिलाना चांती हा जा मर तिए अमम्भव है । मैं अपन अस्तित्व का विनय
त्रिपुरा म नया कर सकता । मानव न यहा तक कह जिया

मैं तुम्ह भी साथ रखना चाहता

किन्तु थडा क बिना मुझको प्रिय
तुम अकली तो नहा स्वीकार हो ।

किन्तु बुद्धि ने यह स्वीकार न किया

(पृष्ठ ९०)

किन्तु मैं हूँ बुद्धि

मैंन ता समन्वय का कभा

माग अपनाया नया है आज तक ।

पाम थडा क पहँच कर भी मुझे
विटु पर रकना नही अछा लगा ।

तुम मुझ एकांत म आय बिना
पा नहा सकत ।

मनुज ! भ्रम त्याग ग्या ।

(पृष्ठ ९०)

बुद्धि के उत्तर म मानव काप गया । उमन चीपनर कहा कि मुय भूमि
पर ही पहुँचा दा मैं यहाँ कितना जान और जमनाय हूँ । किन्तु बुद्धि
न क्या

पर अमम्भव हो गया

सौत्कर जाना यहाँ स भूमि पर

एक क्षण में दबता दानव यहाँ
छन्न वात महा संग्राम है ।
तोहूँ क जा अस्त्र मीं दे तुम्ह
जग्नि का जाश्रय दिया था भूमि पर
जाज तोहपुर के पाय स
ठीन उनरा हो चुके असहाय तुम ।
और मुझको भी उन्ही का साथ
रजतपुर तज मुद्र म
रज्जना पडगा विवश हा । (पृष्ठ ६१)

बुद्धि ने क्या—म अपनी उपधा का देना स प्रतिशाप लूगी । अत तुम भा
दानवा का साथ दा । और यदि मरी जाना न मानोग ता तुम्ह असहाय छा
कर म चनी जाऊगी तथा मनु द्वारा निर्मित समस्त मृत्ति का महार हागा ।
मानव विगम परिस्थिति के द्वन्द्व म फसा था

भात मानव चीखता ना
गोता उन्भ्रान्त हाकर—
बुद्धि ! मरा बुद्धि ! जा मरी प्रिय ।
तुम मुझ असहाय छोला मत ग्या ॥
म करुणा जब बही जा चान्ता
राग म मितना पड चाह मुझ मरी प्रिय । (पृष्ठ ६३)

इस प्रकार मनुज बुद्धि पर आसुरी तमस छा गया । वह विनासी हा गया ।
उमम मानव सस्कृति की सभी विपत्ताएँ आ गयी । फिर युद्ध हुआ । देव और
दानव का कुछ नया विगम । मानव मृत्ति का विवश हो गया

किन्तु नया परिणाम नया कुछ क्याकि वास्तना सरि म ।
अमुर नया जीवित हा उठत बार बार नन्ने थ ।
नव नया मर मर क्याकि व जमर जीव ममृति क ।
अमरिया का छना भाग व जाव स्वग नगर म ।
किन्तु मनुज की मृत्ति घन पर बठ बुद्धि का राइ ।
निमाणा का मम राव पर जविरन अत्र यानता ।

(पृष्ठ १०५)

तब बुद्धि का छा मानव शिवा व गमान विमल रना था और थडा का
पुनार रहा था

“दूर बुद्धि का छाड़ जाज जो
शिशु सा सिसर रहा था
थड़ा ! थड़ा ! का पुनार था
भूज चतुर्दिक भरती । (पृष्ठ १०६)

तना मानव की प्रायना पर ज्यातिवसना थड़ा कलास शिगर स आयी ।
उसन मानव का जावन का रहस्य समझाया । वह रहस्य था आरमानन्द का
उपलधि का । वह भोग और तन का नहा वरन सूभ भाव विषय है जिसके
ममझने पर कुछ भी पाना शोप नहीं रहना । उम ममचन के लिए दजन और
विचान की भी आवश्यकता नहीं रहती । उम आनन्द का विश्लयण ब्रह्म ना
नहा कर मक्ते । उमके अनुगमन म बुद्धि सहाय नहीं बन मक्ती । थड़ा ने
कहा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ही जीवन के शाश्वत भूम हैं । बुद्धि न ता तुम्ह
विचलित किया है

या आतन अब आडम्बर
तुम्ह बुद्धि न दनर
भूय अम् का दास बनाया
सत् शिव सुन्दर लोकर । (पृष्ठ ११६)

और—

महानाश के पहले मैंने तुम्ह सचेत किया था ।
शिव और उसकी महाशक्ति का तुमको ज्ञान दिया था ।
समचाती हू आज तुम्हें फिर तुम उसको पहचानो ।
आस्तिक बगो आस्था लेकर भद सृष्टि का जानो ।

(पृष्ठ ११७)

थड़ा ने कहा कि देव-दानव के सग्राम म भी त्रिपुर जल नहीं पाया ।
क्याकि देवा ने जान बल हा लगाया था । मानव ! तुम हतचेतन मन हो । देव
भी त्रिपुर ध्वंस के लिए प्रयत्नशील हैं । मानव थड़ा की वाणी म सजग हो
उठा । उसकी कनाल मुग शान्त हो गयी

यका हमारान जान पराजिन
साहस और पराक्रम ।
हे शिव अमरनाक की सुपमा
तम म डूब रही है ।
नाश करो या तो त्रिपुरा का
या फिर सृष्टि प्रलय हो ।

हार दनुज से फिर हताश हो

जरण तुम्हारी जाये ।

(पृष्ठ १२५)

तभी एक वाणी गूजी कि जिसम जान और कम विभाजित है उम शिवत्व प्राप्त नहीं हो सकता । देव जानब और मानव अपनी अपनी लक्ष्य साधना में भ्रष्ट है । इसीलिए ब्रह्मा भी सृजन विधान में सफल नहीं हो पा रहे हैं ।

शिवताया ने समवत स्वर से शिव और शक्ति की प्रार्थना की—

विश्व विधाता हम नाण दो

दनुज त्रिपुर के भय से ।

(पृष्ठ १२२)

तभी शक्ति ने त्रिपुर सहार का आश्वासन दिया—

अमर मुनो सहार त्रिपुर का करने शिव उद्यत है ।

सावधान हार तुम उनके साथ समर में जाओ ।।

पृथ्वी का रथ चक्र सूर्य शशि

अश्व वट हा चारा ।

ब्रह्मा उनके बन सारथी

गति भू जम्बर छी मे ।

शिव हागे मर्त्य में करने नाश त्रिपुर का ।

अपने त्रिपत्नी रूप विष्णु को ज्यातिवाण बनाकर ।

(पृष्ठ १३३ ३४)

शक्ति के इस स्वर से समृति मंगलमयी हो गयी । प्रकृति में उल्लास छा गया । ब्रह्मा ने मानव को जागरण के गीत सुनाये । सम्पूर्ण नवम मंगल उद्बोधन गीता की योजना है ।

अंशम संग में शिव ने सृजन-कर्म में तीन ब्रह्मा का सारथी बनाकर रथान्तरे त्रिपुर लक्ष्य किया । शिव के जालाक शर ने त्रिपुर-नाश कर दिया । पृथ्वी पूर्ववत् ज्याति चक्र से चलने लगी । प्रकृति की नूतन सुपमा से मुक्त सृष्टि सृजन हुआ । मानव भूमि पर जान बामना और कम का समन्वय हुआ । सृजन की यत्न सुन्दर बना था

मनुज रहा था श्रेष्ठ

ब्रह्मा रचती मोक्ष महोत्सव

बुद्धि अनुसरण करती

अथ काम औ माय था

जाज नहा था पथक माय था

जनता समरम करता ।

(पृष्ठ १५२)

ऐसा सृष्टि में मानव को प्राणा में जन्म का पिपासा नहीं वह शुष्क बुद्धि मांग का अनुचर न था। शस्त्रों के बल पर विषय लेकर वह रण न छोड़ता। वह श्रद्धा के मकत पर चढ़कर भू का ही स्वर्ग बना रहा था। मिथु को वह रत्नराशि के लिए हाथ्यता था। मानव का निर्मित व्यक्ति न हाकर सामाजिक मगन और सुख-समृद्धि का कारण थी। वह भौतिक निर्देशन में न रहकर आत्मिक आदेश मानता था। उसके समाज में बन्धन की बुद्धि थी। बुद्धि और वासना से वह श्रद्धा को पूजा करता था। उसकी वाणी में प्रार्थना भाव में समर्पण जीवन के हर क्षण में नीति और पवित्रता थी

वाणी में प्रार्थना समर्पण भरा भाव उसके।

जीवन के हर एक कृत्य में नीति और पारंगता। (पृष्ठ १५८)

उसकी वाणी की वादना के स्वर यह थे—

सबके हित की वरु कामना।

ज्ञान साथ दे उसना।

जीवन रज का सफर सारथी

वनू शिवम् के पथ पर। (एकान्तक संग पृष्ठ १६०)

इस प्रकार 'सारथी महाकाव्य' में त्रिपुर रूपक की पौराणिक अतिवृत्तात्मक पृष्ठभूमि पर विराट कल्पना के माध्यम से युग-जीवन के मघप की सामयिक शक्तियों की गयी है। सारथी महाकाव्य में मानव की घोर अशुद्धि का निषेध और अतिराग परिणामों की विडम्बना की ओर सचेत किया गया है। आज का मानव बुद्धि बन्धन एवं विज्ञान के बल पर नक्षत्र मण्डल के बंधन के लिए प्रयत्नशील है। अणु अस्त्रों के अनुसंधान द्वारा विनाश के उपकरणों का संयोजन में रत है—उसके परिणामों की ओर भी सारथीकार ने, अनागत का कल्पना कराकर इंगित किया है। साथ ही जीवन के शाश्वत मूल्यों (सत्यम् शिवम् सुखम्) के अनुसरण और प्रवृत्तियाँ (इच्छा, पाप क्रिया) के समन्वय पर बल दिया है। कामायनी और पावती महाकाव्यों में भी इसी प्रकार के भाव्य प्रयोग हैं किन्तु विचारिक दृष्टि में त्रिपुर रूपक की युग जीवित के बान्धन विकास क्रम के सम्बन्ध में चिन्तन की परिणति निश्चय ही सारथी महाकाव्य में 'कामायनी और पावती' से भी जाग है। उसमें परम्पराओं के अनुमानों में प्रगति का पथ प्रदर्शित किया गया है। सारथी महाकाव्य की विचारणा निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है। उसमें बतमान जावन के लिए सन्देश है। आधुनिक काली महाकाव्यों का मूलन-परम्परा में सारथी एक नवीन और महत्त्वपूर्ण उपनिधि है।

‘दमयन्ती’ महाकाव्य का कलात्मक सौन्दर्य

‘दमयन्ती’ महाकाव्य का कलात्मक सौन्दर्य

भारतीय महाकाव्य का परम्परा का विवसित करन म पौराणिक वाच मय का महत्वपूर्ण याग्यन रहा है। महाकाव्यकाग न पौराणिक जाग्याना (कथानत्व) क माय-साय पुराणा का शिल्प विधि (शलातत्व) आर वचारिक निधि (विचारगतत्व) का भा ग्रहण किया है। सस्कृत साहित्य म पौराणिक पात्रा आर जाख्याना के आधार पर उत्कृष्ट काटि की नाटय रचना आर काव्य-मृजन हुआ है। सस्कृत क सबधच्छ महाकाय कुमारसम्भन रघुवश किराताजुनाय शिणपान वध एव नवधीय चरित्र भी पौराणिक इतिवत्ता पर आधारित ह। पौराणिक शत्री क महाकाव्या की जशुण्ण परम्परा पालि प्राकृत अपभ्रंश आदि भाषाया म भी मिलता ह।¹ हिन्दी का सबधच्छ महाकाय रामचरितमानस ता पौराणिक महाकाव्य ह हा भक्ति-परम्परा क अय महाकाया पर भा पुराणा का प्रभाव स्पष्ट है। आधुनिक-युग म भी पौराणिक उपास्याना एव पात्रा पर अनक महाकाया का रचना हुई है। उन्नाहरण क लिए वतमान युग क प्रियप्रवाम माकत साकत-सत कामायना कृष्णायन बन्हा वनयाम त्यवश अगाराज ‘रश्मिरथा संतापनि कण पावता जयभारत एवलय ‘उमिता’ कक्या तारक यय’ कुदभय उवशा रामराय ‘श्रीरामचन्द्राय आदि महाकाया की रचना का आजार पुराण हा ह। इमा परम्परा का रचना आ ताराचन्द्र हारीन रचित नमयन्ता महाकाय है। दमयन्ती महाकाव्य का कचारमव आधार मुप्रसिद्ध ननापाख्यान है। महाभारत क विभिन्न आख्याना म नल-नमयन्ता उपास्यान मय धम जीर सनीत्व क व्यावहारिक आण का पावन प्रतीक है। इमालिए ननापाख्यान का लवर विपुन माण्य का रचना हुई ह। सस्कृत क श्रीहृष (१२वा शताब्दी) का नपथाय चरित्र, रामुत्व कति (१४वा शताब्दी) कृत नलाय² धामनभट्ट (१५वी शताब्दी) कृत नलाभ्युय³ प्रसिद्ध महाकाव्य ह। मवन १९९० म

¹ डॉ० गम्भूनायसिंह हिन्दी महाकाव्य का स्वल्प विशास अध्याय ०

² वाचस्पति गराना सस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० ८६८

³ वही पृ० ८६९

पुराहित प्रतापनारायण कविरत्न (जयपुर निवासी) ने १६ सर्गों का नलनरेश नामक महाकाव्य लिखा था।^४ नलनरेश महाकाव्य में काव्यशास्त्रीय लक्षणा का सतक अनुपादन हात हुए भा उसमें महाकाव्यात्मक जीवत्त का जभाव है। सम्पूर्ण काव्य में इतिवत्तात्मकता का प्राधान्य है। छायावाद युग की रचना हात हुए भी नलनरेश युग का काव्यात्मक प्रवृत्तियों का अनुरूप नहीं है। इस काव्य के लगभग २५ वर्ष बाद प्रकाशित होने वाली कृति दमयन्ती महाकाव्य में निश्चय ही कवि ने मौलिक प्रसंगोदभावनाएँ की हैं। हारीतजी ने नए दमयन्ती के प्राचीन आर्याण का युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नियोजित किया है। इस काव्य में नए और दमयन्ती के चरित्र राष्ट्रीय जावन का सांस्कृतिक आन्ध्र प्रस्तुत करते हैं।

दमयन्ती महानायक रूढ काव्यशास्त्रीय लक्षणा का सामान्यतः निर्वाह हुआ है किन्तु साग्रह या प्रयत्नज नहीं स्वाभाविक रूप में। सम्पूर्ण काव्य १४ सर्गों में विभाजित है। कथानक पुराणसम्मत है। नाटकीय संधियों की सफल योजना है। बीच बीच में जवातर कथा प्रसंग भी प्राप्य हैं। महाकाव्य का नायक राजकुमार नलनरेश है। यद्यपि दमयन्ती के चरित्र विश्रुतियों की दृष्टि प्रमुख होने से नायिका का व्यक्तित्व ही अधिक मुखरित हुआ है। प्राकृतिक सौन्दर्य और जावन के विभिन्न यापारों और परिस्थितियों का भी सुंदर चित्रण हुआ है। पौराणिक इतिवत्त होने के कारण अतिप्राकृत कथातत्त्वा की भा अधिकता है। अलंकार विधान भाषा सौष्ठव रूप-संगठन और शिल्प प्रयोग परम्परित और नवाने दाना हा हैं। मंगलचरण छन्द विधान (समात छन्द परिवर्तन) चतुर्धम फल प्राप्ति सञ्जन स्तुति दुजन निम्न जादि महाकाव्य रुचिया का भी विधिवत् पानन किया गया है। रस-परिपाक और भाव चित्रण कौशल भी सुंदर बन पता है। करण रस के कतिपय प्रसंग बड़े हृदयद्रावक हैं। सारागत दमयन्ती महाकाव्य काव्यशास्त्रीय लक्षणा की दृष्टि से सफल रचना है। किन्तु किमा भी महाकाव्य का उपयुक्त मूल्यावन परिवर्तित काव्यशास्त्राय मान्यण्डा और युगीन काव्यान्ध्रों की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं अपूर्ण है। जाज के महाकाव्यकार का दायित्व युग जीवन की चेतना का आमसात कर जावन कथानक महत्वपूर्ण नायक गरिभास्य उन्नात शना और गम्भार अभिप्रेरणा गती के माध्यम से महत्दृश्य की सिद्धि है। हमार युग जावन की समस्याओं का सामूहिक समाधान और प्रश्नों का निम्न जाज के महाकाव्यकार का चेतना के मूल स्वर होने चाहिए। विज्ञान युग के

^४ डा० शकुन्ता टुंग काव्य रूपों के मूल स्वर और उनका विकास पृ ७५

जाणत्रिक बर्तव्य म काव्य रचना पर सांस्कृतिक प्रथम चरण या अपना अस्मित रक्षण कर सकता है। जयया प्राचीन जात्याना का पुनरावृत्ति आत्म प्रवचना क अतिरिक्त कुछ नहीं है। काव्य या सस्कृति का उच्च भूमिका पर प्रतिष्ठित करने क लिए महत्वा काव्य प्रतिभा वचनता ताम प्रथमा समाज चेतना और जावन माधना का आवश्यकता हाता हू जमी कि कविवर जयशकर क यनित्व म था। इसलिए वह मात्र-भुग का श्रम जो परमाण-युद्ध क भय स आज्ञान मानवता का कामायना मन्त्राय क मायम म ममग्मना और धानन्वा का जमर मन्त्र प्रदान कर सक। म कहा प्रतिमाता क आधार पर दमयन्ता क महाकाव्यत्व का परीक्षण करग। मूयारन क लिए हमारे पास तीन प्रमुख रचना उपकरण है—कथात्मक शिल्प विधि और वचारिवता। प्रश्न यह है कि इन उपकरणों क संगठन म हागतता न किस सामा त्व पूर्ववर्ती लयका का अनुगमन किया कहा तब वह असम्भूत रह और जिस काटि का मानिक मूल्य रूप का उपयोग कर उहान अपना प्रतिभा का परिचय दिया।

ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि दमयन्ता महाकाव्य का कथात्मक जायार प्रसिद्ध पौराणिक वस्तु (नापापादान) है। जत वस्तु अनुत्पाद्य है। किंतु वस्तु के मयाजन एवं चयन म कवि का कल्पनागिन मवथा शोधनाय है। धरना-व्यापार और मग विधान म परम्पर अतिरिक्त और पूवापर प्रसंग सम्पद्धता है। कथात्मक मुषिष्ठिर और पुराहित क सवा स हाता है। धमराज अपनी व्यथा का चर्चा कर स्वयं का ससार का मवम अभागा और दुःखघ्न यकिन कहत है। तभी पुराहित नवराज का क्या का जारम्भ करत है। काव्य क जारम्भ का त्री पौराणिक है। काव्य या मगनाकरण मानृभूमि या वाना स हुआ है जिसम कवि का गल्याय भावना प्रकृतित गता हू

‘धय धय है अम्ब भगत म तुम हा धया।

हू मा ! तुम मा नया विश्व म जया ॥

मुहुः तुम्हारा शिमगि म गाभिन हाता है।

पाः तुम्हारे अम्ब स्वयं अम्बुधि हाता है ॥

(प्रथम मग पृ० १)

तन्त्र कवि विश्व जावन का परिस्थितिया का उत्पन्न करना हुआ निमाण का प्रतिभा करता है।

मानवताय मुत्तमा का नीति कवि न आप कवि-वन्दना है य प्रथम रचना उद्देश्य आति श्रिया का निवाह भा दिया है।

घम्ये । महाकवि व्यास । प्रणति तुमका शत शत है
घम्ये लसनी मुन । तुम्हारा निश्चय है ।

× × ^
किन्तु हुए जा मनुज विपद म पड ऊन स
पत्कर यह जाह्यान जभाव भर यत् उनका ।
हगा म कृतकृत्य दुखीध हरे यत् उनका ॥

(प्रथम मग पृ० ६)

कथानक म वास्तविक गति पंचम मग क उपरांत आता है । मुरपति और अय दवगण नल को सम य दमयती क स्वयंवर क लिए जात दसवर माग म लमस इस बात का वचन न लत ह कि वत् उनका दूत बनकर दमयन्ती क पास जाय और उस दवताआ का वरण करन के लिए उद्यत कर । सत्यप्रता और घमनिष्ठ नरेश घम सवट म पड जाता है । मन सघष करता परिस्थिति द्वन्द्व स जूझता वह दमयन्ती क पास जाकर सभी दवताआ क वभय का विराट वणन कर दमयन्ता स दवा का वरण करन का आप्रत करता है । किन्तु दमयन्ती दृष्टप्रतिभ रहती है । तत्परात्म स्वयंवर हा जाता है । नन हा दमयन्ता का पात है । कति तस त्वापमान समग्रकर नरेश क सवनाश पर तुन जाता है । फिर द्यत व्रीडा म छध म नन का राय स निर्वामित हाना पत्ता है । जाग का सारी कथा गतानुगतिन ह । कथानक म पौराणिक मायनाओं का ज्या-का-रथा ग्रहण किया गया है । जस कतिन म कठिन विपत्ति म भी नरेश का घमनिष्ठ तथा दमयन्ती का कन यपरायण चित्रित किया गया है । सत्य घम जोर कत य की विवणा का समस्त काय क कावर म अपूर्व प्रवाह है । नन का व्यक्तित्व ना महान ह—

‘ दव सम उसका कात शगर सकन गुण मुक्न धार वर योर
बहद युग तचन विस्तन भान युगन भुज है जाजानु विशान ।
बन व बन क अनुपम काथ वश हिम गिरि सा है निर्णय
दृश्य है अतुन धय का म्यान जोर ग्रावा है मिह समान ।

(द्वितीय मग पृ० २)

दमयन्ती क नग शिव-वणन म उपमाए परम्परित हा है—

नाक शक मा वत्न मय रत्नवरा
भर रत्न -या गतिन म मुक्तावता ।
चिनुव परम मनाय विम्बन भाव ३
अतिया पर पक्षम का घट जात २ ।

पूण मुख पूर्णेंदु सा उगता अहा
है मुना सौंदर्य जा बरसा रहा ।

(प्रथम सग पृ० ६ १०)

नख शिख बणन की अपेक्षा प्रकृति बणन में कवि अधिक सफल रहा है। प्रकृति को मानवीय उपलशात्मन उद्दीपन जानम्वन प्राप्ति मभा रूपा में चित्रित किया गया है। एक उल्लाहरण श्लोक—

चत पडौ रात नभ वरन हुआ पीना सा
पृथ्वी अचन पर हरित हुआ गाना सा ।
वह सुअभिसागिका गया चिह्न य छात्र
हनप्रभ स तार उमें पकन्न लौडे ।
मृच्छित सा विधु हो गया न वह गह पाया
जा पहुचा मद समार देल मुसवाया ।
वह ध्यजन डनाने उगा गघ म सीचा
हा विरगण तिमिर न हाथ घरा स लाचा ।
उत्थाचल पर रवि चढ शक्ति लीलायी
तव गीली आँगे उत्र घरा का पायी ।
मुख पोछ लिया कर बना घरा मुसवाया
सोया सो अपनी शक्ति शीघ्र ही पायी ।

(चतुथ सग पृ० ५८)

प्रकृति के इस हा सुन्दर और सुरम्य दृश्य काय के कवच में जाद्यापात उपनयन है। निपद्य दश एव कुण्डिनपुर प्राप्ति के बणन में कवि ने विणय कौशल का परिचय दिया है।

भाषा के सम्बन्ध में प्रस्तुत काय के प्रस्तावना तत्काल सुप्रसिद्ध कवि श्री गोपावन्तम नारज का यह कथन सत्य है— भाषा पर तो कवि का ऐसा पणाधिकार है कि वह उम जब जिस रूप में चाहे मान लेता है। प्रकृति चित्रण में उमका भाषा मगातात्मक आर कामन हा जाता है मराना में तिकन एव प्रभावपूर्ण लिखाया दन उगता है और तथ्य बणन में सहज मयग गज गामिना । नौ कुठ प्रयागा में पुनरक्तिन लाय अवश्य जा गया है। नगी शत्रु का प्रयाग जनक वार हुआ है। अकन तरणि के रूपक की यात्रना कवि ने लस पन्हे बार में भा अधिन की है जिसमें लम प्रयाग में नारगना आ गयी है। छत्र विधान विविधता तिम हूए है। सम्युत शत्रु का प्रयाग भी मूर हुआ है। काय में जनक स्थाना पर नाटकाय शत्रु के सफल प्रयाग जनकार

विधान एक वाग्बद्ध १ कारण ममस्पर्शी म्यता का याचना हा सती है। जय रसा के प्रासंगिक सयाजन के साथ साथ कर्मण रम का जपूव धारा काव्य के उत्तराद्ध में प्रवहमान है। द्यूत-क्रीडा प्रसंग के पश्चात् यद्यपि सभी प्रसंग कारणात् = किंतु दाम् सग म न्मयता का वाह्य वन म सात छात्र चल जान पर उसका प्रियाप हृदयविदारक बन जाना है। पनिपरायण दमयन्ती के चरित का यह स्थिति साता सात्रित्री राधा यशाधरा किसी भी नारा की मकटापन अवस्था में अधिक गम्भार एक दुःसह है। कवि ने वक्ष्ये स इत प्रसंग का मनावनामिक एक परिस्थितिजय समाहार किया है। यथा दमयन्ती के चरित का महानता स्पष्ट हुई है।

काव्य में भाग्यवाद एक दखवान का स्वर बड़ा प्रबल रहा है। नन की द्यूत क्रीडा ननानुज पुत्रर का दुर्व्यवहार विरह यथा एक तयावत् अन्य घटनाओं की कवि ने भाग्य का गुना पर तालन का प्रयास किया है। पौराणिक प्रतिवृत्तात्मक प्रसंगा के यत् भले हा अनुकूल हा किंतु विनाय युग के प्रभावान पाठक का द्यूत-क्रीडा नन का यसन हा नगगा न कि भाग्य का विडम्बना। काव्य में पात्रों की प्रवृत्तिया का युगानुत्प वौद्धिक समाधान प्रस्तुत नहा किया गया है। गाधावाण विचारधारा के जन्मा प्रम अस्पृश्यता निवारण समानता जादि सिद्धांतों का सफलता के साथ निर्वाह हुआ है। साकत का भाति यहाँ भी राजकुलान पात्रों में प्रजातंत्र के महत्त्व का समाना है। नन के य शब्द

है प्रजा धराहर मान रायसिंहासन
सग्रह म अत्युच्च त्याग का जामन।

युग के जय नायिका प्रधान मन्त्राज्ञा (प्रियप्रवाम साकत कामायना उमिला वल्हा-वनवास पावती नूरजहा मारा पासा की रानी उवशी जादि) की भाति प्रस्तुत महाकाव्य (दमयन्ती) में नारा चतना एक जागरण के महान स्वरा का उद्घाप भा हुआ है। जस

गविन का नारा है अयतार
उमस हा चनन है मसार।

(प्रियाय सग पृ० ६)

अथवा

विधि का सर्वानृष्ट सष्टि पुरपच यर्ग है
उसा गविन पर पूण विजय नारात्व रहा है।
अवता हा तुम किन्तु विपत् म वन ना तुम ना
विश्व मन्मथन ह मम वन ना तुम हा।

(दशम मग पृ० २०)

अथवा

'उपभाष्य वस्तु है नाहि कवल नर की ?

वह कल्याणा है प्रथम मान भर जय की ;

(चतुष्टय मग २८५)

दमयन्ती के चरित्र विश्लेषण द्वारा लगभग नवममान युग की नागरी चेतना का सुपरिचित रूप एक जाति स्थापन का स्तुत्य प्रयास किया है। युग के विरोधी प्रश्नों के सम्पूर्ण समाधान नागरी चेतना की अभिव्यक्ति मरत्य एक सतीत्व के घमासानों का स्थापना सामयिक विचारधाराओं की सफल यज्ञना उत्पन्न शला महान काव्यात्मक एक जीवन ज्ञान की जनकता प्रेरणा निश्चय है। दमयन्ती काव्य का एक विशिष्ट उपनधिर्घर्ष है जो उस महानाट्य का एक प्रमाण बनती है। काव्य का सर्वांगीण अनुशासन कवि की श्रेष्ठतम प्रतिभा की प्रशंसा करने का ही वाच्य करना है। हागीरजी हिन्दू की नवोदित प्रतिभाओं में। भविष्य में भी उनकी काव्य साधना कवि का गरिमापूर्ण कृतियाँ का उपलब्धि वरापत्ती प्राप्त जाणा है।

‘रामराज्य’ महाकाव्य • रामकाव्य परम्परा
की एक उपलब्धि



‘रामराज्य’ महाकाव्य रामकाव्य परम्परा की एक उपलब्धि

हिन्दी रामकाव्य परम्परा की जागृतापिना का सम्बन्ध प्रमुख रूप से आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण से है। रामायण और महाभारत भारतीय साहित्य साधना के अमर प्रताक हैं। यन्त्रज्ञाना ग्रन्थ महत्साहित्यिका से काव्य रचना का प्रणालिका अध्याय सात रह है। वैसे रामकाव्य का रूप का उपनिधि बन्धिका वाच्य मय से ही हान लगती है। रामकाव्य की प्राचीनता का सबसे अन्त प्रमाण यह है कि एतद्विषयक गाथाआ और उपाख्यानो की मृष्टि छनी शताब्दी ३० पू० से ही हान लगी आ।^१ प्रसार की दृष्टि से रामकाव्य विश्ववाप्य है।^२ किन्तु रामकाव्य का मय्यक स्वरूप प्रदान करन का समस्त श्रेय आदि कवि को गी है। विद्वाना सा मन है कि— विश्व साहित्य क इतिहास म शास्य हा किसी अय कवि का प्रादुभाव हुआ हो आ पभाव का दृष्टि से भारत क आदि कवि वाल्मीकि की तुलना कर सक।^३ ससृष्टन के रामकाव्य के कविमा न तो रामायण का आधार-मय्य क रूप म ग्रहण किया हा है हिन्दी क रामकाव्य रचयिताआ न तो प्ररणा प्राप्त का है। हिन्दी क सबसेच्छ काव्य ग्रन्थ रामचरित मानस क प्रणता गास्वामी तुलसीदास न भी आदि कवि क ऋण का साभार स्वीकार किया है। तुलसी के उपरान्त हिन्दी की सम्पूर्ण रामकाव्य परम्परा न रामायण का कथात्मक आधार के रूप म ग्रहण किया है। हिन्दी म मानस की रचना क अनन्तर रामकाव्य का एक मुनीध परम्परा मिलती है।^४

राम क जागृतापिना को लकर वनमान युग म अनक काव्यो की रचना हुई है। जाधुनिक युग क बहुचर्चित प्रबन्धकाव्यो म रामरमाण, श्रीरामचन्द्रोप्य रामचरित चिन्तामणि कागल विचार सावत वदहा-वनवास सावन

१ हिन्दी साहित्य कोश पृ० ६४१

२ डॉ० वामिन बुन्क रामकाव्य उत्पत्ति और विकास

३ हिन्दी साहित्य कोश पृ० ६४६

४ हिन्दी साहित्य कोश, हिन्दी राम साहित्य गण्ड, पृ० ८६५, ६६

मन्त उर्मिला कवया जाति के नाम उल्लेखनीय हैं। वास्तव में राम का चरित्र और कृत्य भारतीय जन जीवन की चेतना में जात्ममातृ बना गया है। राम का व्यक्तित्व भारतीय सस्कृति का जनिदाय विरापताशा (यथा सत्त शीत मर्यादा जास्था पुरपाथ जादि) का सगम-स्थान है। राम के चरित्र में युग जीवन की आकाशाशा को परितृप्त करने और मानव मूल्या का प्रतिष्ठा करने की अमोघ शक्ति विद्यमान है। स्त्रीतिराम की जीवन गाथा रामकाव्या का प्रतिपाद्य रहा है। अधिकांश काव्या में रामचरितमानस की भांति ही कथा का विकास हुआ है। हा कथा का प्रस्तुतीकरण और निवाह सभी में राम काव्यकारा का दृष्टिकोण भिन्न किंवा मौलिक रहा है। यह कहना अति उपयुक्त होगा कि चरित्र विश्रपण का काल विदु मानकर इन काव्या में राम कथा का परिधि विस्तार हुआ है। उदाहरण के लिए सावन माकेन मन्त उर्मिला वदेही वनवास रावण कवेया आदि काव्या का रचना एक पात्रा के चरित्र उत्पन्न के लिए हुआ है। जाना-स महाकाव्य (रामराय) सभी परम्परा की रचना है। किन्तु प्रतिपाद्य की दृष्टि से डा वनदेवप्रमात् मित्र के रामराय महाकाव्य का विशेष महत्त्व है। राय का भांति रामराय की परिवर्तना भी बहुत प्राचीन है। रामराय का आश राष्ट्र और शासन व्यवस्था का सूचक है। वाल्मीकि और तुलसी के कथा में रामराय की व्यवस्था के जिस रूप का अंकन हुआ है वह शासन-न्याय का प्रतिपाद्य का जन्म और अनाथा वस्तु है। डा शम्भूनाथसिंह का मत है— तुलसी न रामराय का जो कल्पना की है उमा का महात्मा गांधी न चोक्त न और स्वातंत्र्य के युग में भी अपना आश और नक्षत्र निश्चित किया। * विद्वाना न रामचरितमानस का मुख्य काय और फलाम रामराय ही माना है। मानस का महत्त काय का उल्लेख करते हुए डा शम्भूनाथसिंह न लिखा है कि— रामराय की स्थापना को तुलसी न कितना महत्त्व दिया है इसका अनुमान सभी में किया जा सकता है कि रामराय का सुव सम्पत्ता का वणन वाल्मीकिरामायण (उत्तर काण्ड मग ६६) और अध्यामरामायण (युद्ध काण्ड २२) में कवन कुछ ही छाना में किया गया है जबकि मानस में उसका वणन ११ दाहा (कडवका) में हुआ है। अत कथा की केवलय घटना का महत्तता का दृष्टि से राम रावण युद्ध रावण वध और रामराय की स्थापना ही मानस का महत्त्वपूर्ण काय है। अस्तु—

* डा शम्भूनाथसिंह हिंदो महाकाव्य का उदभव और विकास पृ० ५६

रामराज्य की धारणा भारतीय सस्टैबल और साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपपत्ति रण है। डॉ० जलन्धरप्रसाद मिश्र ने इसी महत्त्वपूर्ण कल्पना को रामराज्य महाकाव्य में साकार करने का प्रयास किया है। आज के विश्व-जीवन की अनवरत विपन्न समस्याओं में आशाशान्त व्यवस्था का स्थापना भी एक है। संसार की सभी शान्त प्रणतियाँ और राज्य की व्यवस्थाओं में नावतन्त्र का आज अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। किन्तु जनहित की भावना, लोकसंगल का साधना सामाजिक जन की सुख समृद्धि का संवर्धन और मानव मूल्य का संरक्षण इस व्यवस्था के द्वारा कहाँ तक हाँसता है आज विचारणीय है। हम विश्वसंस्कार (World Government) या विश्वराज्य की कल्पना कर रहे हैं। किन्तु राष्ट्रराज्य का रूप अद्यवस्थित है। आन्दोलन और क्रांतियों के द्वारा सरकारों के तन्त्रे उन्मूलित किए जाते हैं। व्यक्ति समूह के हितों की अवहेलना कर रहा है और बहुसंख्यकों का शोषण कर रहा है। शासना और शासिता में संघर्ष चल रहा है। व्यवस्था में संघर्ष हाँस दमन शोषण स्वाधिनियम पंचना पद्धति और भ्रष्टाचार व्याप्त है। जातिवाद क्या? जीवन मूल्यों के विघटन के कारण साम्राज्यशासन के पतन के कारण सामक और शासित में भाव-भाव्य के अभाव के कारण या सत्ताधारी की दुर्नीति के कारण? इस वातावरण में रामराज्य का जन्म काया की रचना निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है। इस काय प्रेरणा और प्रोत्साहन का वस्तु है। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या रामराज्य महाकाव्य वर्तमान जीवन की समस्याओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष समाधान प्रस्तुत करता है? क्या उसमें युग के उन्नत बोध का प्रतिबन्धन हुआ है? क्या उसमें व्यवस्थाओं के सांख्यिक आदर्श रूप का अंकन हुआ है? क्या रामराज्य की रचना मानने में रामकाव्य परम्परा को विकसित करने में समर्थ हुई है? अथवा क्या प्रस्तुत मृजत जिनके नाव्य जगत की उपलब्धि है? इन्हीं परिमन्त्रों में रामराज्य महाकाव्य का मूल्यांकन हम अभीष्टित हैं।

रामराज्य के मृजत की मूल प्रेरणा कवि का जातीय महावाक्यप्रसाद द्विवेदी से प्राप्त हुई था। काव्य रचना के उद्देश्य में जन-समुदाय का वर्तमान और हिन्दी के सौभाग्य की श्रीवृद्धि को प्रमुख कारण था, जसा कि कवि ने इस काव्य के भूमिका भाग में स्वतः स्वीकार भाँसा है। निश्चय ही प्रेरणा और प्रेरण्य माना महान् है। रामराज्य के रचयिता ने इस सद्यः का प्राप्त भी किया है।

रामराज्य की धारणा यद्यपि कल्पित विचारणा (Utopia) है। किन्तु

रामकथा की एतिहासिकता उस प्रामाणिकता प्रदान करती है। जन रामराय क प्रणता ने रामकथा को ही ग्रहण किया है। कथा का प्राग्भ उस स्थल स होता है जबकि निर्वासित राम सुमत्र के साथ रथ पर बठकर बट रह है। इस पूव के कारण प्रमगा (ककेयी का वर याचना और ळगर मरण आदि) का कवि न सकेन मात्र ही किया है। दमव सग म राम क राज्याभिषक का वणन है जीर इस पूव दूसरे से दमवें सग तर परम्परिन रामकथा है। काय के दो महस्वपूण सग ११ और १२ है जिनम व्रमश भारतीया के मानव धम की घोषणा जीर रामराय की व्यवस्था का उद्देश्य है। मच पूछा नाय तो क्यात्मक दष्टि से इस काय की मौत्रिक उपनधि अन्तिम णा सग ही है। रामराय क कथा चयन हेतु कवि न प्रमुग रूप स मानस का मुख्य आधार के रूप म ग्रहण किया है। किंतु कवि की सूझ कल्पना जीर मृजन प्रतिभा क कारण म काय म रामकथा अपन नवीनतम परिवश म प्रस्तुत है। मिश्रजा न भूमिका म कहा है कि— कथा का उद्देश्य कवन कथा नही किंतु राष्ट्रीय एकीकरण जीर मुराज्य स्थापना म सम्पन्न राम क प्रयत्ना पर अपनी मति के अनुसार प्रकाश डानना है। इतिहास म यन् विनमान का प्रतिबिम्ब न हो जीर भविष्य क लिए प्रेरणा न णा तो उस प्राय काय का विषय णा बनाया जाता। ग्रथकार एतिहासिक कथानक त्रित्त समय भा अपन युग को कम भुना सक्ता है ? परंतु हा उमरा कतय म् अवश्य णाना चाणिकि वह ऐसा काई बात न त्रित्त जा उसर कथानक क युग म न फव सन। (भूमिका पृ० ६) स्पष्ट है कि मिश्रजी न रामराय महाकाय की कथा निर्मिति म इतिहास की परम्पराका के निर्वाह क साथ साथ युग चतना का भी प्रतिबिम्बन किया है।

रामराय क प्रतिष्ठापक जीर मचानक श्रीराम है। कवि न राम के अविनत्व का निरूपण यथाथर्शा लासनायक क रूप म किया है। वह उह युग युग का प्रेरणा का धाम मानता है

यता युग क नहा राम ता युग युग क प्रणायाम है।

पूण पुरातन चिन् नवान क भाव गान ह्ययाभिराम है ॥

(प्रस्तावना पृ)

×

×

राम ब्रह्म हा राम विष्णु हा किंतु राम नर ता है निरक्षय।

युग ळ्या हा नया आप हा युग-वर्ता ना तो निगमय ॥

(सग १२ छ ८०)

गम मुमंत्र क माय रया वन गमन रर रह है उम जवमर पर उनर मन म विश्वरुत्व क भाव नाग्रन हा रर र

‘क्या मरा वरुत्व जवर का मामा म आरुद्ध रर ।
 क्या न विश्व का मानक, तग मृग तर मुसका निज वरु वर ॥
 तग वान ह वर मुजरा ता तम पर र भाग्न का ध्यान ।
 भगत यारा हा नागत का सर्वोत्पमय रर यान ॥

(प्रथम मग छल ६ २३)

रामचरित क अनर गायना न राम रावण-युद्ध का उत्तर-श्लिष क सघष का मता र है आय और द्रविड मस्त्वितिया का दृढ कन ह और इम विचारधारा का नकर हमार तग म बडो विपम स्थितिमा भा उत्पन्न हू ह । तगहारा क जवमर पर उत्तरा भारत क लाग रावण का पुतला जलान है ता दशिन वान गम की प्रतिमा का भी जनान तग र । मितरा न गमराय मन्त्रवाक्य म तय स्थिति का निदान स्वय राम क द्वारा हा वर मुन्त्र तग स कगया है

इमरा तन जन पावन चिमम राम-धाम ह अवध मदान
 इमरा जन जन स्वजन मुजन है उत्तर श्लिष एक ममान ।

X X <

श्लिष यन् विकाराग रहा ता उत्तर का ममृद्धि निष्प्राण
 मव अवान्व हा स्वम्व समजस तभा श्वरर ह पुरप महान ।
 तिसा ममय मम्भव है श्लिष म ना हा एम जाचाय
 तनर व लेखा मुस हा जा और वन आयी क आय ॥
 किन्तु अभा जा अधकार है वहां प्रकाश जगाना है ।
 पुरप परम पुरपत्व दग न वर सस्त्वनि फलाना ह ॥

(प्रथम मग छल २६ ० २१)

सी वाक्य क अ य अनर स्थाना पर भी उत्तर-श्लिष का एकता का मान बढ़ी गया है । उदाहरणार्थ मग ६।२७ १०।११ १०।४७ जाति ।

गम क उपरकन धयना म नागत की, विपन्नर उत्तर-श्लिष का एकता का मन्त्र र । वर दशिन म मास्त्वितिन प्रकाश का प्रसार अन्न क लिए जलना चाहत र । तग मग म कति न विस्मिया का दूतनाति क दाग नात्र का अधवस्था तन प्रामाण एव नागरिक जीवन का मस्त्वितिन प्रगति का उत्तर दिया है । यामाण जावन क प्रति कति का अनय जाया ह कर्णिक भाग्न का ययाव रूप वर गक्षित है ।

नगर ग्राम्या स बढकर हा वभव म गुण दापा म
किन्तु धनी हं ग्राम्य धय थ अपन दत्त मन्तोपा म ।

(सग १ छंद ४२)

×

×

×

जन जात्मा यत् जग न पायी ता शासन क व्यग्र सुभार
नगर वत् गय गाव सुखाकर ता उस वत्ता का विकार ।
नगर बने पर माथ ही बन बन्नाय गावा को
बहु विकास है विकसित करद जा उन जन क भावा का ।

राम क चारित्रिय शीत और आत्म श्र विचारणा का रूप द्वितीय सग म
अंकित हुआ है । राम की मा यना है कि—नहा भोग म किन्तु त्याग म
मिचता जावन । जाबुनित शिक्षा क रूप पर व्यग्य करत हुए कवि न कहा
है कि

जान नक्षत्रा का यत् निया आप अपन स रह अजान ।
बुद्धि स भरा तब मिस्तार किया सकीण हृदय का मान ॥
ग्रथ क वाच पथ क वाञ्छ ग्या गयी जिनम मन की शान्ति ।
पान का सा तरता वह कौन पात है वह तो कनन भ्रान्ति ॥

शिक्षा का उद्देश्य यह है कि

कुजन हा सज्जन सज्जन शान्त शांत हा भव बधन मुक्त ।
मुक्त हा जा ब आग बढ करे औरा का भी उमुक्त ।
यही शिक्षा का है ध्रुव ध्यय न तत् चतना उसको स्वाकार ।
मनुज की मानवता वत् ताय रचा प्रिय एस रचिर उपाय
यही उद्देश्य । शिक्षा उद्देश्य रमा स विकसित जनसमुदाय ।

भारताय ससृष्टि का आधार मानकर विशपतया सह अस्तित्व और
सबजन हिताय का घोषणा इस प्रकार की गयी है

नहा चाहत हम वि बत् साम्राज्य हमारा
वाम्य यहा है बत् शिवदू ससृष्टि का धारा
गार कान पात कि पीत जग के वासी
समनें चातुर्वर्ण्य और हा हा सुग रासा ।

(सग ५ छंद ३६)

विगत युग का भौतिक प्रगति क प्रति भा लखव जागम्ब है किन्तु
नाग्न्यायता का पुनान भावना स जात प्रात हान क कारण जावन क आध्यात्मिक

और सर्वोपेयी मूय हा उम अधिक काम्य ह । राम लका विजय क उपरांत विभीषण का सत्स दत्त हुए कहते ह

जसली १५ मनुजता ही है सात्विकता जिसके अनुरूप ।
 राजस तामस चित्तवृत्तिया कर न सके उनका अपरूप ॥
 उह उपात्त बना न जिसस निन्द्य निशाचरता मिट जाय ।
 प्रजा तुहारा सच्च हित म हा जाय विश्व सहाय ॥

सग ११ और १२ म रामराज्य का जन्मतपूर्व कल्पना साकार हुए है । ११वें सग व प्रारम्भ म ही कवि ज वक्त ह कि राम व राजा हात हा घम की धोपणा हुए । इसी म रामराज्य का रूप प्रकट हुआ है । प्रापणा म कहा गया है कि

तभी राष्ट्रायता हागा सुदृढ इस देश का
 जब मित्र जना म भा एक मन्वृति साम्य हा ।

कवि न बर्णाश्रम घम व्यवस्था क नियम पर भी बर दिया ह । राष्ट्राय आचार का उल्लस करत हुए कवि न यकिन की स्वाधीनता पर बर दिया है

बहा राष्ट्राय आचार यकिन का समझा गया
 राष्ट्रीयता विवद्वय जा सहायक हा मक ।
 (सग ११ छं ७८)

× × ×
 राष्ट्र या जाति या यकिन का अधिवार है
 जिय और फल फल अविरोधा प्रकार स ।
 राष्ट्र गायत है ता यकिन जायत जानिए
 राष्ट्र हा सा मया ता व्यक्ति फूला फता कहा ।

रामराज्यकार का मत ह कि एक-एक व्यक्ति क सुधार म राष्ट्र का निर्माण हा सकता है । किन्तु राष्ट्रहिताय व्यक्तिस्वाय का बर ही बालनीय है

यदि प्रयत्न हा व्यक्ति, अपन का सुधार ल
 ता राष्ट्र का मुखवार सुसाम्य बिनना बन ।
 विराय यदि हा राष्ट्रस्वाय औ व्यक्ति स्वाय म
 ता राष्ट्रहित म व्यक्तिहित का स्वाय त्याय ह ।

इसा सग म सभी राष्ट्रवायिया क लिए पक्ष प्रतिपादा का घोषणा की गयी है जिसक अनुसार रामराज्य का प्रत्येक निवासी सर्वधर्मसंनिष्णु स्वार्थनम्बी मित्राग्नी सदाचारी और सद्बिचारी बनन का प्रतिज्ञा करना है । सपान म मानव-यत्निमा और लोक-कल्याण का भावना का सर्वांगि कहा गया है

मनुष्य म महाशक्ति जाग सो शिव क निए ।
 मनुष्य क निए थ्रष्ट यही वम है ॥
 मनुष्य ही महामत्य मनुष्य मन क निए ।
 वही पद्म जाराध्य वही प्रत्यक्ष विष्णु है ॥
 व्यक्ति का प्ररिका हाव तौर-कल्याण भावना ।
 सनातन सुसाद्रकी सही वणव भाव है ॥

द्वापश सग की कथावस्तु ममस्पर्शी और कर्णापूरित गाथा है जिसम सीता के निवासन और रामराय का उल्लेख है । रामराय के व्यावहारिक रूप का स्पष्टाकरण भी वही सग म हुआ है । रामराज्य म राजा का प्रजा के प्रति व्यवहार लाव इच्छाया की पूर्ति और सबजन-सम्मान की भावना जादि का वणन है । रामराज्य म पंच परमेश्वर क तुल्य या ग्रामा का जीवन स्वयं क समान या सहकारिता म योगी को विश्वास था । विनाय क आविष्कार भी सहार नहीं सृजन क लिए हात थ

पचा म परमेश्वर बसत पचायता राज सुल छाया ।
 पाय थ पचा न एस पचशान क तस्व सुहाय ।
 सहकारिता विना पत्ता था कृपिया म गृह उद्याग म ।
 सामूहिकता का महत्त्व या विविध उत्सवा मुख भाग म ॥
 गाव गाव म पूण स्वच्छता गाव गाव के मुख मनारम ।
 गाव गाव क सुग सुविनामय देव गृहापम भवेता क क्रम ॥
 बनानिक आविष्कारा क नित्य प्रयाग हुआ करत थ ।
 किन्तु सहारक वाता पर विनायी निजमने धरत थ ॥

स प्रसार रामराय का चित्रण भी कवि न यथाथ की भूमिका पर युगीन सत्तमों म प्रस्तुत किया है । रामराय क सम्बन्ध म प्राय यह भान्ति हुआ करता है कि यह राजतन्त्राय-व्यवस्था (Monarchy) है जा जाज की सवप्रिय जनतन्त्राय-व्यवस्था (Democracy) क प्रतिकून है । किन्तु यहाँ उल्लेखनाय है कि रामराय का शासन-व्यवस्था मच्च माना म राजा और प्रजा की सम्मिलित व्यवस्था है । राजा ना प्रजा का भावनाया और इच्छाया का पूर्ति का मायम मात्र है । यथा

मन्तराज था रामचन्द्र न रामराय म भक्ति चनाया ।
 राजतन्त्र या प्रजातन्त्र है मत्र न यत्र कात्र नय पाया ॥
 कवि न उचित हा कहा है कि

रामराय क शक्ति नहा या विमल मानव मूय गिताया ।
 अमुरा क भा कुटिल वग म नर भक्षण निधून कराया ॥

यह कारण है कि शताब्दों का उपगमन भा रामराज्य का धारणा हमारा राज्य-कल्पना का आदेश है। मिथजी न ठाक ही निर्या है कि— श्रद्धेय महात्मा गांधी न रामराज्य और सुराज्य का समानाधिक्य मानते हुए इस नाम का प्रति भारतीयों में पयाप्त उत्सुकता जाग्रत कर रहे हैं। रामराज्य का कल्पना ही सही परन्तु वह एसी कल्पना है जो व्यवहार में भी जसोम लाभप्रद हो सकती है। (भूमिका, पृ० ६ १०)

यद्यपि तब अन्धकार की रामराज्य विषयक विचारणा पर विचार किया। कवि का अर्थ मा यथाए इस प्रकार है

नारा का कवि न पुरुष का पूरक माना है। इस शक्ति का सत्ता स सम्भावित ना किया है। यथा

तत्त्व यदि नर ह नारा शक्ति कहा श्रद्धेय पत्नी न यह जाय ।
उत्तम का हाता जब सहयोग जगत का चलता काय-कलाप ॥
जुद्धि न नर ता नारा भाव इष्ट हा नर का जग कल्याण ।
किन्तु ह नारी का यह धर्म नर का उत्तम नर निर्माण ॥
रही नारी है भावुन सत्ता न भावुकता में जन्मा श्रेष्ठ ।
नियन्त्रक भावुकता का पुरुष अन्त में पुण्य कहाता ज्येष्ठ ॥
न कोण हात न दाइ उच्च उभय का अपना अपना मान ।
उभय ममज्ञ अपना कतन्व प्रकृति नियमा का रखकर आन ॥

रामराज्य का रक्षयिता का शब्दों में कविता और साहित्य का परिभाषा निम्नलिखित प्रकार है

कविता सविता आति शशाक मुधा है ।
कविता मन्त्रा में वर प्रवृत्त हुआ है ॥
चित्त मन्त्रि रह साहित्य कहा मुन्दर है ।
जा समुत्थ जन्म नर कहा जशर है ॥
कवि का महिमा और कल्पना का उत्कृष्ट इस प्रकार किया गया है

कवि चाह नर का जन्म नर स्वयं जाय ।
कवि चाहे जन शक्तिहास वन्त न जाय ॥
जन जन का अन्त तत्त्व जगता है कवि ।
शक्ति-काल बन्ध मर आप भगता न रति ॥
जावन न प्रति मिथजा का दुष्चिन्ताय न है

जावन जाया उत्तम मुखा का घर है ।
जावन नम मा विस्मयी न वह नशर है ॥

इस विस्तृत नभ पर विघ्न भक्ष स जाय ।

यह सम्भव ही ह नही कि उस मिटायें ॥

इस प्रकार रामराज्य महाकाव्य म राज्य क जाण रूप क साथ साथ मानवतावादी जावन नष्टि का भी विकास हुआ है । कवि न विमान-युग क विकास जीर ह्रास प्रगति जीर पतन क परिप्रथम म रामराज्य का प्रतिष्ठा का जाग्रह किया है । राष्ट्रीय एकता शाश्वत जीवन मूल्या की प्रतिष्ठा ग्राम्य जीवन का महत्ता सहकारिता पञ्चशाल जाण जावन प्ररक प्रवृत्तिया क निरूपण क कारण इस काय म रामराज्य का युगान पुनराख्यान हुआ है । रामराज्य काय म उत्तर दक्षिण की अभेद स्थिति का निरूपण निश्चय हा रामराज्य क विकास म एक नवीन अध्याय का मृष्टि करता है । एक प्रकार स रामराज्य के गायका का एक नुष्टि का कवि न माजन किया है । उद्देश्य की महानता विवचन की गम्भीरता शरी की उत्कृष्टता शिल्प विधि के समुन्नत स्वरूप चरित्र विश्रुपण का मानवतावादी पद्धति पौराणिक कथानत्व क पुनर्मूल्याकन जीर कलात्मन औदात्त क कारण रामराज्य महाकाव्य निश्चय ही हिन्दी काव्य जगत की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है । आज क युग जीवन म ऐसी रचनाभा का स्थायी महत्त्व है । मिथजा भारतीय सस्कृति क अनय उपासक रह ह । उनक कृतित्व स हिन्दी साहित्य का उत्कप हुआ तथा भारतीय सस्कृति की जलणता सिद्ध हुई है । रामराज्य स पूव कोशन विशार जीर साक्त-सात जसी अनुपम कृतिया स वह हिन्दी साहित्य भण्डार की पूर्ति कर चुक हैं । उनका तृतीय महाकाव्य (रामराज्य) हिन्दी जगत म अभिनदनीय है । भविष्य म भी क हिन्दी ससार का एसी कृतिया प्रदान करे ऐसी जाशा है । हम रामराज्य क कवि की वन पवित्रया क साथ हा प्रस्तुत प्रसंग की समाप्ति करत ह

श्रेता युग का रामराज्य वह कवियुग का जानाक गियाय ।

जिमका प्रयन प्ररणा पाकर शामन स्वप्न सत्य बन गाय ॥

भारत की माता ममृद्धि का रावणत्व स मुक्त कराकर ।

खिन जाय रावणत्व मनुज का एस याग रचें विश्वेश्वर ॥

(गणेश संग पृ० १८८)

‘कृष्णायन’ के कृष्ण

‘कृष्णायन’ के कृष्ण

श्री धारिकाप्रमाण मिश्र द्वारा रचित कृष्णायन महाकाव्य का रचना का मुख्य उद्देश्य श्रीकृष्ण व चरित्र का सारागण निरूपण करना था है। कवि का इस उद्देश्य का प्राप्ति में पूर्ण सफलता भा मित्नी है। जनता और वतमान में कृष्ण व पावन चरित्र का लेकर विपुल परिमाण में काव्य का रचना हुआ है किन्तु कृष्ण चरित्र की जितना व्यापक और विराट अभिव्यक्ति हम महाकाव्य में पढ़ें है वह अत्यंत दुर्लभ है। सम्पूर्ण महाकाव्य में जाग्रम में अन्ततः कृष्ण का प्रधान पात्र के रूप में अंकित किया गया है। हम महाकाव्य में घटनाचक्र एवं कथामूला का संचालन उहा के व्यक्तित्व का केंद्रित करके किया है। हमके अतिरिक्त कृष्णायन के कृष्ण का रूप इतना व्यापक है कि हममें भारताय का समय में एवं प्रतिपादित सम्पूर्ण कृष्ण रूपा का सहज में ही समाहार हो गया है। कृष्णायन के कृष्ण का चरित्र निर्मित में कवि ने “तव श्रीभद्रभागवत महापुराण महाभाग्य गाता जीव मरमाण्य में वणित विभिन्न रूपा का एकीकृत कर लिया है। कृष्णायन में कृष्ण चरित्र के निम्नांकित तीन रूप मिलते हैं

- १ वानकृष्ण—हम रूप का चित्रण उत्तर वाण्य में हुआ है।
- २ राविका और गापिया के प्राण प्रिय कृष्ण—हम रूप का चित्रण मथुरा वाण्य में हुआ है।
- ३ रामबाण कृष्ण—हम रूप का वणन मथुरा वाण्य में तबके अन्तिम अर्थात् आरोहण वाण्य तक मिलता है।

मिश्रजी ने पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कृष्ण का ब्रह्म का अवतार माना है। वे तुलसी के राम की भांति भू नाग उत्पन्न के लिए राम उतरे थे। जब राम समृद्धि और सुखीति नष्ट हो जाता है और भाग्यमाना र्थि का पुनरागती है तब धार्मिक कृष्ण के रूप में अवतरित पाते हैं

नया कला पाठ्य सचित्र कृष्ण चरित्र अवतार ।

×

×

×

जसुर विनासन जन हितकारी । नाम कृष्ण त्रिष्णुहि जवनारी ॥ १

कृष्ण का जन्म वाराणस में होना है जहाँ से वे गोकुल में नन्द के घर पहुँचा लिये जाते हैं । इसके अनन्तर कृष्ण को बानगीलाआ का वधन करि न मूरसागर के जाधार पर किया है । बान सुवभ लीलाआ में उनके मन्त्र मानवीय रूप यकत हुआ है । विभिन्न जसुरा का संहार करके बाल्यावस्था में ही वे एक जोर असुरसंहारक चित्रित किये गये हैं और दूसरी जार गोपिकाआ में प्रमलीना करत हुए भापी जन बलवभ रूप में अंकित हुए हैं । गोपिकाआ में प्रिय और रमिक कृष्ण का रूप चित्रण हिंदी साहित्य में पर्याप्त रूप में हुआ है । रीतिकारीन काव्य में तो उन्हें रसिकशिरोमणि के साथ साथ विनामी भी चित्रित किया गया है । किन्तु कृष्णायन के कृष्ण का गोपियो के प्रति प्रेम सात्त्विक और लोक कल्याण की भावना से पूण है । उसमें विनामिता और उच्छ खनता नहीं है । राधा के प्रति उनका आकर्षण शुद्ध एवं प्रेममय है विलासपूण किंवा वासनाजय नहा । राधिका उनकी चिरमहचरी है जिनसे उनका पूव जन्म से सम्बन्ध है । कृष्ण स्वयं कहते हैं

हम दो एक नाहि कछु भेला ।
 कहत सकत निगमागम बला ।
 भिवसति यथाक्षीर घबनाई ।
 यथा हुतासन दाहरताइ ॥
 बसत प्रिय तस तुम माहि माहि ।
 तुमहि विहाय मारि गति नाहि ॥ २

एक जय स्थान पर भी कृष्ण ने यही भाव व्यक्त करत हुए कहा है कि
 एकहि से और राधिका दूत भाव भव भ्रान्ति । ३

मिश्रजा ने परम्परित कृष्ण के चरित्र में गिराव नान वाले प्रमगा और घटनाआ में सजाधन करके कृष्ण चरित्र के आत्म को यथावत रखा है । उल्टारण के लिए चौरहरण नीना बान प्रमग का वधन रम प्रजार किया है कि कृष्ण एक समाजमुधारक की भाँति लिखायी गये हैं । जन में नन्द स्नान करन बाना गोपिकाआ में वे कल्प हैं कि

रात्रि माहि निरमल वस्त्र तिनक ताक विहाय ।

रात्रि लाज हू त्याग तुम धमन नमन जल जाय ॥ ४

इसी प्रकार द्वारिका काण्ड में कृष्ण का स्विमणी जासवता बालिनी आदि विभिन्न राजकूमारिया में जा परिणय सम्बन्ध स्थापित हुआ है उसका मूल में राष्ट्रपति की भावना और राजकीय नीति निहित है। क्योंकि उन मध्य में द्वारा विभिन्न विराडा राजाओं में मन्त्रा सम्प्रदाय स्थापित हुए।

कृष्ण का सबसे महत्वपूर्ण रूप वह है जिसमें अन्तगत उच्च धर्मसंहारक धर्मसंस्थापक एवं राक्षसक चित्रित किया गया है। वान कृष्ण जहां अवतरण काण्ड और मयरा काण्ड में कर्मरि असुरों का वध करत है वही युवा कृष्ण शिवायन का वध और जगन्नाथ का दमन भी करत है। वे बुधन राजनीतिविचारक भी हैं। गीता काण्ड एवं जय काण्ड में उनका यही रूप दृष्टव्य है। बुधन युद्ध में वे पाण्डवों का साथ करत हैं। महाभारत युद्ध का सम्पूर्ण रणनाटिका का संचालन वे अजन के रूप में करत हुए ही करत हैं। यवहारकृष्ण नीतितन के मान अपना ममत्त मनाए व कौरवों को दे देते हैं। गीता काण्ड में कृष्ण का कर्मयोगी रूप भी मिश्रजो न प्रस्तुत किया है। एक स्थान पर अजन को फलागशुभ्य कम करने का उपदेश करत हुए वे कहत हैं कि

य यागाय कमन फल जाय । त्यागी माई धनजय हाई ॥

अतिष्ठ मिश्र अम विधि तम । कमन का फल होत धनजय ॥

×

×

×

कर निज कम भजन तर्हि जाई । अजन जन्त मिद्धि नर माय ॥ ४

कृष्णायन के कृष्ण का हम सफल जन नेता के रूप में भी पाते हैं। कृष्णायन महाकाव्य में म्हात-म्हात पर उद्धान पाण्डवों का नवतव प्रदान किया है। राष्ट्र की एतना और उन्नति के लिए वे सर्व प्रयत्नशील रहते हैं। महाभारत-युद्ध के समाप्त होने पर युधिष्ठिर के मन में जा जातमन्त्रादि और वराह्य की भावना घर कर जानी है उस भी वे सत्पुरुष स्वयं दूर करत हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण काव्य में स्थान स्थान पर उनके ही सदप्रयत्न में सम्पूर्ण नाटिका का परिचालन जाता है। इन रूपों के अतिरिक्त कृष्ण का मानृ पित्रु भक्त भक्तवत्सल पतितउद्धारक आदि रूपा में भी अवित्त किया गया है। जाजावन कसरत रहते हुए भी वे अन्त में अस्मिन्नायुष सं द्वारिका पहुंच जाते हैं।

४ कृष्णायन, अवतरण काण्ड, पृ० ७०

५ यही गीता काण्ड पृ० ६०८ ६१२

वहाँ क गृह कलह से चित्र होकर स्वर्गारोहण का निश्चय करत हैं। दुर्वागा ऋषि के आशीर्वात् को मृत्यु करन के लिए वन में जाते हुए याघ के वाण से घायल होकर वही मृत्यु का उपदेश स्नान हुए उनका शरीरान होता है।
अस्तु—

कृष्णायन मर्यादा में चित्रित कृष्ण की मादृश्यता एवं उपवर्तिका पर विचार कर ता के न्याय में समार समझ जाता है

प्रथम—भारतीय का ये एव साहित्य के अद्यता कृष्ण चरित्र के जितने न्याय से परिचित हैं वे सभी कृष्णायन महाकाव्य में विशिष्ट विधि से समायाजित दत्ते जा सकत हैं। दूसरे शताब्दी में कृष्णायन में कृष्ण का चरित्र व्यापकतम परिचय में चित्रित हुआ है। हिन्दी महाकाव्यों का परम्परा में सबसे महान रूप में कृष्ण के महान और विराट चरित्र की प्रतिष्ठा कृष्णायन में ही हुई है।

द्वितीय—कृष्णायन के कृष्ण नृशिवतरी किंवा पौराणिक हाते हुए भा युग जीवन की प्रवृत्तियाँ भावनाओं एवं आकाशाओं का प्रतिनिधित्व करन वान पान के रूप में ज्वित किय गये हैं।

‘रश्मिरथी’ महाकाव्य में युग-चेतना के स्वर

‘रश्मिर्धी’ महाकाव्य में युग चेतना के स्वर

उद्देश्य और सन्दर्भ

रश्मिर्धी की रचना का उद्देश्य जमा कि काय क रचयिता न भूमिका म स्वीकार किया है— कण चरित्र का उद्धार है। कवि क शब्द म— कण चरित्र का उद्धार एक तरह से नयी मानवता का स्थापना का ही प्रयास है।^१ इस सन्दर्भ के जातेक म यत् रश्मिर्धी काव्य के जीवन-क्षण सम्बन्धी मन्तव्या पर विचार किया जाय तो हम पायेंगे कि इस काव्य का जीवन-क्षण मानवतावादी है। मानवतावादी जीवन मूल्या का प्रतिष्ठा का प्रयास या तो दिनकरजी ने कुरुक्षत्र काव्य म भी किया है किन्तु उसका एतद्विषयक चिन्तन की चरम परिणति और विचार-क्षण का प्रादुर्भाव स्वरूप रश्मिर्धी म ही प्राप्त होता है। डा० सत्यकाम वर्मा के शब्द म— कुरुक्षत्र के वाक्य जान वाला यह महानाटक सच्च जय म केवल महाकाव्य ही नहीं उल्कि कवि का दार्शनिक सामूहिक बहिर्मुख म सम्बन्धी और रचनात्मक चेतना का सबल और मत्क प्रमाण ना है। यह अकता काय ही कवि का सम्पूर्ण चेतना और शक्ति का प्रतीक कहा जा सकता है। कवि का जो जीवन-क्षण हूँकार म जागा और जिसका पूणता परभारम की प्रतीक्षा म हुई उसका कर्तृ विदु म रश्मिर्धी है। इसमें मानवतावाद का एक ऐसा ज्वरन्त मत्प केन्द्र विदु के रूप म प्रमुख होकर चला है जिसने उम विचारक कवि और दार्शनिक स ऊपर उठाकर महानतम मानवतावादी सिद्ध किया है।^२ सच तो यह है कि रश्मिर्धी के कवि ने अपन उद्देश्य की सिद्धि के लिए एक ओर परम्परा पारित एक जजरित मूर्तिवादा मायनाभा का खण्डन किया है तो दूसरी ओर युग-स्थापन प्रगतिशाल जीवन मूल्या का प्रस्थापना पर बल दिया है। उमने सामाजिक अन्धकार का कारण उच्च कुल की सूठी मान मर्यादा और जानिवा कर्म की भ्रमना की है किन्तु थम पुरुषाव तपस्या दान मन्त्रा मत्त्व,

^१ रश्मिर्धी, भूमिका पृ० ५

^२ डा० सत्यकाम वर्मा जनकवि दिनकर, पृ० ६३

शील जादि मानवीय गुणा (जावन मूल्या) की महत्ता का सराहा जीव स्वीकारा है। कायारम्भ म ही कृपाचाय के जाति विषय प्रश्न पूछन पर कण न जो उत्तर दिया है उसम तथाकथित उच्चकुलीन मान मया एव जातिवात् का निखण्ण किया गया है

जाति जाति रटत जिनकी पूजा केवन पापण
म क्या जानू जाति ? जाति है ये भरे भुजण्ण ।

× × ×

पाते है सम्मान तपोवन स भूतन पर गूर
जाति जाति का शोर मचात केवन कायण्ण रर ।

× × ×

बड वश स क्या होना है खोहा यन् काम ?

नर का गुण उज्ज्वन चरित्र है नहा वश घन धाम । ^३

काव्य के चतुर्थ सग म देवराज इन्द्र से वार्तानाप करत हुए कण न क्या है वि— एक नया सन्श विश्व के हित वह भी नाया हं ।^४ जीव वत् सन्श है कतव्यपरायण एव पुरुषार्थी बनकर सत्यपथ पर वन्त रहना । जीवन का जय इमी कतव्यपानन म निहित है । पुरुषार्थ क बन पर पुरुष नियति के भान पर पाव रखकर चन सकता है । चाह विषय रिपु हो जाय घम दगा ने और पुण्य ज्वाना बरमाय त्रित्तु मनुष्य का सत्यपथ म विचलित न नाग त्रिण । कत यपगयणना का यत् शक्ति किसी वश या कुन की घरोत्तर नया बरत वह वार पुरुषा क पृथुन वक्षस्यन म रहती है ।^५ वशगत उचना जीव कुनीनता क नाम पर शतात्रिया स मानवता का जा निरस्कार किया जाता रना है रश्मिरथा क कवि न उसका जोरत्तर शन्ता म प्रतिकार किया है । एसीनिण काव्य का गायक कण उनका जाण्ण बनकर अवतरित हुआ है जिह कुन गौरव की प्रताणा सन्नी पनी है नीचवशजमा कहकर जग ने जिह धिक्कृत किया है जीव समाज की विषमता वल्लि स जा विरुध है । कण क गाने म

मैं उनका आण्ण जिह कुन का गौरव ताणा
नाचवशजमा ककर जिनका जग धिक्कारगा ।

× × ^

^३ रश्मिरथी प्रथम सग पृ ४ ५ ७

^४ वही चतुर्थ सग पृ० ७२

^५ वही पृ० ७

म उनका आत्म कहा जा क्या न खाल सर्वे
पृथगा जग, किन्तु पिता का नाम न जान सर्वे ।

×

मैं उनका आत्म किन्तु, जो तनिक न धवरायेग
निज चरित्र बल से ममान म पर विनिष्ट पावगे ।
मिहामन ही ननी स्वयं भा जिह दख नत योग
धम हतु धन घाम जुटा दना जिनका जन टागा । १

अन्तु प्रस्त है कि रश्मिरथी काव्य का उद्देश्य और सत्ता मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रेरित है ।

‘रश्मिरथी काव्य के जावन-दान का सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनका युगान्तर स्वरूप है । काव्य में जिन व्यापक मानवाय विश्वासों और आदर्शों का आध्यात्मिक निष्पत्ती और मायतावादी तथा चिन्तनात्मक समस्याओं और धारणाओं का प्रतिपादन किया गया है उन सबका आधार हमारे युग का उन्नत विचार दर्शन है । न्य विचार-दर्शन को एक शब्द में मानवतावाद अभिधान किया जा सकता है ।

आध्यात्मिक मायतावाद

आध्यात्मिक मायतावाद का प्रतिपादन म कवि का दृष्टिकोण निरन्तर युगीन और प्रगतिशील रहा है । नियति भाग्य धर्म आदि आध्यात्मिक विषयों का विवेचना कवि ने युग जीवन के सन्तर्भ में की है । केवल श्राद्धात्मक सम्बन्ध (उन्हें ईश्वर मानते हैं) में उनका विचार मूल चिन्तनधारा का अपवाद बन जा सकता है ।

ईश विषयक धारणा और श्राद्धात्मक

रश्मिरथी का कवि आत्मिक है । मन्दार का संचालित जनन शक्ति में सम्पूर्ण विश्वास है । इस अनन्त शक्ति का उद्देश्य, जगत्पिता भगवान् विद्याना आदि ब्रह्मण्डल में उमन सम्बोधित किया है तथा अन्त्य और मरण माना है

पर हस्त कटा अदश्य जगन के स्वामी

अगत सभी ब्रह्म को तब भा अन्तर्यामी । २

श्राद्धात्मक रश्मिरथी में अन्तर्यामी से सम्पूर्ण चिन्तन किया गया है । ईश्वरत्व शक्ति से सम्पूर्ण हान के कारण विनम्रण एवं गरिमापूर्ण व्यक्तित्व

१ रश्मिरथी, चतुर्थ सर्ग पृ० ७२ ३६

२ वही, पंचम सर्ग पृ० ६४

वान ह। कौरवा जीर पाण्डवा म सद्भाव म्यापिन करान क उद्देश्य म व हस्तिनापुर स पाण्डवा का मश्री सत्पराश नकर तुर्योधन क पाम जात ॥ तुर्योधन उनक सत्पराश का न मानकर उनटा उह वीरन का उपक्रम करता ह। तभी कृष्ण कुपित हाकर भाषण हूकार करत हुए अपना विराट रूप प्रकटित करत ह। श्रीकृष्ण का व रूप ब्रह्माण्डोपाया था। उस स्वरूप म उपाचन भाल भूमण्डल वक्षस्वन जीर मनात मरु चरण थ। सम्पूर्ण चराचर मृष्टि काटि-काटि सूय चत्त ब्रह्मा विष्णु महेश दिनश रूत नामपात जाति उमम थापन थ। उनका त्रिह्ला स भयकर ज्वालाए निकन रही था। त्रिकाल का मुट्टी म बाध मृष्टि क जाति जीर जन्त का कारण वह विस्तरान रूप था

उपाचन भरा दापन भान भूमण्डल वक्षम्यल विशान।

×

×

×

शत काटि रूत शत काटि कान शत काटि दण्डधर साकपात।

भूताक जतन पातान दख गत जार अनागत कान दख।

जम्बर म कतन जान दग्य पत्त क नीच पातान देख।

मुट्टा म ताना कान दल मरा स्वरूप विस्तरान दग्य।^८

श्रीकृष्ण क इस स्वरूप को देखकर सभा सन्न था नाग डर क मार चप थ या बहोश पत्त थ। रश्मिरथा क कृष्ण का यह रूप गीता के श्रीकृष्ण क उस विराट रूप म तुलनीय ॥ जा उहान अजन का त्रिवाया था।^९ यहा यह उपाचनीय ॥ कि श्रीकृष्ण का कवि न श्वरीय रूप म अकित किया है। कृष्ण क रम पारानिक रूप का चित्रण विशति शताब्दी क बुद्धिजावा पाठन का कितना ग्राह्य जीर बरण्य नागा यत्त चिन्तनीय ॥ प्रभुत काव्य स ७ वप पूव त्रिखित कुरुभ्रम काव्य म त्रिभरजा न कृष्ण का मन्नापुरप क रूप म हा अकित किया है। कुरुभ्रम म जनक स्थाना पर भात्म पितामत्त युधिष्ठिर जीर स्वय कवि न कृष्ण का भगवान कत्कर सम्बाधित किया है। विल्लु कृष्ण का भगवान कहन म उमरा मगुणापामना नत्त कनकनी अपितु वह उह मन्नापुरप (अतिमानव) मात्र मानकर उनक प्रति अपना श्रद्धा व्यक्त करता है। कवि अवतारवात्त म विश्वास नहा रखता अपितु श्वर सम्बाधा उमरा कपना अधिर व्यापक तब जाध्यात्मिक ॥ जाध्यात्मिक नत्त।^{१०}

^८ रश्मिरथा तृतीय मग ५० ० ३

^९ गीता अध्याय ११ श्लोक १० म ० तव

^{१०} कुरुभ्रम मामामा ५० ११८

'कुरुक्षेत्र का कवि चिन्कर का त्रिग जय महापुराण का भाति श्रीकृष्ण भी भद्रेय है श्वर नहा

'भाष्म हा अथवा युधिष्ठिर या वि हा भगवान्
युद्ध हा कि जशाक गाधी हा कि इमु महान ।
मिर नुका सबकी सभी का उल्ट निज स मात
मात्र वाचिक ही उल्ट रता हुआ सम्मान । ११

इस प्रकार कृष्ण के सम्बन्ध में एक दशावली में लिखे गये दो काव्यात्मक चिन्करजी का दृष्टिकोण भिन्न है । 'रश्मिरथी में कृष्ण के विकार-रूप-दशन द्वारा ही नहा करन अथ अलौकिक घटनाओं का आयोजन द्वारा भी उनके श्वराय रूप की प्रतिष्ठा की गयी है । उदाहरणार्थ अजुन की प्रतिज्ञा-पूर्ति अर्थात् जयन्थ यथ के लिए

माया की सहसा शाम हुई असमय चिन्ता तो गये जम्न । १२

इसा प्रकार मानव घटोत्कच का सृष्टि तथा उषण के रथ चक्र के रत्न-नाच में धर्म जान और सम्पूर्ण शक्ति उगान पर भी न निकलन में इश्वराय शक्ति का चमत्कार-दशन ही है ।

चिन्करजी के विकार-दशन का यत्न उपयुक्त विवचन के आनाक में विश्लेषण किया जाय तो प्रतीत होगा कि कवि की ब्रह्म विषयक धारणा का मूल स्वरूप तो वही है जो कुरुक्षेत्र में प्रतिपादित है किन्तु रश्मिरथी में पौराणिक ऐतिहासिक कथानक में आमूल चून परिवर्तन का अवाछनीय मानकर कवि ने इस काव्य के घटनाक्रम का उपा-नान-वा प्रस्तुत किया है जिसके कारण कृष्ण इस काव्य में ईशावतारा हो गये हैं । रश्मिरथी है भी कथात्मक जयन्ति 'कुरुक्षेत्र' विचार प्रधान काव्य है । कथाकाव्य में कथानक और विचार प्रधान काव्य में वचनिकता (चिन्तन) का महत्त्व विशेष होता है । कथाकाव्य का महत्ता का सम्बन्ध में कवि के विचार रश्मिरथी की भूमिका में दृष्टय है । फिर भी इतना तो कहा जाया कि अपने मूल चिन्तनक्रम (जिसके अनुसार ब्रह्म अपौरुष्य है और कृष्ण महापुराण है ईशावतार नहा) का रक्षा के त्रिग अलौकिक घटनाओं का किंचित परिचितन द्वारा बुद्धिग्राह्य बनाया जा सकता था । उदाहरणार्थ कुरुक्षेत्र-सभा में कृष्ण के विराट रूप-दशन के स्थान पर उनका

११ कुरुक्षेत्र पृष्ठ सं. पृ० ६५ (संस्करण संवत् २००२ का)

१२ रश्मिरथी पृष्ठ सं. पृ० १३६

तेजस्वितापूर्ण रूप की चाकी भी अकिन की जा सकती था जिस दानकर दुर्याधन चकित रह जाता लोग बहोश तो न हात आति ।

नियति—नियति को एक क्रूर अदृश्य शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है । नियति ही बार बार पुरुषार्थी कण में छल करके उस जीवन मद्राम में पराजित और निराश करती है । इस सन्दर्भ में कण के कुछ कथन दृष्ट्य हैं

सबका मिला स्नेह की छाया नयी-नयी सुविधाएँ
नियति भजता रनी सत्ता पर मरे हित विपदाएँ ।^{१३}

× × ×
प्रवचन है नियति का दृष्टि में दोषी बना है ।^{१४}

× × ×
विलक्षण बान मर हा निय है
नियति का घात मर हा निय है ।^{१५}

स्वयं कवि न कहता है

किया नियति ने बार कण पर
छिपकर पुण्य विवर से ।^{१६}

कवि ने मत्स्यभारत युद्ध की जायाजिका भी नियति का ही माना है

हो चुकी पूण याजना नियति का सारी
कन ही होगा जारम्भ समर अति भारी ।^{१७}

एतना हान पर भा रश्मिरथी के नायक कण ने नियति की क्रूरता को नत मस्तक हाकर स्वाकार नहा किया है वरन् पुरुषार्थ के बान पर उसका पूण प्रतिरोध किया है । कण कहता है

चरण का भार ना सिर पर सभासा
नियति की दूतियो ! मस्तक झुकाओ ।
बना जिम भानि चरने का कहूँ मैं
एना जिम भाति एतन का कहूँ मैं ।

^{१३} रश्मिरथी अनुध मग पृ ७२

^{१४} वही मप्तम मग पृ० १५६

^{१५} वही प० १८८

^{१६} वही अनुध मग पृ ६

^{१७} वही पचम मग पृ ८१

न उर छन छन म जाघात फूनी
 पुन्प हू म नहा यह वान भूना ।
 कुचल दूगा निशानी मट दूगा
 चना दुम भुजा का भेंट दगा ।^{१८}

कण का उपयुक्त उचन म कण का पौरुष ही नहा बरन सम्पूर्ण मानवता के पुरपाय का महान् उद्योग है । इसा कथन का परिप्रथम म कवि श्मिन्कर का दृष्टिकोण की प्रगतिशीलता भी दृष्टव्य है जिसका अनुसार वह मानव की शक्ति और सामर्थ्य का ही सर्वोपरि मानता है । मानव नियति की द्रुग्ता का प्रतिरोध म अत तक सप्राप्त करने को कृतसकल्प है । कण के शब्द म

चने मघय आठा याम तुम स
 करुणा अत तक सप्राप्त तुम से ।^{१९}

कवि ने तो यहा तक कह दिया है कि कण की गौरवपूर्ण जीवनगाथा का समक्ष नियति और भाग्य का संकेत यत्र है

मगर यह कण का जीवन कथा है
 नियति का भाग्य का इगत यथा है ।^{२०}

यही नया पुरुपाय का वन पर पुरुष नियति के भाल पर भी पर रत्न साजना है
 नियति भान पर पुरुष पाव निज बल से धर सकता है ।^{२१}

भाग्य—भाग्यवाद की धारणा का सण्डन कवि ने कुरुक्षेत्र का यम^{२२}
 इस पाप का आवरण और शापण का शस्त्र बहकर किया था । इसा मायता का पुष्टि र्ही मरवी म कण का निम्नांकित कथन द्वारा हुआ है

कण कण न क्या भाग्य म जाप डर जात है
 जा ह सम्मुख खण उस पञ्चान नहा पात है ।
 विधि न था क्या किया भाग्य म सुब जानता हूँ मैं
 बाहि का पर बला भाग्य स कहा मानता हूँ मैं ।

^{१८} रश्मिरथी सप्तम सर्ग पृ० १५६

^{१९} वही, पृ० १६७

^{२०} वही पष्ठ सर्ग पृ० १५१

^{२१} वही अनुप सर्ग पृ० ७३

^{२२} भाग्यवाद आवरण पाप का और शस्त्र शापण का त्रिमय रचना तथा एक जन्म भाग दूसरे जन्म का ।

महाराज उद्यम से विधि से एक पत्र जाता है
किस्मन का पामा पौरुष से हार पत्र जाता है । २३

धम—पौराणिकाने कुक्षत्र का धमक्षत्र और महाभारत का धमयुद्ध
कहा है । २४ किन्तु कवि ने नम मायना का विराय किया । उमक मतानुसार
धम का विग्रह हिमा युद्ध या महार से सम्बन्ध स्थापित नहा किया जा
सकता । धम ता करणा से उन्भूत जाना है

करणा से कता धम विमन । ५

धम का वास्तविक स्वरूप कममय साधना एवं जीवन पथ का त्याग की ज्याति
से आनामिन करन से है । धम ध्यय से नहा साधना से ही निहित है

है धम पटुचना नहा धम तो जावन भर चनन से
फना कर पथ पर स्निग्ध ज्योति दापक समान जलन से ।

× ×

साधना से ध्यय से नहा धम ता सहा निहित साधना से । २५

जजन द्वारा जयन्त्र के नामरूपक एवं अयायपूर्ण बध का कवि ने धममय
वाय नहा माना है । मरना और मारना कभी भी धममय वाय नही हा
सकत

ना जिम धम से प्रम कभी के कुत्सित कम करणा क्या ?

बजर कराल दष्टा बनजर मारणा जीर मरेगा क्या ? २७

चिरन्तन जीवन-मूल्या की प्रतिष्ठा

आन्यात्मिक निष्ठाका के प्रति युगाने किवा प्रगतिशील दृष्टिकाण अपनात
हण भी चिरन्तन जावन मूल्या का स्थापना के लिए रश्मिरेधी का कवि
प्रयत्नशील रहा है । दानशीलता सत्य मत्री समानता उत्तरता आदि मूल्या
का प्राचीन कर्कर उपक्षित नहा किया गया वरन उनकी महत्ता का बगान
वाध्य से आयात लिगाया ता है ।

दान की महिमा—भारतीय मस्मृति से दान की महिमा अनामि कान से
स्वाहन रही है । दान कम का पुगणप या कर्कर निरस्मृत नहा किया जा

२३ रश्मिरेधी चतुर्थ सर्ग पृ ६६

५ धम से कुक्षत्र ममवता युष्मक । गीता अ० १ श्लोक १

२४ रश्मिरेधी पष्ठ सर्ग पृ १३७

२५ वही पृ १७ ८

७ वहा पृ० १ ८

मरता है। दिनररजी ने ज्ञान की महिमा का तत्काल प्राप्त कर लेता है।
 काय का जीवन घम बहा है

जीवन का अभियान दानवों से जन्म चेतता है।

× × ×
 ज्ञान जगत का प्रकृत घम है मनुज व्यय डरना है। २८

दान स्वयं का मांग भा नहीं है क्योंकि जो जितना देता है उतना ही पाप भी जाता है। उदाहरण के लिए वधु पाद प्रतिष्ठा देता है कि जन्म रक्षा में कीर्ति न समाये। तानिया स्वस्थ रहे और नय फल जाय। दमा प्रसार नतिया जय दनी है नि वास्तु भरपूर वर्मों और फिर तलपूरित हाकर नया जावन पाय। दमा सद्भ म कवि न राम अधीचि शिवि हरिश्चन्द्र वसा गाधा जम जात्म दानिया का यशागान किया है। दानवारा म रश्मिरथी का नायक कण का चरित्र अनुपम है। उसने दानवों को पावन हेतु अपना सबस्व विनिदान कर लिया। जन्मजात कवच और कुण्डल तक स्वराज का दान दिया। तभी ता कवि न कहा है कि

कण नाम पद गया दान का अनुनीय मन्त्रिमा का। २९

दान मनुष्य का बड़े आभूषण है जो उसके चरित्र को अदृश्य बना करता है। दान सम्पूर्ण मानव जाति को गौरव बढ़ि करता है। कण म दान की याचना स्वयं का पृथ्वी से याचना है

स्वयं भीम मागत जाऊ सच न मिट्टी पर आया। ३

ज्ञान का भाति है जय जीवन मूल्या का ज्ञान का प्रतिपादन काय म यत्र तम हुआ है। जम

तपस्या

नरता का ज्ञान तपस्या का भाव पतना है

दत्ता का प्रकाश जाग म जा अमान जयता है। ३१

सत्य

जान कश चात्र / वारता का पहचान समर है

मच्छा पर कभा नर कर भा न गगता नर है। ३२

२८ रश्मिरथी चतुर्थ मंग पृ० ६० ६१

२९ वहा पृ० ६

३० वही पृ ६८

३१ वहा, पृ० ५६

३२ वही, पृ० ७०

अथवा

नहा राधय सत्यपथ छोकर जष जान लगा

विजय पाय न पाय रश्मिया का नाक लगा ।³³

मन्त्री—तृतीय सग म कृष्ण जब वण का युधिष्ठिर स मिल जान का परामश मत ह ता प्रत्युत्तर म वण न जा कहा ह उमस मन्त्री का महत्ता स्पष्ट ज्ञानवती है

मन्त्री का बडी मुखर छाया शासन हो जाती है बाया ।

×

×

×

मित्रता बडा जनमाल रतन कत्र इस तोन सक्ता है घन ।

वरता का ता है क्या विसात आ जाय जीर बकुण्ड हाथ ।

उसका भी यौछावर कर दू कुरूपति क चरणा पर वर दू ।³⁴

धर्म—परिधर्म की महत्ता को कवि न मुक्त कण्ठ म स्वीकार किया है । काव्य क तृतीय सग म कहा गया है कि बमुघा का नता भूखण्ड विजता अतुलित यश रता तथा नवधम प्रणता वहा व्यक्ति हुआ है जिसन विघ्ना का सहकर भी धर्म साधना की है ।³⁵

युगोन समस्याए

रश्मिरथा म जातिवाद उच्चकुनीनता सामाजिक असमानता आदि जनक समस्याया का यथाप्रसंग विवचना हुन ह । युद्ध का समस्या पर विश्लेषणात्मक ढंग स कवि न विचार किया है । उमन समस्याए हा नहा वरन उनका समाधान भा प्रस्तुत किया है ।

युद्ध की समस्या और समाधान

युद्धनाय विचार दर्शन की विस्तृत भूमिका यद्यपि त्रिनररजी क कुरक्षत्र नामक काव्य म मित्रनी है तथापि उस काव्य की रचना हा द्वितीय विश्वयुद्ध का पृष्ठभूमि पर हुन था । तथापि युद्ध का समस्या पर रश्मिरथा म भी अपभित प्रकाश डाला गया है ।

काव्यारम्भ म ही कुतान एक वण-व्यवस्था आधुन समाज का आलोचना करत ह्य कवि न कता ह कि युद्धा का जायाजन ससार स टुप न्य भगान या पर शापक पवध्रा न नागा का घममाग पर जान क विग न्य हाना है ।

³³ रश्मिरथी सप्तम सग पृ १६१

³⁴ वहा तृनाय सग पृ० ५१

³⁵ वही तृनाय सग पृ० ८

युद्ध का अन्तिम ह्रास कि राज महाराज विजय का कल्पित सम्मान पाकर माना या अथवा राजा का सामा विस्तार कर जोर नुटमार हा। युद्ध की विजय राजा का अन्त वृद्धि करना है। राजा स्व-लौचारा हाकर समाज को प्रस्तुत करते हैं।^{३६} अन्तु कवि न इस सम्मस्या का निदान या रूप म प्रस्तुत किया है। प्रथमतः समाज का ननुव भाग विनामी भूषा व हाता म न रह। समाज म श्रष्टता का पन् कवि रावि कताकार जान विमान विचारण का प्राप्त या। क्याकि समाज का शुभचिन्तक वग यहा है। यह वग असन-वसन विहान एव जान रखर भा मानवा-युग्य का या जान करता है। इस वग के भाग का कनक नही जान करपना और चरित्र की उज्ज्वलता पर अभिमान है। अन्तु—

एन विभूतिया का जय तक समाज नया पञ्चानगा
 राजात्रा म अधिक पूज्य जब तक न रह मानगा।
 तब तब पया भाग म परती समा तरण अकुवायगा
 जान जा भी कर तुया म एण नया पायगी।^{३७}

युद्ध व नियारण का दूसरा समाधान ब्रान्तिकारी है। कवि का अभिमत है कि राजा का समझा-बुझाकर जानी और कवि एक गय किन्तु प्रशासक वग स्वयं क अतिरिक्त किमा या भाषा का नहा सम्बन्धता। अन्तु जानिया का भा मय्य घाण कके अविचारा एव मय्य नृप क जानक म भू को मुक्त करना चाण

रोक-टोक म नया मुनगा नप समाज अविचारी है
 प्राबाहर निष्ठ कुटार का यह मय्य अधिपारा है।
 समातिए मैं कहता हूँ अर जानिया। सय्य घरा
 हर न सका जिमका कार्क भी भू का वह तुम शान हर।^{३८}

दूसरे शब्द म जनशान्ति हाग राजतत्र म मुक्ति के उपाय की ओर सक्त किया है। वन ‘बुद्धाद वाय की भाति युद्ध का एक चिन्तन और अनिवाय सम्मस्या क रूप म इस काय म भा कवि न स्वाकार किया है। महाभारत युद्ध का समाप्ति क वा मनुष्य मछपि विज्ञाट जाना और मनम्बी हा गया है किन्तु मनुज मनुज म युद्ध आज भी चल रहा है

-६ रश्मि’ की अन्तिम गय पृ १८

३७ वही पृ० १५

३८ वही पृ० १६

महाभारत मही पर चन रहा है
 भवन का भाग्य रण भजन रहा है ।
 मनुज ललकारता फिरता मनुज को
 मनुज ही मारता फिरता मनुज का ।^३

इस विन्म्वनापूण स्थिति का मून कारण अतिशय भौतिकनागना मूया की मानव जावन म स्वीकृति है । मुख-समृद्धि क अतीन एव सत्ताशोनुप नान क कारण मनुप्य पतनशील हा रहा हं

हाकर समृद्धि मुख क अधीन
 मानव होता नित तपक्षीण ।
 सत्ता किरीट मणिमय जामन
 करत मनुप्य का तज हरण ।
 नर विभव हतु ननचाता है
 पर वना मनुज को खाता है ।^४

इन प्रकार रश्मिरथी काय म जीवन अशन मन्वना विचारणा का म्बन्प महासाध्यान्त गरिमा से पूण है । उसम एक जोर पुगतन आदर्शों की नवान जोर युगान साध्या प्रस्तुत की गया हे तना दूसरी ओर चिरन्तन मानवीय मूल्या का पुनप्रतिष्ठा का प्रयत्न जाग्रह है । जिम कणधम के प्रसार का सदेश प्रस्तुत काव्य क मायम से प्रसारित किया गया है वह हमार युग जीवन एव समाज का वनमान परिमिरनिया म सवधा वाछनीय है । वह कणधम है

अम स नहा विमुक्त हाग जा टुख स नहा अरंग
 सुख क लिए पाप स जा नर सपि न कभी करग ।
 कणधम अगा घरती पर वनि स नहा मुकरता
 जाना जिम अप्रतिम तज स उभी ज्ञान म मरता ।^५

३६ रश्मिरथी मन्म मग पृ० १५

४ वही नृनाय मग पृ ५४

५ वही चतुथ मग पृ० ७६

‘वैदेही वनवास’ में लोकाराधन का स्वरूप

महाभारत मही पर चर रहा है
 भवन का भाग्य रण म जन रहा है ।
 मनुज नरकारता फिरता मनुज को
 मनुज ही मारता फिरता मनुज का । ३६

इस विष्मयनापूण स्थिति का मूल कारण अतिशय भौतिकतावादी मूल्या की मानव जावन म स्वीकृति है । मुख समृद्धि क अधीन एव मत्तानोतुप नान के कारण मनुष्य पतनशील हो रहा है

हाजर समृद्धि मुय क अधीन
 मानव हाता नित नपक्षीण ।
 मत्ता किराट मणिमय आमन
 करत मनुष्य का तज हरण ।
 नर विभव हतु लनचोता ह
 पर वनी मनुज को खाता है । ४

इस प्रकार रश्मिरथी काव्य म जीवन-ज्ञान सम्बन्धी विचारणा का स्वल्प महाना-योचित गरिमा स पूण है । उमम एक आर पुरातन आत्सर्षों की नवान और युगान याख्या प्रस्तुत की गयी है तथा दूसरी ओर चिरन्तन मानवीय मूल्या की पुनःप्रतिष्ठा का प्रबल आग्रह है । जिस कणधम के प्रसार का स-दश पस्तुत काव्य क मा यम स प्रमारित किया गया है वह हमारे युग जीवन एव समाज की वनमान परिस्थितिया म सवधा वा-न्तीय है । वह कणधम है

रम स नहा विमुख हाग जा दुल से नहा डरेंग
 मुग क निण पाप स जा नर सधि न कभी करग ।
 कणधम यागा धरनी पर बनि स नहा मुकरना
 जीना जिम अप्रतिम तज स उमी शान स मरना । ४१

३६ रश्मिरथी मूलम मग पृ० १५

४ वही तृतीय मग पृ० ५६

४१ वही चतुर्थ मग पृ० ७४

‘वैदेही-वनवास’ में लोकाराधन का स्वरूप

‘वैदेही वनवास’ में लोकाराधन का स्वरूप

सज्जन प्रेरणा और उद्देश्य

‘वैदेही-वनवास’ महाकाव्य की सृजन प्रेरणा का मूल आधार मयाग पुराणोत्तम धाराम और भनीशरामणि जनकमन्त्रिणा व चरित्र है। वृष्ण राधा और राम-सीता व चरित्र वदात्तरकालीन भारतीय धर्म सस्कृति एवं सामाजिक जीवन व अभिन्न अंग हैं। शताब्दियों में भारतीय जन जीवन में ये चरित्र अवतारी रूप में पूजे एवं माने गये हैं। हरिजीवजा न जिन प्रकाश प्रियप्रवाम में वृष्ण और राधा का लोकावस्था रूप में अविन रिया है उसी प्रकार वैदेही वनवास’ में राम और सीता का लोकाराधन रूप में चित्रित किया गया है। कवि व शब्दों में—‘मयागज गमचन्द्र मयाग पुराणोत्तम लोकाराधन चरित्र और जाग्य नरक अथवा महिमान है श्रमिता जनकमन्त्रिणा सताभिगमणि और लोकाराधन जायवाना है। इनका आग्य आय मस्कृति का सर्वस्व है मानवता का महनीय विभूति है और है स्वर्गीय सम्पत्तिमयप्र। इसलिए इन ग्रंथों में इसी रूप में उनका निरूपण हुआ है।’ साथ ही अपने वक्तव्य में कवि ने यह भी स्पष्ट किया है कि—‘सामयिकता पर दुष्टि रखकर इन ग्रंथों की रचना हुई है, उनसे इसे बाणमय और बुद्धिमत्त वतात का चष्टा की गया है। इसमें बसम्भव घटनाओं और व्यापारों का वर्णन तथा मिलाया।’ स्पष्ट है कि राम-सीता के पौराणिक स्वरूप का सुगीत एवं सामयिक मन्त्रों में चित्रण करना प्रस्तुत महाकाव्य की सृजन प्रेरणा का मूल सात रहा है।

वैदेही-वनवास में वैदेही व वनवास की कथा है। गर्भिणी नारी का निर्वासन प्रसंग राम व चरित्र पर एक गहन बना रहा है। प्रस्तुत प्रसंग को लेकर राम व चरित्र की नमना भी की जानी री है। हरिजीवजा व पौराणिक मुमुक्षुत्व गर्मा न अपने ग्रंथों में उल्लेख किया है कि एक वक्तव्य ने हरिजीवजा में विचार विनिमय करने समय प्रश्न किया था कि आप तब

1 वैदेही वनवास वक्तव्य पृ० ८ (पंचम सम्स्करण)

2 वहा पृ० ८

3 मुमुक्षुत्व गर्मा हरिजीव और उनका साहित्य पृ० ४२५

रामचन्द्रजी को ईश्वर का अवतार कहते हैं उनकी पूजा करत हैं उन् मयात् पुरोत्तम कहते हैं, परन्तु मैं तो उन् साधारण मनुष्य भी कहन म हित्तिचाता हूँ । क्या कोई ऐसा भी महापुरुष होगा जो अपनी गभवती स्त्रा का निरपराध गान पर भी जगन म निर्वागिन कर दे जाति । हरिऔधजी न एम प्रश्ना का उत्तर दन क लिए वदेही वनवास की रचना की । जमा कि वस काय क कथानक से नात होना है इन्हाने जनकनन्दिनी के गर्भाग्रस्था म वनवास गमन (कुनपति क जाश्रम म जाना) का प्रयोजन लोकाराधन की मित्रि के साथ साथ एव सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह भी माना है ।^५ इसके अनिर्वक्त हरिऔधजी की करण रम म विगप जासवित भी प्रस्तुत काय की रचना की प्ररक रही है । कति ने स्वय कहा है कि— करण रस की विगपताआ और उमकी ममस्पर्शिता की जार मरा चित्त सत्ता जाकपित रत्ता इसका ही परिणाम प्रियप्रवास का जाविर्भाव है । प्रियप्रवास की रचना के उपरान्त मरी इच्छा वदेही-वनवास प्रणयन की हुई ।^५

उपयुक्त विवचन से स्पष्ट है कि वन्नी वनवाम क प्रणयन की प्ररणा क तीन ममुख स्रोत रहे है

- १ सीता राम क चरित्रो की युगीन सद्दर्शो (वाकाराधक रूप) म प्रतिष्ठा ।
- २ वदेही क वनवास की घटना का सांस्कृतिक परम्परित एव यावन्तिक औचित्य ।
- ३ करण रम की काव्यमय अभिव्यक्ति ।

वदेही-वनवास की मृजन प्ररणा के इन स्रोत का उल्लेख कवि न स्वय काय की भूमिना (वक्तव्य) म किया है । इनक जतिरिक्त भी वदेही-वनवाम की रचना क कतिपय मन्तव्य हैं । १) द्वारिकाप्रमाण मक्सता का मत है कि— वन्नी वनवास की रचना द्वारा हरिऔधजी न एक घटना प्रधान एव प्रकृति चित्रण के विविध रूपा स सयुक्त प्रपञ्चकाय क जभाव की पूर्ति की है । प्रियप्रवास की रचना क उपरान्त हरिऔधजी क आनाचका न दो बाने इनक सम्मुख दृष्टता म रखा था प्रथम ता म कि आपकी रचना अधिक सस्कृत शतावली स परिपूर्ण है दूसर आपक काय म प्रकृति चित्रण की विविध दृष्टि नहा जाता । अत इन कोना बाना का दूर करन क निग वन्नी वनवाम

^५ वदेही-वनवास चतुप सग छन्द ५१ ५२

^५ वही वक्तव्य पृ० ६७

रचा गया।^{१६} डा० मक्सेना द्वारा लिखित कारण भी वदेही-जनवास’ की रचना पर उद्देश्य यद्यपि स्वीकार किये जा सकते हैं किन्तु य बहुत गौण बातें हैं। वस्तुतः महाकाव्य की रचना एक महत् उद्देश्य से प्रेरित होती है। मेरी धारणा है कि प्रस्तुत महाकाव्य की रचना हरिजीवजी के सम्भार चिन्तन मनन से प्रभूत भाषणात्मा एवं जीवन-ज्ञान सम्पत्ती निष्कर्ष की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए हुई है। वदेहा-जनवास का रचना प्रियप्रवास मन्त्राकार के चौरीस वर्षों पश्चात् हुआ। इतने वर्षों तक हरिजीवजी जन्माय प्रकार की साहित्य रचना भी करते रहे। अन्वयन अन्वयन एवं साहित्य-सृजन के व्यवसाय न उन्हें चिन्तन मनन का स्वर्ण अवसर प्रदान किया। और उनके इस मुदाधकालान्त चिन्तनक्रम की श्रम परिणति वदेहा-जनवास’ मन्त्राकार्य में हुई। उनके इस जीवन-ज्ञान का एक श्रेष्ठ म नोकाराधन अभिधान लिया जा सकता है जिसके अनुसार

सर्वोत्तम माधन है उर म
नव नित पूत भाव का भग्ना।
स्वामादिक मुग निष्साया का
विश्व प्रेम म परिणित वन्ता ॥ ७

लोकाराधन की विचारणा

लोकाराधन का शाब्िक अर्थ है— लोक का आराधना अर्थात् लोकमंगल का साधना। इस शब्द के समानार्थी लोकरजन लोचनुरजन लाककल्याण लोचमंगल लाकसवा लोकसाधन तथा त्रिनोमार्थी लोकापवात् लोच लोचपीनन शब्द है, जिन सभी का वाप म यथाप्रसंग प्रयोग हुआ है। लोकाराधन का विचारधारा वदेही-जनवास मन्त्राकार्य के जीवन-ज्ञान का एक बिन्दु है। कवि की सम्पूर्ण राजनीतिक सामाजिक आध्यात्मिक सांस्कृतिक एवं दार्शनिक भाषणात्मा तथा जाणों का प्रतिपादन लोकाराधन की विचारणा के अन्तर्गत ही हुआ है। वदेही जनवास मन्त्राकार्य में प्रतिपादित लोकाराधन की विचारणा का अध्ययन राजनीतिक सामाजिक आध्यात्मिक (धार्मिक) एवं सांस्कृतिक विभिन्न मानवतावादी परिप्रदय में किया जा सकता है।

(अ) राजनीतिक आदेश— लोकाराधन का मूल विचार तत्काल हमारे युग की समाज कल्याण (Social Welfare) की विचारणा का महत्वपूर्ण है

^{१६} कविसम्राट हरिजीव और उनकी कलाकृतियाँ पृ० १२०

^७ वदेहा जनवास सप्तम मग छन्द ७५, पृ० ६२

जिसके अनुसार सम्पूर्ण राजकीय माधना एवं शक्ति का उपयोग जनक्याण या लोकहित की साधना के लिए किया जाना चाहिए। प्रस्तुत काव्य क मंत्रणा गृह नामक मग म वदेहा के सम्प्र ध म फते नाकाराधन पर विचार करन क लिए एकत्रित भाइया से राम स्पष्ट शांता म कहते ॥ कि जनन्ति की साधना ही प्रशासन की नीतियों का आधार है

प्रजारजन हित साधन भाव । राज्य शासन या हं पर अग ॥

अथवा

उचित है हे अत्यन्त पुनीत । लोक आराधन का नप नाति ॥ ८

शान्ति अर्जुना और त्याग नाकाराधन की नीति के मूनभूत आधार हैं । इस नीति का पान प्रशासक द्वारा दमन करके नहीं बरन प्रजा का विश्वास अर्जित करके किया जा सकता है । इसलिए राम कहते ॥

अमन ह मुझे क्वापि न इष्ट । क्याकि यह है भयमूत्रन नीति ।

चाह है लाभ करू कर त्याग । प्रजा की मन्धी प्रीति प्रनाति ॥ ९

जनकनी क विरुद्ध फले प्रतिवात् (लोकापवात्) का प्रतिहार भी राम शान्तिपूण नीति द्वारा ही करना चाहते ॥ चाह इसक लिए उन् वड स बडा त्याग क्या न करना पन्

पठन कर लोकाराधन मन्त्र । करूगा म इसका प्रतिहार ।

साध कर जनन्ति साधन सूत्र । करूगा घर घर शान्ति प्रसार ॥ १०

×

×

×

लोकाराधन के बल म लोकापवात् न्त्र टूगा ।

बलुपित मानस का पावन कर में बाधित फन नगा ॥ ११

राम गुरु वशिष्ठ स भी यही बात दत्तापूर्वक कहत ह कि जब मैंने लोकाराधन का क्रम ग्रहण किया है तो मैं प्रिया का वियोग भी सतूगा और वन्-मे वन् त्याग भी करूगा ॥^{१२} कवि न लोकाराधन का राजनीति का सार्व्व कहा ॥^{१३} व्सी सन्भ म यन् भा उल्लेखनीय है कि लोकाराधन की नीति का

^८ वदेही-धनवास तृतीय मग पृ २१ ३५

^९ वही पृ ४२

^{१०} वही चतुस मग पृ० ४२

^{११} वही पचम मग पृ० ५८

^{१२} वही चतुस मग पृ० ६८

^{१३} वही मग १७ पृ० २४०

जाधार यदि हिमायत नहा है ता अति-अहिमायत नी नहा है । समाज म जा पूर और अनाचार ह य लोकाराधन क माग क कटर हैं जिनका नमन करन क लिए नष्टनाति भा आवश्यक ८

रत्ना म म क म शानि करता किया करे जा पूर ।

ता हुआ लोकाराधन कहा तार कटर जा हुए न दूर ॥ १६

अम्बु

हे क्षमा याम्य न अत्याचार उचित है दण्डनाय का दण्ड ।

निवारण करना ह कर्तव्य त्रिमा पावण्डा का पासण्ड ॥ १७

प्रसामर (नप) क त्रिण अर्पित गुणा का विवचन करत हुए हरिऔधना न कहा है त्रि— नप भा अन्त मनुज है अत उमम अनिवायन मनुजता हानी चाहिए । वह मत्य और याय का जाधार मन्म ह । उमना प्रथम शून्य तारागधन का सायना करत हुए शान्तिमय शासन करना है । १८ कवि क शान्ति म

त्याग सहित तिमम लोकाराधन नहा ।

वह लोकाराधन कहलाता है किमलिन ॥ १९

एग प्रकार स्पष्ट है कि हरिऔधना ने राजनीति का नाति म सम्पृक्त करव रखा है । उनका राजनयन भा प्रजातन्त्र का हा प्रतिमूर्ति है । उनका राजनीतिज्ञ ज्ञान युग जावन का मायताजा एव यमस्याजा क गवना अनुसूच ८ ।

(ब) सामाजिक आदर्श—कवि क चतुर्ण म म विद्वानरता तार कहा क वातावरण क माध्यम म कवि न स्त्रा-पुंगव क सम्बन्धो न्यपत्य विशाह सभ्या एव पारिवारिक जावन की गमस्यात्रा पर गम्भीर विचार प्रस्तुत किय ह । कवि का मन ह त्रि विद्याता न स्या-पुंगव की रचना नय मगत का कामना म का ह । स्त्री और पुंगव अपन जाय म अपूर्ण न विन्दु नाना का मितन उ- पूणता प्रप्ता करता है । १८ विवाह क सम्बन्ध म विनाशिता कहना

१४ बन्धु बन्धुत्व लुनाय मग पृ० ८१

१५ वही, पृ० ८३

१६ वही नयम मग पृ० ११८

१७ वही, पृ० ११४

१८ वही चतुर्ण छ- पृ० ४१

ह कि विवाह कोई बंधन नह। वरन् निगमागम द्वारा प्रतिपादित वह पवित्र विधान है जिसके द्वारा दा हृदय भिन्नते ह तथा कुन कुटुम्ब गौरवाचिन तथा समाज सम्मानित हाता ह। इमीनिए विवाह एक ममान्त प्रथा है।^{१६}

दाम्पत्य जीवन की सफलता का आधार सहकारिता है।^{१७} सहकारिता स अभिप्राय पति पत्नी क पारस्परिक सहयोग स ही नह। अपितु जावन क प्रत्येक क्षण म सामजस्य तथा सामरस्य स भी ह। उदाहरणार्थ नारी का निर्माण मृदुन उपात्तना स हुआ ह अत वह सुकोमल और महत्या है। पुरुष की रचना अकामल तत्त्वा स हुई ह अत वह दम्बता और बनवान है। जीवन म दाना का हा महत्व आवश्यकता एव उपयागिता ह।^{१८} विज्ञानवता न नारा के निए अपक्षित गुणा का चर्चा करत हुए कहा है कि

महज सरसता चिन्ता मृदुता सरसता
जाति त्रिव्य गुण द्वारा हा जा उजिता।
प्राति सहित जो पति-पद का ह पूजता
भव म हाता है वह पत्नी पूजिता ॥^{२२}

इन्द्रियलानुपता अतिशय बनाव शृंगार कपटपूर्ण व्यवहार अहभाव जादि का स्त्री जाति का दुगण कहा गया है।

नारी क प्रति हरिऔबजा का दृष्टिकाण प्रगतिशान वा। व उस घर की चहारदीवारी म बंद रहन वाली गहिनी ही नह। अपितु सहधर्मिणा भी मानत थ

ह पत्नी न कवन गहिनी
सहधर्मिणा मन्त्रिणी भी है।^३

मानव का अधिष्ठात्रा होन क कारण नारी पुरुष स भा अधिक् उच्च पद की अधिचारिणा है

जनना कवन जन जनना नया।
उमका पद है जावन का भा जनयिता ॥

^{१६} बदेही-वनवास चतुर्था सग छन्द ५५ १७

^२ वही छन्द ६

^{२१} वही छन्द ६६ ६७

^{२२} वही छन्द ११५

^३ वही पद्य सग छन्द ६६

उसमें वह शक्ति सुत चरित मृजत का ।

नहा पा सका जिस प्रकृति कर स पिता ॥ २४

हरिऔधजी जिस ज्ञान सामाजिक व्यवस्था के समर्थक व उग्रका स्वरूप कायक तृतीय मग क रामराय वंश में उल्लिखित है । हरिऔधजी न सामाजिक जीवन का सम्पन्नता क निष्पन्न ममता भाव स्वतन्त्रता पारस्परिक प्रेम वनाथम धर्मपालन शान्त मयम सत्कार जाति का आवश्यक माना है । २४

(स) आध्यात्मिक आदर्श—हरिऔधजी न निम्नोक्त पौराणिकता क प्रति बौद्धिक दृष्टि अपनाया है किन्तु उनका दृष्टिकोण विद्वद्ध वनवास नहा वन पाया है । मस्कारवशात् व वदना-वनवास क चरित-नायक राम और माता का क्रमशः मानवता का महानय विभूति और लोकपूज्या आयशाना मानन हुए भी उनका लोकाराधन चरित तथा स्वर्गीय सम्पन्नमत्पर ‘यस्मिन्’ क चित्रण क ‘यामाह’ म मुक्त नहा हा पाय है । बदेही-वनवास म ‘न चरित’ का यद्यपि लौकिक रूप म ही चित्रित किया गया है किन्तु इनका जीवन स सम्बन्ध रखन वाली जनक अलौकिकतापूर्ण घटनाओं और विपत्तियों का समावेश स्वतः हा गया है । जन्महरणाय वा ‘माकि’ आश्रम म राम का गुण गान करत हुए वदनी कहता है

जिसरी तानललाम मूर्ति भरलनामता का जनता है ।

जिसना महारचिर रचना म तान रचिरता वसनी है ।

जिसकी नीलात्त नीलाह, लोक जनक की धारता है ॥ २५

उपयुक्त उद्धरण म ‘भवललामता का जनता’ लोकाराधन तानाण मन्त्र रचिर रचना जाति शत्रु राम क दुश्चरित्व का वाचक बनत है । इस प्रकार वदना जय वात्माकि-आश्रम म लौकिक अवधपुरी जाता है और जस हा रथ स उत्तरतर राम का चरणस्पर्श करता है जि उनका पापिण्ड शरीर निश्चल्ट शरीर त्रिव्य व्यापित म परिणित हो जाता है

ज्याहि पति प्राण न पति-पत्न-पन्न का ।

गपा किया निर्जीव मूर्ति सी बन गया ॥

२४ बदेही-वनवास ज्ञान मग छ २५

२५ वही तृतीय मग पृ० १७ ६३

२६ वही, दशम मग पृ० १२६ २७

जोर हुए जतिरक चित्त उल्लास था ।

दिव-ज्यानि म परिणित पन म हृत् ॥ २७

काव्य में इस कतिपय जय सद्भ भी है जन्म राम का प्रभुर
निभुवनपति तथा बदही का शक्ति कहा गया है । इतना शत हुए भी
बदेही वनवास के राम लोकसदा जोर साता भवसविका है

साम्राजा हाकर भा सजावति है ।

राजनिदिनी हाकर है भयसेविका ॥ २८

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राम-साता के प्रति कवि का दृष्टिकोण
परम्परानिष्ठ होते हुये भी प्रगतिशील है । हरिऔध का कवि जास्तिक है ।
ब्रह्म की सत्ता में उस पूरे विश्वास है । इस विश्वास का व्यंजना काव्य में
जनन स्थला पर हुई है । प्रकृति का कवि ने अनन्तसत्ता की शक्ति कहा है ।
वह अदृश्य ब्रह्माण्ड की स्वामिनी है ।^{२६} पौराणिका ने सृष्टि और प्रकृति का
माया कहकर सम्बोधित किया है किन्तु हरिऔधजी इस विचार से सहमत
नहीं । उनका मत है कि

सृष्टि या प्रकृति कृति का बहूवा कहकर माया ।

कुछ विवधा न है गुण दोषमयी बतनाया ॥

इस विचार से है चित्त शक्ति कवित्त हाता ।

बहु विदिता निज सब शक्ति सत्ता है खोनी ॥^{२७}

नियतित्राट की धारणा का भी कवि ने स्वीकार किया है । यथा

यह विधान विधि का है नियति रण्य है ।

कय न विवशता मनु सुत का वसस हई ॥^{२८}

हरिऔधजी का जात्यात्मिक निष्ठाभा पर विचार करने के अनन्तर विचार
णाय यह है कि जात्यात्मिकता और भौतिकता में कवि के विचार से वरण्य
क्या है ? यह एक चिन्तन प्रश्न है । आज के भौतिकता प्रधान युग जावन में
यह प्रश्न पढ़ने का अपेक्षा का अधिक महत्त्वपूर्ण है । हरिऔधजी ने वर्तमान
समाज का विडम्बनापूर्ण परिस्थितियाँ एवं विषमता का मूल कारण भौतिकवा

^{२७} बदेही वनवास मग १८ पृ २१०

^{२८} वही मग १ पृ १६६

^{२९} वही मग १ पृ १०

^{३०} वही मग १ पृ ७६

^{३१} वही मग १७ पृ २८

का प्रभुता माना है। भौतिकवादी के प्रभाव में मनुष्य में स्वायत्तक प्रवृत्तियाँ विकसित होना । "ही प्रवृत्तियाँ के बनावून हाकर मनुष्य स्वमुग का अजना में सलान हाकर मधपरत रहता ह । "मानिए "रिजोषजा न भौतिकवादिना का स्पष्ट शब्द में निम्ब्वार किया "

'यह भौतिकता का है बन् विरुद्धता ।

उसमें गता प्राणि पत्र का पतन ॥

कवि ने आध्यात्मिकता और भौतिकता का तुलना करत हुए कहा है कि भौतिकता में स्वायत्तगणना विनामिता लाभमर्दान् वृत्तिमता उद्य और जन्वादिना ह जबकि आध्यात्मिकता में "गता मन्दायता त्याग करणा मास्त्विकता, मदानुभूति शूचिता जाति विापशाए " । ^३ कवि के शब्दों में

यदि भौतिकता तानबाय सम्पत्ति है ।

ता आध्यात्मिकता "विन मुविभूति है ॥

यदि उसमें है नारनाय बट्ट कल्पना ।

ता इसमें स्वर्गीय मरम अनुभूति " ॥

भौतिकता में है यदि जन्वादिना ।

आध्यात्मिकता मध्य चिमया शक्ति " ॥ ^{३८}

अस्तु नाकानुरजन का दृष्टि में समाज में आध्यात्मिकता का प्रचार प्रसार आवश्यक है ।^{३५}

(द) सांस्कृतिक आदेश—मानवतावादी संस्कृति के जड़पत्तान्तों का प्रतिष्ठा के लिए बदहा-वनवास का रक्षितता पूरण माग जोर प्रयत्नमान रहा है । उसमें नाकागधन का मिद्धि का मानवता का करणाय हटत बटा है ।^{३६} कवि ने स्वात्मनि-साधन का पतुता तमा भवति जोर दगहित मानव का मनुष्यता का अभिधान दिया है । मनुष्या में व ग पूय और बट " जा मत्स्य और "साय जम मानव-मूया का प्रतिष्ठा के लिए स्वहिता का उत्तम कर त है

^१ बदहा-वनवास मग १५ पृ० २०

^{३३} वही छं १/० १५८

^{३६} वही छं २०२ २०

^{३५} वही छं १६०

^{३६} वही मग ७ छं ८६

भवहित पर हित देश हिन्दू का यान रख ।
 कर लेना निज स्वाथ सिद्धि है मनुजता ॥
 मनुजा म व परम पूज्य ह वद्य ह ।
 जा पराथ उरसर्गी कृत जीवन रहे ॥
 सत्य याय क निण जिहान जटन रह ।
 प्राणदान तक किय सब सकट सह ॥ ३७

काव्य में स्वाथ से परमाथ की समग्रह से त्याग की स्वहित से जानीय एवं दशहित की महत्ता सिद्ध करके अंततः जावन भूरया एवं भारतीय संस्कृति के पुनीन जाणशों की स्थापना की गयी है ।

इस प्रकार वदही वनवास महाकाव्य में लामाराधन की विचारणा का कवि ने राजनीतिक सामाजिक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक (मानवतावादी) जादि विभिन्न परिसर-दर्भों में प्रस्थापित किया है । इस विचारधारा की महत्ता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वदही के वनवास का कारण भी लोकाराधन ही माना गया है । वदही का वनवास में भजा जाना आय जाति की चिर कालिक प्रथा कहा गया है । " गभवती परनी को नृप कुलपति क जात्रम म लमलिए भज दिया करत ५ जिसस उनका वशधर मवनाकम्तिकारा हा ।^{३६} जम्नु यह कहा जा सकता है कि लामाराधन का जिस विचारणा का प्रस्तुत महाकाव्य का विचार-दशन बनाकर प्रस्थापित किया गया है वह परम्परा पापित हात हुए भी युग जीवन के लिए प्ररव है ।

३७ वदही-वनवास मग ६ छन्द ११ १६

३८ वही मग ४ छन्द ५१

३९ वही मग ८ छन्द २६

1

‘साकेत-सन्त’ महाकाव्य मे
सास्कृतिक आदर्श

‘साकेत-सन्त’ महाकाव्य में सांस्कृतिक आदर्श

सजन प्रेरणा

साकेत-सन्त’ की रचयिता न जय कविता का भाति साध्य की रूमिका या प्रस्तावना के रूप में कुछ नहीं लिखा है जिसमें काव्य रचना के उद्देश्य या प्रेरणा के सम्बन्ध में कुछ बतलाना है। फिर भी स्पष्ट है कि भारत के चरित्र का महत्ता का प्रदर्शित करने के लिए ही साकेत-सन्त की रचना हुई है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यद्यपि साकेत-सन्त की रचना पर धीरे-धीरे मधुसूदन गुप्त के साकेत का पर्याप्त अभाव है। किन्तु साकेत का मूलनामक प्रेरणा के ध्यान से रचित है। साकेत महाकाव्य की रचना रामकाव्य का उपनिता उद्देश्य के चरित्रात्मा के दृष्टि से है। जहाँ साकेत-सन्त के चरित्र नायक भारत का चरित्र रामकाव्य की परम्परा में उपासित नहीं रहा है। वस्तुतः भारत का चरित्र तो अतना गरिमापूर्ण और महान था कि उसके विशेष चित्रण के लिए एक स्वतंत्र काव्य की रचना अपेक्षित थी। सम्भवतः हमें उद्देश्य की पूर्ति के लिए डॉ० वात्सवप्रसाद मिश्र ने साकेत-सन्त महाकाव्य की रचना की। हमें अनिश्चित सम्पूर्ण काव्य के अध्ययन से एक तथ्य यह सामने आता है कि काव्य में एक निश्चित विचार-स्थान की प्रतिष्ठा के लिए कवि आद्यतन प्रयत्नशील रहा है। हम विचार-स्थान का आधार भारतीय सभ्यता के मूलभूत सिद्धांत हैं। भारत का चरित्र भारतीय सभ्यता के पुनात आत्मा का सांस्कृतिक प्रतीक है जिसे कवि वर्तमान युग-जीवन के अज्ञान और अपर्याप्त वातावरण में प्राण के लिए आवश्यक मानता है। साकेत-सन्त के कवि ने क्या भा है कि

‘गति तत्र व्रान्ति का वने’ बना विव जय
तामसा तमिष्ठा में विरल विलगता ह।
तत्र भावना में भारतीयता का नय रूप
भरकर भारत भरत गुण गाना है ॥ ३

- १ (अ) डॉ० प्रतिपारमिष्ठा बामर्षी शताब्दी के महाकाव्य पृ० ६१
(आ) डॉ० गाविन्दराम शर्मा हिंदा के आधुनिक महाकाव्य पृ० ७८
साकेत-सन्त, प्रथम संस्करण उपक्रम पृ० १७

साकेत सत क जीवन-गान का आधार भाग्यीय मस्मृति क चिरन्तन जादश है। इन आदर्शों की प्रतिष्ठा कवि ने दो प्रकार में की है

- १ प्राचीन भाग्याय जावन मूल्या की श्रुतता का प्रतिपादन और
- २ पाश्चात्य भौतिकतावादी जावनादर्शों का निषेध।

काव्य क आरम्भ में ही भरत जब जपन ननिहान में मामा युधाजित क साथ जावेट क निग जात हैं ता उनक वाण से एक मृग आहत हा जाता है। मृग की कातर दशा को देखकर भरत का भावुन हृदय द्रविन हो जाता है। यही कवि ने युधाजित और भरत क मवात का योजना का है जिसमें पाश्चात्य और पौराण्य आदर्शों और मूल्या का विवचना हुई है। युधाजित कहता है कि क्षत्रिया का पशु पर करणा करना उचित नहीं। क्षमा ता तापस का धर्म है। प्रशासक को तो कठोर होना चाहिए।^३ भूप का ता एमा गेना चान्ति कि श्रिभवन उमक भय से प्ररम्पित रत। शासक का जीवन तो मधपपूर्ण हाना है। क्याकि

मधप जगत का अर्थ है मधप जगत का प्रति है।

मधप काट पर निभर अपना उजति का स्थिति है ॥^४

यदि ससार में जीना और बचना है ता मधपरत हाना ही पन्गा। ससार में मत्स्य-याय प्रसिद्ध है जिमके अनुसार बन्ग छोट का खा जाता है। यह अकनी वीरभाग्या है। जो सत्ताधारी है ससार उसा का साथ देता है। अथ और काम का सिद्धि में ही जीवन की सफलता निहित है। इसलिए त्या और करणा का बान छालर स्वयं अपने भाग्यविधाना बनो।^५ युधाजित ने भरत से यह भा कहा कि गपन प्रशासन बनने क लिए तुम्हें शोषण की नीति सीखनी हागी। जीवन रण में सौभाग्यवत्र बनने क लिए जोरा को कुचरना भा पन्गा। क्याकि

क्षत्रा की वति बनी पर

पनपी है सत्ता महता।

निधन कुटिया का टाकर

विक्रमा महता की मत्ता ॥^७

^३ साकेत-सन्त विनाय मग १६ २५

^४ वही छन्द २६

^५ वही छन्द १ ७

^६ वही छन्द २८ ०

^७ वही छन्द २६

युवाजित के कथन का प्रतिपादन करने हुए भरत ने कहा कि करुणा ही सबसे बड़ा बल है। शासन एक तपस्वी है जगत् रक्षा उसका तप है। सत्कार में काम या स्वामी होता क्यों का क्रम है। प्रभुता तो एक भ्रम है।^५ सांसारिक जावन का सार मधुप नहीं बरन पराशांति की प्राप्ति करना है

‘मधुप न सार जगत का धर्म सांग मात्र भवन की।

है पराशांति परमापति जिससे रहता स्थिति मन की ॥ ४

भरत ने कहा कि शोषण हा करना है तो जीवा का नहीं जपितु पापा का करना चाहिए। भरत ने मत्स्य याचक्य पर जादरित सत्ता और ऊँच नीच का जन्म देने वाले वपस्य भाव रा ना सतक गणन किया। उन्होंने लोक व्यवस्था की सुस्थिरता के लिए धर्माय काम की साधना को महत्त्व देते हुए कहा

करुणांति जिस सिन पायी रामाय धर्म के भ्रम म।

मुश्चिर है लोक व्यवस्था धर्माय काम के धर्म म ॥ ५

इस प्रकार स्पष्टतः भरत जी ने युवाजित के विचार परम्पर विरोधी है। एक ने जावन में मधुप (Struggle in Life) मस्य-न्याय (Survival of the Fittest) शक्तिमत्ता (Might is Right) सत्ता निष्ठुरता मन, शोषण और अधकाम का सिद्धि को महत्त्व दिया है तो दूसरे ने दया करुणा, शान्ति समता, और धर्माय काम की प्राप्ति का जावन का उपनिर्णय माना है। वस्तुतः इन दोनों की मायताण क्रमशः पाश्चात्य और पौराण्य जावनान्ध्रों का प्रतिनिधित्व करती है। यहाँ साकेत सत्त के रचयिता की विचारधारा के उद्घापक भग्न ह। कवि के विचारान का सभी विशेषताण भरत के चरित्र में चरितार्थ भा हूँ हैं।

उपयुक्त विवचन से यह तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि साकेत-सत्त के कवि की जावनान्ध्र सम्बन्ध मायताण का मूल आधार भारतीय जावनान्ध्रन है। अस्तु भारतीय ससृष्टि धर्म और दानशास्त्र मिश्रजा के जावनान्ध्रन सम्बन्ध मत्तमा की पृष्ठभूमि कह जा सतत हैं किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि पाश्चात्य जावनान्ध्रन की उपलक्षिता (जिनका चतमा जावन पर पर्याप्त प्रभाव है) का साकेत-सत्त के प्रणता न स्वीकारा नहीं है। वह

^५ साकेत-सत्त, द्वितीय मग छन्द ४२ ४६

^४ वही, छन्द ४६

^५ वही, छन्द ४६

साकेत मत के जीवन गान का आधार भारतीय ससृष्टि क चिरनन आश है । इन आशों की प्रतिष्ठा कवि नो प्रकार स का है

- १ प्राचीन भारतीय जीवन मूल्या की श्रुता का प्रतिपादन और
- २ पाश्चात्य भौतिकतावादी जावनाशों का निषध ।

काय क आरम्भ म ही भरत जब अपन ननिहान म मामा युधाजित क साथ जावट के तिए जात ता उनक बाण से एक मृग जाहन हा जाना है । मृग का कातर दशा को देखकर भरत का भावुन हृदय द्रविन हो जाना है । यही कवि न युधाजित और भरत क सवात् की योजना का है जिसम पाश्चात्य और पौरात्य आशों और मूर्या की विवचना हुन है । युधाजित कहता है कि क्षत्रिया का पशु पर करणा करना उचित नहा । क्षमा ता तापस का घम है । प्रशासक को नो कठोर होना चाहिए ।^३ भूप का ता ऐसा नोना चाहिए कि त्रिभवन उसक भय से प्रवम्पित रह । शासक का जीवन ता मघपपूण हाना है । क्याकि

मघप जगन का अथ है सघष जगन का नति है ।

मघप क पर निभर अपनी उग्रति की श्पिति है ॥^४

यदि मसार म जीना और वटना है तो सघपरत होना ही पडेगा । ससार म मरम्य याय प्रमिद्ध है जिसके अनुसार वटा छा का खा लेता है । यह अवनी वीरभोग्या है । जो सत्ताकारी है मसार उसी का साथ देता है । अथ और काम का सिद्धि म ही जीवन की सफरता निहित है । इमनिए दया और करणा का वानें छाकर स्वय अपन भाग्यविधाता बनो ।^५ युधाजित न भरत से यह भी कहा कि मफन प्रशासन बनने के तिए तुम्ह शोपण की नीति भीखनी हागी । जीवन गण म सौभाग्यचक्र वटान के लिए औरा को कुचलना भी पडगा ।^६ क्याकि

क्षत्र की वनि वनी पर
पनपी है मना महत्ता ।
निधन कुटिया का टाकर
विकसा मटना की मत्ता ॥^७

^३ साकेत सत्त द्वितीय मग छ १६ २५

^४ वही छ २६

^५ वही छ १ ७

^६ वही छ २८ ०

^७ वही छ २६

युवाजित व कथन का प्रतिबन्ध कर्तृ दृष्ट भक्त न कहा कि कल्याण का सपन क्या मत है। सामर एर तपस्वा ह जग रभा उमरा तप है। मसार म दाम या म्नामा हाता कर्मों का क्रम है। प्रभुता ता एर भ्रम है।^६ सामारिक जावन का मात्र मघप ग्ही वरन पराशानि की प्राप्ति करना है

मघप न मार जगत का थय सांग मान भवन की।

है पराशानि परमाज्ञति जिमन रत्ना म्पिति मल वा ॥^६

भरत न क्या कि शापण का करता है ता जीवा था न्नी अपितु पापा का करता चाणिए। भरत न मत्स्य-न्याय-मन पर जायागिन मत्ता जीर उच नीच का जम न्न बाल वपम्य भाव का भी सनक स्पन्न किया। उहान ताव-व्यवस्था का सुस्थिरता क विण धमाथ काम की सायना की महत्त्व न्न का क्या

कव शान्ति किस मिन पाया वामाथ धम क भ्रम म।

सुस्थिर ह ताव व्यवस्था, धमाथ काम क जम म ॥^७

न्य प्रकार स्पन्न भक्त और युवाजित क विचार परम्पर विचार है। एक न जावन म मघप (Struggle in Life) मत्स्य-न्याय (Survival of the Fittest) शक्तिमत्ता (Might is Right) सत्ता निष्पुग्ता म्मन शापण और अवकाश का सिद्धि का मत्त्व लिया ह ता दूसर न न्या कल्याण शान्ति ममता जीर धर्माथ काम का प्राप्ति की जावन ती उपर्ति प्रमाणा है। वस्तुन न्न नता की मायनाए धमम पायकाय जीर पौवाय जीवनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। यहाँ साकेत-मन्त्र क रचयिता का विचारधारा क उद्घाटक भरत है। कवि क विचार-ज्ञान की सभी विपणनाए भक्त क चरित्र म चरितार्थ भी हुई है।

उपरोक्त विवचन स यत् ता स्पष्ट प्रतीत हाता है कि 'साकेत-मन्त्र क कवि की साकेत-ज्ञान मन्त्र-ज्ञान मायनाए का मून आधार भाग्याय जीवन्-ज्ञान है। वस्तु नागनीय साम्प्रतिक धम जीर न्नाताम्य सिधन्ता क जीवन्-ज्ञान मन्त्र-ज्ञान मानव्या ता पृष्णभूमि क जा सत है किन्तु न्मरा य धर्मिप्राय नही कि पाश्चाय जावन-ज्ञान का उपलक्ष्यता (जिनका वनमा नीरन पर पयाण प्रभाव है) का साकेत-मन्त्र क प्रणना न म्पारास न्ना है। वस्तु

^६ साकेत-मन्त्र, द्वितीय मण १११ ८-४६

^७ वही, छन्द ४८

^८ वही, छन्द ४८

भारतीयता का पुजारी हात हुए भी समसामयिक चिंतनद्वारा जीर जीवन बोध के प्रति जागरूक रहा है। धर्मकी प्रमाण का यह सम्पूर्ण चिंतनक्रम में उपन्यास है। उदाहरणार्थ कवि न भारतीय धर्मशास्त्र की परम्परा के अनुसार राजा का ईश्वर का रूप मानते हुए भा उसका जीवन का मायव्य साहित्य माना है

भूष इससे हा प्रभ का रूप कि उसके सिर है इतना भार ।
न अपन किंतु गौर के लिए सदा उसका जीवन संचार ॥

×

×

×

राजमित्र शासन का या खिले जगमङ्गलमय सात्विक रूप ।

कि शासन सेवक होकर मिले स्वकर्मों में भग प्रभ जनूप ॥ ११

स्पष्टतः यहाँ प्रणामक के प्रजापति-स्वरूप का मायता प्रदान का गयी है किंतु राजतंत्र का निषेध नहीं। धर्मा प्रसार कवि न भारतीय मायता के अनुसार नियति जीर भाग्य के अस्तित्व का स्वीकार किया है ता पुस्तक की महत्ता का भा प्रतिपादन किया है। यथा

भाग्यवाद

पुस्तक कुछ नहीं समय जनवान
समय के हाथ फताफत दात ।

×

भाग्य त्रिपि का पालन निमाण
मृत का तब मिनत है प्राण ॥ १२

नियति

नियति परतंत्र मनुज व्यापार
नियति हा मार नियति ही सार ।
नियति है जगत्प्राण का कम
कीन सम्यगा पूरा मम ।
विषम यह विधि ना रचा विधान
विधाना समग्र या भगवान ॥ १३

११ साकेत सप्त द्वापरा सग पृ १५ १५६

१२ वही चतुर्थ सग पृ ६० ६१

१३ वही पृ ६१

पुरुषार्थ

मत्त ही हो जीवन का ध्येय कम की गीता मवकी गम ।

भाग्य की बात भाग्य के हाथ पुरुष का है पौरुष व साय ।

× × ×

पुरुष है भाग्यविधाता आप अतस ही पाता है अभिशाप ।^{१४}

इसी मदम म कवि की ईश विपमक धारणा भा दृष्टव्य है ।
श्री मविलाशरण गुप्त का भांति रामबाव्या (कोशल किशोर साकेत-मत्त
'रामराज्य) व प्रणता डा० बलदेवप्रसाद मिश्र वष्णव भावना के कवि हैं ।
उनके शब्दों म

'स्वामी एक राम ह उही का धाम विश्व यह ।^{१५}

मिश्रजी ने साकेत सन्त म ग्रह्य के लिए ईश ईश्वर प्रभु विभ विश्वम्भर
विश्वपुरुष आदि पौराणिक अभिधाना का प्रयोग किया है । किंतु वष्णव
भावना व अनुवर्ती हात हुए भा उहाने जनता म जनान को म्बन की
बात कहकर ईश्वर और धम का मानवतावादी याख्या प्रस्तुत का है

मनुज म शक्ति, मनुज मे भक्ति

जनादन का जन-जन अवतार ।^{१६}

अथवा

न देला जिसन भू पर स्वग, नरा म विश्वम्भर भगवान ।

बधा है प्रम बधा है कम बधा है उसवा सारा पान ।

जनादन को जनता म नवो यही सब धर्मों का सार ।^{१७}

इसा प्रकार देशभक्ति राष्ट्रीय एकता और भाग्य की महिमा का
बखान काव्य म अतक स्थना पर हुआ है किन्तु राष्ट्रीय भावना की
धरम परिणति विश्व प्रेम म निर्देशित की गयी है । कवि के शब्दों म

हा उठ उत्तर दक्षिण एक तुम्हारा भारत बन अभय ।

बहतर आर्षावन लताम भरत या भारत हो विख्यात ।

ममवित सस्त्रुति इसका कर विश्वभर को उवन अवलात ।

पूय हो इसकी वण-वण भूमि बढ या मग्निमि अमिट अपार ।

रह इच्छुक निजर नी सत्ता यहाँ पर लेन को अवतार ।^{१८}

१४ साकेत-सन्त, चतुश मग पृ० ६२ ६३

१५ वही, उपक्रम पृ० १७

१६ वही द्वाश मग पृ० १४६

१७ वही पृ० १५१

१८ वही, पृ० १५७

अथवा

भारत जब तक जग म हागा
भारतीयता तब तक होगा ।
भारतीयता होगी जब तक
जग होगा तब तक नीरोगी । १६

उपयुक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि कवि राष्ट्रोत्थान का जागृशी है कि नु राष्ट्रोत्थान की कामना वह निबल राष्ट्रा को हृदयन क लिए नहा वर्गन विश्वन्ति जीर मानवता के उत्कष के लिए करता है

सभी निज सस्कृति क अनुकून
एक हो रचें राष्ट्र उत्थान ।
वसलिए नही कि करें सशक्त
निबना को अपने म लीन ।
इमलिए कि हो विश्वहित हतु
समुन्नति पथ पर सब स्वाधीन ।
विश्व म फन जाय सुख शान्ति
यही हो जीवन का आदश ।
इसी म मानवता की कांति
इसी म मानव का उत्कष । २

जिसे हम आज सहअस्तित्व का सिद्धान्त कहते हैं उसका प्रतिपादन भारतीय मनीषी न सर्वे भवन्तु मुग्धिन कहकर बहुत पहन किया था । मित्रजी न विश्व मगन की कामना करत हुए उमी सिद्धान्त की पुनप्रतिष्ठा साकेत-सन्त म का ३ । कवि के शब्द म

सब स्वतंत्र सब समृद्ध ।
निज उन्नति म सब ही रह सति स अविद्ध ।
× × × ×
एक ध्वजा एक छत्र एक स्वीय राज्य ऋद्ध ।
विश्व की मनुष्य जानि एक ही प्रभाव इद्ध ।
मिद्ध करें जग विभक्ति भारतीयता प्रमिद्ध । २१

१६ साकेत-सन्त प्रयोग मग पृ० १८२

२ वही प्रयोग मग पृ० १५५

२१ वही अनुश्रवण मग पृ १६७

युगीन समस्याओं का निरूपण और निदान

'साकेत-भक्त' में समसामयिक जीवन का अनक महत्त्वपूर्ण समस्याओं का निरूपण और निदान प्रस्तुत किया गया है। काव्य के द्वादश सग में भरत राम में जावन का मम जानने हेतु प्रश्न करते हैं। उत्तर में राम सृष्टि के रचना काल में वेक वतमान युग तक मानवता के विकासक्रम का परिचय दत्त हुए विश्व जीवन की अनक उल्लेखनीय समस्याओं पर मूल्यवान विचार प्रस्तुत करते हैं। मिथजी के अनुसार चतुर्था के सफा में सृष्टि रचना हुई। विकासक्रम में वसुधरा पर मानव अवतरित हुआ। अपने विशाल अस्तित्व के कारण सृष्टि और प्रलय के अनक चक्र लाघवर भी मानव आज तक अचल अटल है। मानव की अपार समृद्धि देखकर देवता भी सहम गये। कालान्तर में द्रव्य-सघात का निम्ना के वशीभूत होकर मनुष्या में परम्पर पडयत्र हान गये। प्रेम और मन्त्र दत्त गये। इष्या और वमनस्य का प्रसार ज्ञान लगा। अथ-सग्रह की प्रवृत्ति न पूजीवात् का जन्म लिया। वही पूजीवात् जा समाज का अभिगाप बनकर शोषण की गाव पर पतप रहा है

द्रव्य सघात द्रव्य सघात
छा गया सिक्का का वह जान।
कौश्या पर लुटन ही गग
कराच मनुजा के कान।
कड निधन बुटिया कर चर
धना का उठा एक प्रामात्।
अनका का द दड दामरव
एक न पाया प्रभुता स्वात्। २२

पूजीवाणी मनोवृत्ति के कारण जा सघप बना वह व्यक्तिगत एक ही सीमित न रहा वरन् वग समाज और राष्ट्र में ना फन गया। हमारे ही देश में ब्राह्मण और क्षत्रिय में जाय और अनाय में दक्षिण और उत्तर में विराय तथा मघप लियायी गता है। आर्यावत और जाय-मस्वृति का पुरातन स्वरूप आज निम्न भिन्न हो गया है। पूजीवात् और साम्प्रतिकवात् के कारण आज सम्पूर्ण मानव जाति विवश होकर कराह रही है

मनुजता रनी कराह कराह आह = कोन पूछता हान
राक्षसी चकरी में पिग रह मनुजता के जजर कवान।

अकेला रावण क्या इस बात जनका परद्रोषण के वृत्त
 कुचरते जात वन मातंग मनुजता के कामन जराजित ।
 अनका देख रह ऋषि वद न कोई चतता किन्तु उपाय
 महा भीषण यह जत्याचार मनुज मनुजा नी नी गया जाय । २३

इस विडम्बनापूर्ण स्थिति का समाधान मुझात हुए कवि न गया है कि
 विश्व जीवन में मगठन है २४ आय और जनाय सस्त्रनिया म मन है २५
 श्रम धन की महत्ता है २६ भौतिक सुख मुविधा के साधन सभा का उपनयन
 है किन्तु मनुष्य विज्ञानप्रद भौतिक सुख-मुविधा का अधीन न है । मनुष्य
 विज्ञान में नया भारताय याग विज्ञान की शक्ति से ऐसा विधान कर कि मानव
 में जा भगवान छिपा है वह प्रकट हो

हमार यागा के विज्ञान
 रचें ऐसा विज्ञान नवीन ।
 × × ×
 व्यवस्था एक नयी चुपचाप
 विश्व में ऐसा रचे विधान ।
 कि हर नर के जन्म में स्वतः
 प्रकट है छिप हुए भगवान ॥ २७

यहाँ भगवान के प्रकट होने से अभिप्राय मनुष्यों में सद्वृत्तियाँ की उदभावना
 से है । जहाँ तक नयी व्यवस्था का प्रश्न है कवि ने स्वयं कहा है कि—
 विश्वव्यभुत्व व्यवस्था वन २८ तथा प्रेम और वनय इस व्यवस्था के आधार
 है । २९ कवि की धारणा है कि

हृदय से होगा जब तर ननी
 प्रेम का क्रियाशील मुचि याग ।
 जगत् के कम क्षत्र में कभी
 न आगे वह पावेग नाग । ३

२३ साकत सप्त श्लोक संग पृ १६५

२४ वही छन्द ४५

२५ वही छन्द ४६

२६ वही छन्द ४७

२७ वही पृ १५ ५४

२८ वही छन्द ४६

२९ वही छन्द ५२

३ वही पृ १५८

निष्कर्ष

इस प्रकार साकेत सत म प्रतिपादित कवि के जावन दर्शन सम्बन्धी सत या पर विचार करने के अनन्तर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मिथजी म परम्पराप्रिय होते हुए भी प्रातिगत जावन दृष्टि का अपनाकर अपनी चिन्तनधारा का निभाण किया है। उहान भारतय सस्कृति का जिन आधारभूत मान्यताया का काव्य म प्रतिपादन किया है उनका मन्व भारत या भारतीया के लिए ही नहीं अपितु विश्वजनान है। पौराणिक दृष्टिवत्त पर आधारित हाते हुए भी साकेत सत वतमान युग का भूतभूत चतना म अनु प्राणित काय है। साकेत-सत क माध्यम स त्रा युग के आदर्श आय सस्कृति की विश्वताए या भारतीय ळनशास्त्र की मायताए ही यजित नही हुं वरन् विश्व जीवन को प्रगित जीर प्रभावित करने वाला महान मानवतावादी सदेश प्रसारित हुआ है जो समग्र मानव जाति का थाता है। यह सदेश है

मनुज जीवन का यह हा मम
 आह का पहरा ल जात,
 मनुजता की रक्षा के हनु
 निछावर कर द अपन प्राण।
 जगायगा जन जन म भरी
 मनुजता की जा मनुज महान।
 विश्व रक्षा हित उसम शक्ति
 भरेस विश्वम्भर भगवान ॥ ३१

इसीलिए साकेत-सत सामाय काय नहा महाकाय है। और महाकाय अपने सत्त्व और उद्देश्य का दृष्टि स चित्ता भाषा साहित्य समाज या राष्ट्र की सम्पत्ति हा नहीं हान करने सम्पूर्ण मानवता का धराहर कह जात है।

‘रावण’ और ‘दैत्यवश’ • मानव
मूल्यों के महाकाव्य

‘रावण’ और ‘दस्यवश’ मानव मूल्यों के महाकाव्य

पौराणिक युग के कलकित तिरस्कृत एवं उपेक्षित पात्रों के उचित मूल्यांकन और सम्यक समालोचन की प्रवृत्ति हिन्दी के साहित्यकारों में बंगला के मानवतावादी लेखकों और युगद्वेषी कवियों में प्राप्त की। महाकवि रवीन्द्रनाथ टागोर के काव्येय उपेक्षितता जय नहीं थी मधिलीशरण गुप्त का माकेत और श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन का ऊर्मिमत्ता महाकाव्य लिखने की प्रेरणा दी। इसी प्रकार माईकेन मधुसूदनराव के मेघनाद वध महाकाव्य में तिरस्कृत और कलकित पात्रों का मानवीय दृष्टि और युगान्त सन्दर्भों में अवलोकन की काव्य दृष्टि प्रदान की। हिन्दी में श्री हरप्रियासिंह विरचित दस्यवश और रावण नामक महाकाव्यों की प्रेरणा के परिणाम हैं। मानवतावादी जीवन-दृष्टि से प्रेरित होकर ही मूलपुत्र कथन पर श्री दिनकर ने रश्मिरथी और निपात्पुत्र एकाव्य पर डा० रामकुमार वर्मा ने एकलव्य नामक महाकाव्यों की रचना की है। प्रसन्नता का विषय है कि इस कोटि के काव्यों में कृतिकारों का मध्या और अनुभूति युग चेतना से अनुरजित होकर मुखरित हुई है। ऐसे कवियों का प्रयास मानवता के पुरातन कलकित का पूत प्रक्षालन है ऐतिहासिक घुटियों का सम्मोजन है चिरन्तन सत्य का अनुसंधान है और साहित्य में मानवतावाद का महान् उद्घाटन है।

हिन्दी महाकाव्य लेखन का मुन्दीप परम्परा में दस्यवश और रावण का उन्मादीय स्थान है। क्योंकि इन महाकाव्यों में प्रथम बार एक कवि ने दस्य और दानव कह जान चाल पात्रों में दबाय गुणा और मानवीय विशेषताओं का सम्मान किया है। श्री सिंह का यह प्रयास सवधा अभिनन्दीय है।

दस्यवश की रचना बालिदास कृष्ण रघुनाथ महाकाव्य का शिल्प विधि के आधार पर हुई है। दस्यवश का इतिवत्तात्मक संयोजन श्रीमद्भागवत महापुराण तथा रावण का वाल्मीकि रामायण के आधार पर हुआ है। ‘दस्यवश में दस्यकृत न द्विष्पाश हिरण्यकशिपु विराचन, बलि बाण और अस्त्रकुमार नामक छ राजाओं का कथा का कथन है। रावण महाकाव्य में पुंसस्य शक्ति के वश का (विधवा में लेकर अक्षयकृष्ण-अरिमान तक)

वर्णन है। दाना महाकाव्य का कथात्मक आधार पौराणिक हात हुए भा-
नवीन प्रसंगोद्भावनाओं द्वारा कवि ने कथा चयन में मौलिकता का परिचय
दिया है। उदाहरणार्थ दत्यवश के प्रथम सर्ग में बराह द्वारा हमनाचन की
पुष्प वाटिका उजाड़ना चतुर्थ सर्ग में सिंधुमुता के स्वयंवर में सरस्वती द्वारा
विभिन्न देवा और जन्तुओं का परिचय देना सप्तम सर्ग में इंद्र का हंस द्वारा
शची का सत्स भोजना दशम सर्ग में वामन के जन्म तथा बानलीलाओं का
चित्रण और त्रयोदश सर्ग में चित्ररत्ना द्वारा अनिरुद्ध का हरण मौलिकता
पूर्ण है। इसी प्रकार रावण महाकाव्य में रावण के देव विरोध का कारण
षष्ठ सर्ग में पुन प्राप्ति के लिए मन्त्रारो द्वारा पावती पूजन सप्तम सर्ग में
मुलोचना और मघनाथ का गंधर्व विवाह सीता हरण का कारण विभाषण के
चरित्र में बंधुताह एवं विश्वासघात तथा १५व व १६व सर्गों का सम्पूर्ण
कथा विधान कवि-कल्पना प्रसूत है। कथा-संयोजन में कवि ने परम्परा प्रख्यात
कथानक के स्वरूप की रक्षा करते हुए युगीन सत्तर्कों के अनुसृत कथामूत्रा को
संजोया है। दत्यवश में बनि की राज्य-व्यवस्था का वर्णन मेरे कथन का
पुष्टि में दृष्ट है।

वस्तुतः दत्यवश और रावण चरित्र प्रधान महाकाव्य है। अर्धव असुर
राक्षस और असुर कहे जाने वाले पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं का मानवता
वादी परिप्रेक्ष्य (Humanitarian Perspective) में प्रदर्शन इन महाकाव्यों की
रचना का मुख्य प्रयोजन है। इन महाकाव्यों के चरित्र विशेषण से पूर्व यह
समझ लिया जाय कि देव और दानव कौन हैं? क्या देव और दानव मानवैतर
जातियाँ हैं? यदि हाँ तो उनका मानवीय दृष्टि से मूल्यांकन कैसे किया
जा सकता है? प्रतीक दृष्टि से दैवत्व और दानवत्व मानवीय घटियाँ हैं।
श्री उमशमिथ्र के अनुसार— मानव का अविकसित या अपविकसित रूप
दैत्य और सुविकसित रूप देव है। फलतः दैत्य प्रकृति का आदि मानव रूप
कहा जा सकता है जिसमें शारीरिक बल प्रचुर मात्रा में मौजूद है क्योंकि
वह प्रकृति की सीधा दान है। परन्तु मस्तिष्क बल उसमें अधिक नहीं है।
शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ प्रायः एक-सं अनुपात में बिसा वग में नहीं
पायी जाती। विकासक्रम में यह भाग्य हुआ है कि बिसा वग में जित जित
मस्तिष्काय शक्ति का विकास हुआ है शारीरिक बल का ह्रास भाग्य
जाता है। छत्र प्रपञ्च घूँतता विश्वासघात आदि मस्तिष्क के विकास के
आवश्यक परिणाम हैं। दैत्य शारीरिक बल में बड़े होते हैं पर उनमें सरल
विश्वाम सत्यनिष्ठा और सिधार्थ विद्यमान हैं। स्वर्गण शरार बल में निबल

है पर चतुर अधिक् है वे बात बात में दत्या का घोसा दत है और उनका सरल प्रकृति से लाभ उठाकर उन्हें छल जन है ।^१

उपयुक्त विवेचन के आलाव में यदि हम देव और दानव के प्रश्न पर विचार कर तो पायग कि जिन्हें हम दानव कहकर तिरस्कार और उपेक्षा का दृष्टि से द्रष्टत जाय है वे अनेक मानवीय गुणा और विभूतियां से उपेत हैं । पौराणिकता के पुष्कल प्रभाव के विवद भावताजा की अथ स्वीकृति अवतारवादी का परिकल्पना के व्यामोह एवं तथास्थित धार्मिक प्रतिबद्धता के कारण हमारा दृष्टिकाण अवनतिक और अमानवीय रहा है । यदि हम निरपेक्ष चरानिक दृष्टि और आग्रहमुक्त तटस्थ भाव में देव-दानव सघष के इतिहास का अध्ययन करें तो पायेंग कि इस अन्याय मघष के लिए दाना हा उत्तरदायी है । यह बात दूमरी है कि इसके दायित्व का कितना प्रतिशत देवा पर है और कितना जदवा पर । देव मानव विराध के कारणों की रावण और दत्यवश के आधार पर खोज करें ।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के पुत्र मरीचि थे । मरीचि के पुत्र वश्यप हुए । इन्होंने वश्यप ऋषि का त्रिभि नामक पत्नी से दत्य और अदिति से देवता उत्पन्न हुए । इस प्रकार देव और दानव एवं हां पिता की सन्तान थे । दत्यवश में हिरण्याक्ष शक्तिशाली और पराक्रमी था । देवताओं का उससे उस न चना तो उन्होंने विष्णु से प्रार्थना की । विष्णु ने वराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष की बाटिका का उजाड़ दिया । पतस्वरूप सघष हुआ जिसमें वराह रूपधारी विष्णु ने हिरण्याक्ष को मार डारा । इसी प्रकार हिरण्यकशिपु का वध भी उन्होंने किया । दत्यवश के राजाओं में बलि सबसे चतुर था । राक्षसों सोन होते ही उसने साय-सगठन किया तथा प्रजाहित के काय किया । उसने ६६ अश्वमेध यज्ञ किया । बलि के उत्सव का दायकर देवता मन ही-मन कुदत थे । उन्होंने छत्रपूज सधि प्रस्ताव करके दत्या के सहयोग से समुद्र-मंथन किया । सागर से निकल अमृत का देवता छलपूर्वक जकेत पी गये । यद्यपि सागर-मंथन में दत्या का ही श्रम अधिक् था । फलस्वरूप मुद हुआ जिसमें बलि हा विजयी हुआ । तदन्तर बलि ने इन्द्रासन की प्राप्ति के लिए मोवा अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ किया । तभी वामन रूप धरकर विष्णु ने तीन पग पृथ्वी मांगकर बलि का सबस्व अपहरण कर लिया । बलि ने दापगा में सम्पूज पृथ्वी और आकाश देकर तथा तीसरे पग में जपता हिमगिरि के समान

^१ दत्यवश, भूमिका पृ० ६७

उच्च और दक्षिण शीघ्र अपित करके दानशीलता का अत्यंत उदाहरण प्रस्तुत किया। बलि का पुत्र बाण भी महान् पराक्रमी था। उसने दिग्विजय कर जीवन के अंतिम चरण में राज्य पुत्र का सौप शिवाराधन के लिए वन गमन किया। बाण का पुत्र अश्व-दकुमार भा प्रजारक्षक था। उसने प्रजाहित के लिए गुरुकुला यज्ञशांता आ राजमार्गों वनवीथियां और ग्रामों का पथवर्णन किया तथा समाज के विभिन्न वर्गों से सम्पर्क स्थापित किया। इस प्रकार रावण महाकाव्य का देखता जाते हैं कि रावण का देव से जन्मजात बर न था। एक दिन पुत्रस्थ न बताया कि देवताओं के अनुरोध से विष्णु ने नानामानी का मार डाला था। यहां से रावण देव विराधा हुआ गया। उसने देवकुल के सहार का निश्चय किया। अपने शीघ्र और पराक्रम से रावण ने भलाक्य में विजय का ज्ञान पहचान लिया। राम से रावण के द्वेष का कारण यह था कि राम राक्षसकुल के अनिष्ट के लिए तप कर रहे मुनिया के सहायक हुए। राम ने ताडका का वध किया। जनस्थान का गवर्नर शूपनखा न जब गया पर प्रतिबंध लगा लिया तो मुनिया ने उसका विराध किया। फलस्वरूप खरदूषण को ससय भजा गया। उनका भी राम ने वध कर दिया। लक्ष्मण ने शूपनखा के नाक-कान भा काट दिए। प्रतिशोध की भावना से रावण ने सीता का हरण किया जो अन्ततः राम रावण युद्ध का कारण बना।

दाना महाकाव्य की प्रमुख घटनाओं के विहंगमालोकन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि देव दानव संघर्ष के मूल में देवों का ईर्ष्याभाव और छत्र छद्मपूर्ण व्यवहार प्रमुख रहे हैं। इससे विपरीत दत्ता और रामा के चरित्र में दानशीलता शीघ्र साहस पराक्रम तपश्चर्या तजस्विता शिवाराधन निष्ठा प्रशासनिक योग्यता जैसे गुण निहित हैं जिनका पूषाग्रही दृष्टिकोण के कारण सर्व उपेक्षा की गयी है। अब हम रामा और दत्ता के गुणों का विश्लेषण करेंगे।

बलि ने राज्यप्राप्तिके हात में प्रजाहित के अनेक कार्य प्रारम्भ कर लिये
 खाल गुरुकुल अमित सबलि विद्या पडवा
 सनिक सिद्धा काज व्यवस्था सकल कराइ ।
 × × ×
 कियो स्वास्थ्य रक्षा हिन भूपति अमित उपा
 दाही नगरनि माहि जीपघालय खुनना ।
 × × >

कृपि विभाग को भूप अमित सम्पन्न बनायी
 अर महवारी कोष खोलि उन्नति करवायी । २
 दत्यवश के राजाआ म जस्क बुभुमार न तो राज्य-काय मंत्रिया को सोपकर
 एक एक गाव का भ्रमण किया और प्रजा के दुख सुख की बातें सुना
 सती सारे ग्राम की सब निरन्ध्री नरनाह
 कृपिकन को दुख-सुख मुयी मन मह जमित उछाह । ३
 दत्यवश व राजा प्रजाहितपी होने व माय साथ अपार दानी भी थ । गुप्त
 गुत्राचाय के समझान पर भी कि वामन बटु व रूप म विष्ण आय है राजा
 बलि ने उह तीन पर पृथ्वी दान देना स्वीकार कर लिया और जपना मवम्ब
 अपण कर लिया । ४ दत्य जितन भोग विनासी थ उतने ही त्यागी तपस्वी
 और बरागी भी । बाणासुर ने विश्वविजय की अपार बभय स सम्पन्न सीनपुर
 नगर बसाया अनन्त ऐश्वर्य सुग का भाग किया । यहाँ बाणासुर बढावस्था
 यात ही पुत्र का राज्य पर सीप शिवाराधन व त्रिग चला गया । बठोर तप
 करते हुए बाण न शरीर त्यागा

एक एक पग रह्यो व्योम त्रिसि हाथ उठाया
 मिव सिव निज मुख कहत भानु त्रिसि शीठि लगाया ।
 यहि विधि करि तप घोर त्रिसि वितय नर प्राता
 गयो मुखाय मरीर महत हिम आतप बाता ।
 × × ×

सूय गया नप गान विमान
 रही टटरी तन म जयसखा ।
 फारि व ब्रह्म के रघ्रहि प्रात
 मिल्यो शिव शंकर म मविसगी ।
 यो तन जोगु की आग म जारि
 गयो मिवधाम बनौ हर वेगी । ५

बाण न यह कृच्छ तप मायना विमा भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति व त्रिग नगी
 की वरन् म तपश्चर्या तारा मन आत्म धम की यवस्था का विधिवन्

१ दत्यवश मग ० पृ० २४ ०६

३ यही मग १८ पृ० ०१५

४ यही मग १२ पृ० १८८

५ यही मग १७ पृ ०५१

अनुपासन कर उच्चतम आश प्रस्तुत किया। कठोर तप साधना सभा नृत्य वशी राजाआ ने की। रावण महाकाव्य म कइसी अपन पुत्रा (गवण कुम्भकरण विभीषण आदि) को तप के निण प्ररित करती हुई कहती है

तप बन हा सौ रचन विश्व प्रपच विघाता
तप बन ही सा बनत विस्तु वाकी परित्राता।
तप बन हा सौ रद्र ताहि पल में बिनसाव
तप की महिमा और कहा तो तुमहि मुनाव।

× × ×

अब विलम्ब जनि होय करहु तप हनु तयारी
बसहु जाय बन माहि मिद्धि द हैं त्रिपुरारी।^६

रावण और कुम्भकरण की कठोर तप-साधना का वर्णन कवि न निम्नांकित प्रकार से किया है

दीरघ दाघ निन्नाघ पचागिनि तापि बितायो
बहु दारण हिम राति सड जन माहि गवायो।
अर धीरामन बठि कष्ट बरपा को बल्यो
इमि तप क घटकरन आपु प्रानन प भेल्यो।
बन्हू ते अति कठिन उग्र दसमुख तप कीह्यो
निज नव सीसन काटि हाम हुतमुख मह दीह्यो।^७

इसी तप साधना क बल पर दत्य और राक्षस अमोघ शक्ति प्राप्त करत थ। उनक अनन्त शौर्य और पराक्रम का परिचय हम दवामुर मप्रामा म मिनता है।

इत्या क समान उनका स्थियाँ और कथाएँ भी गुणवती थी। बाणामुर का पुत्रा उपा अमाधारण मुन्त्री बाना था। वह चौन्ह कताआ की जाना और संगीतशास्त्र म प्रवाण था। उसका विवाह शकृष्ण क पुत्र अनिरुद्ध स विधिवत सम्पन्न हुआ।^८ पाण्डवा उपा का रूपचित्र कवि के तन्त्रा म ल्प्टय है

या विधि पोन्नम वप गय
अघरानि प बाक ननात्त नम नगी।
चत्तन न क नगाय बिना
मय अगनि मीरुभ मा मरुग नगा।

^६ दत्यघण मग पृ० ६७

^७ बरी पृ० ६६

^८ बरी मग १ पृ १६६

अजन रजन मीझी नही
 चल काजर रम दरम लगी ।
 बाल के आनन मी मुसमानि
 सुघा घनमार घनी बरस उगी ।^६

इसी प्रकार पतिपरायणा क रूप म रावण महाकाव्य की मन्त्री और सुलोचना वात्सल्यमया मा क रूप म ककुमा और राजनीति विगारण कुनमाला के रूप म शून्यता क चरित्र दृष्टव्य है ।

मन्त्री मय नानव का पुत्री थी जो हूमा नामक अप्सरा की काव्य स उपम हुइ थी । कवि ने उम अनिध सुन्त्री क रूप म अंकित किया है । उसकी रूप छटा मानसगावर् म खित हम सरोज की मुपमा और नीताम्बर म कताघर का जुहाई के समान थी । मन्त्रादगो क जावक म रग पक्क-पटा का शोभा क समक्ष जपात्त विरम और बघूकन की प्रभा भी मन्द पट जाती थी ।^१ पावता को पूजन अचन स प्रमत्त कर उमन भयनाद क समान बलशाली पुत्र प्राप्त किया ।^{११} इसी प्रकार विश्रवा ऋषि का प्राप्त करन क लिए रावण की मा कवसी क्लकलवसना तपस्विनी बनी ।^{१२} वर्षों की कठोर साधना क बाद कवसी का विश्रवा म मानसपुत्र प्राप्ति का बरदान मिला । शून्यता राजनीति म निपुण थी । इसीलिए उस नृपदूत नियुक्त किया गया । अपनी याग्यता के कारण ही वह जनस्थान म चोहू हजार राक्षसा की मेना की अध्यक्षता बनायी गया ।^{१३} इस प्रकार तटस्थ दृष्टि स देखा जाय ता दत्य जीर राक्षस कुन की नारिया म हम स्वामाचिन सभा गुण जीर विश्रपतता पात है । इन नारिया क चरित्र म भारतीय नारी क नाना रूपा (पुत्रा पत्नी धाना भगिना आदि) का गौरवपूर्ण चरित्रों हैं ।

चरित्र विश्लेषण क अनंतर यदि आत्माच्य महाकाव्या म न्या और राक्षसा क रीति रिवाजा जीर साम्प्रतिक परम्पराभा का अध्ययन किया जाय ता भारतीय मस्ति की आधारभूत मायनाए उनम प्रतिपान्ति मिलेंगी । विवाराचन मन विधान आश्रम धम की मर्यादा का पावन तपरचर्चापूण

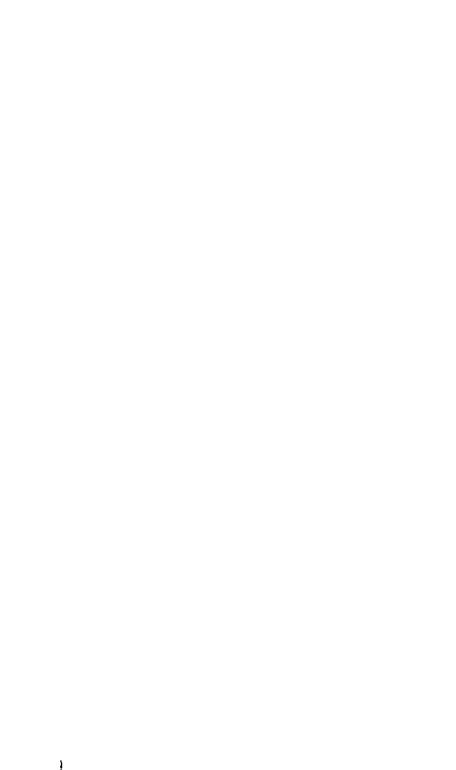
^६ दत्तवध, मग १० पृ० १६६

^१ रावण मग ६ पृ० ६०

^{११} वही पृ० ६१

^{१२} वही, मग ० पृ० १५

^{१३} वही, मग १० पृ० १६७



‘ऊर्मिला’ महाकाव्य में आर्य संस्कृति के आदर्शों की प्रतिष्ठा

सृजन प्रेरणा और उद्देश्य

ऊर्मिला महाकाव्य की सृजन प्रेरणा का मूल स्रोत जनवनीयनी ऊर्मिला का चरित्र है। कवि क शला म—‘ऊर्मिला के स्तवन की खानसा और उम स्तवन को प्रकाश में लाने की इच्छा चाहें वह बाँध हा क्या न हो—मेरी जीवनसगिनी रही है।’ भारतीय रामकाव्य परम्परा में वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण माकंत के पूर्व तक कथा में ऊर्मिला का चरित्र उपेक्षित प्राय रहा है। कविवर रवीन्द्रनाथ टगोर^२ और आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी^३ ने दो महत्वपूर्ण लेख लिखकर साहित्यकारों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। इन्होंने प्रेरित होकर श्री मयिनीशरण गुप्त ने साकेत नामक महाकाव्य की रचना कर प्रथम बार ऊर्मिला के चरित्राद्वार का विशेष प्रयत्न किया। यद्यपि ‘साकेत’ की रचनात्मक प्रेरणा का मूल स्रोत और प्रतिपाद्य ऊर्मिला का ही चरित्र था तथापि कथारचन में व्यासोद्देश, आराध्य देव आदि का यथायोग्य वर्णन का प्रयोग आदि ऐसे तत्त्वों के जिनके कारण माकंत में ऊर्मिला का चरित्र अपेक्षित रूप में न उभर पाया। इस दृष्टि से श्री बानवृष्ण नदीन द्वारा ऊर्मिला महाकाव्य में उल्लेखनीय प्रयत्न हुआ है। माकंत में ऊर्मिला का आदिभाव नव परिणीता कथु का रूप में होता है जबकि ऊर्मिला महाकाव्य में प्रथम सर्ग में २४० छंदों में ऊर्मिला की वाच्य एवं विशोरावस्था का विस्तार विवेचन है। यह सम्पूर्ण वर्णन कवि-लेखना प्रसूत है। अन्य सर्गों में भी मुख्यतः ऊर्मिला का ही चरित्र-गान हुआ है। सब से यह है कि ऊर्मिला महाकाव्य में ही ऊर्मिला के चरित्र का पूर्ण प्रतिष्ठापन हुआ है। इस काव्य में

^१ ऊर्मिला श्रीलक्ष्मणचरणापणमस्तु प्रथम पृष्ठ

^२ प्राचीन साहित्य काव्यर उपेक्षिता पृ ६६

^३ कवियों की ऊर्मिला विषयक उदात्तता सम्बन्धी जुगार १९०८ भाग ६ संख्या ७ पृ० ३१२ १४।

कवि का उद्देश्य रामायणी कथा की घटनाओं का वर्णन नहीं जमा कि काव्य की भूमिका^४ म कवि ने स्वयं स्वीकार किया है। नवीनजी ने रामकथा के उन्हीं प्रसंगों और घटनाओं की संयोजना की है जिनका उद्देश्य राम की चरित्र योजना से सीधा सम्बन्ध है। अस्तु स्पष्ट है कि उद्देश्य का चरित्र-गान काव्य की मूल प्रेरणा का मूल स्रोत है।

उद्देश्य महाकाव्य की रचना का दूसरा प्रमुख प्रयोजन आय (भारतीय) संस्कृति के समुन्नत जीवनानुशासनों का प्रतिष्ठित करना है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए नवीनजी ने एक ओर आय संस्कृति के आधारभूत सिद्धांतों का पालन प्रस्थापना की है और दूसरी ओर रामकथा के घटना प्रसंगों को सामंजस्यपूर्ण परिप्रेक्ष्य (Perspective) में अंकित किया है। उदाहरणार्थ राम के वन गमन का कवि ने महान् अथपूर्ण आय संस्कृति प्रसार यात्रा कहा है।^५ वन गमन के लिए विदा मांगते हुए लक्ष्मण उद्देश्य से कहते भी हैं कि ककेयी का वरदान मांगना और राम का पितृव्य पालन तो औपचारिकता मात्र है। वास्तव में विपिन गमन तो जन दुःख भजन एवं सांस्कृतिक विजय के उद्देश्य से ही होता है।^६ यदि क मत्तानुसार वनवास यात्रा का जीवन अज्ञान की समिद्धि विनाश और भौतिकता में पूर्ण है। राम का वन गमन भौतिकता को विजित करने का ही निमित्त है

जाज विजित करन उस भौतिक दृष्टि शारीरिक वन को

राम वन वन गमन कर रहे सग ने आत्मज्ञान दान को।^७

वन गमन के उद्देश्य का स्पष्ट करते हुए लक्ष्मण उद्देश्य से कहते हैं

हम सयासी विपिन प्रवामी

नर गणेश प्रचारक हम।

मन भय हारी मगन कारी

मव जन गण उद्धारक हम।^८

इस प्रकार राम रावण के संघर्ष में राम की विजय का कवि ने आय संस्कृति का विजय का

^४ उद्देश्य श्रावण मणचरणापणमन्त्र पृ ८

^५ वही पृ ८

^६ वही तृतीय गग पृ ६

^७ वही पृ० १६६

^८ वही पृ० २२

हुई सास्कृतिक विजय पूण थी
 आम राम का मति वृति का ।
 नहीं शास्त्र विजिता यह लका
 यनी विजय ह शास्त्रा का ।
 यहा जय है तापस आर्यो व,
 शद्ध शत्रु ब्रह्मास्त्रा की ।^६

इसा मन्त्र में नवीन साहित्य व अनुसन्धान डा० नरसीनारायण दुब का मत है कि— 'आय धर्म सम्भ्यता तथा मस्कृति की महान् उपरति तथा तथा गरिमा का इसमें (ऊर्मिला महाकाव्य में) श्रद्धाएँ निगी गयी हैं । धर्म वृति में भारत समग्र वसुधरा का अपन अक् में समेट रहा है । भौतिकता धार्मिक सम्भ्यता विज्ञान आदि व असद् पक्ष का उदघाटन कर कवि ने कामायनी व समान थडा भक्ति और विश्वास व तीन विरलतन प्ररणामय गालक इमार युग का प्रदान किये है ।^७ वस्तुत ऊर्मिला जिस युग की रचना है उसमें अनुष्ण ही भारतमय सस्कृति का महान् उदघोष इसमें सुनाया जाता है । ऊर्मिला महाकाव्य का प्रणयन राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य-संग्राम की कला में उत्पन्नक जन में हुआ था । उस समय देश भर में क्रांति सरदाग्रज जाग आन्दोलन हो रहा था । ऊर्मिला महाकाव्य का रचयिता समर व जमर मनाना का भाँति अपना औजस्यता वाणा से भारतीयता का भावना का जन जन में प्रसार कर रहा था । क्या जानता है कि मन्त्रकाव्या में जातीय जावन सस्कृति और चेतना का महान् उदघोष होता है जो ऊर्मिला महाकाव्य में स्पष्ट सुनायी देता है । एन आनोचक व शत्रु में हिन्दी साहित्य में आज जिनमें भी महाकाव्य हिन्दी प्रमिया व हाथ में सुशाभित है उन महाकाव्य व कविया में राष्ट्रीयता का जाग दशभक्ति का मादक धावन विपत्तव व गाढ़ा उमात्र विज्ञान का सबन स्वर और जित्नाजितो का उछलना-कूनी बगवनी धारा नवीन जमा नहा था और न आज ही है । जिन पवित्र भावनाओं व मानक वातावरण में इस महाकाव्य का प्रणयन हुआ वसा सौभाग्य निता भा महाकाव्य का नहा प्राप्त है । ऊर्मिला महाकाव्य व लिए यह गौरव और गव का विषय है ।^{११}

^६ ऊर्मिला, पृष्ठ ११ पृ० ५

^७ गवेषणा अद्वैतानिक पत्रिका जुलाई १९६३ पृ० ८७ पर ऊर्मिला का महाकाव्यत्व सायक उक्त ।

^{११} वाणा, मई १९६४ पृ० ०६

यज्ञ—यज्ञ शब्द को कवि ने 'यापक अर्थों में' याद दिलाया है। कवि का मत है कि यज्ञाहुति का पुण्य अस्मिन् ही इश्वर ने सृष्टि रचना की है। यज्ञ से ही जगत् जन गणहिताय घटित होती है। उसका मत है कि तिलघत का इधन में आहुतिया देना तो प्रवचनापूर्ण परिपाटा है यज्ञ नहीं।^{१५} यज्ञ तो समारंभ का अनन्त गतिमय क्रम है। यह क्रम सृष्टि के अणु-अणु और कण-कण में प्रत्येक क्षण घटित हो रहा है। सृष्टि के महायज्ञ में भूय रश्मियाँ द्वारा और मघ धाराएँ बरसाकर आहुतियाँ दत्त हैं। कवि के शास्त्र में यज्ञ की परिभाषा अन्य प्रकार है

शब्द यज्ञ है सब भूत हिन रत्न हाकर जीवन दना

शुद्ध यज्ञ है जगत् हिताय सब अपना तन मन धन दना।^{१६}

ऊर्मिला तो यहाँ तक मानती है कि लक्ष्मण का वन गमन मानवता के कल्याण यज्ञ की प्रथम जाहुति है।^{१७}

नारी का महत्ता—आय सस्कृति में नारा का दबी कहकर पूज्यनाय माना गया है। 'ऊर्मिला के कवि ने इस दृष्टिकोण का विशदता से सम्पादन किया है। काव्य के अन्तिम सग में साना और लक्ष्मण में इस विषय पर सुन्दर सम्वादन का याचना नवीनजीत की है। कवि का मत है कि नर और नारी में केवल बाह्य रूप भेद ही है अव्यक्त रूप में दोनों का अस्तित्व एक ही है। जावन का सुगति इसमें है कि नर नारा ही और नारा नर ही। विकसित पूण पुरुष में नारी का प्रतिबिम्ब अनिवायत होता है। नारी के सत्य हृदय से ही पुण्य जगहित में लगता है

देवि नरात्तम है वह जिसमें ही नर-नारा का मिथण
एस ही नर वर भरत है—जगत् का सखिन बनना व्रण।

× × ×

प्रति विकसित नर में रहती है कुछ नारीपन की झाड़
उसी तरह ज्याँ विभू विम्बित प्रकृति नदी का परछाड़।^{१८}

कवि ने स्पष्ट शास्त्रों में कहा है— जिस नर में नारापन का अंश नहीं वह नर

१५ ऊर्मिला, तताय सग पृ० २६६

१६ वही पद्य सग पृ० ३००

१७ वही, तताय सग पृ० १०१

१८ वही पद्य सग, पृ० ६१३ १४

नहीं बानर है।^{१६} नारीत्व की गरिमा का प्रतीक ऊर्मिला है जिस लक्ष्मण चिर प्ररिका प्रकृति रूपिणी देवी और भक्ति की प्रतिमा मानते हैं

तुम हा प्रकृति रूपिणी देवी तुम हा आत्मा शक्ति प्रतिमा
त्वमसि मनीया चिर प्ररणा त्वमहि मनीय भक्ति प्रतिमा ।
तुम मेरा साहस बल वभय तुम मम हास विनास प्रिय
तुम मम नह सरणि तुम मेरा नव सदेशालास प्रिय ।^२

लक्ष्मण के उपयुक्त कथन म आय सस्कृति नारी का प्रदत्त गौरव की भावना स्पष्ट दिखायी देती है ।

विशेष धृत्व—सर्वैबसुधवकुटुम्बकम के आदर्श को काव्य म चरिताय किया गया है । उस आदर्श की प्रतिष्ठा के लिए कवि ने उत्कट राष्ट्रवादा का भी खण्डन किया है । नवीनजी का मत है कि— कभी-कभी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति एवं अविनिष्ठा के बशाभूत हाकर समूचा राष्ट्र भी दुष्टतामय हा सकता ह । ऐसा परिस्थिति म हम राष्ट्रविमुख भी चलना पड सकता है । अथवा शताब्दिया स सचिन सत्य तान और मस्कृति का बभव भस्मसात हा जायगा ।^{२१} जन समूह क हृदय म आसुरी भाव जगन लग ता हम सामूहिकता क भी प्रतिकूल हो जाना चाहिए । कयाकि मनीषिया क लिए तो सारा ससार ही अपना है

दश विदश सकुचिन जन का है अनुचिन सकुचिन विचार
है मनीषिया का स्वदेश वह जहा सत्य शिव का विस्तार ।
हैं जग के नागरिक सभा हम सब जगभर यह अपना है
सोमिन देश विदेश कल्पना मिथ्या भ्रम का सपना है ।^{२२}

संस्कारो का महत्त्व—काव्य म स्थान स्थान पर भारतीय संस्कारो का वर्णन करत हुए उनका महत्त्व प्रतिपादित किया गया है । य सस्कृति क बाह्य आधार है । उन्हाटरणाय विवाह नामक संस्कार का हा न । विवाह का कवि न दा जात्माआ का मिलन और अभिन्नत्व की जय कटकर अपना संस्कारगत आस्था प्रकट का है

^{१६} ऊर्मिला पृष्ठ सग पृ ६१४

^२ वही तृतीय सग पृ २२५

^{२१} वहा पृष्ठ सग पृ ५५६ ५७

^{२२} वही पृ० ५५८

आय धर्म में यह चर्चाहक ब्रह्म परम धर्ममय है
 जो आत्माआ का मिथुन है अभिन्नत्व की जय है । २३

वर्णाश्रम-व्यवस्था—वर्णाश्रम-व्यवस्था भारतीय आय सस्कृति का अमूल्य
 पूव विशेषता रही है । वायारम्भ में ही नवीनजी न इस व्यवस्था व आश्रम
 रूप का चित्रण किया है । जनकपुरी का ब्राह्मण व अश्रम धर्मशास्त्र तपस्वी
 यागभ्यामी तत्त्वार्थी एवं मनस्वी है । २४ देश का मन्वन्तना व रथक क्षत्री
 वनिष्ठ भुजाआ वान तथा पराक्रमी है । २५ वश्य लक्ष्मीयवा जीर व्यवसायी
 है । २६ शूद्र मवाभावी है और व वस सिद्धान्त व पोषक है कि

सवाधम परम गहना यागिनामप्यगम्य । २७

अथवाद का खण्डन—आय सस्कृति की एक उल्लेखनाय विशेषता यह
 रहा है कि उसमें अथ की प्रधानता कहा भी स्वाकार नहीं का गया है । जबकि
 पाश्चात्य सस्कृति और सभ्यता में विकास और प्रगति का आधारस्तम्भ अथ
 का ही कहा गया है । हमारे यहाँ भाग-संपन्न भौतिकवादिना आश्रम
 प्रियता व म्यान पर त्याग तपश्चया सधम अपरिग्रह आन्यात्मिकता एवं
 सात्या का स्वीकार किया गया है । उर्मिला व रचयिता ने इन्हीं तत्त्वों का
 भारतय सस्कृति का आधार माना है

शुद्ध विचार प्रीत्या ही है
 भित्ति सभ्यता सस्कृति की ।
 सत्कारण शीलता मात्र है
 छातक सस्कृति प्रति धृति की । २८

नवानजा का मन है कि जो लोग अर्थोपाजन का जन-सस्कृति का सापेक्ष मान
 मन है व मत् अमत् का विचार छोड़कर अथ सचय का जीवन का लक्ष्य बना
 लत है । अथ-सचय का वक्ति मानव-मन का चिन्तन मननार्थ और जहवाण
 बना देना है । वन्विक कल्पिया न कभी भा अथ-सचय नहीं किया । व नीकोत्तर

२३ उर्मिला, द्वितीय सर्ग पृ० ८०

२४ वही प्रथम सर्ग छन्द २८ पृ० १८

२५ वही पृ० १८

२६ वही छन्द ३१ पृ० १८

२७ वही, छन्द २२ पृ० १६

२८ वही षष्ठ सर्ग पृ० ५५५

आध्यात्मिक साधना का ही सबसे बड़ा धन मानत थे।^{२६} आज तमसार में जो प्रगति हुई है वह जड़वाट का परिणाम नहीं है क्योंकि

यदि ससृष्टि गति लौकिक जाधिक
सचय के सग-सग चनता ।
तो वल्कन बसना क गुण म
कसे नान ज्याति जनता ।^३

अस्तु मानवता के विकास एवं प्रगति का मापदण्ड अथ नहीं हो सनता

मनवतिहास की प्रगति का मापदण्ड धन धाय नहा
यह समाज ससृष्टि जा सनती नापी धन स कभी नहा ।^{३१}

आत्मवाद में आस्था—भारतीय धर्म साधना के अनुसार कवि नवीन न जात्मा के अस्तित्व और आत्मवाद की विचारधारा को स्वीकार किया है। उसने भौतिकतावादी जड़वादी पदाथवादी जीवन ळणना से तुलना करते हुए आत्मवाद की श्रष्टना का प्रतिपादन किया है। कवि का मत है कि किस जड़ पदाथ या अथशक्ति से चतन भाव जगा इस प्रश्न का उत्तर भौतिकवाट दाशनिका के पास नहा है।^{३२} भौतिकतावादी विवचन शब्द तर्कों पर जाधारित है इसलिए

भौतिकवाद चतना विरहित
है वह निपट निराशावाद ।
राजस-तामस गुणमय बह है
मानव मन का मत प्रमाट ।^{३३}

जबकि आत्मवाद में अनंतता है। उसमें रचिर ज्ञान का बभव है। उसमें सचय वसति का जभाव है।^{३४}

इस प्रकार जाय ससृष्टि के सद्धार्ताक एवं यावहारिक दोनों ही रूपों का विवचन कवि न प्रस्तुत किया है। उम्मिता महाकाव्य में आय ससृष्टि का महान और समृद्ध स्वरूप अकित हुआ है। जहा तक सासृष्टिक चतना के

^{२६} उम्मिता पट्ट मग पृ ५५

^३ वही पृ० ५५४

^{३१} वही पृ ५५४

^{३२} वही पृ ५४७

^{३३} वहा पृ० ५४८

^{३४} वही पृ० ५४८

निरूपण का प्रश्न है यह कहा जा सकता है कि— माकत का अपक्षा ऊर्मिला म आय ससृष्टि जीर धम का शब्द-बनि अधिक प्रस्तर जीर प्रभविष्णु प्रतात हानी है । ३५

युग-चेतना के स्वर—आय ससृष्टि क महत आत्माओं का प्रतिष्ठा क माय-माय ऊर्मिला महाकाव्य म युग चेतना क स्वर भी मुखरित हुए है । मममामयिक जीवन का चेतना का आममान करके कवि नवीन न अपना जावन दृष्टि का निर्माण किया है । भारत क अतात गौरव का गायक कवि नवयुग क स्वागतार्थ भा सन्द्ध है

जाया नवयुग उन्नत मस्तक
हा हम स्वागत करत ह ।
तर नव आत्माओं का हम
मिर जाया पर धरत ह । ३६

नवयुग की नव चेतना स प्ररित होकर हा कवि जागृक्ता का जीवन का धन सत्याचरण का आत्मचिन्तन जीर जन सेवा का श्वर भक्ति कहना है

जागृक्ता जीवन धन है
सत्याचरण आत्मचिन्तन है ।
निरछल होकर जगज्जना की
सेवा हा प्रभ का वन्दन है । ३७

कवि न मानव और जावन का व्याख्या भा इसी प्रगतिशान जीवन-दृष्टि स प्ररित होकर का है । उसक मतानुसार मनुष्य अग्निपुत्र त्रिभ के मन का जाग्य कल्पना है । मानव का मानवता इसम है कि वह आग म खेल अर्थात् मधपरत २२ ।^{३८} जावन सचतन शक्ति का प्रचण गति सक्रमण है जिसका उद्देश्य जन्ता का भन्न कर समता सस्थापित करना है ।^{३९} जीवन घोर गम्भीर-नीर का प्रवाह है, जिसका वाय जगत की प्यास बुधाना है । जावन सतत युद्ध है जिमम गति और मधप है ।^{४०} नवीनजी न जीवन की सुचना उम त्रिस्तव-मान स का ह जिसक स्वरा म धार्मिक जीर परिवर्तन का सन्देश है

३५ डा० लक्ष्मीनारायण टुन बालहृष्ण नवीन व्यक्ति-य एव काव्य, पृ० २७१

३६ ऊर्मिला, मग पृ० ५८६

३७ वही द्वितीय मग पृ० ७६

३८ वही, पृष्ठ मग पृ० ५६७

३९ वही पृ० ५६८

४० वही पृ० ५६६

जीवन है चिर विप्लव गायन
स्वर जिसके हैं सतत क्रान्ति ।
गात भार है नित परिवर्तन
गायन नये हैं चिर जगन्नि । ४१

कवि की कामना है कि हम विप्लव गान गाते गाते जीवन पथ पर बढ़ना चाहिए। विप्लव के तत्त्वा का जगत में जयके प्रमाण होना चाहिए जिसमें दृष्टिया का उच्छ्रान्त है। तिमिर-कानिमा प्रकाश में परिवर्तित है। ४२

बादात्मक प्रभाव

ऊर्मिला महाकाव्य की रचना पर जनक वात्सल्यक विचारगाराजा का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। इनमें उल्लेखनायक हैं—गांधीवाद स्वच्छन्तावात् रामायणवाद हालावात् मानवतावात् आदि।

ऊर्मिला महाकाव्य का रचना जिस युग में हुई था उस युग का जावन गांधीजी से प्रभावित था। सामाजिक राजनातिक जाधिक सांस्कृतिक आदि सभी जावन क्षत्रा में गांधीवादी विचारा और सिद्धान्ता को स्वाकृत किया जा चुका था। ऊर्मिला महाकाव्य में अहिंसा मत्याग्रह साम्राज्यवात् का विराग आदि गांधीवादी विचारधारा के मूलभूत सिद्धान्ता का स्वाकृत किया गया है। गांधीजी अग्रजा साम्राज्यवात् के विराधी थे। ऊर्मिला के राम भाष्मा मनोवृत्ति के समथक है

हैं साम्राज्यवात् का नाशक
दशरथ नन्दन राम सत्त ।
है भीतिकतावाद विनाशक
जनमन रजन राम सत्त । ४३

नवीनजा न राम और रावण का श्रमश आ मवात् और साम्राज्यवात् प्रताप माना है। राम और रावण का सघष वस्तुतः जात्मवात् और साम्राज्यवात् प्रवृत्तिया का हा सघष कहा गया है। एक स्थान पर राम कहते हैं

महामन्त्रि रावण का मग नहा व्यक्तियत था झगडा
जा मवात् साम्राज्यवात् का वह था अनमिन भण वण । ४४

४१ ऊर्मिला पृष्ठ मग पृ० ५७

४२ वही पृ० ५७१

४३ वही पृ ५५५

४४ वही पृ० ५४१

उर्मिला की रचना पर रोमानवाद स्वच्छन्तावादा हातावादा आदि का भी प्रभाव स्पष्ट नियायीं देता है। पाश्चात्य शिक्षा सम्मता और सस्कृति का तब तक भारत में जन जीवन पर प्रभूत प्रभाव पड़ चुका था। कवि हरिवंशराय ‘बचन की झालावादा सम्बन्धी कविताएँ तत्कालीन साहित्य जगत में बहुचर्चित थी। उमर खय्याम की रुबाय्या का अनुवाद नाग घड खाव स पदन थ। ‘स्वयं नवीनजी शिन्नी साहित्य में आतावादा के उदाहरण हैं और स्वयं अभी कुछ कविताएँ लिख चुके थे। उर्मिला उस प्रभाव में अछूत न रह सकी। ४५ कवि ने उर्मिला और लक्ष्मण के प्रेम का निरूपण करते समय लक्ष्मण से कहलाया है

तुम रसनाश्री मैं मधुपायी
 तुम प्यात्री मैं मतवाला।
 मैं मन्त्रि तुम पात्र मनाहर
 मैं गाहक तुम मधुशात्र।
 × × ×
 गन्तमया तुम सुधामयी तुम
 तुम भरा मन्त्रि वात्र।
 अभयदान त्ता मन्माना
 मुसकी करन तो मतवाला। ४६

लक्ष्मण उर्मिला के प्रेमानुप वणन में कवि ने रोमानवादी मनोवृत्तियाँ का परिचय दिया है। लक्ष्मण का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है

अरी गनी क्या नचचा रहा ?
 राज में क्या टानी है राह ?
 तनिक सुन तो कुछ ऊचा करा
 रच कर न नना में प्यात्र।
 × × ×
 अथ गड जात्रा शिप में रही
 भाँति नत्रा नी की पनवार। ४७

४५ त्रगणानुप्रसाद श्रावाम्भव नवीन और उनका काव्य, पृ० १८०

४६ उर्मिला तृतीय मग पृ० २१६-०

४७ वही शिन्नीय मग पृ० १४४-४५

द्विवेणी का माना आवश उत्पि म मित ही मो रह ।

× × ×

ऊर्मिला की चार पर जाज चग लक्ष्मण का चासा रग

बिध गय वे अनग नाराच तडप उट्टा मन का सुकुरग । ५८

दाम्पत्य-जीवन के मधुर विनोद एवं प्रेम-श्रीलाला के अतिरिक्त देवर भाभी (लक्ष्मण-सीता) के मुक्त परिहास का चित्रण भी कवि ने किया है जिममें स्वच्छ-दत्तावादी प्रवृत्तियाँ निवाधी दती है। नका म लौटत हुए विमान में देवर भाभी के एक लम्बे परिहासपूर्ण संवाच की आयोजना की गयी है जिसके आश दृष्टय हैं

सीता का कथन

धन्य भाग ऊर्मिला बहन के
ऐसा नागी पति पाया ।
भीतर भीतर रम ऊपर से
फनाइ यह यति माया ।
सच बोलो क्या करते हो तुम
मन ऊर्मिला का ही ध्यान । ५९

लक्ष्मण का प्रति उत्तर

भाभी तनिक राम से पूछो
क्या हो जाना है मन मे ।
बस सीत साते करत
बिचरे थ व वन वन मे ।
मैं तो फिर भी छाटा हू
मरा कौन विमान अहो । ५९

मानवतावादी हमारे युग का मरस उन्नत विचार प्रशन है। कवि नवीन न ऊर्मिला में नम विचारधारा के मूलभूत मिद्धाता की प्रस्थापना आद्यान की है। यथा

५८ ऊर्मिला त्रितीय मग पृ १४६ ४७

५९ वही पत्र मग पृ ५६५

५ वही पृ० ५६६

हैं जग के नागरिय सभी हम,
सब जगभर यह अपना है ।
सीमित देश विशेष कल्पना
मिथ्या भ्रम का मयना है । *१

‘ऊर्मिला महाकाव्य की रचना पर विभिन्न युगीन विचारधाराओ (वाणो) का प्रभाव काव्य के रचनाकार को यापक परिग्रह प्रदान करता है । काव्य में समकालीन चिन्तन प्रवृत्तियों का समाहार कवि की युग-जीवन के प्रति सजग आस्था का परिचायक है । मर्य तो यह है कि— नवीन का कवि मर्य से मानवता का प्रति ईमानदार रहा है तथा उसकी कुशल जातदष्टि न मर्य ही युग के सत्य को परखा है । *२ प्रस्तुत काव्य के जीवन-क्षण को सर्वम महत्त्वपूर्ण उपनिषद् यह है कि जिस सास्त्रतिक चतना में समाहार की चेष्टा की गयी है वह पौराणिक और पाश्चात्य प्राचीन और अर्वाचान जाघ्यारिक और भौतिक जीवनादर्शों से एक साथ प्रभावित है । उसका आधार विश्व मगल की कामना है

जात्मसमपण की अनहद ध्वनि
उठ विश्व के अमर में
परम भुक्ति का जग नागमा
जग में सकल चराचर में । *३

इस दष्टि से ऊर्मिला महाकाव्य में प्रतिपान्ति जीवन-क्षण महाकाव्याचित गरिमा में परिपूर्ण है ।

*१ ऊर्मिला, पृष्ठ मग ५० ११८

*२ केवल उपाध्याय नवीन दशन—अपनी धान

*३ ऊर्मिला पृष्ठ मग ५० ५८७

‘जयभारत’ का कथा-शिल्प

‘जयभारत’ का कथा शिल्प

महाकाव्य के रचना विधान में सर्वप्रमुख स्थान कथानक का है। महाकाव्य सृजन में कथा-तत्त्व की महत्ता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आचार्यों ने महाकाव्य का विवेचन करते समय उस कथाकाव्य’ अभिधान दिया है। पाश्चात्य विद्वानों ने सर्वत्र ही महाकाव्य (Epic) का कथा काव्य (Narrative Poetry) का पर्याय रखा है। मायर ने एक स्थान पर लिखा है कि— महाकाव्य शब्द का व्यवहार सभी ममानोचका द्वारा कथात्मक साहित्य के अर्थ में किया गया है।¹ वाकर ने महाकाव्य का परिभाषा करते हुए कहा है कि— महाकाव्य ब्रह्माकार कथात्मक काव्य रूप है। साहित्य विश्वकोश में महाकाव्य का अर्थ एक कथात्मक कविता ही लिया गया है।² श्री कौकिलेश्वर शास्त्री ने महाकाव्य का विकास कथात्मक जाग्याना से ही माना है।³ डॉ० उमाकान्त गायन का मत है कि— महाकाव्य अतन्त कथा काव्य है।⁴

उपयुक्त मता से स्पष्ट है कि कथातत्त्व महाकाव्य का अपरिहाय अंग है। महाकाव्य में कथातत्त्व के संयोजन की निश्चित शिल्प विधि भी है। साहित्य आचार्यों के अनुसार महाकाव्य का कथानक लक्ष्यविधत या प्रख्यात होना चाहिए। अनेक विद्वानों और आचार्यों का मत है कि महाकाव्य का कथानक इतिहास

¹ Epic is a term applied by them (Critics) all to Narrative Literature. The fundamental distinction of the epic from other species of Literature is that upon which they all agree— its narrative form.

—I T Myers *A Study in Epic Development*—Introduction p 32

² C M Bowra *From Virgil to Milton* p 1

³ Cassell's *Encyclopaedia of Literature* Vol I p 195

⁴ Kakeshwar Shastri *A Brief History of Sanskrit Literature (Vedic & Classical)* p 19

⁵ डॉ० उमाकान्त गायन *मयिनीकरण गुप्त कवि और भारतीय संस्कृति का आस्थाता* पृ० १५६

उत्भूत हाना चाण्डि।^१ एत क अनुसार महाराय का कथावस्तु उत्पाद्य (कालानिक) और अनुपाद्य (प्रमिद्ध) ाता ही प्रार की हो मरता है।^२ किन्तु एकराव्मी का मा है कि महाकाव्य की मुख्य त्रिपयवस्तु वास्तविक होनी चाहिए कान्पनिक नहा।^३ यह मत उति भी है। वस्तु म्थाका य जस काय का गुस्त्व और गाम्भीय त्रोरविश्या कथानक क अभाव म सम्भव भी नही है। ही म्थाकाध्यसार का इतिहास पुराण प्रमिद्ध कथानक म युग जावन की प्रवृत्ति क अनुरूप परिवतन परिवद्धन का अधिकार अवश्य है। इस परिवतनक्रम म यह अपनी कल्पनाशक्ति का भी परिचय ले सकता है। इसक अनिरिक्त उल्लिखित नियमानुसार म्थाकाव्य की कथावस्तु का विनियोजन भी विणप विधि स होना चाहिए। कथावस्तु म पच स विधा की याजना जोर सगप्रमानुसार विभाजा हाना चाहिए। सगप्रम घटनाविनि की दृष्टि स भी मन्त्वपूर्ण है। मुख्य कथा स जवानर तथा प्रमगा का मुमम्बद्ध रता भा जावश्यक है। नवान मायनात्रा क अनुसार म्थाकाव्य की कथावस्तु म यद्यपि सधिया का निर्वाह जोर सग-मस्या जाण क नियमा का कठोरता से अनुपादन नही किया जाता है तथापि कथावस्तु का समुचित विराम करन का दृष्टि से घटनाभा की पूव प्रमाणानुसार आं वनि त्व प्ररुतावरण कौशल वाञ्छनीय है। कथा योजना म मामिक प्रमगा का गृष्टि और नवीन प्रमगा भावनाए म्थाका प्रकार क कथा विधान कौशल का सशवन प्रमाण हानी है।

रा मधिनोशरण गुप्त विरचित जयभारत आधुनिक युग का महाकाव्य है। प्रस्तुत प्रमग म जयभारत क कथा शिल्प पर उपग्रक परिमर्भों म विचार किया जायगा।

^१ (अ) इतिहास कथावस्तुभूतमितरुद्धा सत्प्रथम। दण्डी काव्यादश १/१५
 (आ) इतिहासात्मक वनम यत् सजना प्रथम।

विश्वनाथ साहित्य दण, ६/३१८

मन्नि शिधा प्रव धा का य कथास्यायित्वाय काय ।

उत्पाद्यानुपाद्या मन्त्रपत्वन नूयासि ॥

(काव्यान्तर ७० १६)

^२ The prime material of epic poet must be real and not invented. The reality of the Central subject is of course to be understood broadly. It means that the story must be founded deep in the general experience of men.

1 Abercrombie The Epic p 55

'जयभारत का कथा का मुख्य आधार यामरचित महाभारत है। महाभारत आस्त्याना का उपाख्याना का विरक्त वन है जिसके एक एक प्रसंग का त्वर सम्भृत और हिंसा में जनक महाकाव्य का रचना हुई है। जयभारत के रचयिता श्री गुप्तजी ने शौरव-पाण्डवा के जाण्यत का प्रस्तुत महाकाव्य का रचना के लिए प्रण विद्या है। राजा नृप के वक्त से लेकर युद्ध वशा के वणन कौरव-पाण्डवा के जन्म में नरक स्वगारोहण तन का समस्त घटनाएँ और कथा प्रसंग जयभारत में यकचित है। गुप्तजी ने महाभारत का उक्त घन्ताश्रम और प्रसंगा का प्रण किया है जो शौरव पाण्डवा का मूलकथा में सम्प्रदिन है। कवि ने जय प्रसंगा का छात्र किया है—यथा मत्त्वान-भावित्रा नन-मयली शकुन्ता जाति के उपाख्यान।

जयभारत का सम्पूर्ण कथानक ४७ सर्गों में विभाजित है। प्रथम का नामकरण प्रतिपाद्य अथवा पात्रा के आधार पर किया गया है जन्म—नृप युद्ध और पुन माजलगधा कधु विडप एकनय पराया नाशागृह हिडम्बा लयभन रत्रप्रमथ वनवाम जाति।

महाभारत के विगत कथातक का जयभारत के रूप में महाकाव्याचित परिभाषा प्राप्त करान में गुप्तजी का प्रवचनमता वास्तव में सराहनीय है। उन्नात शौरव पाण्डवा का मुख्य कथा में सम्प्रदिन कथा प्रसंगा को चुनकर जयभारत में मुनियोजित किया है। इस प्रयाम में गुप्तजी का अपणित सफलता सिद्ध है। किन्तु जनक महत्त्वपूर्ण प्रसंगा का अतिष्ठ करन के प्रयाम में उह छोड़ना भी पत्त है। उपाहरणाव नन-मयली मत्ववान-भावित्रा शकुन्ता दुष्यत जाति के मतारम उपाख्याना का कवि ने छात्र किया है। अन्त कारण जयभारत में कही कही अतिवृत्तात्मक रचना भा जा गयी है। इसका एक कारण यह भी रहा है कि सम्पूर्ण काव्य का रचनाकाल एक नहीं है। जयभारत के निवृत्त में कवि ने इस मध्य का स्वाकार भी किया है। जयभारत के ही रचनाकाल में कवि ने महाभारत के कथा प्रसंगा पर अथ काव्या की रचनाएँ भी की, किन्तु उनका उपयोग इस काव्य में न कर उनका अन्त पुन मृजन किया। उपाहरण के लिए जयन्थ-वप। कवि ने इस पुन मृजन का अपनी लखनी का विकासक्रम कहा है। मय यह है कि गुप्तजी का प्रवचनगतों में निरन्तर विकास भा होता रहा है। जयभारत का अभि यजना गता में अथ विनामग्रम का अथ स्यात् रूप में दय मकत है। 'जयभारत' के आरम्भिक सर्गों में वणनामयता का अधिवना है किन्तु मध्य

भाग क जनतर क प्रकरणा म समाप्त जनी का ग्रहण किया गया है जिसक कारण वाक्य रचना म कसाव जीर विचार गाम्भाय आ गया है ।

जयभारत क कथानक की मुख्य त्रिशपनाए निम्नांकित हैं

१ महाभारत क कथा प्रसगा की जनौकिकता का प्रक्षालन कर कवि न उह युग की भावना जीर प्रवृत्ति के अनुरूप प्रम्नुत किया है । एसा करने म गुप्तजी न नवीन कथा प्रसगा की मृजना की अपक्षा प्राचीन आख्याना का हा नवीनता प्रदान की है । उदाहरणाय त्रौपनी-चारहरण हिम्वा का रूपाकन कीचक कथा युद्धक्षत्र की घटनाए जाति दृष्टय है ।

२ पौराणिक आख्याना का अपनी कता जीर कल्पनाशक्ति के उपयोग स बुद्धिजीवी पाठक क लिए सहज ग्राह्य बनाया है । द्रौपनी-धीरहरण क समय कृष्ण द्वारा चार यत्न का उल्लेख महाभारत म है । वहा दु शासन थककर लज्जित हा बठ जाता है

यत्नतुवाससा शशि सभाम य समाचित ।

तदा दु शासना श्रान्ती ब्रीडित समुयाविशत् ॥

किंतु जयभारत म त्रौपनी का करण वदन करते हुए त्रिवाया गया है । वह असहायावस्था म दु शासन को धिक्कारता हुई उसक मन म पाप का भय जागृत कर देती है । द्रौपनी का जास्रवाणा स दु शासन भीतिमान होकर चारा आर अधकार ही-अधकार दयता है और जन्तन स्तम्भित हाकर बठ जाता है

सहसा दु शासन न दखा अधकार-सा चारां जार ।

जान पडा जम्बर-सा वह पट जिसका कोई ओर न छोर ॥

आकर अकस्मात् अति भय सा उसक भीतर बठ गया ।

कर जड हुए और पत् काप गिरता सा वह बठ गया ॥ ६

इसके बाद गांधारी ने सभा म प्रवेश कर सवना इस कुत्सित आचरण के लिए धिक्कारा । गांधारा क शत्रु म उसक वातर भाव की चरम यजना हुई है जब वह कहती है

हाय त्राक का त्राजा भा अब नहा रह गया रति क्या ?

जाज बहू का ता वन मरा कटिपट नहा जरक्षित क्या ? १

महाभारत म धुनराष्ट्र न दुयोधन का बोसा था किन्तु उसका अपभिन प्रभाव

६ जयभारत धृत सग पृ० १६८

१ वही पृ० १४६

न पना था। यहा गांधारा क कथन म नारात्व का मम वपना अधिक स मना स माकार हुइ है। उपयुक्त कथा प्रसंग का गुप्तजा न बड मर्मिन और मना वनानिक ळग स प्रस्तुत किया है।

इसा प्रकार महाभारत म हिडम्बा का स्वरूप पाठक क मन म विकषण का भाव भरता है। हिडम्बा और भीम क विवाह का महाभारत क रचयिता न सामाजिक भयाना का उल्लेखन वनाया है। किन्तु जयभारत म हिडम्बा का गुणवती सुन्दरी क रूप म चित्रित किया गया है। गुप्तजा का कवि मानवता का प्रतिष्ठाता है। अय का का की भाँति जयभारत का उद्घोष मानव धर्म की जय है। अस्तु हिडम्बा और भीम क वात्सानाथ म मानव मूल्या की सुन्दर व्याख्या हुई है। हिडम्बा ता यहाँ तक कहती है कि

यदि तुम आय हा ता दा हम भा आयता
अपनी ही उच्चता म कसा कृतकृत्यता ?
× × ×
हाकर मैं राक्षसी भा अत म ता नारा हू
जम स म जो भा रहू जानि स तुम्हारी हू। ११

इसा प्रकार अनातवाप क समय काचक द्वारा अपमानित हान पर द्रोपदा न जाकर विराट का मना म प्रायणा का। उमना धर्म विरुद्ध आचरण की निन्दा करना और राजा क अधिकारा का एक दासा द्वारा चुनौती दना वनमान युग की जनतन्त्रीय भावना का प्रतीक है

सज्जा रहता अति कठिन है कुन वधुआ का भी जहा
ह मत्स्यराज किस भाँति तुम हूए प्रजारजक महीं।

× × ×
तुम म यदि सामर्थ्य नहा है जब शासन का
ता क्या करत नहा त्याग तुम राजासन का ?
करत म यदि दमन दुजना का इरत हा
ता छूकर क्या राजदण्ड दूषित करत हो ?

तुमस निज पर का स्वाग भी भना भाँति चरता नहा
अधिकार रहित इस छत्र का भार तुम्ह खनता नहा। १२

द्रोपदा क इन शब्द म युग धर्म की ममस्पर्शी ध्यजना है। एस अनक प्रसंगा का चयन गुप्तजा न अपनी कल्पनाशक्ति म किया है।

११ जयभारत, हिडम्बा मग प० ८३

१२ वही, सरधना मग प० २६८

३ जयभारत के कथानक के समस्त पात्रों का चरित्र विधान भी नवीन ढंग से किया गया है। साकेत और यशोधरा काय में उनका पात्र रचना देखी जा चुकी है। गुप्तजी ने पौराणिक पात्रों का भाव युग भावना के अनुरूप ही ढाला है। पात्रों की योजना कथा चयन का साधकता का लक्ष्यगत करके हुई है। महाभारत का चरित्र-योजना में स गुप्तजी ने कल्पित का ही ग्रहण किया है। उन चरित्रों का परिष्कार करके ही प्रस्तुत किया गया है।

४ जयभारत के इतिवृत्त में महाकाव्य वस्तु की गम्भीरता और व्यापकता भी है। वह कथा परिधि में सरक्षित हात हुए भी जीवन की समग्रता का ज्वलन करने में सक्षम है। काय का मूल प्रतिपाद्य मानवाय महिमा की प्रतिष्ठा और धर्म की जय है। इस उद्देश्य का प्राप्ति का दृष्टि से ही कथा का विस्तार दिया गया है।

५ जयभारत के कथा सजावन का सबसे बड़ा अभाव यह है कि विभिन्न प्रकृष्टता में अद्वितीय के समृद्ध रूप का अभाव है। कथा वर्णन में वह बगवान् प्रवाह नहीं है जो महानाय में होना चाहिए और जिसमें मथिलीशरण का भी लेखनी अत्यन्त समर्थ है। वर्णन रूप में निखी हुई वस्तु में प्रवाह आना सम्भव भी नहीं है।^{१३} कवि ने प्रकृष्टता के नाम के अनुरूप अपने ढंग से कथा का विस्तृत किया है। इस कारण कथावित्ति में व्यवधान अवश्य जाया है किन्तु इससे प्रवृत्ततात्मकता खब नहीं हुई है क्योंकि पूर्वपर सम्बंध निवाह विमान-विज्ञान रूप में जाना रहा है।

जयभारत और महाभारत की कथात्मक विधान की दृष्टि से तुलना

महाभारत का कथानक महान समृद्ध और शक्ति-समन्वित है। उसमें भारतीय जीवन और सभ्यता का विराट् योजना है। उसका वस्तु विस्तार में समस्त व्यावहारिक नीति जीवन तथा धर्म दाघ और परम्पराओं का समाहार हो गया है। जयभारत के कथानक में वस्तु गुह्यता गम्भीर नहीं है।

जयभारत का एक निश्चित उद्देश्य है। उसमें नारायण नहीं, नर की महिमा का गौरव गान है। इन्हींलिए जयभारत में असम्भाव्य और अनौचित्य घटनाओं का स्थान नहीं मिला है। जयभारत के रचयिता के कथा चयन का आधार पौराणिक उपाख्यान हात हुए भावनात्मक स्वल्प मनावनात्मक युगीन और बोद्धिकतापूर्ण है। जयभारत का कथानक पाठक का उसकी व्यावहारिक उपनिषदात्मक सामाजिकता के कारण प्राह्य है जबकि महाभारत के कथानक

^{१३} डा० नगेश विचार और विश्लेषण पृ० १२३

को पाठक श्रद्धा (पौराणिक जास्था), कौतूहल या अीत्युक्त के कारण ग्रहण करता है। 'जयभारत म भारताय सस्कृति का उक्प और प्रकप समतामयिक जीवन-परिवश म चित्रित किया गया ह।

समष्टि रूप म जयभारत का कथानक महाका-याचित गरिमा से पूण है। उसम पौराणिक उपारयाना का नवीन निरूपण ही नग अपितु मौलिक उपर्ति प्रयां भा है। उसम धारावाहिकता का एक सीमा तक अभाव हान हुए भी कथानक की सम्पूण अचिति प्रसंगगत सुसम्बद्धता क कारण अक्षुण्ण रही है। सबसे बड़ी बात कथा महाकाय के मूल म तथ्य का प्राप्ति म सहायक है। गुप्तजी न जयभारत के कथानक का मुद्र सग तक हा समाप्त न कर स्वर्गा रोहण प्रकरण तक पहुँचाकर अन्तिम सग का विशप डग से प्रतिपादित कर कथा क उपसहार को भा पूण गौरव क साथ अकित किया ह।

‘एकलव्य’ की चरित्र-योजना

‘एकलव्य’ की चरित्र योजना

डा० रामकुमार वर्मा के एकलव्य महाकाव्य की रचना मानवतावादी जीवन-दृष्टि से प्रेरित होकर हुई है। संस्कृत काव्यशास्त्र में महाकाव्य के नायकत्व पद का अधिकारी मूल सद्बुद्धीय व्यक्ति या क्षत्रिय को कहा गया है। किन्तु डा० वर्मा ने निपादपुत्र को एकलव्य का नायक बनाकर व्यापक मानवतावादी जीवन-दृष्टि का ही परिचय दिया है। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं कहा है कि— एकलव्य ने जिन आचरण का परिचय दिया है वह किसी उच्चकुल के व्यक्ति के आचरण के लिए भी आदर्श है। वह अनाम नष्टा अपहृत है क्योंकि उसमें शौर्य का प्राधान्य है। यहाँ उसमें महाकाव्य का नायक बनने की क्षमता है।^१ वर्तमान डा० वर्मा के एकलव्यपद्यक दृष्टिकोण के निर्माण में याज्ञिक अथर्ववेद और आश्विन जीर्ण मन्वाभारत के मन्वाखण्ड नहीं मानुषात् छन्दोत्तर विहित का यागदान उत्तमनीय है।

मन्वाभारत के अथर्व पात्रा में निपादपुत्र एकलव्य का चरित्र उपस्थित प्रायः है। डा० वर्मा ने उसी के मन्वत्वर्णन के लिए प्रस्तुत काव्य रचा है। आमुष्य में उल्लेख कहा जा है कि— राजनीति और समाज के अन्तर्गत में आचार्य द्रौण और शिष्य एकलव्य के चरित्र की व्याख्या बनाकर मानवतावादी भावना ही विचार में मूल अर्थ काव्य की रचना की है।^२ चरित्र प्रधान महाकाव्य ज्ञान रूप भी एकलव्य का पात्र-दृष्टि अत्यन्त है। एकलव्य के प्रमुख चरित्र कथन दो हैं— एकलव्य और द्रौणोपाय। इनके अतिरिक्त एकलव्य के पिता निपादपुत्र त्रिण्यधनु एकलव्य जनना और अजनन के चरित्र उत्तमनीय है।

एकलव्य— एकलव्य निपादपुत्र त्रिण्यधनु का पुत्र है। उसका चरित्र में निपादपुत्र ज्ञान का वारता विनय महावीर्य ज्ञान विज्ञापनाएँ मन्वत्व रूप में उपलब्ध है। काव्य में सर्वप्रथम हम उस एकलव्य ज्ञानानु गिष्य के रूप में पाते हैं जो गुरु द्रौण से धनुर्वेद की शिक्षा प्राप्त का समुत्सुक है। उसके ज्ञान की मर्यादा

^१ एकलव्य आमुष्य पृ० ६

बनी आकाशा धनुर्वेद में दक्षता प्राप्त करना है। किन्तु निपात्पुत्र होने के कारण राजगुरु द्रोण उस शिष्य बनाना अम्बीकार कर देते हैं। एकत्रय श्रेण की विवशता समझता है। जत मन में बिना कोई दुर्भाव पन्न किय वह निष्ठा पूर्वक धनुर्वेद की साधना में लग जाता है। किन्तु वणभद्र की व्यवस्था के प्रति उसके मन में आक्रोश अवश्य है। वह शूद्र भले ही हो परन्तु अपने गुणों के कारण श्रेण को भी आकर्षित कर लेता है। वे कहते हैं

है तो शूद्र किन्तु जैसे निष्कलक द्विज है
बालक निपाद का है किन्तु तजोमय है।
जैसे मणिरत्न है विशाल विषय का
अथ राजपुत्रा से विषय श्रद्धावान है।
जैसे यह अकुर है प्रस्तर के पाशव में।³

एकत्रय के जाकपक व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए डा० वर्मा ने लिखा है
पारावत पद्म शीश में विचित्र हैं वसे
रम्बा जटाजूट श्याम मस्तक की शोभा है।

× × ×

है प्रशस्त भाव धो वेश उठ भौंग में
बीच में मित्र है जिस कपित धनु है।
नासा रेख उन्नत कपोल सौम्य कण में
विनुजित है कुडन मुरम्य स्फटिक के।
सम्पुटित बद्ध नील पद्म जिस नेत्र है
लीन जिनमें है शिष्य मूर्ति गुरु शरण की।
हृष्ट पुष्ट विग्रह है ब्रह्मचर्य तेज से
कसा पीत वस्त्र है बलवरी के रज्जु से।⁴

एकत्रय का जीवन एतान्त साधक की साधना से परिपूर्ण है। गुरु द्रोण के मुख में धनुर्वेद का पवित्र शब्द सुनकर ही वह उमंगी हो मान लेता है और माना पिता तथा मित्र नागार्जुन के मना करने पर भी धनुर्विद्या की कठोर साधना करने पर दृढमकल्प मन्त्रि निज्जन धन में चतुरता है। अतएव एकत्रय भयंकर परिस्थितियों में जयकर साधना करते हुए जय प्राप्त में सफल होता है।

³ एकत्रय आत्मनिवृत्त मग पृ १२५

⁴ वही साधना मग पृ० १६५

अदम्य उत्साह और धम उसके चरित्र के लगे विशेष गुण हैं जिनके बल पर वह बन के सड़टा से झूझता है। गुरु द्रोण की मृत्तिका मूर्ति उसकी प्रेरिका है। अतएव एकलव्य की साधना अर्जुन के लिए धर्या का कारण बन जाता है। एकलव्य के वाणविद्या कौशल के सम्मुख वह हतप्रभ हो जाता है। एकलव्य की अमोघ साधना अर्जुन के अद्वितीय धनुधर रूप का चुनौती थी। एकलव्य की साधना गुरु द्रोण को बन में लाच लायी। उसके लाधक की प्रशंसा करते हुए गुरु ने कहा

किंतु जानता हूँ धनुर्वेद कहता हूँ मैं—

तुम मा कुशल धर्या दूसरा नहीं हुआ।

× × ×

और तुम आज के अजेय धनुर्धारी हो।^५

महान् त्यागी एकलव्य ने कठोर साधना से अर्जित धनुर्वेद-कौशल को क्षण भर में गुरु-शिक्षणा में अभिणागुण्ड लेकर समर्पित कर दिया। पाद को धनुधर के रूप में अस्मितीयता प्राप्त कराने के लिए उसने धनुष-बाण फेंक दिया।^६ गुरु का प्रणपूर्ति हेतु अपना अभिणागुण्ड काटकर उनका चरणा में रख दिया।^७

इस प्रकार एकलव्य ने त्याग और बलिदान का एक उच्च आत्म प्रतिष्ठित किया जिसके कारण उसका चरित्र महावाक्याचित गरिमा में मण्डित हो सका। एकलव्य के त्याग की महिमा में प्रभावित होकर द्रोण ने यही तक कह दिया कि

तुम विप्र हो ह शिष्य ! गुरु श्रेण शूद्र है

हा तुम्हारी गुप्ता में गुरु हुआ लघ है।^८

अर्जुन ने भी क्षमायाचना करते हुए कहा

ममा करो गुरु भक्ति साखी आज तुम से

मैं राजवण की अहम् नावनाश्रम।

गुरु का धा हीन माना ! तुमने निपात हा

गुरु का महत्त्व मिथ्याया इस विश्व का।^९

^५ एकलव्य शिक्षणा मग पृ० २८७

^६ वही पृ० २६१

^७ वही पृ० २८६

^८ वही पृ० २६६

^९ वही पृ० २६७

बड़ी आकाशा धनुर्वेद में दक्षता प्राप्त करना है। किन्तु निपात्पुत्र होने के कारण राजगुरु द्रोण उस शिष्य बनाना जम्बीकार कर देते हैं। एकराय त्रेण की विवशता समयता है। अतः मन में बिना कोई दुर्भाव पन्न किय वह निष्ठा पूर्वक धनुर्वेद की साधना में लग जाता है। किन्तु वणभद्र की यवम्या के प्रति उसके मन में आक्रोश अवश्य है। वह शूद्र भले ही हो परन्तु अपने गुणों के कारण द्रोण को भी आकर्षित कर लेता है। वे कहते हैं

है तो शत्रु किन्तु जैसे निष्कलक मित्र है
वालक निपाद का है किन्तु तेजामय है।
जैसे मणिरत्न है विशाल विषधर का
अथ राजपुत्रा से विशेष श्रद्धावान है।
जैसे यह अकुर है प्रस्तर के पार्श्व में।^३

एकराय के जाकपक व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए डा० वर्मा ने लिखा है
पारावत पक्ष शीश में विचित्र हैं कसे
लम्बा जटाजूट श्याम मस्तक की शोभा है।

× × ×
है प्रशस्त भाल घन वेश उठ भौहा में
बीच में मिले हैं जमे कर्पित घनु है।
नासा रेख उत्तम कपोल सौम्य कण में
विजुलित है कडन मुरम्य स्फटिक के।
सम्पुटित बाल नील पद्म जैसे नत्र है
लीन जिनम है त्रिय मूर्ति गुरु त्रेण की।
हृष्ट पुष्ट विग्रह है ब्रह्मवय तेज से
कसा पीत बल्बन है बानरी के राजु से।^४

एकराय का जीवन एकांत साधन की साधना में परिपूर्ण है। गुरु द्रोण के मुन्य में धनुर्वेद का पवित्र ज्ञान सुनकर श्री वह उस तीरा मान लेता है और माना पिता तथा मित्र नागान्न के मना करने पर भी धनुर्विद्या की कठोर साधना करने पर उत्सुकता मन्त्रि निजन घन में चन्द्रगा है। अतः एकराय भयकर परिस्थितियाँ में जयकर साधना करने हुए तप्य प्राप्ति में सफल होता है।

^३ एकराय आमनिवर्तन मग पृ १२५

^४ वही साधना मग पृ० १६५

अभ्य उल्हास और घब उमक चरित्र के दो विशय गुण हैं जिनके बल पर वह बन ब मकन म जूसता है । गुरु द्रोण का मृतिवा मृति उसकी प्रेरिका है । अन्त एकलव्य की माधना अजुन के त्रिण इर्ष्या ना कारण बन जाती है । एकलव्य के वाणविद्या-कौशल के सम्मुख वह हतप्रभ हो जाता है । एकलव्य की अमोघ माधना अजुन के अद्वितीय धनुधर रूप को चुनौता थी । एकलव्य की माधना गुरु द्रोण का बन म माच लायी । उमक लाधक की प्रणसा करते हुए गुरु न कहा

किन्तु जानना ह धनुर्वेद कहता ह मैं—
तुम मा कुशल ध-वी दूमरा नहा हुआ ।

× × ×

और तम आज न अजय धनुर्धारी हो । *

महान् त्यागी एकलव्य न कठोर माधना म अर्जित धनुर्वेद-कौशल को क्षण भर म गुरु-शिक्षणा म अभिषागुष्ट टकर समर्पित कर लिया । पाथ का धनुधर क रूप म अन्तिमता प्राप्त कराने क त्रिण उसन धनुष-बाण फेंक लिया ।^६ गुरु की प्रणपूर्ति अनु अफता अभिषागुष्ट जाटकर उनक चरण म रख लिया ।^७

इस प्रकार एकलव्य न त्याग और चरित्रान का एक उच्च आत्म प्रतिष्ठित विद्या जिसक कारण उसका चरित्र महाकाव्याचित गरिमा म मण्डित हो सका । एकलव्य के त्याग की महिमा म प्रभावित होकर द्रोण न यही तक कह दिया कि

तुम विप्र हो हे शिष्य ! गुरु द्राग शूद्र है
हा तुम्हारी गुणता म गुरु हुआ लघु है । *

अजुन न भी शमायाचना करते हुए कहा

क्षमा करो गुरु भक्ति सींगी आज तुम स
मैं राजवश की अहम् भावनाभा म ।
गुरु का धा हीन माना ! तुमन निपात हा
गुरु का महत्त्व निगनाया इस विश्व की । †

* एकलव्य, अभिषा मग पृ० २८७

६ यही पृ० २९१

७ यही पृ० २९६

८ यही पृ० २९६

९ यही पृ २९७

एकत्रय गुरुभक्त ही नहीं मातृभक्त भी था। माता के ममत्त्व भाव का स्मरण वह इन श्लोकों में करता है

कष्ट मुझ ही कराह है तुम्हारे मुख में
एक जश्रु में तुम्हारे सोण सप्त मिधु है।^१

एकत्रय में अपूर्व आत्मबन्ध है। इससे उस सफ़लता मिलती है और इसी ने वह भूमिपतिया की चुनौती का उत्तर देना हुआ कहना है

सावधान भूमिपति हम में भी शक्ति है।

× × ×

पशवत् कौशल तो सीमित तुम्हारा है
जात्मबन्ध की हमारा पाम सीमा है नही।^{११}

निष्कप रूप में कहा जा सकता है कि एकत्रय में महाकाव्य के नायक के अधिकांश गुण विद्यमान हैं। वह अपने महान् गुणों के कारण ही पाठकों की सहानुभूति प्राप्त करता है। प्रस्तुत काव्य में एकत्रय के चरित्र का जितना उत्कृष्ट रूप आया है वह उनके प्रति युग युग की जटिल श्रद्धा सुरक्षित रखन वाला है।^{१२} एकत्रय के चरित्र का अप्रतिम त्याग मानवता की अक्षय विभूति है।

आचार्य द्रोण—आचार्य द्रोण महर्षि भारद्वाज के पुत्र तथा परशुराम के गिण्य थे। परशुराम से उत्तम धनुर्विद्या सीखी और शिष्यास्त्र प्राप्त किये। आचार्य द्रोण उच्चकुशल में जन्म उच्चकोटि की शिक्षा से दीक्षित हुए और उच्च सस्कारों से सम्पन्न थे। कवि ने उनके व्यक्तित्व का अत्यन्त प्रभावशाली चित्र अंकित किया है

श्वेत जटा विस्तृत तनाट कमी भौं है
नन है विशाल रक्तवण उठी नासिका।
श्वेत शमश बीच भाठ जैसे शम्भ अम्भ की
आत् सत्यावान मन्य दुग का वक्त्र है।^{१३}

एक तजस्वी द्रोण अर्थात्भाव के कारण राजा द्रुपद के पाम धन प्राप्ति के लिए

^१ एकत्रय मकल्प संग पृ १८०

^{११} वही पृ १७७

^{१२} डा. श्यामनन्दनसिंहार जाधुनिक हिन्दी महाकाव्यों का शिल्प विधान पृ २४१

^{१३} एकत्रय ज्ञान संग पृ १२

जात है किन्तु वहाँ उनका तिरस्कार होता है। अन्ततः व भाष्म द्वारा युधिष्ठिर भास, अजुन, दुर्योधन आदि का शस्त्रास्त्रा का दाक्षा करने के लिए आचार्य नियुक्त किया जात है। अजुन का मत्प्राप्त जानकर व उस तमवज जीर का अभ्यास भी कराते हैं। शस्त्रास्त्रा के चान के साथ-साथ राजकुमारा का व गीति-नाति सहित घमण्डाल्य की भा सीक्षा करने हैं। व उक्त अन्कार जीर रूप पर विजय प्राप्त का भा उपदेश देते हैं।

एकलव्य धनुर्वेद की सीक्षा के लिए गुरु द्रोण के पास आता है किन्तु राजघम की मयात्ता के कारण व उस विषय बनाना स्वीकार नहा करत। साथ ही युक्तिपूर्वक के एकलव्य को सतुष्ट करने का भा प्रयास करत है। व कहत है कि 'धनुर्वेद तो राजपुत्रा के लिए है निपात्पुत्रा के लिए उसकी क्या उपपागिता है। एकलव्य के निष्ठाभाव से प्रभावित हात हुए भा उक्त विवशता वश पत्ता कहता पत्ता है कि

किन्तु भरे शिक्षण के व ही अधिकागी है
जो कि भूमिपुत्र तथा किन्तु भूमिपति है।

× × ×

राजगुरु हू शिक्षण पत्ता का मयात्ता
शिक्षा नाति राजनीति के पत्ता चरता है।

शारदा का वाणी यहा बोती है स्वण म ॥ १५

अन्ततः के एकलव्य का अस्वीकार कर देने है।

यहाँ हम आचार्य द्रोण का मर्दानाभा के बटार अनुपातनसर्वा शुभ के रूप में पाने हैं। कवि ने उनके चरित्र में महज मानवीय दुखदताभा का भा अनन किया है। आर्थिक अभाव के कारण जब व अपन पुत्र के लिए एक धूट दूय भी उपनयन नहीं करा पात है तो उनके पुण्यत्व का विचारता है

कुम्भित रे द्रोण ! सब तथा शक्ति व्यय है

मार चरमण्डल में एक वाण तू न क्या

चू पह मुधा का धार पुत्र पा स नाच के। १५

साथ ही एकलव्य का निष्पत्ता पत्ता प्रकलन करने के कारण उनके मन में एक अन्तद्रोह ना उठता है कि शिक्षा तो सरस्वता की धारा है जो अनन्त और

१५ एकलव्य जातमनिवृत्तन मय पृ० १०

१५ वही, पत्रिचय मय पृ० २०

प्रशांत है। मैं केवल राजगुरु बनकर ही क्या रहूँ? अततोगत्या वे इम निष्कप पर पहुँचते हैं कि

जानि भेद नहा बग भेद भी नहा
शिक्षा प्राप्त करने के सभी अधिकारा ३ । १९

उनका मानसिक द्वन्द्व इस सीमा तक पहुँच जाना है कि वे अपनी साधना में भा मिथ्यत्व का आभास पाते हैं

धिव द्राण । तरी सब साधनाए मिथ्या है
तरा धनुर्वेद सूम की सम्पत्ति जसा है । १७

स्वप्न मग में हम द्राण के व्यक्तिरूप का वास्तविक रूप पाते हैं जो उनके चरित्र को निश्चय ही उचा उठाना है। किन्तु अजुन के स्वाथ के कारण अतत वे एकत्रय से जो गुरु शिक्षणा स्वाकार करते हैं उससे उनका चरित्र उन्चादर्शों से स्पष्टित हो जाता है। एकत्रय के शिक्षणागुणों की शिक्षणा से वे हतप्रभ हो जाते हैं। उनका मग-व्यथा इतनी बढ़ जाती है कि उस व्यथा का भार सहन न कर पाने के कारण वे तत्क्षण चन जाते हैं। मनावधानिक दृष्टि में गुरु श्रेण के चरित्र का अन्तर्द्व निश्चय ही कवि के चरित्र चित्रण-व्योक्षण की मन्ता का परिचायक है।

अथ पात्र—काय के अथ पात्रा में हिरण्यधनु एकलव्य-जनना और यज्ञ के नाम उत्तमनीय है।

हिरण्यधनु को वमाजी के तृतीय गुणा के अनुमार वीर और साहसी होना अपितु एक कन्यपरायण पिता के रूप में भी चित्रित किया है। हिरण्यधनु को अपन जानाये गौरव का स्वाभिमान है।

एकत्रय का माना का कवि के वार जननी के रूप में चित्रित किया है जिसके हृदय में वासन्त का अथय मान विद्यमान है। धनुर्विद्या की साधना के लिए एकत्रय के निजा वन में चने जान पर उसका हृदय यावुल हो उठता है। एकत्रय जनना के मातृत्व भाव का मुख्य अभिव्यक्ति के लिए कवि ने ममता नामक पूरा मग ही समर्पित कर दिया है। वह अपन पुत्र की बात सुनभ व्रीणा की स्मृति मजाय उमके विदाग को सहती है किन्तु उमकी भावनाए बढ़ा उठाते हैं

१९ एकत्रय स्वप्न मग पृ २२२

१७ वही पृ० २

गुणवचन हा तो मेरा गा है ।

× × ×

लाल मुम्हारी कठिन तपस्या

ही तो मेरा गुणगान है ।^{१८}

पुत्र वियाग का ताप बदना को सहनी हुई एकत्रय जननी पुत्र की साधना की सफलता का सूचना पाकर आनन्दित हाता हुई बन म पहुँचती है वहाँ पुत्र क खण्डित अगुण्ट को देखकर उसका हृदय खण्ड लण्ड हो जाता है । वह द्रोणाचार्य म कन्ती है कि आपक विधान म यत्ति शिष्य माता म भा दक्षिणा नेने का नियम हा तो मैं भी अपने नेत्रा को आपका मवा म समर्पित कर दूँ कयाकि मैं यह दश्य नहो दस सकती । एकत्रय जननी के तस ममस्पर्शा व्यापूण कथन का मुनकर सभी स्तब्ध हो गये । आकाश म श्यामता छा गयी और दिशाण धूमिल हा गयी ।^{१९}

अजुन—एकत्रय म अजुन का चरित्र बहुत गिरा हुआ लिखाया गया है । महाभारत के आरम्भ वीर म यहा स्वाय की भावना हा अधिग लिखामी देती है । काय के आरम्भ म हम अवश्य ही उस एक निष्ठावान शिष्य क रूप म पाते है । उसके निष्ठाभाव का ही देखकर द्रोणाचार्य उम अद्वितीय धनुर्धरा बनान का निश्चय करते है । वह लिखात्रा क प्रयाग का विविध विधिया म निपुण है । अजुन क शस्त्रास्त्र साधन को देखकर सम्पूर्ण जनममुत्तम विम्मय विमुग्ध हा जाता है । गुरु के प्रति यद्यपि अजुन के मन म विनय और श्रद्धा का भाव है किन्तु दूसरी आग एक महत्त्वाकांक्षी राजपुत्र हान के कारण वह अद्वितीय धनुर्धर बनने का लाभ-सवरण भा नहा कर पाता है । यही मन्त्वा काशा उमके चरित्र को हान बना देती है । अजन की आग्रह-पूर्ति क त्रिण ही एकत्रय का अपनी मगान् साधना का उत्सव करना पन्ता है ।

उपयुक्त उल्लिखित पात्रा क अतिरिक्त नागदन्त नाम पितामह त्रयोपन नाम अजुन क अतिरिक्त जय पाण्डव कुमार का चरित्र क्या विकास का त्रिण स त्रिवचनीय है । इन पात्रा का चरित्रगत विशेषताका का विशेष विस्तार नहा हुआ है ।

इस प्रकार एकत्रय महाकाव्य क चरित्र चित्रण म कवि को पर्याप्त सफलता मिला है । एकत्रय और आचार्य त्रिण का चरित्र-मृत्ति म तो कवि

^{१८} एकत्रय ममता मग पृ० १६०

^{१९} यही लिखा मग पृ० २०४

ने मौनिकता और नवीनता का भी परिचय दिया है। एकलव्य का चरित्र निपाद मस्कृति का उज्ज्वल प्रतीक है। आचार्य द्रोण के चरित्र में जिम अतवाह्य दृष्ट की योजना समाजी न की है वह चरित्र विश्वपण की दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। द्रोण इस काव्य का सबसे अधिक गतिशील चरित्र है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो वास्तव में आचार्य द्रोण के मनाविज्ञान की वक्षा में ही एकलव्य की उपग्रह भ्रमण करता है। द्रोण के जन्मदृष्ट की उष्ण रश्मियाँ में एकलव्य का चरित्र-कमल विवर्धित होकर अपनी मुगल-समस्त शिक्षाओं में प्राप्त कर रहा है। अतः सघट्ट के अन्तर्गत में बलिष्ठ का यह योजना महाकाव्यकार की अनाखी मूक है।^२ कवि की मूक कारण ही एकलव्य का चरित्र गुरु भक्ति के आदर्श का प्रतीक बन गया है। एकलव्य महाकाव्य के चरित्र नियोजन में मनोवचानिक आधार को ग्रहण करने हुए भी पात्रों का भावगत मायताओं का महाभारत के सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भा समर्थित रखा है। यही एकलव्य के चरित्र विश्वपण की सबसे बड़ी सफलता है।

^२ श्रीमान् अवस्था जीवन महाकाव्य एकलव्य नामक खण्ड (वीणा परवर्ग १९६१)

‘उर्वशी’ महाकाव्य मे नारी-निरूपण

‘उर्वशी’ महाकाव्य में नारी निरूपण

हिन्दी महाकाव्य मृगत की मुत्तुष परम्परा में उर्वशी का प्रकाशन अभूत पूर्व घटना है। कामायनी के अनन्तर प्रकाशित हान बाता का कृतिया में उर्वशी श्रेष्ठतम है। उर्वशी की श्रुता का जाधा उसका कामक याजना और जीवन दशन सम्बन्ध उपलब्धिया ह। उर्वशी की मयस महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उसका रचना का शिवतात्मक जागर वन्व पुगस्थान होने हुए भी उसमें उत्तमान युग जीवन की चेतना का महदघाप है। इस दृष्टि में उर्वशी का नारी निरूपण श्रेष्ठ है।

उर्वशा मूलत नारा और न के रागात्मक सम्बन्ध का शिवचक्र काय है। महा सम्बन्ध का शिवचक्र वग्न हुए करि न नारा क माना र्पा का निरूपण भी किया है। उर्वशा में मुख्यत नारा क नान रूप श्रुतादिन हुए है व ह—प्रयसा पत्ना और माता। काम प्रयसा नारी के पुन का वग किया जा सकत है—उच्छ्रवता और सयमशाता। इन भावाग पर उर्वशा क नारा पाथा का निम्नांकित प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता ह

१ प्रयसा—(अ) उच्छ्रवता—अप्पराए

(ब) सयमशाता—उर्वशा

२ पत्नी—

जीसीनरी

३ माता—

उर्वशा मुक्ता और जीतानरी

यहा यह उल्लेखनाय है कि उर्वशा मुख्यत सयमशाता प्रयसा होत हुए भा काव्य में अय का रूपों में भी अंकित की गयी है। अप्परा उर्वशा जहा प्रयसा है वहा पुरुषवा का वग्न करन और पुत्रवा क राग स जागु की जन्म देने क कारण पत्ना और मा भा है।

प्रयसी नारी—(अ) उच्छ्रवता—नारा क इस रूप का प्रतिनिधित्व काव्य में अप्पराए करती है। अप्पराए सौन्दर्य का अपार निधि है। व अम्बर का मुग्धा मनमार्जिनी अभुक्त प्रेम का जीवित प्रतिमाए मन्दि नयना में श्वा की रण-वन्तिका का हरण करन वाली और काम क मय की कामना है।^१

^१ उर्वशी प्रथम अंक पृ० ६७

‘उर्वशी’ महाकाव्य में नारी-निरूपण

हिन्दी महाकाव्य मृगत की मुख्य परम्परा में उर्वशी का प्रवेशन अभूत पूर्व घटना है। कामायनी व अनन्तर प्रकाशित अन्य काना कायकनिया में उर्वशी श्रेष्ठतम है। उर्वशी का ज्ञाना रा ज्ञाना समकी बन्नात्मक वाजना और जीवन दशन सम्पत्ती उपरनियता ह। उर्वशी का मवम महत्त्वपूर्ण उपरनिय यद है कि उसका रचना का निवन्नात्मक जाधार बदिक् पुगम्यान हान हुए भी उसम वतमान मुग-जीवन की चनना रा महदधोर ह। इस दृष्टि स उर्वशी का नारा निरूपण स्पष्ट है।

‘उर्वशी मृगत नारा और नर र रागात्मक सम्पत्ता का निवचन काव्य ह। महा सम्पत्ता का निवचन करत रा कवि न नाग व नाना रूपा का निरूपण भी किया है। उर्वशी में मुख्यत नाग व नान रूप उन्धानि हूण है व ह—प्रथमा पत्नी और माता। राम प्रथमा नाग व पुन रा वग किय जा सकत है—उच्छ्रयता और सयमशाता। इन जाधारा पर उर्वशी व नाग पात्रा का निम्नांकित प्रकार में वर्गीकृत किया जा गवता ह

१ प्रथमा—(अ) उच्छ्रयता—अपराग

(ब) सयमशाता—उर्वशी

२ पत्नी—

औशीतरी

३ माता—

उर्वशी मुक्ता और औशीतरी

यहा यह उन्तयनीय है कि उर्वशी मुख्यत सयमशाता प्रथमा हान हुए भा काव्य में जम दा रूपा में भा अविन का गया है। अपराग उर्वशी जना प्रथमा है वना पुहरवा का वरण करन और पुग्या व ममग में वागु का जम दन व कारण पत्नी और मा भा है।

प्रथमी नारी—(अ) उच्छ्रयता—नाग व नान रूप रा प्रतिनिधिय काव्य में अनगाए वरनी है। अपराग गौल्य का जपाग निधि हैं। व अपराग रा गुपमा मनमानिनी अभूवन प्रम का गविन प्रतिमाए, मन्नि नयना ग र्वा की रण-वन्नान्ति का हरण करन यात्री और काम क मन का कामना है।^१

^१ उर्वशी, प्रथम अंक पृ० ६-७

उह किसी भी प्रकार का बचन स्वीकार्य नहा । प्रम उनक लिए श्रीज जोर स्वात् है । व किसी एक की होकर नहा रह सक्ती ह । उनक जम का साथक्य सबका मनाविनात् है । रम्भा के शन्ता म

जमी हम किसलिए ? मात्र सबर मन म भरन का
किसी एक का नहा भुग्घ जीवन अपित करन का ।
गृष्टि हमारी नही सकुचिन किसा एक आनन म
किसी एक के लिए सुरभि हम नहा सजोती तन म ।^२

अप्सराए कभी देवता और कभी मनुज का जाणिगन करता है । वे उमुक्न जोर उच्छ खन ह । उनम मिधु की नहरिया क समान कामनाए तरगित रहती ह

रचना की वेदना जगाता पर न स्वय रक्ती हम
बघ कर कहा विविध पाशाजा म न कभी पक्ती हम ।
हम सापर जात्पजा मि धु सी ही असीम उच्छल है
इच्छाआ की जमित तरगा म वकृत चचल ह ।^३

अप्सराआ का काय मनुष्य का वासना का वेदना स पात्तित करना है । वे प्रम का पीर स अपरिचित है । उनम पुरप के प्रति समपण भाव नहा । इसीलिए वे किसी एक पुरप की होकर नती रह सक्ती है । सन्जया जोर रम्भा के सम्वात् से विदित हाता है कि उह नारी का माना रूप कुत्मित लगता ह । भूनात् की परिणीता नारी का पुरप स जाजीवन प्रममय मिलन घुणित लगता है ।^४ इम प्रकार तिनकरजी न अप्सराआ के माध्यम से नारा के उस रूप का यजिन किया है जा भौतिकता विनासिता और स्वाथपरता की प्रवचनाजा स पूण है । वस्तुत ऐसी नारियाँ सामाजिक जीवन का अभिशाप है ।

(ब) सधमशीला—नारा के रत्त रूप का प्रतिनिधित्व उवशी करती है । उवशी अपरिमित सौन्दर्याशानिना है । कवि तिनकर की सम्पूण सौन्दर्य कल्पना स उवशा का दह-यष्टि का निर्माण हुआ है । सन्जया के शन्ता म उवशा नन्वनन का ऊपा सुरपुर की कौमती इत् के मन की कलित कामना रति की मूर्ति रमा का प्रतिमा विश्वमय नर की तृपा विधु की प्राणश्वरी और काम क कर की जारती शिखा है । वट गिद्धा जोर वरागिया की समाधि म

^२ उवशी प्रथम जक पृ० १५

^३ वही पृ० १५

^४ वही पृ० १६ १७

राग जगावर रेवा क शोणित म मधुमय जाग लगान वाली है । उसके चरणा पर चन्दन के लिंग जन जन 'या' है । उवशा का सुपमा क मन्दि घ्यान म त्रिभुवन मग्न मुग्ध है । ५ वाज्य क तृतीय अंक म अपना परिचय स्वयं दते हुए उवशी न कटा है

‘ मैं नाम मात्र स रहित पुण्य
अम्बर म उन्नी हुई मुक्त आनन्द शिखा
इतिवत्तहीन
साध्य चेतना का तरंग
सुर नर किन्नर म धव नहा
प्रिय ! म केवल अप्सरा

विश्वनर क अनृप्य इच्छा-सागर से समुद्रभूत । ६

उवशी अपने परिचयक्रम म पुश्तवा को बनाती है कि मत्त गजराज मेरे समक्ष नल होकर रहत है । कसरी शरभ जीर शादूल अपना हिंस्र भाव छोडकर गह मृग समान अहिंस्र बन जात है । मरी भ्रू स्मिति का दसकर शरमा चकित, विस्मियन जीर विभार हा जात है । मैं जनवरद जीर मुक्त काम बह्नि शिखा क समान अप्रतिहत जीर दुनिवार भाव से सदक घूमती हू । उवशी को कवि न नारी की चरम कल्पना कइत हुए उमका 'यापक' परिचय निम्नांकित प्रकार स किया है

जन जन क मन की मधुर बह्नि प्रत्यक हृदय का उजियाली
नारी की कल्पना चरम नर क मन म बसत वाली ।

× × ×
विस्मिण सिन्धु के बीच शूय एकांत द्वीप
यह मरा उर ।

देवालय म दवता नही कवल म हू ।
× × ×

मैं कला चेतना का मधुमय प्रच्छन्न स्यात ।
× × ×

भू-नभ का सब संगीत नाच मरे निम्साम प्रणय का है,
सारा कविता जयगान एक मरा प्रयत्नाय विजय का है ।

× × ×

५ उवशी प्रथम अंक पृ० १३

६ वही, तृतीय अंक पृ० ६५

मैं देशकाल से पर चिरतन नारी हूँ ।
मैं आत्मतंत्र यौवन की नित्य नवीन प्रभा
रूपसी जमर में चिर युवती मुबुमारी हूँ ।

× × ×

मैं भूत भविष्यत वतमान की वृष्टिम बाधा से विमुक्त
मैं विश्वप्रिया । ७

उवशा आदि नारा है । उसका अस्तित्व सदैव रहा है
कौन पुरुष जिसकी समाधि में मरा खनक नहा है ?
कौन निया में नहा राजता हूँ जिसके यौवन में ?

× × ×

मरा तो इतिहास प्रकृति का पूरी प्राण क्या है
उसी भाँति निस्सीम असागित जस स्वयं प्रकृति है । ८

एसी त्रिनाल बाधा से विमुक्त अपार बभ्रवशांतिना विश्वप्रिया उवशा भी
एक-अपसरा है । किन्तु पुरुरवा के प्रति उसका प्रेमभाव जनक है । प्रेम
भाव से प्रेरित होकर वह तन मन सहित पुरुरवा के प्रति समर्पित होती है ।
एसा समर्पण भाव के कारण पुरुरवा के मितन से उस जहाँ सुखानुभूति होती है
वहाँ उसका विद्याग उवशा का यथा का कारण बनता है । उवशी के मन में
प्रिय मितन की तीव्र उत्कण्ठा है वह चित्ररत्ना से कहती है

यदि आज कान्त का अक नहा पाऊंगा
तो शरीर को छाड़ पवन में निश्चय मिन जाऊगी ।

× × ×

तृप्ति नहा जब मुझ सास भर भर सौरभ पीन से
ऊब गया हूँ दवा कण्ठ नीरव रह कर जीन से ।

× × ×

कहती हूँ इसलिए चित्ररत्न ! मन कर नगाओ
जस भाँटा मुझ आज प्रिय के समीप पहुँचाओ । ९

अतएव उवशा और पुरुरवा का मितन होता है । वे दाना एक-दूसरे तन-गंध
मानन पवत पर आमात्पवक अभिसार-श्रीलाए करत हैं किन्तु उवशी में

७ उवशी तृतीय अंक पृ ६६ १०

८ वही पृ ६३

९ वही प्रथम अंक पृ० २० २१

अतृप्ति बनी रहती है। उस समय चण का गति का भी ध्यान नहा रहता। वह कहता है कि

जब स हम तुम मिल न जान क्या हो गया समय का
लय हाता जा रहा मरुद्गति स अतीत गह्वर म।

× × ×

कट गया वय एस जस ण निमित्त गय।^१

उवशा म कामच्छा है। वह चाहती है

'वक्षस्यल पर इसी भाँति, मरा कपोल रहन दा।

कस रहा बस इसी भाँति उर पाडक जातिगन म

और जनात रहा अघरपुट का कटार चम्बन स।^{११}

ऐसा उद्दाम वासनामया उवशी स शारारिक मित्रन का बना म हा महाराज पुररवा कहन = कि वह प्रेम का जन्मभूमि अवश्य है किन्तु प्रेम के विचरण की सारा लीलाभूमि रघिर या त्वचा तक हा सीमित नहा है। प्रेम का प्रसार मन क गहन गुण चाका तक है जहा रूप का छवि अरूप का जवन करता है। और पुरुष प्रत्यक्ष विभागिन नारी क मृगमण्डल म किसी निय अथवा कमल का नमस्कार करता है। प्रेम क उस निरभ्र आवाण म एसा निर्विकल्प सुपमा है जहाँ पुरुष और स्त्री का भेद मिट जाता है। वहाँ पुरुष न कवन पुरुष और नारा न कवन नारी रहता है वरन क मूलमत्ता क प्रतिमान निग्याया दन है। उस स्थिति का परिचान मासन आवरण हटाकर और तन का अतिव्रमण करके प्राप्त किया जा सकता है।^{१२} इसा तथ्य का आर त्तिवर्जा न काय का भूमिका म भी सबन किया है कि— नारी क भीतर एक और नारी है जा अगाध और इन्द्रियातात है। हम नारी का संधान पुरुष तक पाता है जब शरार का धारा उछालत उछालत उस मन क समुद्र म फेंक देनी है जब दहिव चतना स परे वह प्रेम का दुग्म समाधि म पडुचकर निस्पन् हा जाता है।^{१३} किन्तु पुरुरवा का यह अनासक्तिपूण विचारणा उवशी क मन म भय उत्पन्न कर देनी है। वह कह उठनी है कि

^१ उवशी कृताय अक पृ० ४२ और १०२

^{११} वही, पृ० ६५

^{१२} वही पृ० ६२

^{१३} वही, भूमिका पृ० १४

मैं देशकाल स पर चिरत्न नारी हू ।
म आत्मतत्र यौवन की नित्य नवीन प्रभा
रूपसी अमर मैं चिर युवती सुकुमारी हू ।

× × ×

मैं भूत भविष्यत वतमान का कृत्रिम बाधा स विमुक्त
मैं विश्वप्रिया । ७

उवशा आति नारा है । उमका जन्मित्व सत्य रहा है

कौन पुरुष जिसकी समाधि म मरा चलक रहा है ?
कौन त्रिया मैं नहा राजता हू जिसक यौवन म ?

× × ×

मरा ता इतिहास प्रकृति का पूरी प्राण कथा है
उसी भाति निस्सीम असोमिन जस स्वय प्रकृति है । ८

एसा त्रिकाल बाधा स विमुक्त जपार बभक्षशातिनी विश्वप्रिया उवशा भा
एक अप्सरा है । किन्तु पुरुरवा के प्रति उसका प्रमभाव जन य है । प्रम
भाव स प्ररित हातर वह तन मन सहित पुरुरवा के प्रति समर्पित हाती है ।
इसा समर्पण भाव के कारण पुरुरवा के मिलन स उस जहाँ मुखानुभूति हाती है
वहा उसका वियाग उवशी का व्यथा का कारण बनता ह । उवशी के मन म
प्रिय मिलन की तीव्र उत्कण्ठा ह वह चिन्तना स कहती है

यदि आज काल का जब नहा पाऊगा
तो शरार का छाड पवन म निश्चय मिल जाऊगा ।

× × ×

तृप्ति नहा अब मुझ सास भर भर सौरभ पीन स
ऊब गयी हू दवा कण नीरव रह कर जोन स ।

× × ×

कहता हू इसलिए चित्रतम ! मन वर तगाआ
जस भा हा मुझ आज प्रिय के समीप पहुँचाओ । ९

अतन उवशा और पुरुरवा का मिलन हाता है । व दाता एक वय तक गंध
मान्न पवत पर आमात्पूवक अभिसार-श्रीगण करत ह किन्तु उवशी म

७ उवशी तृताय अंक पृ० ६६ १००

८ वही पृ ६३

९ वही प्रथम अंक पृ० २० २१

थवृत्ति बनी रहती है। उस समय चय की गति का भी ध्यान नहा रहता। वह कहती है कि

जब स हम तुम मिल न जान क्या हो गया समय की
लय होना जा रहा मरणागति से अतीत गह्वर म।

× × ×

कट गया वय ऐसे जैसे दा निमित्त गय।^१

उवशी म कामच्छा है। वह चाहती है

वक्षम्यल पर इसी भाति मरा कपान रहन दा।
बस रहे बस इसी भाति उर पीडक जातिगन म
और जनात रहा जघरपुट की बठार चुम्बन स।^{११}

ऐसा उद्दाम वासनामया उवशी स शागेरिक मिलन की बेला म ही महाराज पुररवा कहत है कि दृष्ट प्रेम की जन्मभूमि अवश्य है किन्तु प्रेम के विचरण की सारी लीलाभूमि शरीर या त्वचा तक ही सीमित नहीं है। प्रेम का प्रसार मन के गहन गुह्य लोका तक है जहाँ रूप की छवि अरूप का ज्वन करता है। और पुरुष प्रत्यक्ष विभासित नारा वं मुलमण्डल म किसी लिय ज्यवन कमल का नमस्कार करता है। प्रेम के उस निरभ्र जागण म एसी निर्विकल्प सुपमा है जहाँ पुरुष और स्त्री का भेद मिट जाता है। वहाँ पुरुष न बवल पुरुष और नारी न केवल नारी रहती है, बरन वं मूनसत्ता व प्रतिमान लिसायी बत हैं। उस स्थिति का परिज्ञान मासन जावरण हटाकर और तन का अतिग्रमण करक प्राप्न किया जा सकता है।^{१२} हमी तथ्य की जोर दिनवग्जी न काय की भूमिका म भी मकन किया है कि— नारा वं नीतर एक और नारी है जा अगावर और इन्द्रियातीत है। इस नारी का संधान पुरुष तब पाता है जब शरीर की धारा उठालत उछालते उस मन व समुद्र म फक देती है जब वहिब चतना से परे, वह प्रेम की दुगम समाधि म पहुचकर निस्पन् हा जाता है।^{१३} किन्तु पुररवा का यह अनासक्तिपूण विचारणा उवशी व मन म भ्रम उत्पन्न कर देनी है। वह कह उठनी है कि

^१ उवशी तृतीय अंक पृ० ४३ और १०२

^{११} वही, पृ० ६५

^{१२} वही पृ० ६३

^{१३} वही, भूमिका पृ० ४

अनासक्ति तुम कहा किन्तु इस सिद्धा प्रस्त मानव का
 चाकी तुमम देव मुझ जान क्या भय नगना है ।
 तन स मुझको कस हुए अपने दूरे जातिगन म
 मुझ देखते हुए कहा तुम जाकर खा जात हा ? १४

उवशी नही चाहती कि पुरुरवा अनासक्ति का चिन्तनधारा म डूबकर अनासि
 सत्य की खाज म लग जाय और उस भून जाय । महाराज पुरुरवा का अपन
 आकषणपाश म निबद्ध करन क लिए वह सवम्ब समपण कर दता है

आ भरे प्यार तृपित ! ध्यान ! अन्त सर म मन्तित करक
 हर लूगा मन की तपन चादना फूला स सज्जित करक ।
 रसमयी मधशाला बनकर म तुझ घर छा जाऊगी
 फूना की छाँह तन अपन अघरा की सुधा पिलाऊगी । १५

उवशी का यह वह रूप है जिसम वह वासनाप्रिय नारी लिखाया देती है ।
 उवशी का एक और रूप भी है जिसम वह एक उत्पन्न प्रममया नारी लिखाया
 देती है । उवशी क इस रूप का परिचय हम उसकी दस पृष्ठा का तन्वी वक्रुता
 म मिलता है जिसम वह पुरुरवा का त्वसम्मत समाधान प्रस्तुत करता है । १६
 उवशी का दृष्टि म पुरुष परमेश्वर का और नारी प्रकृति की प्रतीक है ।
 पुरुरवा की इस धारणा का वह प्रतिवादा करनी है कि प्रकृति मायाविनी है
 और परमेश्वर की प्राप्ति के लिए प्रकृति स मन्मथ विच्छेद करना पटना है

किसन कहा तुम्हें जा नारी नर का जान चुकी है
 उसके लिए अनभ्य जान हा गया परम सत्ता का ।
 और पुरुष का जातिगन म बाध चुका रमणा का
 देश काल की भेद गगन म उठन योग्य नहीं ? १७

उवशी का मायता है कि प्रकृति का माया बहकर उसक अस्तित्व का निषेध
 नही किया जा सकता

माया कह क्या मृषा मटत हा अस्तित्व प्रकृति का । १८

१४ उवशी तृतीय अंक पृ ४७

१५ वही पृ० ५७

१६ वही पृ० ७७ ८६

१७ वही पृ ७७

१८ वही पृ० ७८

क्याकि—

हम निमग क स्वय कम है कम स्वभाव हमारा
कम स्वय आनन्द कम हा फल ममस्त कमों का । १

इमनिष्ठ प्रकृति और इश्वर म कहा भी दृढ़ या सघप नही है । दृढ़ तो
दुविधाग्रस्त मानम की रचना है । कोर् भा घम माघना प्रकृति स भिन्न
होकर नहा चल सकती

दृढ़ रच भर नहा कहा भी प्रकृति और इश्वर म
दृढ़ता का आभास द्रुतमय मानम का रचना है ।

X / X

घम माघना क्या प्रकृति म भिन्न नहा चलता है । १

कवि के अनुसार काम क रूप २

‘काम घम काम ही पाप है काम किमा मानम का
उच्च तार म गिरा हीन पग जनु बना ट्ता है ।
और किमा मन म अमाम सुपमा की नृपा जगा कर
पहुचा ट्ता उम विरग्न मक्ति अति उच्च शिगर पर । २१

जिम काम कृत्य के सम्पादन म मन आमाण नया वरन न वपुस ही मिलते है
जा काम किया महावृष्ट हाकर नया वरनु नय प्रत्यूवक का जानी ह क
बनात्कार के पाप का जन्म लेती ह । दूसरी जार फतामक्ति म शाय निष्काम
काम-भुग स्वर्गीय पुत्र के समान है । अस्तु काम का यनी रूप वरेण्य है ।

इस प्रकार उवशी क जिम प्रमिता रूप का रति न चित्रण किया है एक
दो पत्र है—एक वह जिमम व अपना सबस्व अपण करक गरीर-मग्न की
प्राप्ति क त्रिष्ठ व्यग्र है । दूसर जिमम वह फतामक्तिपूण कामुकता को त्याग
काम भावना के उन्नात रूप को ग्रन्थ करता चाहती है । वस्तुतः उवशी का
चरित्र-सृष्टि नारा कवि न अपन उम मन्त्र्य का गुटि कर न है जा रमन
नारी क मन्त्र्य म भूमिना म प्रतिपादित किया है ।

पानी—नारी क पनी रूप का प्रतिनिधित्व वाच्य म पुत्रवा की परिणीता
जीवानरा करती है । घम आत्मा पनीव का पारी मुख्या क चरित्र म भी
उपनय है । प्रमिता क विगरीत पनी पूजन पति क प्रति ममपित जाता है ।

१ उवशी मुनाय अर पृ० ८०

२ वही पृ० ८ ८४

२१ वही पृ० ८४

उसका सबसब पति ही जाता है। सुक्या स्त्री भाव का व्यवन करते हुए कहती है कि

एकचारिणी मैं क्या जानूँ म्वात् विविध भोगा का ?
मेरे तो आनन्द ग्राम केवन महहिं भर्ता है।
योग भोग का भेद अप्सरा की अवध क्रीडा है
गहिणी व ता परम दब आराध्य एक हात है
जिमस मिनता भोग योग भा वही हम देता है।^{२२}

सुक्या की यह भा मान्यता है कि नारा को यौवन रहते ही किसी एक पुरुष के साथ निश्चिन्त जीवन का तार बांध देना चाहिए अथवा मौन्य से विगलित मन अगा वानी नारा पुरुष का आर्पित करन म समय न होगी। अप्सराएँ अपन यौवन पर उमत्त रहती हैं किन्तु पतिव्रता नारी व जीवन का आनन्द उमवा मधुपूष हृदय हाता है। जा यौवन की जीणता पर जीण नहा हाता। स्त्रीतिग पति पत्नी एक दूसरे के हृदय म एस बसे रत्त हैं जैसे एक वन्त के दो प्रसून हा। व साथ साथ युवा और बद्ध हाते है। पति पत्नी एक नीका पर घटकर जीवनात्थि को पार करत है। अस्तु सुक्या व शता म

अप्सरिया उद्विग्न भोगता रम जिस चिर यौवन का
उसस कही महत्त मुख है जो हम प्राप्त होता है
निश्छत शान्त विनम्र प्रम भर उर के उत्सजन से।^{२३}

परिणीता नारी व जीवन के अपन अभाव है जिनरी यजना औशीनरी व चरित्र म हु है। वत् पतिपरायणा नारी है। उमके पति (पुस्रवा) का उवशी स मिनन उमके जीवत ता अभिशाप वन जाता है। पुस्रवा के उवशी व साथ सारमात्न पवन पर चन जान पर वह प्राणात्त करना चाहती है तभी निपुणिका पुस्रवा का यत् सन्देश दती है कि महाराज एक वष पश्चात चोटकर नमिषय वन करेंग जिमकी पूति व निण कुदयामा औशीनरी का आविन रहना आवश्यक है। औशानरी विचित्र तुष्टिया म पर जाती है। यह अपना यथा और उवशी व प्रति जात्रास एक साथ व्यवन करता है

राय मरण तक ताकर मुयनी हवात्त पाना है।
जाने तम गणिता का मैंन कब क्या अग्नि त्रिया था
कत्र किमपूव जम म उमरा क्या सग छान त्रिया था।

×

×

×

^{२२} उवशी चतुथ अक्ष पृ १०८

^{२३} वहा पृ १०

छीन ल गयी अधम पापिनी मुवस मरे पति को ।
 य प्रवचिकाए, जान क्या तरस नहा खानी है,
 निज विनोए के हित बुननामाभा ना नरपाती है । २४

औशीनगी की अमहायावस्था का कवि ने बन्ग ममस्पर्शी चित्र अंकित किया है । वह कहती है

पति क सिवा घोपिता का कोई आधार नहा है ।
 जब तक है यह नशा नारियाँ यथा कर्ण नार्येगी
 आसू छिपा हसैगा फिर हसत हसत रायगा । २५

अथवा

वितना विलक्षण पाप है ।
 वार्ड न पास उपाय है ।

अवलम्ब है सबको मगर नारी बहुत अमहाय है । २६

उवशी क पुत्र आयु क समक्ष अपनी मनोव्यथा व्यक्त करती हुई जीशानरी बताता है कि विधाता न नारा के भाग्य म स्तन ही सिरजा है

जौर हाय तज भी मैं कवन त्रिया भार नारी हू

स्तन छोए विधि न सिरजा क्या जौर भाग्य नारी का । २७

इस प्रकार परिणीता नारी का जो रूप उवशी महात्राय म अंकित हुआ है उसम ना विवायनाए स्पष्ट नियासी होती है । प्रथम पत्नी नारी का पति क प्रति पूण ममपण भाव दूसर परिणाना नारी क जीवन की मूल व्यथा जिम क अन्तर्गत म मन्त्र हए जीवनयापन करती है ।

पाता—आयु की जननी होन क कारण उवशी माता है किन्तु माता क शक्ति का सबान मुक्त्या नी करती है । नारा के भ्रातृत्व की प्रागा काव्य क मभा पाता न मुक्त कण स की है । उच्छ्वस स्वभाव वाली जन्मगर्भ भा भ्रातृत्व क गौरव ना स्वीकार करती है । मनका क शब्दा म

एक मन्त्र ! क्या कभा बाल यः ।। मन म जानी है

मा वनत ही त्रिया कर्हा स कर्ण पृथ्व जाता है ?

२४ उवशी, त्रितीय अङ्क पृ० ३

२५ वही, पृ० १८

२६ वही पृ० ६०

२७ वही पंचम अङ्क पृ० १५१

नारी ही वह कोष्ठ दब दानव, मनुष्य स छिप कर
महाभूय चुपचाप जहाँ आकर ग्रन्थ करता है ।

X X X
मच पूछो तो प्रजा सृष्टि म क्या है भाग पुष्प का ?
यह तो नारी ही है जा सब यग पृण करती है । ३१

मानृत्व भाव का प्रशान कवि न उवशा सुक्या और औशीनरी तीना क चरित्र
म किया है । आयु के प्रति तीना नारिया म अनुल वात्मल्य भाव है । उवशी
अप्परा है किन्तु आयु की जन्म देन क कारण उसम मानृत्व का गौरव आ
जाता है । चित्रलया स वह कहती है कि यदि मैं मानवा म्ना हू तो क्या मैं
मानव रत्न लाल का तो जन्म लिया है । ३२ वास्य भाव स भरकर आय की
चमवारत हुए वह जन्मिक धानन् की जन्मभूति करती है

कितनी मृतल उमि प्राणा म अथ अपार मुग्धा का ।
दुग्ध धवन यह ऋष्टि मनोरम कितना जमृत-मरम है ।
जीर स्पश म यह तरण मा क्या है मोम मुग्धा की
अक लगाने ही जीवा का पनवें यत्र जाती हैं । ३३

उवशा स तानन-पालन क लिए आयु को नकर सुक्या भा वास्य भाव
स भर जाती है । आयु क मन्मथ म बट नाना कल्पनाए करता है । आयु का
गो म लेकर पुचकारते हुए वह कहता है कि मरा मुग्धा घुटना क वन दौड़
दौड़ कर कभी हिरणा क कान पकगा कभी कपात कवा क डना को पकडेगा ।
और जब खडा होकर चवन लगगा ता शक गिनहरिया कुरग छीना स
सार रागगा । ३४ तन्कि जीर उग होकर गाचारण क लिए वन जाया करगा।
सायकाल गार्मि चराकर सिर पर बुशा म्भ और समिधा का बाय लेकर नौटा
करगा । फिर पवित्र हाकर महपि क साथ यन्वनी पर बठकर मन्वाचार
मन्नि हवन करगा । हवन धूम स जब उसकी जीवा म वाप्य उम आयेग
तो मैं अपन अचन स उसकी आये पाछ दूगी

वन धूम स जीवा म जत्र वाप्य म्भ आयेगे
तव मैं नाना नयन पाछ दूगी अपन अचन म । ३५

३१ उवशी चतुथ अक पृ० ११७

३२ वही पृ० ११८

३३ वही, पृ० १२०

३४ वही पृ० १२६

३५ वही, पृ० १०

आयु का पाकर औशीनरी राजमहिषी से राजमाता हो जाती है। आयु को देखकर औशीनरी भी मातृत्व भाव से भर जाता है। उमक मन को यही बेचना साजती है कि आयु यदि अपनी बाल्यावस्था में ही मित जाना ता उमका पालन पापण करके अनंत सुख की अनुभूति करती

आ बटा ! तू जुडा प्राण छाती से तुझे लगाकर ।

[आयु को हृदय से जगानी है]

कितना भय स्वरूप ! नयन नामिका ललाट चिबुक में
महाराज की आज्ञतिया का पूरा विम्ब पडा है ।

हाय पावती कितने सुख कितनी उमग आशा से
मिता भुन हाता यदि भरा तनय कहा बचपन में ।^{३६}

प्रत्युत्तर में आयु ने कवि ने जो कहलाया है उमक मातृत्व-पत्र की महिमा चलकती है। आयु कहना है—मा ! इताश मत हो । मैं माताआ के स्वर्णिम भविष्य का जग्रदूत बनकर आया हूँ । मैं मा का केवल दूध ही नहा पिया वरन करणामयी त्रिया क क्षीरा-बल कल्पनातोक में पत्र कर बडा हुआ हूँ । आयु कहता है कि उसके जीवन में माता की ममता ही मूल्यवान रही है

जो कुछ मिता मातृ ममता से मा के मजबूत हृदय से
पिता नगा मैंन जीवन में माताए दखी ३ ।

त्रिया एक ने जम दूमरी मा ने जगा हृदय में
पात्र पोम कर बना किया आम्बा का जमृत पिता कर
जय में हाकर यवा खोजत हुए यत्र आया हूँ
राजमुकुट को नहीं तासरी मा क ही चरणा को ।

मा ! मैं पीढ़ नप किशोर पत्रन तरा यत्र हूँ ।^{३७}

इस प्रकार मातृत्व की यजना उवशी मुक्या और औशीनरी तीना के चरित्र में है ।

यत्र नक उवशी महामाध्य में उल्लिखित गारी पात्रा की चरित्रगत विगपनाआ जीव नाना रूपा (प्रयसी पत्नी माता आदि) का विवेचन किया गया। अब त्रम काय में नारी क प्रति कवि के सामान्य दृष्टिकोण का विश्लेषण करेंगे ।

पुम्बवा उवशा का जाग्रयान (जा प्रम्नन मन्त्राय का रचना का कथात्मक

^{३६} उवशी पंचम मग पृ १५३

• वही प १६५

आधार है) मूलतः ऋग्वेद में उपलब्ध है। इन दृष्टि से यदि हम वैदिक कालीन नारी की सामाजिक दशा का ऐतिहासिक ज्ञान से पता लगायें तो पता है कि वैदिक सामाजिक संरचना का रूप गण-भगठन द्वारा हुआ था जिसका आधार मातृ सत्ता था।³⁵ इस मातृ-सत्तात्मक-समाज में नारा बनवती थी गृह की स्वामिनी और सम्पत्ति की प्रभु थी।³⁶ इतिहासकारों का मत है कि वैदिक समाज में स्त्रियाँ का स्थिति जितना ऊँचा था उतना ब्राह्मण समाज में नहीं रहा।³⁷ समाज के मानसिक एवं धार्मिक नृत्व में भी स्त्रियाँ का हाथ था।³⁸ वर्यो के समाज में स्त्रियाँ का पुरुषों के समान सभा अधिकार रत्न थे ज्यों में उनका पुरुषों का अर्धांगिनी भी कहा गया है। स्त्रियों के बिना घर का घर नहीं माना जाता था। अतिथि सत्कार तथा धार्मिक कार्य स्त्रियों द्वारा सम्पादित होते थे और उनके विना ब्राह्मण या उपासना तथा अचना मायापाग नहीं था। उनके वेद पठन-पठान का पूर्ण अधिकार था। धापा लापासमुद्रा अपाता विश्ववाग वृद्धाणि कृषि-मलिन्या वृद्धा का टाकाकार था। शास्त्रार्थों में या सभाओं में उनका भाग लेना का पुरा स्वतन्त्रता थी। सम्पत्ति अधिकार में उनका भी भाग था।³⁹ संक्षेप में नारा के विकास एवं अधिकार का दृष्टि से वैदिक युग का इतिहास नारी का स्वर्णकाल है।⁴⁰

अन्तु—

वैदिककालीन नारा के सम्बन्ध में उपयुक्त ऐतिहासिक साक्ष्यों में उपशा महाकाव्य के रचयिता का नारा मन्वन्था धारणाओं का अध्ययन किया जाय तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दिनकरजी ने प्रस्तुत किया है नारा का एक ओर तो वैदिककालीन नारा का गरिमा से परिपूर्ण चित्रित किया है तो दूसरी ओर वनात्तर काल में अद्यावधि नारी के प्रति पुरुषों के स्वच्छा पारा व्यवहार, सामाजिक असमानता और उनकी विवशनापूर्ण स्थितियों का भी अंकन किया है।

³⁵ श्री अमृतपाद डांग भारत पृ० ४६ (अनु० आद्वितीय मिथ)

³⁶ डा० भगवन्धरण उपाध्याय भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण पृ० २४७

³⁷ इतिहासकारों भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ० ४१

³⁸ डा० बनीप्रसाद हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, पृ० ७

³⁹ डा० गोपालनाथ शर्मा भारत का सम्पूर्ण इतिहास, पृ० ८

⁴⁰ डा० श्यामसुन्दर व्यास हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण पृ० १८

निर्णय की धारणा है कि मानवता के इतिहास में नारी और पुरुष के घातकता का समान रूप से महत्त्ववान नहीं प्रिया गया है। इतिहास की दृष्टि केवल पुरुषों के पौरुष सघर्ष और यथागत तक केंद्रित रही है। नारी की मूल धरना का इतिहास न मुखरित नही किया है

इतिहास की सकल दृष्टि केन्द्रित बस एक प्रिया पर।
किन्तु नारिया क्रिया नही प्ररणा प्राप्ति करणा है
उद्गम स्थानी अदृश्य जहा स सभी कम उठन है।

× × ×

जबपी इतिहास शूरता का सघर्ष मुपश का
किन्तु हाय शूरता नारिया की नीरव होनी है
वह सशक्त जाघात नही ममता है कष्ट सहन है। ४४

उपरोक्त की मुक्तिया कहती है कि नारिया इतिहास की धारा से छिन्न नही है। समरक्षत्र के थके पुरुष की प्ररणा नारी ही होती है। नयी उर्मि और नूतन उमंग से सजाकर प्रति प्रात नारी ही पुरुष की जावन रण में भजती है और समरक्षत्र से पीट हुए पुरुष से सायकाल नारा ही दिन भर का इतिहास कभी आसू बहाकर और कभी मृत स्मिति सहित मुनती है। अतः इतिहास नारी के जापान के प्रति मौन क्यों है? इस प्रश्न का निदान कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है

नारी प्रिया नही वह केवल क्षमा क्षाप्ति करणा है।

इसीलिए इतिहास पहुचता जभी निकट नारी के
हो रहता वह अचन या कि फिर कविता बन जाता है। ४५

नारी को वासना का प्रतीक या मायावर्ति कहा जाता रहा है। कवि ने एस मतभेद का स्वीकार नही किया है। उसकी मायता है कि

‘नारी जब देखती पुरुष को इच्छा भरे नयन से
नही जगाती केवल उद्वेगन अनल रुधिर में
मन में किसी कान्त कवि को भी जन्म प्रिया करता है
नर समेट रखना बाँहा में स्थूँ देह नारी की
शोभा की जाभा तरंग से कवि घाटा करता है। ४६

४४ उपरोक्त पद्य अंक पृ० १६३

४५ वही पृ० १६४

४६ वही तृतीय अंक पृ० ६१

कवि के मतानुसार विध्य मानवाय गुणा के निवट ना पुष्प की अपक्षा नारा ही है

'जीर दधि । जिन वि य गुणा का मानवता कृत =
उसके भा अत्यधिक निवट नर नहा मान नारा = ।
जितना अधिक प्रमत्त्व तृपा से पान्ति पुष्प-हृदय है
उतने पीछे कभी नरा गत है प्राण लिया क । *७

एक प्रकार उवशी महाकाव्य में अद्यान्त कवि ने नारा के गौरव रङ्गिमा का प्रतिष्ठित करने का अभिनतनीय प्रयत्न किया है । वास्तव में उवशी महाकाव्य नारा का महिमा का काव्य है । उसमें परम्परागत जीर प्रगतिशाली सद्गुणों में एक साथ नारा का स्वरूप विश्लेषण हुआ है । नारा जाति के भविष्य के प्रति भा कवि मगनाशाही है । जीमानरा के शब्दों में

नारी का स्वर्णिम भविष्य जानें वह अभी क्या है ।
हम तो घात भोग उमको जा मुख दुख हम बदा था
मिल अधिक उज्वल उदार यग आग का तलता को । *८

*७ उवशी पद्यम अंक पृ० १६४

*८ वही पृ० ४८